ज्योतिष स्वयं शिक्षक

(फल ज्योतिष)

पुरुषोत्तम नागेश ओक

जन्म-पत्री रचना, फलित ज्योतिष, ग्रहों के प्रभाव, ज्योतिष द्वारा रोग निवारण इत्यादि विषयों पर प्रमाणित पुस्तक

ज्योतिष स्वयं शिक्षक

(फल ज्योतिष)

जन्म कुण्डली-रचना, ग्रहों का मूल्यांकन
फलित ज्ञान, ज्योतिष द्वारा रोग निवारण
इत्यादि का प्रमाणित व सरल ज्ञान

पुरुषोत्तम नागेश ओक
(एम. ए., एल. एल. बी.)

अनुक्रम

मेष
(एरीज)
मीन
(पीसिस)
कुम्भ
(एक्वेरियस)
मकर
(कैप्रीकॉर्न)
धनु
(सैजीटेरियस)
वृश्चिक
(स्कॉर्पियो)
तुला
(लिब्रा)
कन्या
(विरगो)
सिंह
(लिओ)
कर्क
(कैंसर)
मिथुन
(जैमिनी)
वृषभ
(तोरस)

निवेदन

ज्योतिष का लेशमात्र भी ज्ञान या जानकारी जिन लोगों को नहीं है, उनको सुशिक्षित करने के लिए ज्योतिष विद्या सम्बन्धी पुस्तकें बहुल मात्रा में होनी निश्चित ही हैं किन्तु यह पुस्तक अपने आप में अद्वितीय होगी क्योंकि इसमें यह दर्शाने का यत्न किया गया है कि ज्योतिष विद्या न केवल विज्ञान अपितु विज्ञानों का भी विज्ञान है, निश्चित शास्त्र है।

ज्योतिष विद्या से भलीभाँति परिचित व्यक्ति भी इस पुस्तक का अध्ययन करने के पश्चात सुनिश्चित हो जाएँगे कि जिस ज्ञान-शाखा को वे इतना अधिक प्रेम करते हैं, वह कितने अधिक वैज्ञानिक आधार पर स्थिर है, तथा इससे उन लोगों को ज्योतिष विद्या में अविश्वास करने वालों अथवा उसका उपहास करने वालों से अपने मत का सही प्रतिपादन करने में निश्चित ही सहायता मिलेगी।

हमने प्रारम्भिक अध्यायों में मुख्य रूप से यह सिद्ध करने का युक्ति युक्त ढंग से यत्न किया है कि अनजाने के जन्म लेने वाला तथा निष्ठुरतापूर्वक काल के कराल गाल में समा जाने वाला मनुष्य चाहे जितनी भी शेखी बघारे किन्तु वह होता है अपने चारों ओर की परिस्थितियों का गुलाम ही। वह मनुष्य इस अनवरत चल रहे संसार-चक्र की एक कीलमात्र है, उससे अधिक कुछ नहीं। इस पुस्तक के सभी उपयुक्त स्थलों पर हमने यह कहने में कोई संकोच नहीं किया है कि किसी भी अन्य विज्ञान के नियमों को तुच्छ समझना तो दूर रहा, ज्योतिष विद्या तो उन नियमों को निश्चित रूप से शाश्वत मानती है तथा अपने निष्कर्षों को भौतिकी, खगोल-शास्त्र तथा गणित-शास्त्र पर आधारित करती है।

ज्योतिष के विषय से सर्वथा अछूते, अनभिज्ञ व्यक्तियों को पर्याप्त ज्ञान देना इस पुस्तक का प्रयोजन है। अतः, ज्योतिष-विषय के मूल सिद्धान्तों से प्रारम्भ कर उसके नियमों का विशद विवेचन इस पुस्तक में किया गया है।

ज्योतिष की इस पुस्तक को पढ़ने के उपरान्त पाठक का स्तर इतना अवश्य हो जाएगा कि वह ज्योतिष सम्बन्धी वाद-विवाद, भाषण, प्रवचन, लेख तथा पुस्तकों का ज्ञान हृदयंगम कर सके और जन्म-पत्रियों का 'अध्ययन' कर स्थूल रूप में भूतकाल और भविष्य का दिग्दर्शन कर सके।

ज्योतिष की इस पुस्तक से यह भी सम्भावना है कि पाठक के हृदय में आगे अध्ययन करने की रुचि उत्पन्न हो जाए। वह ज्योतिष विद्या में गहन-अन्वेषणों में प्रवृत्त हो, ऐसी पूर्ण सम्भावना है।

इस पुस्तक के अध्ययन से पाठक के लिए विश्व पर दृष्टिपात करने के के लिए एक नई खिड़की उपलब्ध होगी, ऐसी आशा है। सम्भव है कि प्रत्येक पाठक, महिला हो अथवा पुरुष, समस्त मानव कार्यकलापों को दांभिक रूप से देखना समाप्त कर दे और इसके स्थान पर दैवी इच्छा तथा प्रकार के समक्ष विनम्र समर्पण-भाव एवं पूज्य भाव की वृत्ति को विकसित करे।

प्रायः धारणा यह रहती है कि ज्योतिष विद्या में आस्था से उद्योग-शीलता एवं कार्य करने की इच्छा का हनन होता है। वह धारणा ज्योतिष विद्या के एक मूल सिद्धान्त का उल्लंघन करती है : किसी व्यक्ति के लिए यदि विधि का विधान क्रियाशील रहने का है, तो वह किसी भी प्रकार निष्क्रिय नहीं रह सकता चाहे उसकी आस्था ज्योतिष विद्या में कितनी ही गहरी क्यों न हो ! इतना ही नहीं, हम कह सकते हैं कि हमारा अनुभव यह रहा है कि ज्योतिष में दृढ़ विश्वास रखने वाला व्यक्ति ईश्वरप्रदत्त कार्य-भार पूर्ण करने के लिए इस अनित्य संसार में पूर्ण निष्ठा एवं स्थिर साहस से कार्यरत होता है।

ज्योतिष में विश्वासी व्यक्ति श्रेष्ठतर मानव तथा अधिक जागरूक नागरिक होता है क्योंकि ज्योतिष विद्या अहम् भाव को भयंकर रूप में आश्चर्यजनक ढंग से नष्ट करती है। दूसरी ओर, अविश्वासी लोग सिद्धान्तहीन, ढोंगी तथा दम्भी बने रहते हैं जो न तो ईश्वर से भय खाते हैं

और न ही मनुष्य से।

हमें उन लोगों की अदूरदर्शिता पर तरस आता है जो मनुष्य के 'स्व-निर्माणकर्ता' स्तर की दुहाई देते हैं। यदि वे अपनी आँखें थोड़ी ही और अधिक खोलने का कष्ट करें और इस विस्तृत संसार पर दृष्टि डालें, तो पाएँगे कि मनुष्य को सभी प्रकार की पुलिस-शिक्षा देने के उपरान्त भी, एक कुत्ता, चोर का पता लगाने में उससे बढ़कर है, किसी भी व्यायामशाला में जाए बिना ही गजराज निपुण कसरती पहलवान है, दम्भी मानव के समान किसी भी प्रकार तैराकी का प्रशिक्षण प्राप्त किए बिना ही घोड़ा बढ़िया तैराक है, किसी युद्ध-विद्या के विद्यालय में प्रविष्ट हुए बिना ही चीता विकट लड़ाका है, बिना किसी पूर्व-विग्रह के ही साँप और नेवले जन्मजात घोर शत्रु हैं, और सिंह जन्म से ही पशुओं का सर्वमान्य सम्राट है यद्यपि किसी ने भी उसको मुकुट अथवा आसन प्रदान नहीं किया है।

क्या उपर्युक्त उदाहरण किसी भी विनम्र तथा सरल व्यक्ति को यह विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं कि प्रत्येक मानव भी ईश्वर द्वारा कुछ निश्चित, सुस्पष्ट क्षमताओं से पूर्ण, युक्त उत्पन्न किया गया है और उसे इस दैवी नाटक में निर्धारित पात्रता का निर्दिष्ट अभिनय यथासमय ही करना है!!

ज्योतिष विद्या का ज्ञान सर्वप्रथम भारत में हुआ था। यहाँ पर इसका अध्ययन इतना सांगोपांग तथा पूर्ण रूप में किया गया था कि गणित के प्रश्नों के समान ही, विश्व के किसी भी भाग में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी व्यक्ति के जीवन की एक-एक पग पर तथा एक-एक क्षण पर घटित होने वाले अवसरों का ठीक-ठीक निर्धारण भारतीय ऋषिगण तथा द्रष्टा सभी समय कर सकते थे। सभी युगों और सभी क्षेत्रों के सभी मनुष्यों के लिए ऐसी विशद भविष्यवाणियों के संग्रह-के-संग्रह भृगु-संहिता, सूर्य-सिद्धान्त और नारद-नाडी के नाम से सुप्रसिद्ध हो हमारे इस वर्तमान युग में ही इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। उनकी भविष्यवाणियों की प्रणाली तथा विलक्षण सही स्थिति दर्शाती है कि हमारे चारों ओर फैले संसार के किसी भी रासायनिक सिद्धान्त तथा सैनिक यन्त्र की ही भाँति मनुष्य भी है। जनसंख्या-वृद्धि के इस युग में बहुप्रजननशील मानव

जन्मों के सम्बन्ध में ज्योतिष का स्पष्टीकरण पूछने वालों से हम इतना ही कहेंगे कि यह कोई असामान्य सिद्धान्त नहीं है। संसार में ऐसा हस्तलिखित है जिसमें अनेक, अधिक या न्यून प्रजजनशील सभ्यताएँ उत्कर्ष को प्राप्त हुईं तथा विलुप्त हो गईं। यहाँ पर पाठक को हम भौतिक के एक नियम का स्मरण दिलाना चाहते हैं जो पूर्णरूप से ज्योतिष पर भी लागू होता है। भौतिकशास्त्र कहता है कि संसार की वस्तुओं का कुल जोड़ ज्यों-का-त्यों रहता है, यह केवल आकार बदलता रहता है, किन्तु नष्ट कभी भी नहीं होता। इसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र भी कहता है कि जीवधारियों की कुल संख्या ज्यों-की-त्यों रहती है, जीवधारी केवल रूप बदलते रहते हैं। उनका जोड़ न कभी बढ़ता है, और न ही कभी घटता है। इसकी पुष्टि पर्यवेक्षण द्वारा की जा सकती है। यदि मानवों की संख्या बढ़ती है, तो वे अपने रहने के लिए जंगलों को काटकर तथा विनाशक कीटों को नष्ट कर जंगली पशुओं की संख्या कम कर देते हैं। कहने का अर्थ यह है कि जिस मात्रा में मानवता बढ़ती है, जीवधारियों के अन्य प्रकारों में उसी मात्रा में कमी भी हो जाती है। हिन्दुओं के पुनर्जन्म का सिद्धान्त इसी सत्य को प्रतिपादित करता है जब वह यह घोषित करता है कि मानव-जन्म सहित जीवन के अनेक प्रकारों में से आत्मा को आवागमन करना पड़ता है।

ज्योतिषशास्त्र को समझने अथवा इसका अध्ययन करने की उपेक्षा करते हुए भी जो लोग इसका उपहास करना पसन्द करते हैं, उनके लिए तथा उन लोगों के लिए भी, कि जो ज्योतिष से अनुराग रखते हैं किन्तु इसकी विशदता के लिए जिनको धैर्य नहीं है, इस पुस्तक में एक अध्याय है जो उनको ज्योतिषीय भविष्यवाणियों की सत्यता का विश्वास दिला देगा। उस अध्याय में हमने कुछ चुने हुए नक्षत्रों की विशिष्ट स्थितियों की सूची दी है जो सामान्य पाठक भी अपनी अथवा अन्य लोगों की जन्म-पत्रियों में देख सकते हैं तथा उन पर आधारित ज्योतिषीय उपलब्धियों की सत्य-वादिता सम्बद्ध व्यक्तियों की जीवनियों से परखी जा सकती है।

यद्यपि ज्योतिष के नियम तथा प्रणाली विश्वभर में समान ही हैं, तथापि नामावली एवं शब्दावली में थोड़े-बहुत क्षेत्रीय परिवर्तन व अन्तर होने संभव हैं। इस पुस्तक में हमारा प्रमुख उद्देश्य अनभिज्ञ पाठकों तथा पश्चिमी

प्रणाली से परिचितों को ज्योतिष की भारतीय-विधा से अवगत कराना रहा है। इसलिए हमने भारतीय शब्दावली तथा उनके अंग्रेजी समानकों को बहुत बार प्रयोग में लाया है जिससे पाठक दोनों से ही समान रूप में परिचित हो जाएँ।

ज्योतिषशास्त्र विज्ञानों का भी विज्ञान है क्योंकि यह अपना सम्बन्ध मनुष्य के जीवन के सभी क्षेत्रों के भविष्य उद्घाटन मात्र से ही नहीं रखता, अपितु उसके लिए आवश्यक भावी कार्य का मार्गदर्शन भी करता है। इस प्रकार, एक निपुण ज्योतिषशास्त्री न केवल अस्वस्थता का भविष्य बता सकता है, अपितु रोग का निर्धारण भी कर सकता है तथा साथ-ही-साथ यह भी बता सकता है कि कौन-सा भोजन व उपचार लाभदायक सिद्ध होगा। किसी प्रत्याशी के लिए परीक्षा में सफलता अथवा विफलता ही नहीं, अपितु निपुण ज्योतिषशास्त्री यह भी बता सकता है कि उस प्रत्याशी को शैक्षिक क्षेत्र में कौन-सा ज्ञान लाभदायक हो सकेगा। एक निपुण ज्योतिषी न केवल शत्रुओं द्वारा भावी आक्रमण का पता दे सकता है, अपितु यह भी बता सकता है कि अमुक-अमुक सेनापति शत्रु का पराभव करने में सफल हो सकते हैं। मानव की गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में यह बात व्यावहारिक है।

एक रोगी की जन्मपत्री एक बार हमें दिखायी गयी थी। उसकी पृष्ठ-भूमि अथवा रोग के सम्बन्ध में हमें कुछ भी नहीं बताया गया। हमने परामर्श दिया कि रोगी के रक्त की जाँच करा ली जाय। और उस अपरिचित आगन्तुक ने हमें सूचित किया कि रोगी अत्यधिक अतिश्वेतरक्ता से पीड़ित था।

हमने उस चकित आगन्तुक को समझाया कि ज्योतिष की दृष्टि में वह रोगी उस समय बुरे दिनों की अवधि में था, और चाहे वह जो भी चिकित्सा-पद्धति अपना रहा हो, उसे एक विशेष आहार लेना चाहिए तथा अतिरिक्त सावधानी के रूप में एक विशेष मणि धारण करनी चाहिए।

कुछ दिनों के पश्चात हमें उस रोगी के पास ले जाया गया। वह चालीस वर्ष से ऊपर की अवस्था का व्यक्ति था। हम यह देखकर दंग रह गए कि वह भलीभाँति चल-फिर रहा था और सामान्य रूप में स्वस्थ

व्यक्ति की भाँति भोजन कर रहा था। हमने उसे बताया कि जो चिकित्सा उसकी हो रही थी, हमें उसमें कोई आपत्ति न थी किन्तु भोजन-सम्बन्धी जो छूट उसके चिकित्सिक ने उसे दे रखी थी, वह हमारे ज्योतिषीय 'एक्स-रे' के अनुसार अत्यन्त आपत्तिजनक थी। हमने उसके लिए एक विस्तृत खाद्य-व्यवस्था लिख दी जिसमें चीनी, चाय, कहवा, तम्बाकू, रोटी, बिस्कुट, सूखी और तली हुई सामग्री को त्याग देने तथा केवल मधु, फल, साधारण पके हुए भोजन-पदार्थ, दूध, दही और मक्खन को ग्रहण करने के लिए कहा गया था।

ज्योतिष विद्या को केवल मात्र मन-बहलाव का साधन मानने के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की गम्भीरता न रखने वाले उस रोगी तथा उसके परिवार के अन्य सदस्यों ने उस परामर्श की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उनको पाँच महीने पहले ही बताया गया था कि आगामी १५ फरवरी तक रोगी को घोर संकट रहेगा, तथा इसके लिए उसके भोजन में आवश्यक परिवर्तन अभीष्ट था। उस परिवार ने अविचलित रूप से उस परामर्श की अवहेलना की, और दिसम्बर की एक रात्रि में, अकस्मात ही, रोगी को तीव्र ज्वर हो गया और कुछ घण्टों पश्चात उसका देहावसान हो गया।

व्यक्ति अथवा राज्य से सम्बन्ध रखने वाले सभी मामलों में ज्योतिषीय परामर्श के महत्व को सिद्ध करने के लिए यह पर्याप्त होना चाहिए। अतः किसी भी विद्या के विशेषज्ञों के साथ ही एक अच्छा ज्योतिषशास्त्री भी एक मूल्यवान परामर्शदाता तथा मानव-कार्यकलापों में निपुण व्यक्ति सिद्ध होना चाहिए।

ज्योतिष विद्या इतना प्राचीन विज्ञान है कि इसका मूल अतीत के अविस्मरणीय युगों में लुप्त हो गया है। चाहे हम कितने ही युगों पीछे का अध्ययन करें, हम ज्योतिष को विकसित विज्ञान के रूप में ही पाते हैं। इसके विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का पता लगाने में हम असफल ही रहते हैं। यही बात भारतीय ज्ञान की अन्य शाखाओं आयुर्वेद (चिकित्सा का भारतीय विज्ञान), नक्षत्र विद्या तथा गणितशास्त्र के सम्बन्ध में भी सत्य है।

भारतीय लोग विश्व-गुरु थे, जिस समय भारतीय-साम्राज्य एशिया[1] यूरोप तथा अन्य महाद्वीपों के विशाल भागों पर फैला हुआ था। आज जिस वर्तमान आज्ञाकारिता और उपेक्षा के स्तर के कारण ज्योतिष विद्या प्रच्छन्न-अस्तित्व ही रख सकी है, उसकी अपेक्षा इस विद्या के—विज्ञानों के विज्ञान—के अधिक सहानुभूतिपूर्ण तथा सूक्ष्म अध्ययन के लिए सरकार तथा जनता द्वारा प्रदत्त धनराशि के द्वारा सम्मान प्राप्त अकादमियों के माध्यम की आवश्यकता है।

इस पुस्तक का प्रयोजन ज्योतिष के अध्ययन को जनप्रिय बनाना तथा यह प्रदर्शित करना है कि इस रोचक तथा अत्यन्त उपयोगी विषय का मूलज्ञान मामान्य पाठक की समझ में भी सहज रूप में आ सकता है।

इस पुस्तक का अध्ययन कुछ पाठकों को पूर्णकालिक अथवा अंशकालिक व्यवसाय के रूप में ज्योतिष को ग्रहण करने में सहायक होगा। उपयोगी तथा मनोरंजन की वस्तु के रूप में भी ज्योतिष का अध्ययन किया जा सकता है।

सभी प्रकार, ज्योतिष के ज्ञाता को इसके ज्ञान से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को व्यापक रूप में देखने का दृष्टिकोण प्राप्त होता है। इस ज्ञान से व्यक्ति को महत्ता प्राप्त होती है, और वह घटनाओं का माहात्म्य अधिक योग्यता-पूर्वक ग्रहण कर सकता है। उसका दृष्टिकोण विश्वव्यापी हो जाता है।

हमें तो अध्ययन की इस विशाल शाखा का अत्यल्प, लेशमात्र-सा ही ज्ञान है किन्तु फिर भी हमें उन लोगों के कृतज्ञता भरे पत्रों की बाढ़-सी निरन्तर प्राप्त होती रहती है जिनकी जन्मकुण्डलियों के आधार पर उनके सम्बन्ध में घोषित भविष्यवाणियाँ, उनके अपने ही शब्दों में, पूर्णतः सत्य, खरी निकलती हैं। यदि यह ज्योतिष विज्ञान की वैधता को जनता द्वारा स्वीकार करना तथा मान्यता प्रदान करना नहीं है, तो यह और है भी क्या!

हमें प्राप्त पत्रों में से कुछ सम्बद्ध सामग्री नीचे दी जा रही है—

(१) 'प्रभा' पत्रिका के दीपावली-अंक में दी गयी आपकी भविष्यवाणी

---

१. श्री पु० ना० ओक की 'भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें' नामक पुस्तक में सविस्तार पढ़ें।

ने, जो मेरी अवस्था से पूर्णतया मेल खाती थी, इस विज्ञान में आपके ज्ञान के प्रति मेरा सम्मान द्वि-गुणित कर दिया है, मेरे हृदय में आपकी विद्वत्ता के लिए अत्यन्त आदर-भाव उत्पन्न हो रहे हैं। मेरे सम्मुख उपस्थित कुछ समस्याओं के सम्बन्ध में आपसे परामर्श करने के लिए मैं यह पत्र आपको लिख रहा हूँ।

ह०…प्रणमाणिक,
झाँसी

(२) कुछ दिन पूर्व मैंने आपको अपने चचेरे भाई के स्वास्थ्य खराब होने के सम्बन्ध में लिखा था। आपके द्वारा सुझाए गए उपायों से उसके स्वास्थ्य में पर्याप्त सुधार हुआ है।

ह० श्रीमती वि० पटवर्धन,
कल्याण

(३) मुझे आपका दिनांक ९ नवम्बर १९६५ का पत्र प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मेरे विगत और भावी जीवन के सम्बन्ध में मेरे प्रश्नों के युक्ति-युक्त विवेचन के लिए मैं आपका अत्यन्त ऋणी हूँ। मैं मानव के मार्गदर्शन के लिए अत्यन्त उपयोगिता के विज्ञान के रूप में ज्योतिष का पूर्ण विश्वास करता हूँ।

ह० बनछोड़,
धूलिया

(४) कुम्भराशि वालों के लिए समय-समय पर भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में दी गयीं आपकी भविष्यवाणियों का अक्षरशः मेरी अवस्था से मेल खा जाना वास्तव में अत्यन्त आश्चर्यकारी है। उसने मुझे ज्योतिष के वैज्ञानिक आधार के प्रति शतप्रतिशत विश्वास दिला दिया है। इस महान विज्ञान के विलक्षण गुरु-अधिकारी होने के रूप में आप कृपया मेरे सहस्राब्द साधुवाद स्वीकार करें!

ह० नरसिंह प्रसाद,
विल्ला पार्ले, बम्बई

(५) आपके (सात मास पूर्व के) पत्र दिनांक १९ अप्रैल, १९६१ की भविष्यवाणियाँ भी विलक्षण रूप में सही हुई हैं। *यद्यपि विभागीय*

परीक्षा में मुझे ६३ प्रतिशत अंक मिले थे, फिर भी मुझे पदोन्नत नहीं किया गया। मेरे परिवार के सभी सदस्य विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी भविष्यवाणियां पढ़ते हैं और उनकी वैधता, यथार्थता से प्रभावित होते हैं।

ह० अमींभवी,
कन्दिवली, बम्बई

(६) 'साहित्य-लक्ष्मी' पत्रिका के दीपावली सन् १९६२ के अंक में आपके द्वारा दी गयी भविष्यवाणी ने ज्योतिष विद्या में आपके गहन अध्ययन के प्रति मेरे हृदय में अत्यन्त श्रद्धाभाव उत्पन्न किया है।

ह० वि० साठे,
थाना

(७) आपकी भविष्यवाणी ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है। जैसा कि आपने पहले ही बताया था, पिछले दो-तीन महीनों ने मुझमें क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं।

सदाशिव,
गोरेगांव, बम्बई

(८) यश की थोड़ी-सी आंधी ने आपका शुभनाम और पता मुझ तक पहुंचा दिया है।

ह० सोलोमन जेब्बा,
लागोस, नाइजीरिया

(९) अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले आपके ज्योतिष सम्बन्धी लेख अत्यन्त गहन (वैज्ञानिक) विचारों की खान होते हैं। ऐसे लेख किसी को यदा-कदा ही मिलते हैं। 'साहित्य-लक्ष्मी' में प्रकाशित आपकी भविष्यवाणी मेरी स्थिति से पूर्णतया समरस है। तनिक भी तो अन्तर नहीं है।

ह० देशपाण्डे,
नासिक रोड

(१०) मैं स्वयं को अत्यन्त भाग्यशाली व्यक्ति समझता हूं कि अपने जीवन के संकट के दिनों में आपसे (ज्योतिषीय) परामर्श कर

लिया। आपका सम्पर्क आगामी सुखद दिनों का संकेतक है। आपकी भविष्यवाणियों ने मुझे कठिनाइयों का साहसपूर्वक मुकाबला करने और भविष्य के प्रति आशावान बने रहने का हृदय में बल-संचार किया है।

ह० भोसेकर,
बम्बई

(११) अभी पिछली २५ मार्च तक भी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी कि मुझे नर्सिंग-होम (उपचार-गृह) से घर वापिस जाने की अनुमति मिल जाएगी। किन्तु मैं यह पत्र आज १६ अप्रैल को अपने घर से आपकी सेवा में भेज रहा हूँ। जो तारीख आपने बतायी थी वह अक्षरशः सत्य, ठीक निकली।

ह० बी० पेंडसे,
नागपुर

(१२) मेरी पदोन्नति के सम्बन्ध में आपकी भविष्यवाणी सही निकली।

ह० काशी,
साजापुर

(१३) आपके द्वारा बताए गए 'मणि' का अच्छा प्रभाव हुआ। चिन्ता-जनक अवस्था में रोगी मेरी बहिन अब खतरे से बाहर है।

ह० कुमारी के० राहुरकर,
पूना

(१४) सितम्बर १९६१ : बहुत देरी से ही सही, जैसा कि आपने बताया था, मेरा विवाह अब हो गया है⋯मेरा अगला प्रश्न यह है कि मैं अब माँ कब बनूंगी⋯दिसम्बर १८ सन् १९६३ : आपकी भविष्यवाणी बिल्कुल ठीक थी⋯मुझे एक बालक की माँ होने का गर्व है⋯।

ह० महाजन,
श्रीरामपुर

(१५) आपने मेरा विगत जीवन बिल्कुल ठीक-ठीक बताया है।

एस० सलगावकर, शोलापुर

(१६) एक पत्रिका में आपकी लिखी हुई भविष्यवाणियाँ पढ़कर मैंने आपको पत्र लिखने का विचार किया।

श्रीमती एम० भावे,
धूलिया

(१७) आपके द्वारा घोषित भविष्य-कथन मान्य है।

ह० भिड़े,
खामगाँव

(१८) यह अप्रत्याशित पत्र प्राप्त कर आपको सम्भवतः आश्चर्य ही होगा। कुछ वर्ष पूर्व जब आप मांडवी में थे, तब आपने बताया था कि सन् १९६१ में मैं एक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होऊँगी। ऐसी सफलता अब मुझे (सन् १९६१ के ही) इस वर्ष की बी० एड० परीक्षा में प्राप्त हुई है।

श्रीमती एस० मोरे

(१९) जैसा आपने बताया था, मेरे पति की पदोन्नति हो गयी है। उन्होंने अपने धन्यवाद, अपनी शुभ-कामनाएँ और कृतज्ञताएँ आप तक पहुँचा देने का कार्यभार मुझे सौंपा है।

श्रीमती के० गुप्ता,
बम्बई

(२०) आपकी भविष्यवाणियाँ मैं बहुत रुचि के साथ पढ़ती हूँ। मुझे सर्वाधिक प्रभावित करने वाली आपकी विशिष्टता, पाठकों के दुःखमय भविष्य की लीपा-पोती करने के यत्न की अपेक्षा उनको उनका कटु सत्य भी अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक तथा सन्नद्धतापूर्वक बता देना है।

कुमारी एस० महाजन,
बम्बई

(२१) आपकी भविष्यवाणियों की यथार्थता का मेरी परिस्थितियों से प्रत्येक विवरण में मेल खा जाना आँखें खोलने वाला है। ज्योतिष के वैज्ञानिक आधार को मैं पूरी तरह से शिरोधार्य करता हूँ।

ह० तकले, नासिक

(२२) सन् १९६० की 'शशि' पत्रिका में ज्योतिष की वैज्ञानिक व्याख्या ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। कृपया भविष्य के बारे में मेरे कुछ प्रश्नों का और समाधान कर दीजिए।

ह० प्रोफेसर पोतदार,
माहुली

(२३) जैसा आपने भविष्य बताया था, मुझे उसी प्रकार की नौकरी मिल गई है।

ह० पाटिल,
बम्बई

(२४) ज्योतिष के वैज्ञानिक आधार का आपका विशद विवेचन अत्यन्त हृदयग्राही है। इतनी स्पष्ट और अत्यधिक तर्कसंगत व्याख्या मैंने आज तक नहीं देखी। ज्योतिष अत्यन्त बदनाम तथा उपेक्षित विज्ञान है किन्तु मुझे इसकी उपयोगिता में पूर्ण विश्वास है।

कुमारी सुलोचना देसाई
बम्बई

ज्योतिषशास्त्रियों द्वारा भविष्यवाणियों की सत्यता और यथार्थता का हृदय से, मुक्तकंठ से गुणगान करने वाले, युगों से अनवरत चले आ रहे ऐसे प्रशस्ति-पत्र ज्योतिष के कटुतम आलोचकों को भी शान्त करने के लिए तथा इस अध्ययन की महान शाखा के सम्बन्ध में उनको अपने पूर्वाग्रह की युक्तियुक्तता के बारे में विचार करने की प्रेरणा देने के लिए पर्याप्त होने चाहिए।

१

ज्योतिष की वैधता

इस विशाल विश्व-प्रांगण के अन्य विषयों के समान ही ज्योतिषशास्त्र के भी अपने समर्थक तथा विरोधी हैं। कुछ लोग निश्चय नहीं कर पाते कि निःसारता, निरर्थकता में अभ्यास करने के लिए ज्योतिष की निन्दा की जाय अथवा उपयोगी विज्ञान के रूप में इसका गुणगान किया जाय। कुछ अन्य लोग ऐसे भी हैं जो ज्योतिष को उपयोगी विज्ञान होना विश्वास करते हैं किन्तु जो भिन्न-भिन्न ज्योतिषियों में अपनी आस्था समाप्त कर चुके हैं क्योंकि उनकी भविष्यवाणियाँ उन व्यक्तियों को सन्तोष प्रदान नहीं कर सकीं। इनमें से जिस भी किसी वर्ग से प्रत्येक व्यक्ति का सम्बन्ध हो, प्रत्येक मानव पसन्द करेगा कि उसको ज्योतिष के रहस्यों की जानकारी मिले, वह इसके नियमों को समझे, किसी बात के सम्बन्ध में ज्योतिषियों का परस्पर विचार-विमर्श हृदयंगम कर सके, स्वयं यह निश्चय कर सके कि क्या सचमुच ज्योतिष एक विज्ञान है अथवा कम से कम, स्वयं अपनी या अपने प्रिय अथवा सम्बन्धियों की विक्षुब्धावस्था के दिनों में ज्योतिष के स्व-ज्ञान से कुछ मार्गदर्शन अथवा सान्त्वना तो प्राप्त कर ही सके।

विषय-विशेष के अध्ययन को प्रारम्भ करने से पूर्व विद्यार्थी के लिए यह बात सहायक होगी कि वह अपनी पूर्ण आस्था विषय में निर्धारित करे तथा ज्योतिष के अध्ययन के समय प्रायः उठाए जाने वाली सामान्य आपत्तियों के सुस्पष्ट उत्तर प्राप्त करे। यह भी सम्भव है कि उन प्रश्नों में से कुछ प्रश्न स्वयं उसके ही मस्तिष्क में प्रच्छन्न रूप में उपस्थित हों तथा

ज्योतिष के विषय में उसका अपना विश्वास अचेतन रूप में झकझोर रहे हों।

इससे हम ज्योतिष के नियमों की व्याख्या करने में मस्तिष्क की महत्ता पर पहुँच जाते हैं। पुण्यात्मा, सत्याचरण करने वाला, ज्योतिष में पूर्ण विश्वास करने वाला, सादा जीवन-स्वभावी, शान्त, स्थिर बुद्धि तथा मानसिक रूप में सन्तुलित व्यक्ति घटनाओं का भविष्य, विभ्रान्त, अप्रामाणिक अतिव्ययी, दम्भी, तथा ज्योतिष में चल-विश्वास रखने वाले व्यक्ति की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ तथा सही रूप में बता सकेगा।

• इस पर कोई व्यक्ति यह भी पूछ सकता है कि अन्त में ज्योतिष क्या वस्तुपरक है अथवा व्यक्तिपरक है ? अर्थात् क्या इसके नियमों-मात्र का अध्ययन कर लेना भविष्यवाणियाँ करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जैसा कि कोई भी व्यक्ति गणित के नियमों का अध्ययन करने के पश्चात कोई-सा भी सवाल हल कर सकता है ?

उत्तर यह है कि मानसिक पवित्रता तथा मनःशान्ति का स्वभाव बना लेना सही ज्योतिषीय भविष्यवाणियों के कथन में सहायक होता है !

किन्तु ज्योतिष के आलोचक केवल ज्योतिष की भविष्यवाणियों के व्यक्तिपरक होने के कारण इसकी वैधता को स्वीकार नहीं करेंगे। उदाहरण के लिए, क्या यही बात चिकित्सा-विज्ञान के सम्बन्ध में नहीं कही जा सकती है ? क्या एक ही रोगी के लिए चिकित्सकगण भिन्न-भिन्न औषधि नहीं बताते, यद्यपि उन लोगों ने एक ही चिकित्सा-पद्धति का अध्ययन समान रूप में किया होता है, तथा उनकी सफलता भी भिन्न-भिन्न मात्रा में होती है ? क्या एक रोग का निदान और उपचार करने में वह चिकित्सक अधिक सफल सिद्ध नहीं होगा जिसका मस्तिष्क स्पष्ट, शान्त, स्थिर तथा सन्तुलित है ? फिर, यही बात एक ज्योतिषी के सम्बन्ध में कहने में क्या असत्य है ?

ज्योतिष किसी भी अन्य विज्ञान की भाँति ही सुनिश्चित तथा यथार्थ है। कम-से-कम एक बार तो यह, भारत में, इतनी यथार्थता तथा भविष्य-कथन की अद्वितीयता पर पहुँचा गया था कि 'नक्षत्रों' की विभिन्न परिवर्तित अथवा एकत्र स्थितियों में उत्पन्न हुए अथवा जन्म लेने वाले सभी मानवों

का भविष्य अतिसूक्ष्म रूप से पहले से ही लिख लिया गया था तथा भृगु-संहिता, सूर्य-सिद्धान्त, नारद-नाडी और शुक्र-नाडी के विभिन्न नामों से पुकारे जाने भविष्यवाणियों के बृहद् संग्रहों में संचित किया गया था। युगों के साथ-साथ ताड़-पत्रों पर लिखा यह वाङ्मय-अभिलेख अपहरण किया गया, लुप्त भी हुआ, फेंका भी गया, जला भी तथापि सम्पूर्ण भारत में अनेक व्यक्तियों के अधिकार में आकर इधर-उधर सर्वत्र व्याप्त हो गया। आज भी हम प्रतिदिन देखते हैं कि ऐसे भविष्य-कथन वाले अभिलेखों का अध्ययन करने वाले आगन्तुक व्यक्ति इन संग्रहों में अपना नाम, अपना घरेलू-नाम तथा अपने साथ उन संग्राहकों के पास जाने वालों के सम्बन्ध तथा वहाँ जाने की आयु आदि लिखी देखकर आज भी दाँतों तले अँगुली दबाकर रह जाते हैं। आश्चर्य से उनकी आँखें खुली की खुली रह जाती हैं।

यह पूर्णतः सम्भव है कि उसमें उल्लिखित कुछ बातें ठीक, संगत न हों, किन्तु इसका कारण यह है कि इन अभिलेखों का सूत्र टूट गया है तथा अनेक सम्पर्क तन्तु अनुपलब्ध हैं।

प्राचीन भारतीय ज्योतिषविद् सन्तों और द्रष्टाओं ने 'नक्षत्रों, ग्रहों' के किसी भी संचयन और क्रम-वस्तार के अन्तर्गत २४ घंटों के चक्र में उत्पन्न होने वाले सभी मानवों की जीवनावधियों में घटित होने वाली सभी घटनाओं को गणितशास्त्र की दृष्टि से हल कर लिया था। परिणामस्वरूप-लब्ध अभिलेख झिलमिलदार पर्दे की विशिष्टता के साझीदार की भाँति हो गया जिसमें 'ग्रहों' के अविभेद्य-सामंजस्य में, किन्तु पृथक्-पृथक् अत्यल्प क्षणों के अन्तर में, उत्पन्न दो मानवों का जीवन, कुछ अति सूक्ष्म भेदों के अतिरिक्त, प्रायः एक-सा ही रहा। इस प्रकार, ग्रहों की समानुरूपता और जन्म-समय में ज्यों-ज्यों अन्तर बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों हमें देशभक्त व देशद्रोही, सन्त व पापी, शूरवीर व कायर, परमसत्यवादी व झूठ बोलने वाले, महान प्रतिभाशाली व विक्षिप्त बुद्धिवाले, और परम उद्यमी व्यक्ति व घोर आलसी जैसे मानवों की विविधताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

मानव-ज्ञान, ज्योतिष तथा संस्कृति की यह एक महान सेवा होगी यदि वे सभी भविष्यवाणी वाले अभिलेख (अनिवार्यतः भी) संग्रहीत, संकलित,

वर्गीकृत और मुद्रित कर दिए जाएं। प्रत्येक का मुद्रण हो जाने के पश्चात मूल-अभिलेख उसके स्वामी को वापिस दे देना चाहिए। भविष्य बताने वाले इन अभिलेखों के पूर्ण मुद्रित संग्रहों को विश्वभर के प्रसिद्ध पुस्तकालयों के माध्यम से समस्त जनता को सुलभ कर देने से न केवल इस विज्ञान में अभि-रुचि रखने वाले लोगों को मानव का भविष्य बता सकने वाली इस अनुपम ज्ञान-धारा का रसपान करना सरल होगा अपितु इस प्राचीन परम्परागत ज्ञान में वैशिष्ट्य रखने वाले कुछ लोगों द्वारा निर्धनों का शोषण करना भी रुक जाएगा। एक अतिरिक्त तथा अधिक महत्वपूर्ण लाभ यह भी होगा कि यह कार्य भावी अन्वेषकों को यह पता लगाने में भी सहायता प्रदान करेगा कि उन भविष्यवाणियों की घोषणाओं का आकलन किस प्रकार किया गया था।

स्पष्टतः, उन प्राचीन भविष्य कथनों के अभिलेखों में उतनी ही सरल तथा सुनिश्चित प्रणाली प्रयोग में लायी गयी है, जितनी बीजगणितीय संख्याओं को उनके खण्ड-प्रतिखण्ड के द्वारा अन्तिम एक-एक अंश तक हल किया जा सकता है।

ज्योतिष का उपहास करने वालों को इस सब व्याख्या से यह तो मान ही लेना चाहिए कि किसी भी अन्य विज्ञान की ही तरह ज्योतिष भी एक विज्ञान है। किन्तु, तनिक और सहानुभूतिपूर्वक तथा सूक्ष्मतापूर्वक देखने पर यह सिद्ध हो जायगा कि विस्तार, उपयोगिता तथा यथार्थता में अन्य विभिन्न विज्ञानों से यह विद्या, यह ज्योतिष विज्ञान अधिक श्रेष्ठ है।

चूंकि चिकित्साशास्त्र को अतिश्रेष्ठ विज्ञान होने का श्रेय प्राप्त है, इसलिए आइए हम इसकी तुलना ज्योतिष-शास्त्र से करें। जन-मानस में चिकित्सा-शास्त्र की अति-श्रेष्ठता इस कारण भी है कि यह शास्त्र शारीरिक पीड़ा को तुरन्त कम कर देने में सक्षम है। किन्तु चिकित्सा-शास्त्र तथा ज्योतिष-शास्त्र के मध्य निष्पक्ष तथा प्रामाणिक तुलना निश्चित रूप में सिद्ध कर देगी कि यथार्थता की सक्षमता तथा सर्वव्यापक विस्तृति में ज्योतिष-शास्त्र चिकित्साशास्त्र से बहुत श्रेष्ठ है।

चिकित्सा और ज्योतिष, दोनों शास्त्र ही मानव-पीड़ाओं से सम्बन्ध रखते हैं किन्तु जबकि चिकित्साशास्त्र पूर्णरूप में मानव-रोग के निदान

तथा उपचार से ही सम्बन्ध रखता है, ज्योतिषशास्त्र की जांच की व्यापक परिधि में मानव-जीवन का प्रत्येक पक्ष समाविष्ट होता है। अतः, व्यापकता की दृष्टि से, चिकित्साशास्त्र की तुलना ज्योतिषशास्त्र के अत्यल्प अंश से ही की जा सकती है।

चिकित्साशास्त्र कभी भी यह भविष्यकथन नहीं कर सकता कि किसी स्वस्थ व्यक्ति को कब और कौन-सा रोग हो जाने की सम्भावना है। ज्योतिषशास्त्र जन्मकाल की घड़ी में ही विलक्षण रूप में यह सब सत्य-सत्य बता सकता है।

एक रोगी का उपचार करने वाला कोई भी चिकित्सक उस समय को पहले से ही नहीं बता सकता जबकि वह रोगी ठीक हो जाएगा, चाहे वह चिकित्सक प्रतिदिन रोगी को देखता हो, उसकी शारीरिक परीक्षा करता हो तथा उपचार भी करता हो। इसके विपरीत एक ज्योतिषी, जिसने रोगी को कभी भी न देखा हो और उस रोगी का उपचार किए जाने से भी जो पूर्णतः अनभिज्ञ हो, विलक्षण यथार्थतापूर्वक भविष्यवाणी कर सकता है कि रोगी व्यक्ति अमुक-अमुक तिथि तक पूर्णतः निरोगी हो जाएगा।

विश्वभर के सभी चिकित्सक मिलकर भी, सभी सर्वोत्तम उपकरणों तथा रासायनिकों के होते हुए भी किसी मानव को, सदैव के लिए अमर बना देना तो दूर रहा, असाधारण रूप में दीर्घ जीवन भी प्रदान नहीं कर पाए हैं, अपने आत्मश्लाघी विज्ञान के बुद्धि-चातुर्य की वे चाहे जितनी भी डींग मारें। चिकित्सीय-उपचार के होते हुए भी अथवा कदाचित इसी के कारण प्रत्येक व्यक्ति मानव-जीवन के १०० वर्षीय कालखण्ड से भी बहुत पहले ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि वे लोग, जो असाधारण रूप में दीर्घ-जीवी होते हैं, प्रमुख रूप में ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन्होंने न्यूनतम अथवा नहीं के बराबर ही चिकित्सीय-उपचार करवाया है।

चिकित्सीय-नैपुण्य की इस अवांछनीय उपलब्धि के विपरीत तो साधारण ज्योतिषी लोग भी प्रतिदिन अनेकों सत्य भविष्यवाणियां करने के कारण गर्व से सिर ऊँचा कर सकते हैं। ऐसे असंख्य व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने दैनंदिन जीवन में पाया है कि ज्योतिषियों ने उनका भूतकाल व भावी जीवन अक्षरशः सत्य बताया है।

यह ठीक है कि सहस्रों भविष्यवाणियां गलत सिद्ध हो रही हों, किन्तु ठीक-सही निकलने वाली सैंकड़ों के सम्बन्ध में क्या कहते हो? इसकी तुलना एक चिकित्सक की उपलब्धियों से करो। उत्तमोत्तम सुधार प्रणालियों का स्वामी होने पर भी 'जुखाम' जैसे अति सामान्य रोग का उपचार किस निश्चित अवधि के बीच पूर्ण हो जायगा, आज कोई भी चिकित्सक यह घोषणा नहीं कर सकता, इसे ठीक करने की प्रतिभूति (गारंटी) नहीं दे सकता। और फिर भी, चिकित्सकों को समाज का प्रतिष्ठित तथा सम्माननीय सदस्य समझा जाता है और ज्योतिषियों को ढोंगी और नक्काल, फरेबी कहकर उनकी हेठी की जाती है।

सम्भव है कि 'जाली' अथवा अपरिपक्व ज्योतिषी हों किन्तु मिथ्या-चिकित्सक भी तो हैं। जहां तक अपरिपक्वता का सम्बन्ध है, कौन-सी ज्ञान शाखा ऐसी है जिसमें परिपूर्ण होने का दावा मानव कर सकता हो? क्या प्रमाणित और पंजीकृत चिकित्सकों द्वारा पूर्ण उपचार करने पर भी मानव रोग के शिकार तथा काल-कवलित नहीं होते? क्या समान न्याय के आधार पर उन चिकित्सकों को भी मिथ्या चिकित्सक नहीं कहना चाहिए?

अनेक बार ज्योतिषी की भविष्यवाणी गलत हो जाती है, जिसमें उसका कोई दोष नहीं होता। उदाहरण के लिए, भविष्य जानने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति अनेक बार अहितकर उत्तर सहन नहीं करता। वह प्रलोभन तथा चापलूसी द्वारा ज्योतिषी से हितकर भविष्य-कथन करने का आग्रह करता है। ऐसे अवसरों पर निर्धन ज्योतिषी के पास अति दुराग्रही जिज्ञासु को यह कहकर अपना पीछा छुड़ाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं रहता कि प्रश्नों के उत्तर 'हां' में हैं। कई बार यथार्थ भविष्य बताना भी वांछनीय नहीं होता। ऐसे मामलों में, व्यवहार-निपुण ज्योतिषी एक अनिश्चित और अतिसूक्ष्म उत्तर देना ही श्रेयस्कर समझता है।

अनेक भविष्यवाणियां इसलिए भी गलत हो जाती हैं, क्योंकि ज्योतिषी को अपूर्ण, अशुद्ध जन्म-आंकड़े दिये जाते हैं।

कुछ अन्य भविष्यवाणियों के गलत हो जाने का कारण यह भी हो सकता है कि जिस जन्मकुण्डली को देखने का कार्य उसे सौंपा गया हो, उस समय उसकी चित्तवृत्ति ठीक न हो, वह चिन्तित हो—अथवा विषय पर

दत्तचित्त होने का समय व धैर्य उसे उपलब्ध न हो।

यह स्वीकार्य है कि ज्योतिषी की अपरिपक्वता अथवा विषय पर पूर्ण अधिकार के अभाव में अनेक भविष्यवाणियाँ गलत निकल जाती हैं किन्तु यह दोष ज्योतिषविज्ञान का तो नहीं है। इस प्रकार तो हमारे पास अगणित चिकित्सक भी हैं जिनमें से बहुत थोड़े ही प्रसिद्ध कहे जा सकते हैं। उनके भी बहुत सारे रोगी होते हैं जो, उनके द्वारा उपचार किए जाने के कारण अथवा उसके उपरान्त भी अस्वस्थ होते जाते हैं, मर भी जाते हैं। क्या ऐसे चिकित्सकों को हम पाखण्डी कहते हैं अथवा उनके विज्ञान को पाखण्ड कहकर पुकारते हैं ? ज्योतिषशास्त्र चिकित्साशास्त्र की अपेक्षा अत्यधिक यथार्थ विज्ञान है क्योंकि जबकि सर्वाधिक सामान्य पीड़ा के उपचार अथवा पीड़ा-निवृत्ति की कालावधि के सम्बन्ध में सर्वाधिक सुविख्यात चिकित्सक भी सुनिश्चित होकर कुछ कह नहीं सकता, तभी ज्योतिष का प्राथमिक ज्ञान भी अनेक बार किसी रोगी के निरोगी होने की अवधि की घोषणा करने के लिए पर्याप्त होता है। अन्य घटनाओं को भी विलक्षण सुनिश्चितता से पहले ही ज्योतिष द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

ज्योतिष के विरोधियों के शिविर में अधिकांशतः वे बहिर्मुखी व्यक्ति होते हैं जिनको जीवन में किसी विफलता का मुख नहीं देखना पड़ा, अपितु उनको एक पर एक सफलता मिलती ही गई। एक सफलता से दूसरी सफलता पर पहुँचने के कारण ये लोग रुचिपूर्वक कल्पना करते हैं कि यह उनकी दूरदर्शिता एवं भावी जीवन की सुविचारित योजना ही थी कि जिनके कारण उनकी सफलता एक-समान होती ही रही है। यह केवल भ्रम-मात्र है। यदि उनके जीवन सफल हुए हैं, तो यह उनके ग्रहों के कारण ही है।

यदि ये लोग आत्म-प्रशंसा के स्थान पर अपना थोड़ा-सा समय अपने चहुँ ओर विस्तृत विश्व पर विचार करने में लगाएँ तो उनको दिखाई देगा कि मानव जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग इस या उस मनस्ताप से पीड़ित है। वे सब-के-सब लोग तो अदूरदर्शी तथा अविवेकी नहीं हो सकते। शुद्ध भावनाओं पर आशाओं को लेकर, सफलता व सुख के लिए, लगभग अप-वाद-रहित होकर ही, उनमें से प्रत्येक व्यक्ति ने कठोर श्रम किया है।

केवल मात्र सुख के लिए ही किए गए सामूहिक प्रयत्नों का परिणाम चहुँ ओर पीड़ा और निराशा के अतिरिक्त और कुछ न देखकर मानव स्वाभाविक रूप में ही दुःखी और चिन्तित होता है। तब वह स्वतः उन कारणों की ओर आकृष्ट होता है जिनसे मनोभावना के प्रतिकूल फल की प्राप्ति हुई है। युगों से चली आ रही उन कारणों की खोज के परिणामस्वरूप हमें वह उपलब्धि हुई है जिसे हम 'प्रारब्ध' कहते हैं। भाग्य से भारतीय ऋषियों और द्रष्टाओं ने यह पता लगाने के साथ-साथ कि सभी जीवधारियों और राष्ट्रों का जीवन एक पूर्व-निर्धारित मार्ग पर चलता है, वह पद्धति भी खोज निकाली जिससे उस प्रारब्ध का भविष्यकथन किया जा सके। वह पद्धति, वह प्रणाली, वह विद्या ज्योतिष कहलाती है। यह विद्या सभी मानवों और राष्ट्रों के अज्ञात भूत, वर्तमान और भविष्य में दृष्टिपात करने में सक्षमता प्रदान करती है।

२
प्रारब्ध

भारतीय महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को सम्बोधित एक पत्र में सुविख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन ने एक बार लिखा था : "यदि चन्द्रमा मस्तिष्कधारी होता तो सोचता कि सूर्य की परिक्रमा यह स्वतः की स्वेच्छा से ही कर रहा है।" कितनी युक्तियुक्ततापूर्वक उस महान वैज्ञानिक ने यह बात समझायी है कि चन्द्रमा की काया से अत्यन्त क्षीण अंश होने वाले मनुष्य को तो यह कल्पना करने का प्रश्न ही नहीं है कि वह अपनी गतिविधियों का स्वयं ही स्वामी है।

डाक्टर आइन्सटीन ने चन्द्रमा का उदाहरण उद्धृत कर मनुष्य के इस दम्भपूर्ण भ्रम का युक्तिपूर्वक समापन कर दिया है कि वह मनुष्य स्वयं के भविष्य का निर्माता है। डाक्टर आइन्सटीन का पर्यवेक्षण मानव पर सब प्रकार खरा उतरता है। क्योंकि मानवयन्त्र ईश्वरप्रदत्त अनुभूतिशील मस्तिष्क से युक्त है तथा आत्म-प्रशंसा के लिए उसे मुख मिला हुआ है, इसलिए मनुष्य भ्रमित होता है और दावा करता है कि उसका भविष्य वैसा ही है जैसा वह स्वयं निर्माण करता है। थोड़ा-सा प्रकाश इस दावे का थोथापन सिद्ध कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति का भविष्य विगत काल अथवा वर्तमान पर आधारित रहता है, और प्रत्येक व्यक्ति प्रायः अपने विगत कार्यों पर खेद प्रकट करता है तथा यह इच्छा भी व्यक्त करता है कि अच्छा होता यदि वह उस कार्य को नहीं करता। यदि अपनी महत्वाकांक्षाओं और उपलब्ध मनःशक्ति के होते हुए भी मानव अपने विगतकाल को अपनी सुखद

आशानुरूप नहीं बना सका तो इसकी क्या प्रतिभूति (गारन्टी) है कि वह भविष्य को भी अपने अनुरूप ढाल सकेगा, क्योंकि आज हम जिसको 'भविष्य' कहते हैं वही कुछ दिनों बाद भूतकाल हो जाता है।

तत्कालीन यूरोप का आतंक, महान फ्रांसीसी योद्धा नेपोलियन सगर्व, स्वयं को 'प्रारब्ध का शिशु' कहा करता था। अपने सेनापतियों को चुनते समय वह अन्य गुणों के अतिरिक्त, यह देखने को उत्सुक रहा करता था कि उन लोगों में से कौन-कौन-से लोग 'भाग्यशाली' हैं।

बम्बई में एक सरकारीभवन में स्फटिक-फलक पर भारत के विद्वान-देशभक्त लोकमान्य तिलक के स्मरणीय शब्द उत्कीर्ण हैं। जब उनको ६ वर्ष का कठोर सश्रम कारावास तथा देश-निकाला दिया गया था, तो उन्होंने उद्घोष किया था कि "मानवों की भाग्य-नियन्ता उस 'परमशक्ति' की इच्छा यदि यही है कि भारत की स्वतन्त्रता मेरी यातनाओं के फलस्वरूप ही मिले, तो मैं उन परिणामों को भोगने के लिए तैयार हूँ।"

यह सिद्ध करने के लिए कि विश्व के महानतम विचारकों, उद्धारकों और शूरवीरों में से अनेकों ने अपनी मानसिक अथवा शारीरिक शूरता को प्रारब्ध की कर्तृत्वशक्ति का सुफल ही माना है, असंख्य उदाहरण दिए जा सकते हैं। मानव इतिहास में, अनेकों ज्योतिषियों ने अपनी उल्लेखनीय भविष्यवाणियों द्वारा पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत किया है कि प्रारब्ध कल्पना की कोई मानसी सृष्टिमात्र नहीं है।

ज्योतिष के आलोचक प्रायः उन विसंगतियों, असंगतियों तथा परस्पर विरोधी बातों की ओर संकेत करते हैं जो मानव-मस्तिष्क को उसके कार्य-कलापों में प्रारब्ध की सार्वभौमसत्ता स्वीकार करने में असमंजस में डाल देते हैं। आलोचक पूछते हैं कि सम्पूर्ण धार्मिक तथा शैक्षिक ग्रन्थों में मानव को अपना आचरण श्रेष्ठ बनाने की शिक्षा देने वाले सभी शब्द, सभी उपदेश निष्प्रयोजन हैं क्या ? इसके उत्तर में यह स्पष्ट किया जाना उचित है कि न केवल ज्योतिष अपितु मानव कार्यकलापों की सम्पूर्ण परिधि ही ऐसी है जो इसी प्रकार की अथवा और भी घोर असंगतियों तथा परस्पर विरोधी बातों से उलझी हुई गूढ़ पहेली बनी हुई है। मनुष्य का सांसारिक अस्तित्व एक ऐसा उलझा हुआ जाल है कि वह जिस भी किसी

दिशा में मुड़ता है, अपने अत्यल्प भौमिक तर्क को इस योग्य नहीं पाता कि विशाल ब्रह्माण्ड-सम्बन्धी जटिलताओं से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं के अन्तिम उत्तर उसे मिल सकें। वह सापेक्ष तथा अत्यन्त संकुचित अस्तित्व रखता है, और इसलिए उसके उत्तर भी सापेक्ष रूप में वैध होते हैं। प्रारब्ध अथवा प्रारब्ध की मीमांसा चाहे रहस्य ही हो, किन्तु इसी प्रकार तो मानव-जीवन का प्रत्येक पक्ष रहस्यमय ही है। क्या मनुष्य को कभी इस प्रश्न का उत्तर मिला है कि मनुष्य किस प्रकार अज्ञात शून्य से पृथ्वी पर पदार्पण करता है और फिर उसी अज्ञात शून्य में विलुप्त हो जाता है ? जब ज्योतिष के आलोचक यह प्रश्न प्रस्तुत करते हैं कि यदि मनुष्य का प्रत्येक कार्य ही प्रारब्ध द्वारा पूर्व-निर्धारित है तो मनुष्य को कोई प्रयत्न करना नहीं चाहिए और न ही वह प्रयत्न करेगा ही, तब उनको यह भी विचार करना चाहिए कि उतनी ही रहस्यमयतापूर्वक, मनुष्य अन्य लोगों से व्यवहार करते समय आग्रह व लोभ भी करता है यद्यपि वह भली-भाँति जानता है कि कुछ वर्षों में उसकी मृत्यु के पश्चात उसके सभी प्रयत्न निरर्थक हो जाएँगे। ऐसे प्रश्नों का उत्तर यह है कि यह संसार अत्यन्त विचित्र रहस्य है और मनुष्य को इन प्रत्यक्ष असंगतियों, विसंगतियों तथा परस्पर विरोधी बातों के होते हुए भी जीवन-यापन करना होता है।

और भी बहुत सारे रहस्य हैं जो सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त हैं। जीवन से क्षुब्ध तथा इस संसार को त्याग देने का इच्छुक व्यक्ति स्वयं को पृथ्वी से आकृष्ट पाता है, और पृथ्वी के छोर से अज्ञात शून्य में विलुप्त हो जाने के लिए छलाँग लगाने में स्वयं को अक्षम पाता है। इस लौकिक-यात्रा पर वह जिस 'गहन' क्षेत्र से भेजा गया था, उसका ज्ञान उससे गुप्त ही रखा रह जाता है। यदि उसे किसी कार्य के करने की स्वतन्त्रता होती, तो उसे स्थायी सुरक्षा के लिए इस पृथ्वी से दूर जा सकने की क्षमता प्राप्त होती। अन्य रहस्य वायु के अस्तित्व का है, जो भौतिक संसार के सभी नियमों की अवहेलना करता है। चाहे आप जितनी भी वायु श्वास द्वारा खींच लें तथा एकत्र कर लें, यह कभी कम नहीं होती। और न ही यह कभी मात्रा से अधिक प्रवाहित होने लगती है चाहे इसको संग्रहीत करने वाले सभी सिलेण्डर तथा हवादार टायर क्यों न खोल दिए जाएँ। इसी प्रकार मानव-

रक्त तथा वीर्य भी अपना धरातल समान ही बनाए रहते हैं, चाहे उनका निःस्रण न हो। और जबकि वे निःसृत नहीं होते, तब भी उफनकर प्रवाहित नहीं हो जाते। नाखून और केश काटे जाने पर तो निरन्तर बढ़ते रहते हैं किन्तु यदि बिना काटे ही रहने दिए जाएँ तो उनकी बढ़ोत्तरी एक विशेष स्थिति तक पहुँच कर रुक जाती है। निद्रा एक अन्य रहस्य है। वह कौन-सी अप्रतिकार्य शक्ति है जो सभी जीवधारियों को एक सम्मोहनशील निस्तब्धता में बरबस धकेल देती है।

इन शाश्वत समस्याओं के समाधानात्मक उत्तर मानव को न कभी मिले हैं और न ही कभी मिलेंगे। जीवन को जैसा यह उपलब्ध है उसी प्रकार व्यतीत करने और पूर्वविधि-निर्दिष्ट गतिविधियों को यन्त्रवत चलाते रहने के अतिरिक्त मनुष्य को और कोई विकल्प नहीं है; वह स्वयं को निरन्तर भ्रमित करता है कि उसकी समस्त गतिविधियाँ उसी की स्वेच्छा से परि-चालित हैं।

यहाँ पाठक को यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य की प्रमुख आन्तरिक चेष्टाएँ प्रत्यक्ष रूप में अस्वैच्छिक हैं। हृदय का स्पन्दन, पलकों की झपकन, नाड़ी की धड़कन और पाचन-शक्ति का कार्य करना सभी कुछ तो अज्ञात, अदृश्य शक्ति से परिचालित हो रहा है। वह शक्ति प्रारब्ध है।

यह अनुभव कर लेने पर कि मनुष्य की प्रमुख आन्तरिक पद्धतियाँ अति-प्राकृतिक शक्ति से ऊर्जा प्राप्त करती हैं, पाठक कदाचित यह भी स्वीकार करने को तैयार होगा कि उसकी समरूप बाह्य गतिविधियाँ (चेष्टाएँ) भी अनिवार्यतः उसी अलौकिक शक्ति से प्रशासित होंगी ही, जिसे हम प्रारब्ध कहते हैं। क्योंकि, ये तो आन्तरिक शारीरिक चेष्टाएँ ही हैं, जो अन्ततोगत्वा मनुष्य की बाह्य चेष्टाओं के लिए उत्तरदायी हैं। मनुष्य के हृदय धड़कने के प्रकार, उसकी पाचनशक्ति की क्रियाशीलता, उसके मस्तिष्क में उपजने वाले विचारों के प्रकार ही तो अन्त में मनुष्य की शारीरिक ऊर्जा और चेष्टाओं का आधार बनते हैं। इस प्रकार, मनुष्य के आन्तरिक यन्त्रों के स्वेच्छतया कार्य करने के तर्क से भी हम यही पाते हैं कि उसके बाह्य कार्य भी उसी अभिनय के मूर्तरूप हैं जिसके लिए उसकी आत्मा इस लौकिक-यात्रा पर भेजी गयी है।

जब तक मनुष्य अपनी दृष्टि केवल अपने तक ही सीमित रखता है, तब तक ही वह इस भ्रम में रहता है कि अपने चहुँ ओर के संसार का वह स्वयं अधिपति है। परिपूर्णरूप में संसार का विशद-विचार उसकी कल्पना को असत्य सिद्ध करने वाले अनेक तर्क प्रस्तुत कर देगा।

एक पुरुष अथवा महिला सहित प्रत्येक जीवधारी दैवी रासायनिक सूत्र की उत्पत्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हमारे द्वारा उत्पन्न की गयीं सरलतम वस्तुएँ भी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के परिणाम हैं। तब, यह निष्कर्ष निकालना क्या कोई गलत बात होगी कि मानव भी एक दैवी सूत्र की उत्पत्ति है। वह सूत्र जन्मकुण्डली में प्रतिबिम्बित होता है। विक्षिप्त व्यक्ति के चरम मामले पर विचार कीजिए। प्रत्यक्षत: उसका एक मस्तिष्क है, उसका विचार करने का अपना एक ढंग है, और उसका एक व्याख्यात्मक चेहरा है जो प्रत्येक संचारी भाव और भावना को गम्भीरतापूर्वक प्रतिबिम्बित करता है। तथापि, उसका मस्तिष्क उन अन्य लोगों से बिल्कुल भिन्न प्रकार से कार्य करता है जिन्हें हम सामान्य मानव कहते हैं। हम उस पर दया प्रकट करते हुए सखेद कह उठते हैं, "ओह, वह असहाय व्यक्ति जानता भी नहीं कि वह कर क्या रहा है, उसका क्या खो गया है, वह किस वस्तु से पीड़ित है…"। चाहे वह व्यक्ति स्वत: की इच्छाओं व तर्कों के अनुसार कार्य में संलग्न हो किन्तु हम तो उसे परिस्थितियों का 'शिकार' असहाय व्यक्ति ही समझते हैं, उसी प्रकार हम भी स्वत: की इच्छाओं और युक्तियों के स्वामी होते भी इस सांसारिक नाटकशाला में असहाय-पात्र मात्र हैं, जिसका संचालन इसके अपरिवर्तनशील नियमों से होता है।

प्रारब्ध के नियन्त्रण से बाहर रहने का दावा सत्य मानने के लिए यदि मनुष्य की इन्जीनियरी प्रतिभा को ही आधार मानना है तो कदाचित एक निष्पक्ष विवेचन प्रदर्शित करेगा कि चींटियाँ, मधु-मक्खियाँ, चूहे और पक्षीगण मनुष्य से श्रेष्ठ इन्जीनियर हैं क्योंकि बिना किसी विद्यालय में गए ही, स्वयं के लिए वे अत्यन्त विलक्षण, सुदक्षतापूर्ण एवं कलात्मक निर्माण करते हैं जो उनके आकार-प्रकार को देखते हुए कम-से-कम उतने ही भव्य होते हैं जितने मनुष्य द्वारा निर्मित भवनादि होते हैं। एक अन्य पक्ष में भी वे मनुष्य से बढ़कर हैं। उनको अपनी निर्माण-सामग्री संश्लिष्ट कारखानों

में जुटानी नहीं पड़ती। जब और जहाँ भी मिल गयी, ये उसको ले सकते है और उपयोग में ला सकते हैं।

भौतिकशास्त्र की एक सूक्ति यह है कि प्रत्येक अणु गणितीय-सिद्धान्तों से परिचालित होता है। जब यह स्वीकार कर लिया जाता है और यह ज्ञात है कि हमारे शरीर भी अणुओं द्वारा निर्मित हैं तो यह स्वतः स्पष्ट है कि हमारे शरीरों का विकास अथवा ह्रास कुछ निश्चित सिद्धान्तों द्वारा प्रशासित होता है जिनको ज्योतिष 'प्रारब्ध' कहकर पुकारता है और उसका रहस्य खोलना चाहता है।

मनुष्य यन्त्रों-से सुसज्जित खिलौने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वे चलते-फिरते हैं, बातचीत करते हैं, सुखी-दुःखी होते हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार यन्त्र-मानव अथवा खिलौने तब करते हैं जब उनमें चाबी दे दी जाती है अथवा विद्युत्-शक्ति का संचार कर दिया जाता है। जिस प्रकार चाबी द्वारा सजीव किया गया खिलौना तब तक अपनी हलचल समाप्त नहीं करता जब तक उसमें चाबी या विद्युत्-शक्ति रहती है, उसी प्रकार जीवित रहने तक मानव भी अपने कार्य-कलाप जारी रखता है।

मानव की गतिविधियाँ स्वतः, यन्त्रमानव सदृश, अस्वैच्छिक, अनावश्यक तथा अविचारित होने के असंख्य उदाहरण दिए जा सकते हैं। जब मनुष्य चलता है तब उसके दोनों हाथ घड़ी के दोलक (पेन्डुलम) समान हिलते रहते हैं, मनुष्य की वैसी इच्छा बिना ही ऐसा होता रहता है। जब मनुष्य दूरभाष पर बातचीत करता है, तब वह ऐसी शारीरिक चेष्टाएँ करता है मानो दूसरी ओर बात करनेवाला व्यक्ति उसके सम्मुख ही खड़ा है। क्या उस व्यक्ति की वे हरकतें उन व्यक्तियों की हरकतों के समान ही नहीं हैं जिनको हम विक्षिप्त कहते हैं, जो अकेले होने पर भी स्वतः ही हँसते और भिन्न-भिन्न अभिनय करते रहते हैं!"

सभी प्रज्ञावान मानव अपनी स्वेच्छा से अथवा प्रतिभा से मार्गदर्शन प्राप्त कर कार्य नहीं करते, यह एक अन्य विशिष्ट उदाहरण से सिद्ध किया जा सकता है। एक सुप्रसिद्ध रोगाणु-शास्त्री जो अत्यन्त निपुणतापूर्वक संक्रामक रोग के सिद्धान्तों का विशद-विवेचन करता है और उनकी वैधता को, थूक के अनेक नमूनों को सूक्ष्मदर्शी यन्त्रों के माध्यम से परीक्षा

करके, प्रदर्शित करता है, दूसरे ही क्षण अपनी पत्नी को छाती से चिपकाने व चुम्बन करने के लिए घर वापिस [illegible] है, और एक क्षण पूर्व-प्रचारित किए जानेवाली सारी बातों को बिल्कुल भूल जाता है। चिकित्सा-कक्षा में पढ़ाते समय, कार्य करते समय वह पूर्ण गम्भीरता से अपने [illegible]स्त छात्रों को मानव-थूक की गन्दी-प्रकृति के प्रति सचेत करता है। वही रोगाणुशास्त्री उसी थूक को अपनी पत्नी के मधुर अधरों के पान द्वारा जीभ से चाटने को सदैव उद्यत रहता है और उसको साक्षात अमृत-तुल्य बखान करते हुए अघाता नहीं है। और, फिर भी वह दोनों में कोई विरोध अनुभव नहीं करता क्योंकि वह एक दैवी सम्मोहक शक्ति के अधीन कार्यरत है, तथा प्रमाद अथवा भ्रम की स्थिति में रहता है जो मानव की इहलौकिक लीलाओं का एक भाग है।

मोटर-कार में चालक के पीछे बैठे, यात्रा करते समय आपने भिन्न-भिन्न निर्दिष्ट मापों को सामने लगे हुए फलक पर स्वतः चलते हुए देखा होगा। पैट्रोल-टंकी की सुई पैट्रोल की खपत बताती है, मील-मापक बताता है कि कार इतने मील चल चुकी है और तेल-संकेतक इंजन के कार्यरत भागों को मोबिलाइल पहुँचाने की सूचना देता है। अब, यदि मोटर कार के मस्तिष्क और मुख रहा होता, तो यह उन सूचक-सुइयों के कारण अपनी आवश्यकताओं का ज्ञान रखने योग्य होने के फलस्वरूप अवश्य ही अपनी शेखी बघारती रहती। किन्तु कार के बनाने वाले जानते हैं कि उन्हीं लोगों ने ये असंख्य छोटे-छोटे पुर्जे कारों में रखे हैं। इसी प्रकार हमारा मस्तिष्क, मुख तथा अन्य विभिन्न अवयव, जो हमारी आवश्यकताओं को बताते तथा विचार और कार्य करते प्रतीत होते हैं, उसी प्रकार के छोटे-छोटे यन्त्र हैं जो मानव-यन्त्र के निर्माता—ईश्वर—द्वारा जोड़ दिए गए हैं। जिस प्रकार कार का यन्त्र-तन्त्र कुछ निश्चित तकनीकी नियमों से प्रशासित होता है, इसी प्रकार मानव-यन्त्र है। निर्माण-प्रकार देखकर जिस प्रकार हम बता सकते हैं कि एक कार कैसे और कितनी चलेगी, इसी प्रकार मानव-यन्त्र की जन्मकुण्डली देखकर एक ज्योतिषी बता सकता है कि वह व्यक्ति कैसे जीवनयापन करेगा। यह तो अत्यन्त वैज्ञानिक है—कोरी कल्पना अथवा ऊट-पटांग बात नहीं है।

ज्योतिष के विरुद्ध प्रस्तुत किया जाने वाला एक सामान्य तर्क यह है कि यदि एक पूर्व निर्धारित, सुनिश्चित दिशा के अनुरूप ही सभी कार्य एवं घटनाएँ होती हैं, तो एक चोर को दोष क्यों दिया जाता है और एक देशभक्त की स्तुति क्यों की जाती है ? किन्तु जैसा कि रोगाणुशास्त्री के उदाहरण में ऊपर दिखाया जा चुका है, हम प्रज्ञापूर्वक व्यवहार करते हुए प्रतीत होते हैं किसी एक विशेष भ्रम के ही कारण। हमारी प्रतिभा और तथाकथित इच्छा-शक्ति विकट रूप में सीमित हैं। ये तो संकेतक हैं जो स्वतन्त्रता का भ्रम उत्पन्न करते हुए भी हमारी संरचना के आभ्यन्तर में स्वचालित छोटे-छोटे पुर्जों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं। यही कारण है कि हम नियमभंगकारी की निन्दा और योद्धा की प्रशंसा करते हैं। यह कार्य हम अनायास ही करते हैं अपनत्व को विस्मरण करके भी, जैसा कि हम उस पत्थर की दीवार को कोसकर करते हैं जब अनजाने ही उससे भिड़ जाते हैं, ठोकर खा बैठते हैं। कोसते समय हम भली भाँति अनुभव करते हैं कि दीवार का दोष बिल्कुल भी नहीं था, और हमारे कोसने का भी कोई प्रभाव इस दीवार पर नहीं पड़ेगा। फिर भी, हम कसम खाए बिना रह नहीं सकते, क्योंकि बोलने-चालने वाले खिलौनों के समान ही वे शब्द तथा शरीर-अवयव हमसे अनायास ही बच निकलते हैं।

ज्योतिष के आलोचक, कभी-कभी, विज्ञान के रूप में ज्योतिष की वैधता पर सन्देह प्रकट करते हैं केवल इस आधार पर कि इसके केवल १२ भाग (राशिचक्र) हैं जिसके अन्तर्गत यह विभिन्न प्रकृतियों, आकृतियों, रूप-रंगवालों और श्रेणी वाले लाखों मनुष्यों का वर्गीकरण करता है। हम उनको बताना चाहते हैं कि इसमें अवैज्ञानिक कुछ भी नहीं है। अनेक बार, हम विश्व को एक अविभाज्य पुञ्ज कहते हैं जब हम इसे संसार के रूप में पुकारते हैं। अनेक बार, हम इसे दो श्रेणियों में अर्थात् जड़ और चेतन तत्वों में विभाजित करते हैं। हम इस चेतन विश्व को तीन बड़े भागों में अर्थात् वनस्पति, पशु-पक्षी और मानव-जीवन में विभक्त कर सकते हैं। इस प्रकार, हम विश्व की चर्चा एक अस्तित्व की इकाई के रूप में कर सकते हैं, अथवा इसको अपनी इच्छानुरूप सुविधापूर्वक अनेक भागों तथा वर्गों में, उत्तरोत्तर, वर्गीकृत कर सकते हैं। उसी ढंग पर, यदि किसी विशेष

स्थिति में ज्योतिष मानवों को १२ वर्गों में विभाजित करता है तो इसमें बहुत गलत अथवा अवैज्ञानिक क्या बात हो गयी ? ज्योतिष यहीं तो नहीं रुक जाता। उदाहरणार्थ, मनुष्य का स्वभाव विचार करने के लिए हम केवल उसके जन्म-चिह्न भर को तो नहीं देखते ! उसका स्वभाव—लग्न से स्पष्ट होने वाले असंख्य लघु-तन्तुओं, लग्न के स्वामी, लग्न में पड़े हुए ग्रहों, लग्नेश की स्थिति में चिह्न, चन्द्रमा का घर कौन-सा है, चन्द्र के लक्षण (कर्क) का घर, चन्द्र के साथ-साथ कौन-से ग्रह हैं और ऊपर दिए गए सभी चिह्नों और ग्रहों को कौन-कौन से ग्रह देखते हैं—इन सभी बातों से मिलकर बनता है। ये सभी तत्त्व मनुष्य के स्वभाव को बनाने वाले रहस्यमय सूत्रों को भली भाँति स्पष्ट करते हैं।

यह सिद्ध करने के लिए ऐसे असंख्य उदाहरण दिए जा सकते हैं कि ज्योतिष एक गणितीय विज्ञान है जो मनुष्य की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का भविष्यकथन कर सकता है क्योंकि उसके शरीर और मस्तिष्क की रचना करने वाला प्रत्येक अणु कुछ विशिष्ट स्थायी सिद्धान्तों से प्रशासित होता है।

सब-कुछ कह लेने और कर लेने के बाद, बात यह है कि अखिल विश्व के, सभी युगों और क्षेत्रों के, लाखों लोगों का अनुभव यह रहा है कि स्वयं उनके अपने अथवा उनके मित्रों के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली भविष्यवाणियाँ तथा प्रकथन सहस्रों की संख्या में खरे उतरे हैं। लाखों प्रकथन चाहे गलत सिद्ध हो रहे हों, किन्तु हजारों सत्य हो रहे हैं। यदि यह स्वीकार कर लिया जाता है, तो ज्योतिष में विश्वास-अविश्वास का प्रश्न नहीं उठता, जिस प्रकार दिन निकल आया मानने के बाद कोई भी व्यक्ति सूर्योदय से इन्कार नहीं कर सकता।

हमारी गतिशीलता का नियमन करने वाली सजीवता हमारे पास केवल उतनी ही है जितनी हमारे द्वारा निर्मित यन्त्रों में होती है। इसको स्वैच्छिक गतिविधि की धारणा बनाना अनुचित है।

मानव गतिशीलता का दैवी सुदूर-नियमन इस तथ्य से भी परिलक्षित हो सकता है कि मृत्यु हो जाने पर यद्यपि मनुष्य की देह ज्यों की त्यों दीख पड़े, तथापि सजीवता का वह मुख्य तत्त्व अर्थात् 'जीवन' (प्राण) अनुपस्थित होता है। दूसरे शब्दों में, मानव-पुतले को जन्म के समय 'जीवन' के जो

'तन्तु' दैव ने 'बाँध' दिए थे, उनको 'खोला' जाता है, और वापिस खींच लिया जाता है, और वह मानव विश्व-मंच पर निरर्थक शव की भाँति त्याग दिया जाता है।

जीवधारी की तुलना चाबी भरे हुए गतिशील खिलौने से भी की जा सकती है। एक बार चाबी भरकर भूमि पर रख दिए जाने के बाद जिस प्रकार खिलौना-सिपाही पूर्वनिश्चित हरकतें करता हुआ 'युद्ध करता है', उसी प्रकार एक मानव भी दैव द्वारा भूतल पर निक्षिप्त होने के पश्चात् कुछ पूर्वनिश्चित गतिविधियाँ करता रहता है जब तक कि दैव द्वारा उसमें 'फूँकी' गयी वह सजीवता भरी रहती है।

यद्यपि यह एक अत्यन्त गर्व नष्ट करने वाला विचार हो कि अपनी शक्तियों का घमण्ड करने वाले सामर्थ्य-सम्पन्न योद्धा और तानाशाह भी इस पृथ्वी पर एक विशेष अभिनय करने के लिए भेजे गए स्वचालित पुतले मात्र हैं, तथापि उसी युक्तियुक्तता पर, जिस पर हम कार्य करने की स्वतन्त्रता का दावा करते हैं, हमें स्वीकार करना पड़ता है कि मनुष्य स्वतन्त्र व्यक्ति नहीं है।

किसी भी व्यक्ति के जीवन की कथा का सुविचारित अध्ययन हमें यह बात स्वीकार करा देगा कि वह व्यक्ति दैव पर पूर्णतः निर्भर है। शिशु के जन्म से पूर्व, उसके माता-पिता को लेशमात्र भी पता नहीं होता कि वह शिशु किस तिथि व समय पर जन्म लेगा। इस प्रकार, तिथि और समय का चयन उस चंचल प्रारब्ध द्वारा होता है। शिशु की योनि का भी ज्ञान अग्रिम होता ही नहीं है। शिशु ने बालक बनना है अथवा बालिका, इसका भी निश्चय प्रारब्ध करता है। प्रारम्भिक ईश्वर-प्रदत्त योनि बहुत-कुछ सीमा तक तो नवजन्मधारी का जीवन का विशिष्ट-कार्य सुनिश्चित कर देती है—अर्थात् निश्चित कर देती है कि उस शिशु को महिला का कार्य करना है अथवा पुरुष का।

प्रारब्ध द्वारा सुनिश्चित योनि उस वेशभूषा का निश्चय करती है जो उस शिशु ने भावी जीवन में धारण करना होता है। शिशु का अपना नाम भी उसके माता-पिता अथवा मित्रों द्वारा निश्चित किया जाता है। रेंगने, घसीटने, दाँत निकलने, चलने, सज्ञान होने आदि का शिशु-विकास दैवी

समय-सारणी के निश्चित कार्यक्रम का अनुसरण करता है। इस सब में, किसी मानव का कोइ हाथ नहीं है।

इस सब नाटक में शिशु एक असहाय पुतला है। संसार में विचरण करने के लिए भेजने के सम्बन्ध में इसकी स्वीकृति नहीं ली जाती। इसकी अपनी योनि, रूप-रंग, बनावट, राष्ट्रीयता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, वित्तीय-स्तर, मानसिक चरित्रबल, तथा सहज गुणों के सम्बन्ध में चुनने का इसको कोई अधिकार नहीं है। इसे तो इसका नाम भी अन्य लोगों द्वारा दिया जाता है। नवागन्तुक को इसी में सन्तोष करना पड़ता है कि अन्य लोग, इसे जिस नाम से पुकारना चाहें, पुकार लें।

इसके अतिरिक्त, स्वयं अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में यह नव-जन्मा प्रथम वर्ष, कहिए, अज्ञानी रहता है। उसके पश्चात् चाहे वह बोलना प्रारम्भ कर देता है, फिर भी वह कठिनाई से ही प्रथम पाँच वर्ष तक घटी हुई किसी घटना को स्वयं के उत्तरकालीन जीवन में स्मरण रख पाता है। शिशु काल में उसे असहाय रूप में वहीं जाना पड़ता है जहाँ कहीं उसे ले जाया जाता है और जो कुछ सिखाया जाता है वही सीखना पड़ता है। प्रौढ़ जीवन में उसे अपने नियोक्ता की आज्ञाकारिता और दया के वशीभूत होकर जीविकोपार्जन करना होता है। जीवन में सुअवसर मनुष्य की योनि तथा व्यक्तित्व जैसे संयोगवश प्राप्त गुणों, विशिष्टताओं पर निर्भर करते हैं। जीवन में मिलने वाली द्रुत-प्रगति उसके अन्तर्भूत स्तर पर निर्भर करती है। इस प्रकार, किसी व्यक्ति के जीवन की कोई भी अवस्था तथा इसका कोई भी रूप अपनी प्रज्ञा अथवा प्रयत्नों से निर्माण करने में वह व्यक्ति किसी भी प्रकार दावा नहीं कर सकता। वह एक प्रवहमान लकड़ी के टुकड़े के समान है जो जीवन के प्रवाह में बह रहा है और जिसे भौतिक संसार के आवर्त और विवर्त धीरे-धीरे शाश्वतता की विस्मृति में ले जा रहे हैं।

फिर, यह पूछा जा सकता है कि क्या अपनी वीरता का यश, श्रेय अर्जन करने में कोई व्यक्ति अथवा उसकी त्रुटियों की निन्दा करने में अन्य लोग न्यायसंगत व्यवहार करते हैं! उत्तर यह है कि यद्यपि जीवन का सम्पूर्ण नाटक चलचित्र अथवा रंगमंच की भाँति परिवर्तनशील तथा अवास्तविक

है, तथापि इसके सभी कार्य पूर्ण गम्भीरता से, एक छलमय युक्तिसंगत शृंखला में सम्पन्न किए जाते हैं। इसको एक आख्यायिका के माध्यम से सुन्दर रूप में समझाया, दर्शाया जा सकता है। जीवन की असत्यता पर धर्मोपदेश देने के पश्चात् घर वापिस लौट रहे एक दार्शनिक महोदय के पीछे एक हाथी लग गया। दार्शनिक जी अपनी जीवन सुरक्षा के लिए दौड़ने लगे। सम्मेलन में दार्शनिक का भावोत्तेजित उपदेश सुननेवाले एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि वे हाथी से इतने भयभीत हो रहे थे जबकि जीवन असत्य तथा परिवर्तनशील था! दार्शनिक महोदय ने एक विलक्षण उत्तर दिया। उन्होंने कहा, "यह सत्य है कि हाथी 'अवास्तविक, असत्य' है किन्तु उसके भारी-भरकम पैर के नीचे रौंदे जाने से बचने के लिए मेरा इधर-उधर भागना भी तो 'अवास्तविक, असत्य' है।" यह अप्रामाणिक कथा सांसारिक जीवन की व्याख्या यद्यपि 'एक भ्रम' तथा 'अवास्तविक' करती है, तथापि इसे तर्क अथवा धर्मोपदेश की शृंखला अथवा दैव की लिखित दृश्य-योजना का अनुसरण करना ही होता है।

जन्म के ही समान, व्यक्ति की मृत्यु भी बिना व्यक्ति की इच्छा के ही उसे आ घेरती है। कोई व्यक्ति दीर्घ जीवन व्यतीत करना चाहता है, और फिर भी असहाय तथा अल्पायु में मृत्यु का ग्रास बन जाता है। किसी की इच्छा जल्दी अथवा तुरन्त मर जाने की हो सकती है, किन्तु उसे दीर्घ तथा विलम्बमान जीवन व्यतीत करना पड़ जाता है। इस प्रकार किसी व्यक्ति के जीवन का प्रारम्भ अथवा अन्त कुछ भी तो उसके हाथ में नहीं है। इसका नियन्त्रण एक अज्ञात, अदृश्य शक्ति द्वारा होता है जो कुछ अपरिवर्तनशील सिद्धान्तों का अनुसरण करती है।

जबकि किसी के भी जीवन का श्रीगणेश तथा समापन उसके अपने नियन्त्रण से पूर्णतः बाहर होता है, तथापि यह देखना कठिन नहीं होना चाहिए कि व्यक्ति के जीवन के मध्य होने वाली घटनाएँ तथा विकास-सीमाएँ भी समान रूप में पूर्व-निर्धारित होती हैं।

यदि कोई व्यक्ति अब भी गम्भीरतापूर्वक यह धारणा रखता है कि अयाचित जन्म तथा असहाय मृत्यु के मध्य एक ऐसा बड़ा कालखण्ड रहता है जिसमें प्रारब्ध और अपना भावी जीवन निर्माण करने का स्वामी वह

व्यक्ति ही स्वयं होता है, तो यह केवल भ्रम-मात्र है। क्योंकि, ऐसी धारणा रखने वाला व्यक्ति ऐसा एक भी दिन और क्षण बता पाने में सफल नहीं होगा जबकि प्रारब्ध ने उसके जीवन का नियमन करने का अधिकार उस व्यक्ति के अपने हाथों में सौंप दिया था। न ही ऐसा भी दर्शाया जा सकेगा कि उसकी वृद्धावस्था में किसी एक विशेष क्षण पर प्रारब्ध ने उसके जीवन को नियमित करने का अपना अधिकार पुनः वापिस लेकर उसको क्रूरता-पूर्वक मृत्यु के मुख में फेंक दिया था।

वास्तव में, यह दर्शाया जा सकता है कि व्यक्ति के जीवन पर प्रारब्ध का नियन्त्रण उसके जीवन के सभी प्रहरों पर बना रहता है। प्रारब्ध का प्रच्छन्न हस्त व्यक्ति की उन शारीरिक बीमारियों और घटनाओं में देखा जा सकता है जो उसे भुगतनी पड़ती हैं, तथा एक निश्चित आयु पर धनोपार्जन के व्यवसाय से अनिवार्यतः सेवा-निवृत्त होने में भी यही बात है।

घटना अथवा परिस्थितियों का सम्मिलन भी प्रत्येक के जीवन में निर्णायक भाग रहता है। ऐसी घटनाओं के लिए किसी भी प्रकार स्वयं को श्रेय नहीं दिया जा सकता। इस प्रकार, अनेक बार किसी की समस्त आशाओं-आकांक्षाओं और कठोर श्रममय चेष्टाओं की घोर विफलता के हम असहाय और निराश साक्षीमात्र रह जाते हैं। अन्य अवसरों पर, हम जिन बातों की कल्पना भी नहीं करते, उनके स्वप्न भी नहीं ले सकते, ऐसी सुखद घड़ियाँ स्वतः आ जाती हैं। कई बार, सही दिशा में प्रयत्नशील होने पर भी सफलता के दर्शन नहीं हो पाते। दूसरे अवसरों पर, अनायास ही अचिन्तित लाभ हो जाते हैं। ये ही वे घटनाएँ थीं जिन्होंने मनुष्य को बाध्य किया कि वह उन कारणों को खोज निकाले जो कभी उसके प्रयत्नों को फलहीन कर देते थे और कभी पुष्ट, प्रवर्ध कर देते थे, अथवा उसे ऐसा फल भी प्रदान कर देते थे जिसकी वह कभी कल्पना भी नहीं कर पाता था। इसी के पश्चात् था कि मनुष्य ने यह जान लिया कि अन्ततोगत्वा वह प्रारब्ध का एक शिशु मात्र है। अपने जीवन के अति-प्राकृतिक नियन्त्रण के प्रति सचेत कर दिए जाने के पश्चात् मनुष्य ने उस पूर्व-निर्धारण को 'प्रारब्ध' संज्ञा दी। एक बार प्रारब्ध का अस्तित्व स्वीकार कर लेने पर, यह विश्वास करना कठिन नहीं होना चाहिए कि इसका भविष्यकथन

करने के ढंग हो सकते हैं। अतः, मनुष्य उस/उन संभव प्रकार/प्रकारों का पता लगाने में जुट गया जिससे वह अपना भाग्य पूर्व में ही घोषित कर सके। उसकी उत्सुकता और धैर्यहीनता ने उसे अपने सम्पूर्ण जीवन में होने वाली घटनाओं को पहले से ही जान लेने के लिए प्रयत्नशील बनाए रखा। परिणामस्वरूप, वह यह जानकर अत्यन्त प्रफुल्लित था कि मनुष्य के भविष्य को पहले से ही जान लेने के अनेक मार्ग थे।

ज्योतिष की युक्तियुक्त वैधता के अतिरिक्त यह तथ्य भी ज्योतिष-शास्त्र का स्पष्ट प्रतिपादन है कि असंख्य लक्षावधि व्यक्तियों के लिए, अखिल विश्व में, नित्यप्रति की जाने वाली ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ सही निकलती हैं।

हमने भी स्वयं एक उल्लेखयोग्य भविष्यवाणी सत्य होते अनुभव की है। मलाया में कुआलालम्पुर के निकट रबड़-सम्पदा में, सन् १९४५ के अगस्त मास में हम एक कलाप्रेमी ज्योतिषी श्री पद्मनाभन को मिले थे। कुछ दिन पूर्व ही द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ था। हमारे यह पूछने पर कि भारत कब स्वतन्त्र होगा, श्री पद्मनाभन ने बलपूर्वक कहा था कि, "सन् १९४७ के दिसम्बर मास की समाप्ति से पूर्व ही भारत अवश्य स्वतन्त्र होना चाहिए।" उनकी भविष्यवाणी में स्पष्टतः अविश्वास करते हुए—जिसको हमने उस समय अक्खड़पना ही समझा था—हमने उनसे यह भी पूछा कि क्या भारतीय जनता को अपने ब्रिटिश शासनकर्त्ताओं के विरुद्ध युद्ध भी करना पड़ेगा। उस प्रश्न के उत्तर में श्री पद्मनाभन का कहना था कि कुछ रक्तपात तो होगा किन्तु कोई युद्ध नहीं होगा। दो वर्ष पश्चात् महान आश्चर्य के साथ हमने भारत को एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में उदय होते हुए देखा और मुस्लिम धर्मान्धता अपनी मदान्धता में भारतीय भूमि के दो बड़े-बड़े भाग काटकर अपने साथ ले गयी।

वर्षों पश्चात् घटित होने वाली अनेकों बातों की पूर्व-सूचना देने वाली कीरो और नोस्ट्रेडेमस की उल्लेखनीय भविष्यवाणियाँ भी सर्वसाधारण को ज्ञात हैं, सब स्वीकार करते हैं।

श्री पद्मनाभन ने हमें बताया कि आपने भारतीय और पश्चिमी ज्योतिष की पाँच प्रणालियों व अंकार्थ-विज्ञान का अध्ययन किया था। यदि

पाँचों प्रणालियों से किसी घटना का संकेत मिलता था, तो उन्हें निश्चय हो जाता था कि वह घटना अवश्य घटेगी। स्पष्टतः ऐसी सम्पुष्टि हो जाने के बाद ही उन्होंने भारतीय स्वाधीनता का भविष्यकथन किया था।

आधुनिक प्रशासनों की यह विचित्र विडम्बना ही है कि ऋतुविज्ञान जैसे वायवी तथा त्रुटि-संभव प्रक्रिया का भविष्यकथन करने के लिए विशाल ऋतुविज्ञान सम्बन्धी कार्यक्रमों का जाल फैलाने में तो वे विश्वास करते हैं किन्तु वजनदार और विशद मानव-कार्यकलापों का भविष्यकथन करने वाले अत्यधिक यथार्थ, वैज्ञानिक तथा लाभदायक ज्योतिषविज्ञान को अविश्वास और संदिग्ध दृष्टि से देखते हैं। इस सम्बन्ध में हमारे पूर्वज अधिक बुद्धिमान थे। प्राचीन भारत के प्रत्येक घर तथा प्रत्येक राज्य-दरबार में ज्योतिष तथा ज्योतिषियों को सम्मान प्राप्त होता था।

आधुनिक विश्व की नैपोलियन और हिटलर जैसी महान विभूतियाँ भी ज्योतिष में पूर्ण विश्वास रखती थीं। और चाहे सारा विश्व उनसे भयांकित हो उन्हें स्वकर्मेण विजेता मानता था, फिर भी वे स्वयं को प्रारब्ध का शिशुमात्र विचार करते थे जिनको इस विश्व में अपना-अपना अभिनय करने के लिए भेजा गया था।

एक भारतीय लोकोक्ति के अनुसार, ईश्वर की इच्छा के बिना तो वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। यदि हम इसका विचार करें, तो इसे शब्दशः सत्य पाएँगे क्योंकि, अन्यथा हम इसकी व्याख्या कैसे और क्या करेंगे कि वृक्ष की पत्तियाँ कभी क्यों कम्पन करने लगती हैं और कभी निस्तब्ध, स्थिर क्यों रह जाती हैं!! कोई यह बात नहीं बता सकता कि वायु के द्वारा पत्तियाँ स्पन्दित होती हैं अथवा पत्तियों के चलने से वायु उत्पन्न होती है! दूसरी बात—शान्त वायु का अकस्मात् तूफानी रौद्र रूप धारण करके प्रलय की हानि के लक्षण छोड़ जाने का स्पष्टीकरण क्या है!! उस तूफान को अचानक भयंकर रूप में परिवर्तित करने का कारण क्या है, यह भी एक रहस्य है। एक ऋतु-विज्ञानी व्यक्ति यह कहकर स्पष्ट करना चाहेगा कि हवा के दबाव में यहाँ या वहाँ ह्रास हो गया होगा, किन्तु वह यह बताने में असमर्थ है कि बिल्कुल अकस्मात यह ह्रास' क्यों हो जाता है और फिर इस ह्रास को समाप्त क्यों कर दिया जाता है!

जो कुछ मनुष्य के पास शेष रह जाता है वह सभी उपलब्ध वस्तुओं और स्थितियों का स्पष्टीकरण करने का यत्न मात्र है। विश्व में वस्तुओं के क्रम अथवा इनमें परिवर्तन से सम्बन्ध रखने वाले मूल प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाते हैं। मनुष्य को विश्व की वस्तुओं की प्राकृतिक व्यवस्था तथा इसमें यदा-कदा होने वाले परिवर्तन स्वीकार करने पड़ते हैं और अपनी विवेकी आत्मा को शान्त करने के रूप में उन व्यवस्थाओं के भौमिक, सांसारिक तर्कों द्वारा स्पष्टीकरण देने का यत्न करना पड़ता है।

मनुष्य के भौतिक संसार की एक अद्वितीय विशिष्टता यह रही है कि मनुष्य के जीवन पर सर्वसम्पन्न तथा परमशक्तिमय प्रभाव रखनेवाली सांसारिक शक्तियों में से अधिकांश शक्तियाँ अदृश्य हैं। जिस वायु का हम सेवन करते हैं, श्वास लेते हैं उसको देखिए। चाहे हम कितनी भी जोर से, सूक्ष्मता से देखें किन्तु जिस वायु को हम श्वास द्वारा क्षय करते हैं, उसे हम देख नहीं सकते। वायु हमारा प्रधान जीवनाधार है किन्तु हम इसे पकड़ नहीं सकते, स्पर्श नहीं कर सकते।

वायु के रुष्ट-रौद्र-रूप, जिनको हम तूफान, अन्धड़ या बवण्डर के नामों से पुकारते हैं, अपने मस्तिष्क में लाइये। एक अदृश्य प्रेतात्मा के समान ही क्रुद्ध वायु समस्त संसार को चूर-चूर कर देने की सामर्थ्य रखती है, फिर भी हम इसे स्पर्श करने अथवा देखने में असमर्थ हैं।

जिसे हम 'गन्ध' कहते हैं, उस पर भी विचार करें। पुष्पों या गैस या क्लोरोफार्म की गन्ध हमें अचल या मृतक कर सकती है, फिर भी हमें इसकी 'दृश्यावली' अथवा 'अनुभूति' से वंचित रखा जाता है।

गुरुत्वाकर्षण एक अन्य शक्ति है जो हमें पृथ्वी से बद्धमूल रखती है, फिर भी हम इसे न तो देख सकते हैं और न ही 'अनुभव' कर सकते हैं।

विद्युत् भी संसार की एक ऐसी 'शक्ति' है जो प्रव्यक्त है किन्तु फिर भी अदृश्य तथा गुप्त रहना ही श्रेष्ठतर समझती है। यह विद्युत केवल एक हल्के-से झटके मात्र से ही हमारा जीवन शून्य कर सकती है, या फिर हमारी प्रसन्नता को जगमगा सकती है; और फिर भी मनुष्य को 'विद्युत' कहलाने वाली उस शक्ति की एक झलक भी नहीं दीख पाती। बिजली का एक मृततार और दूसरा विद्युतमयतार देखने में समान होते हैं, तथापि दूसरे

का एक स्पर्श-मात्र घातक परिणाम प्रस्तुत कर देता है।

रोगाणु और जीवाणु भी अन्य 'अदृश्य' और 'अगाध' सांसारिक शक्तियाँ हैं, जो सत्य ही शब्दशः, मानव-जीवन का निर्माण और विनाश कर देती हैं।

अपने परिवेश का स्वयं बनाने वाला और बिगाड़ने वाला होने की मनुष्य की डींग हाँकने के बावजूद मनुष्य के स्वयं अस्तित्व की आधार उपर्युक्त शक्तियाँ मनुष्य के संग-साथ उसी प्रकार चलती रहती हैं जिस प्रकार मनुष्यभक्षी दानव उसका इस प्रकार पीछा करता है कि मनुष्य को अपना पीछा किया जाना पता नहीं पड़ता और उस दानव से दो-दो हाथ कर लेने का उसे सुअवसर मिल ही नहीं पाता।

अपने ऊपर इन शक्तियों की सर्वोच्च सत्ता स्वीकार करने की विनम्रता और प्रामाणिकता यदि किसी में है, तो फिर हमें इससे भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे सांसारिक-बन्धन-तन्तु भी अदृश्य हैं जिनके द्वारा ईश्वर एक कठपुतली का नाच करने वाले के समान हमारे जीवन का संचालन करता है, और जिनको ज्योतिषशास्त्र आँकने का यत्न करता है। गर्भ-धारण से मृत्यु-पर्यन्त मानव-जीवन तक ये अदृश्य अतिप्राकृतिक शक्तियाँ हमारे जीवन को, सभी समय, असंख्य 'हथौड़ों' से रूपान्तरित करती रहती हैं। ज्योतिषविद्या, समस्त विनम्रता-सहित इस मूल तथ्य को स्वीकार करती है, और अधैर्यवान मनुष्य को उसके भविष्य के सम्बन्ध में सावधान करने के लिए उन बन्धन-तन्तु को खोलने का सद्-प्रयत्न करती है।

३

ज्योतिष और ज्योतिषी

हम ज्योतिष को विज्ञान कहकर पुकारते हैं क्योंकि यह युगोंपूर्व अन्वेषित तथा परिपुष्ट किए गये सुनिश्चित स्थिर तथा भलीभाँति परिभाषित सिद्धान्तों का अनुसरण करता है। उन सिद्धान्तों की वैधता, सार्वजनीनता अखिल विश्व में मानव घटनाओं की भविष्यवाणियाँ करके असंख्य कलाप्रेमी तथा व्यावसायिक ज्योतिषियों ने मान्य और सत्यापित कर रखी है।

घटनाओं की भविष्यवाणी करने के अनेक प्रकार हैं। इनमें से कुछ सर्वोत्तम ज्ञात विमल-दृष्टि-मय हैं : अंकार्थ-विज्ञान, हस्तरेखा-विज्ञान और ज्योतिष-विज्ञान। ताशों अथवा फूलों से भी भविष्य बताने जैसे कुछ अन्य प्रकार भी हैं जो सुखद अभिरुचियों के रूप में कुछ कम गम्भीर प्रकार ही हैं।

कुछ ऐसे लोग भी हैं जो सिद्ध की गयी कुछ रहस्यमयी शक्तियों की सहायता से भविष्यकथन करते हुए प्रतीत होते हैं। उनकी भविष्यवाणियाँ, स्पष्टतः, उनकी स्वतःप्रेरणा तथा मनःस्थिति पर निर्भर करती हैं। उनकी शक्तियाँ व प्रकार अत्यधिक व्यक्तिपरक तथा जन्ममूलक होने के कारण अन्य लोगों को इनका ज्ञान नहीं दिया जा सकता।

हस्तरेखाविज्ञान और ज्योतिष-विज्ञान अन्य किसी भी विज्ञान की ही भाँति सीखे जा सकते हैं। हस्तरेखा-विज्ञान के कुछ प्रकट लाभ हैं। यह सर्वज्ञात है कि प्रत्येक व्यक्ति की अंगुलियों के प्रकार तथा हथेली की रेखाएँ

उसी के अनुरूप विशिष्टताएँ रखते हैं। यह बिल्कुल युक्तियुक्त है कि व्यक्ति के प्रारब्ध अथवा जीवन में विशेष अभिनय की कुंजी इन्हीं में रहे। हस्तरेखा-विज्ञान के लिए जन्म की तिथि, समय और स्थान अथवा जन्म-कुण्डली तथा अन्य विशद गणितीय तालिकाओं की गठरी की आवश्यकता नहीं पड़ती। अपना भविष्य जानने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को किसी जानकार हस्तरेखाज्ञाता को अपनी हस्तरेखाएँ भर दिखानी पड़ती हैं। देखने वाला विशेषज्ञ भी तुरन्त फल बताना प्रारम्भ कर सकता है। यदि दोनों एक-दूसरे से अन्तर पर, दूर हों तो भी जिज्ञासु व्यक्ति ने केवल अपनी हथेली की छाप भेज देनी होती है। किन्तु हस्तरेखा देखनेवाला जब तक निपुण व्यक्ति नहीं होगा, तब तक किसी भी व्यक्ति की हथेली की रेखाओं का अध्ययन करके उसके विगत अथवा भावी जीवन की घटनाओं की सही-सही तिथियों का, केवल एक छः इंच लम्बी 'भाग्य' अथवा 'जीवन' रेखा का अध्ययन करके, उल्लेख करना सम्भव नहीं होगा।

एक ज्योतिषी तब तक कार्य प्रारम्भ नहीं कर सकता जब तक कि उसको सही जन्म-आँकड़े उपलब्ध न कर दिए जाएँ। यदि ये जन्म-आँकड़े सावधानीपूर्वक नहीं लिखे गये अथवा स्मरण किए गये, तो व्यक्ति को ज्योतिष का सत्परामर्श प्राप्त करने की आशा नहीं रखनी चाहिए। किन्तु, यदि जन्म के आँकड़े उपलब्ध हैं, तो पंचांग अथवा नक्षत्रों की गतिविधियों की गणितीय तालिकाओं की सहायता से किसी भी व्यक्ति के अवसान तक की नित्यप्रति की घटनाओं का सही-सही भविष्यकथन करने की ज्योतिष विद्या में अद्भुत सामर्थ्य; क्षमता है।

हल्की या धुँधली छाप वाली हस्तरेखाओं-मात्र के अध्ययन से सामान्यतः इस हस्तरेखा-विज्ञान का विद्यार्थी अधिक निपुणता प्राप्त नहीं कर सकता। किसी शिक्षक के मार्गदर्शन में रहकर उसे 'सचमुच की' हजारों हथेलियों का अध्ययन व्यक्तिशः करना पड़ता है। यह प्रायः बहुत अधिक समय ले लेता है, और ऐसे हमें कितने अवसर मिलते हैं, उन पर निर्भर करता है। इसके विपरीत, अपने विषय का अधिक गहन और विशाल अध्ययन करने के लिए एक ज्योतिषी, जितने भी मरजी मृत और जीवित व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियाँ एकत्र कर सकता है।

'ज्योतिष' विद्या इसका नाम इसलिए रखा है कि यह आकाशीय ज्योति-पिण्डों की गतिविधियों के अध्ययन से मानवीय घटनाओं का भविष्य कथन करती है। इस प्रकार नक्षत्र-विद्या ज्योतिषविद्या के लिए गणितीय आवरण का कार्य करती है। इस प्रकार, नक्षत्र-विद्या और ज्योतिष-विद्या एक-दूसरे की सहायक हैं। किसी भी ज्योतिषी को नक्षत्र-विद्या के न्यूनतम प्रारम्भिक-सिद्धान्तों का ज्ञान लाभदायक ही है। दूसरी ओर, नक्षत्र-विद्या के पण्डित को ज्योतिष का ज्ञान उसके पूर्व-ज्ञात विज्ञान की एक महत्वपूर्ण तर्कमयी तथा सम्बद्ध शाखा अथवा आनुषंगिक उपज के रूप में उसे प्रवुद्ध करता रहेगा।

प्राचीन हिन्दुओं द्वारा सिद्ध किए गये ज्योतिष के सिद्धान्त एवं नियम अत्यन्त वैज्ञानिक हैं, उदाहरणार्थ संस्कृत भाषा में 'मंगल' लोहितांग अर्थात् लाल नक्षत्र कहलाता है। आधुनिक नक्षत्रीय पर्यवेक्षण पुष्टि करते हैं कि मंगल तथ्य रूप में लाल ही दिखायी पड़ता है। मंगल 'कुज और भौम' अर्थात् 'पृथ्वी से उत्पन्न' भी कहलाता है। अतः ऐसा सम्भव है कि प्राचीन नक्षत्रीय अन्वेषणों के अनुसार 'मंगल पृथ्वी से टूटकर पृथक् हो गया' हो। इस 'टूटकर पृथक् होने' के उप-सिद्धान्त के अनुसार ही, ज्योतिषशास्त्र में मंगल-नक्षत्र कलह और युद्धों का द्योतक माना जाता है।

प्राचीन भारतीय ज्योतिष की शब्दावली में 'सूर्य' शनि-ग्रह का 'पिता' कहलाता है, और फिर भी विश्वास किया जाता है कि दोनों परस्पर कलह-रत रहते हैं। अतः पूर्णतः सम्भव है कि प्राचीन भारतीयों ने यह सिद्ध किया था कि शनि-ग्रह किसी समय सूर्य का ही एक अंश था। किन्तु, सूर्य से अत्यन्त दूर तिरस्कृत होने के कारण, सूर्य की एक पूरी परिक्रमा करने में शनि-ग्रह को तीस वर्ष का समय लगता है। अतः ज्योतिष-शास्त्र में शनि-ग्रह को उदासीनता, मूर्खता, आलस्य और मन्दगति का द्योतक माना जाता है।

ये उदाहरण, ज्योतिष को वैज्ञानिक और तर्कपूर्ण आधार पर स्थित विज्ञान स्वीकार करने के लिए, पाठक को पर्याप्त मानने चाहिए। यह कुछ काल्पनिक भावनाओं का अनिश्चित, मनगढ़न्त, स्वार्थपूर्ण तथा अयुक्तियुक्त संग्रह नहीं है, जैसाकि सम्भव है, ज्योतिष के कुछ अज्ञानी आलोचक या

धैर्यहीन तथा निराश विद्यार्थी धारणा बना बैठें ।

जिस प्रकार 'क्ष' किरणें मानव-पिण्ड के आन्तरिक निगूढ़ रहस्यों को स्पष्ट दरशा देती हैं, उसी प्रकार दैव द्वारा निर्धारित मानव के विगत अथवा भावी जीवन का स्पष्ट दर्शन करने में ज्योतिष सफल होता है ।

ज्योतिष यद्यपि नक्षत्रों के अध्ययन करने से मानव-घटनाओं का भविष्य कथन करने का विज्ञान है, तथापि 'नक्षत्र' शब्द का ज्योतिष में अपना विशेष अर्थ है, जो भौतिकशास्त्र में मान्य इसके अर्थ से भिन्न है । भौतिकशास्त्र में, नक्षत्र एक स्थिर, स्वतःप्रकाशित आकाशीय-पिण्ड है । ज्योतिषशास्त्र में, 'नक्षत्र' तथा 'ग्रह' शब्द न केवल परस्पर परिवर्तनीय हैं अपितु भारतीय ज्योतिषीय शब्दावली में चन्द्रमा के राहु और केतु नामक अमूर्त शिरो-बिन्दुओं के गूढ़ार्थ भी प्रकट करते हैं ।

भारतीय ज्योतिष में जिन्हें 'नक्षत्र' या 'ग्रह' कहकर पुकारा जाता है उनमें एक नक्षत्र अर्थात् सूर्य, एक उपग्रह अर्थात् चन्द्रमा, पाँच ग्रह अर्थात् मंगल, बुध, गुरु (बृहस्पति), शुक्र और शनि तथा दो अमूर्त अस्तित्व अर्थात् राहु और केतु सम्मिलित हैं । राहु और केतु नाम से पुकारे जाने वाले ये अमूर्त स्थल वे स्थान हैं जहाँ सूर्य के चहुँ ओर पृथ्वी का दीर्घवृत्त पृथ्वी के चहुँ ओर चन्द्रमा के दीर्घवृत्त को काटता है ।

चूंकि एक छड़ी के दो छोरों की भाँति दोनों दीर्घवृत्तों के ये संघर्ष-स्थल सदैव एक-दूसरे के आमने-सामने रहते हैं, इसलिए प्रत्येक जन्मकुंडली में राहु और केतु परस्पर आमने-सामने घर में स्थित होते हैं । ज्योतिष का उपहास करने वाले प्रायः विश्वास करते हैं कि जन्मकुण्डलियाँ सरलता से नकली बनायी जा सकती हैं । हम उनको बताना चाहते हैं कि असावधान और नैपुण्यहीन हाथों से जन्मकुण्डलियों में किया गया सभी प्रकार का ओझापन करना बहुत ही सरलतापूर्वक खोज निकाला जा सकता है । अनेक परीक्षणों में से एक परीक्षण राहु और केतु से सम्बन्ध रखता है । जन्मकुण्डली में यदि ये एक-दूसरे के सामने घरों में नहीं दिखाए गए हैं, तो इसको एकदम अविश्सनीय जन्मांक घोषित किया जा सकता है ।

भारतीय ज्योतिषीय पौराणिक ग्रन्थों में राहु और केतु को जागतिक सर्प के समान माना गया है । राहु मुख और केतु सर्प की पूंछ है । अमूर्त

ज्योतिषीय विचारों को स्मरण रखने में ज्योतिषीय पौराणिकता सहायक है।

प्राचीन भारतीय ज्योतिषीय गणना में हर्शेल, वरुण (नेपच्यून) तथा यमनक्षत्र (प्लूटो) को कोई स्थान प्राप्त नहीं है। भारतीय ज्योतिष ने पांच ग्रह, एक नक्षत्र, एक उपग्रह और दो अमूर्त स्थलों—राहु और केतु--के अतिरिक्त अन्य किसी भी आकाशीय पिण्ड को मान्यता नहीं दी। हर्शेल, वरुण और यमनक्षत्र उनकी गणना में निष्प्रयोजन थे जैसे कि त्रिपदी में तीन पैर ही पर्याप्त होते हैं। त्रिपदी में एक और पैर जोड़ना न केवल अतिरिक्त अनावश्यक होगा, अपितु इसके भार को भी, अपने नीचे के असम भूतल अथवा उनकी लम्बाइयों में तनिक से भी अन्तर के कारण, अस्थिर कर देगा।

यह विश्वास करना ठीक नहीं होगा कि 'अभी हाल में ही खोजे गए' हर्शेल, वरुण और यम नक्षत्रों की जानकारी न होने के कारण, भारतीय ज्योतिषशास्त्र मानव-घटनाओं के भविष्यकथन पर उनका प्रभाव आंकने में विफल रहा। यहाँ पर पाठकों को हमारे उस पूर्वकालिक पर्यवेक्षण का स्मरण कराया जाना उचित है कि भृगु-संहिता जैसे प्राचीन भारतीय भविष्यवाणी के अभिलेख, जो सर्वत्र सब समय उत्पन्न सभी मानवों का सही भविष्य उल्लेख करते हैं, उनके इस विश्वास को झुठला देते हैं कि भारतीयों की ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ अपूर्ण आँकड़ों पर आधारित थीं।

चूंकि प्राचीन भारतीय ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ यथार्थ और विशद थीं, अतः जिन आँकड़ों पर प्राचीन लोगों ने अपनी भविष्यवाणियाँ आधारित कीं, वे स्पष्टतः पूर्ण थे। इससे, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ज्योतिषीय गणना में हर्शेल, वरुण और यमनक्षत्र नहीं आने चाहिए।

यह धारणा बनाना ही भ्रामक है कि सौर-मण्डल में हर्शेल, वरुण और यमनक्षत्रों की उपस्थिति भारतीय ज्योतिषियों को ज्ञात न थी। अनन्वेषणीय, अविस्मरणीय अतीत—युगों में परिपुष्ट भारतीय नक्षत्रीय गणित आज भी खरा उतरता है। यह इतना यथार्थ नहीं होता यदि पृथ्वी और अन्य उपग्रहों को ग्रहपथ में स्थिर रखने वाले सभी पिण्डों की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति से यह अनभिज्ञ रहा होता, कहने का भाव यह है कि यदि कोई ग्रह स्पष्ट

न भी दिखायी दे, तो भी उसकी उपस्थिति गणितीय प्रणाली पर ज्ञात और खोजी जा सकती है। चूंकि भारतीय नक्षत्रीय गणित पूर्णता की चरमस्थिति को प्राप्त हो चुका है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को यह मानना पड़ेगा कि भारतीय ज्योतिषी सौर-मण्डल में हर्शेल, वरूण और यमनक्षत्रों की विद्यमानता से अनभिज्ञ न रहे होंगे। किन्तु हर्शेल, वरुण और यमनक्षत्रों से अनभिज्ञ होते हुए भी भारतीय ज्योतिषियों ने जन्मकुण्डलियों में उनको कोई स्थान नहीं दिया क्योंकि उन्होंने इन नक्षत्रों को निष्प्रयोजन, अनावश्यक, महत्वहीन समझा था।

प्राचीन भारतीय विद्वानों द्वारा जन्मकुण्डलियों में दिखाने योग्य आकाशीय-पिण्डों के चयन का आकलन करने से यह पूर्णतः स्पष्ट है कि वे जन्मकुण्डली में प्रत्येक ग्रह अथवा ग्रहों को कभी भी स्थान नहीं देना चाहते थे। जैसा हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, जन्मकुण्डली में एक नक्षत्र, एक उपग्रह, पाँच ग्रह और दो शिरोबिन्दु (वे दो अमूर्त स्थल, जहाँ ग्रहमार्ग एवं रविमार्ग एक-दूसरे को काटते हैं) होते हैं। यद्यपि तकनीकी ज्योतिषीय शब्दावली में उन्हें 'नक्षत्र' अथवा 'ग्रह' नाम से पुकारा जाता है, तथापि वे सभी ग्रह नहीं हैं, और न ही परम्परागत जन्मकुण्डलियाँ सौर-मण्डल में उपलब्ध सभी ग्रहों को सम्मिलित करने का दावा करती हैं।

अतः, हमारा मत यह है कि कम-से-कम भारतीय पद्धति के अनुयायियों को तो अपनी गणना में हर्शेल, वरुण और यमनक्षत्रों को सम्मिलित नहीं करना चाहिए।

कौन जानता है कि सौर-मण्डल में अभी कुछ और भी ग्रह हों जो आधुनिकतम व्यक्तियों को भी अभी तक अज्ञात या अनुपलब्ध हों। हर्शेल, वरुण और यमनक्षत्र एक ही समय पर तो ज्ञात नहीं हुए थे। तब क्या यह बात गम्भीरतापूर्वक कही जा सकती है कि ज्योतिष का प्राचीन विज्ञान तब तक पूर्ण होने की आशा नहीं कर सकता जब तक कि सौर-मण्डल का अन्तिम ग्रह न खोज लिया जाय, और यह भी प्रमाणित न कर दिया जाय कि अब और ग्रह सौर-मण्डल में नहीं हैं जिन्हें खोजने की आवश्यकता हो? इसका आनुषंगिक निष्कर्ष यह होगा कि जब-जब एक ग्रह खोजा

जाता है, तब-तब ज्योतिष अधिक पूर्ण हो जाती है। इस प्रकार के संशयों की उपस्थिति में प्रत्येक पाठक को स्मरण रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष का मन्तव्य सभी ग्रहों और केवल ग्रहों को ही सम्मिलित करने का रहा ही नहीं है। भारतीय ज्योतिष द्वारा अपने पर्याप्त आँकड़ों के आधार पर—जिन्हें विभिन्न अस्तित्वों में से चुना गया और परिपूर्ण किया गया था—अक्षरशः यथार्थ, सही और विशद भविष्यवाणियाँ युगों से की गयी हैं।

४

ज्योतिष की युक्तियुक्तता

ज्योतिष के आलोचक प्रायः व्यंगपूर्ण स्वर में पूछते हैं कि मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि जैसे अचेतन तत्व के ज्योतिष्क पिण्ड किस प्रकार मानव-कार्यकलापों को प्रभावित और परिवर्तित कर सकते हैं? उपर्युक्त प्रश्न अत्यन्त अपरिक्व समझ और ब्रह्माण्ड के अत्यन्त संकुचित दृश्य का द्योतक है।

सर्वप्रथम, उपर्युक्त प्रश्न के हमारे उत्तर का एक अंश यह होगा कि ज्योतिष भविष्यकथन के लिए केवल कुछ ग्रहों को ही अपना आधार नहीं बनाता है। सर्वप्रथम और अनिवार्य रूप में सभी जन्मकुण्डलियाँ (एक नक्षत्र) सूर्य को सम्मिलित करती हैं जो सर्वमान्य रूप में इस पृथ्वी पर सम्यता का सम्राट् और पिता, जनक और संरक्षक है। सूर्य के पश्चात् ज्योतिषीय गणना में प्रविष्ट आकाशीय पिण्ड, जो ग्रह न होकर केवल उपग्रह है, चन्द्रमा है।

सूर्य और चन्द्र के अतिरिक्त, (चन्द्रमा के) शिरोबिन्दु कहलाने वाले दो अमूर्त स्थल भी ज्योतिषीय गणना के लिए अत्यन्त लाभदायक समझे जाते हैं। यह प्रदर्शित करता है कि ज्योतिष का उपहास करने वाले वे लोग कितने अल्पज्ञ हैं जो यह प्रश्न करते हैं कि ग्रह मानव कार्यकलापों पर किस प्रकार प्रभाव डाल सकते हैं!

ज्योतिष के आलोचकों को हमारे उत्तर का दूसरा अंश यह है कि यदि पृथ्वी की रचना सूर्य पर निर्भर मानी जाती है—अर्थात् हमारा संसार

अस्तित्वहीन हो जाएगा यदि सूर्य का प्रकाशित होना समाप्त हो जाय—तो क्या यह बुद्धिगम्य बात नहीं है कि सूर्य का प्रकाश भी, जो चन्द्र और अन्य ग्रहों के माध्यम से भी प्रतिबिम्बित होकर पृथ्वी तक आता है, मानव कार्यकलापों को प्रभावित करने एवं उनमें परिवर्तन, परिवर्धन करने में अपना योगदान रखता है !

आलोचकों को हमारे उत्तर का तीसरा अंश यह है कि अचेतन प्रतीत होने वाले आकाशीय पुंज समूह इतने 'अहानिकर' तथा 'असहाय' नहीं हैं जितने वे दिखायी पड़ते हैं। गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त के अनुसार विशाल पुंज सभी सजीव तथा अन्य वस्तुओं पर भी प्रभाव डालते हैं। गुरुत्वा-कर्षण के अतिरिक्त, जन्मकुण्डली में उल्लेखित आकाशीय पिण्ड अथवा अस्तित्व-समूह ब्रह्माण्ड में विद्युत्-चुम्बकीय शक्तियों के समूह का प्रति-निधित्व करते हैं। उनमें खनिज पदार्थों के विशाल भण्डार भी हैं जो पृथ्वी पर जीवन और वनस्पति को प्रभावित करते हैं। सम्मोहन अथवा जादू के प्रभाव की ही भाँति शक्ति के ये आकाशीय संग्रहालय सूर्य के सहायकों अथवा अभिकर्ताओं अथवा उत्तराधिकारी के रूप में मानवों में जीवन को फूँक सकने अथवा जीवित मानवों में से जीवन को बाहर निकाल फेंकने में पूर्णरूपेण सक्षम हैं।

विशाल ज्योतिष्क पिण्डों को जीवन को प्रभावित करने में अक्षम अचेतन-समूह कहकर पुकारना एक अत्यन्त अवैज्ञानिक दृष्टिकोण का दिग्दर्शक है क्योंकि विश्व में शब्दश: तो कोई भी वस्तु अचेतन नहीं है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमाणु से लेकर विशालतम ज्योतिष्क-पिण्ड तक सारा संसार जीवन से ओतप्रोत है।

अन्ततोगत्वा, जीवन एक अत्यन्त सापेक्ष शब्द है। इस ब्रह्माण्ड में साधारण जीवद्रव्य तथा सूक्ष्म जीवाणु से लेकर सामर्थ्यवान विशाल दनुसरट, गजराज तथा ह्वेल तक की जीवन की अत्यन्त संश्लिष्ट विविधताएँ विद्यमान हैं। जीवन की इस विस्मयकारी विविधता में मनुष्य तो एक मध्यश्रेणी का जीवमात्र है। जीवन के इन चल-आकारों के अतिरिक्त वनस्पति भी है जो फिर अचल जीवन के विस्मयकारी प्रकारों में विभक्त है। जिसको हम अचेतन वस्तु कहते हैं, उसका भी प्रत्येक अंश

'जीवन' अर्थात् गति अथवा अनवरत गतिविधि से ओतप्रोत होता है। दैवी ऊर्जा से सचेतन हुए 'सजीव' और 'चल' तत्वों की इस विशाल शृंखला में मनुष्य तो एक अत्यन्त नगण्य जीव है। मनुष्य की पीढ़ियों की पीढ़ियाँ जन्म लेती हैं और वनस्पति तथा पशु जीवों की भाँति असहाय और निश्चित प्रणाली से मृत्यु और विस्मृति की गोद में समा जाती हैं। यदि यह स्वीकार कर लिया जाता है—जैसा कि यह स्वीकार करना ही पड़ेगा—तब क्या मानव जीवन और उसका अवसान भी प्राकृतिक अथवा अतिप्राकृतिक शक्तियों द्वारा वैसे ही नियन्त्रित नहीं किये जा रहे हैं जिस प्रकार इस विश्व की अन्य सभी वस्तुएँ नियन्त्रित की जा रही हैं।

अपने प्रारब्ध अथवा परिवेश पर मनुष्य के आत्म-नियन्त्रण की डींग हाँकने वाले तनिक विचार करें कि क्या मनुष्य अपना नाम या पितृवंश, या व्यक्तित्व अथवा राष्ट्रीयता चुन सकता है ? क्या मनुष्य अपनी मृत्यु नियन्त्रित कर सकता है, अथवा दुर्घटनाओं को बचा सकता है अथवा वृद्धावस्था और अस्वास्थ्य से अवकाश ले सकता है ?

यदि सचमुच यही धारणा है कि अचेतन वस्तु मानव जीवन का नियमन अथवा संशोधन नहीं कर सकती, तो केवल पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति का विचार करना मात्र पर्याप्त है क्योंकि उसी शक्ति के कारण हमारे पैर इस धरा पर स्थिरता से जमे हुए हैं। उस चुम्बकीय एवं दृढ़ आकर्षण के अभाव में हम भी वायुमण्डल अथवा वातावरण में चंचल कीट-पतंगों जैसे असहाय भटकते फिरते।

जिस प्रकार अपनी जड़ें जमाकर वृक्ष खड़े रहते हैं, उसी प्रकार गुरुत्वाकर्षण हमें भी पृथ्वी पर स्थिर रखता है। इसी के साथ-साथ, सूर्य, चन्द्र तथा पृथ्वी सहित अन्य ग्रह अपने प्रकाश, खनिजीय-विकिरण तथा विद्युत्-चुम्बकीय-धाराओं से हमें पालते-पोसते हैं।

जिन व्यक्तियों को हम समझते हैं कि वे अपने परिश्रम के बल से ही महानता की चोटी पर पहुँचते हैं, उन्हीं व्यक्तियों के मुख से हम यह आश्चर्यकारी स्वीकृति भी सुनते हैं कि मनुष्य का जीवन ब्रह्माण्डीय-धाराओं के असीम तथा अगाध्य विस्तारों में तिनकों के समान तैरता-उतराता है। किसी भी महान व्यक्तित्व से पूछिए, और निश्चय ही वह

उत्तर देगा कि यदि उसका वश चलता तो वह निश्चय ही जीवन को भिन्न रूप देता, अथवा यदि उसे एक और अवसर मिल जाय तो वह अपना एक अन्य तथा विभिन्न जीवनयापन करना चाहेगा। क्या यह इस बात की स्वीकृति नहीं है कि उसका जीवन अतिप्राकृतिक शक्तियों द्वारा निरूपित हुआ था जिसमें उसे केवल मात्र एक कठपुतली बनाया गया था; कि उसे अपने जीवन को अपने अनुसार ढालने में बिल्कुल भी स्वतन्त्रता या अधिकार नहीं था।

जिससे कोई भी इन्कार न करेगा, जीवन पर 'ग्रहों' के प्रभाव का एक उल्लेख योग्य तथा नेत्र-विस्फारक उदाहरण सूर्य और चन्द्र में मिलता है। क्या सूर्योदय के साथ ही विश्व स्वयमेव सचेष्ट नहीं होने लगता? पक्षी-गण, पशुवृन्द तथा मानव-समूह अपने-अपने निवास स्थलों से बाहर सचेष्ट हो जाते हैं और आजीविका-अर्जन में लग जाते हैं, उद्योगों के चक्र चलने लगते हैं और समस्त संसार हलचल से गतिमान हो जाता है। इसके विपरीत, जब चन्द्रमा का उदय होता है, तब संसार की गतिविधि कम होने लगती है, और मनुष्य व पशु समान रूप से ही घर वापिस जाकर विश्राम और अभिशयन के लिए उत्सुक होने लगते हैं। सभी पिण्डों के बाह्य और आन्तरिक अवयव निद्रा में शिथिल होने लगते हैं।

प्रत्येक जीवित-प्राणी विश्व के पर्दे पर 'नौ' ग्रहों द्वारा प्रतिबिम्बित छाया-चित्र के समान है। चलचित्र के पर्दे पर छायाचित्र के समान ही एक मनुष्य अपने जागतिक अस्तित्व में नृत्य करता, कार्य करता, गीत गाता हुआ, क्रन्दन करता हुआ दिखायी पड़ता है। दोनों का एकमात्र अन्तर यह है कि छविगृह के पर्दे पर होने वाला चित्र दो-मापक होता है जबकि जीवन में चित्र तीन-मापक है। दोनों ही समानरूप में 'छायामय' और 'अल्पकालिक' हैं तथा अपुनः प्राप्य रूप में लुप्त हो जाते हैं जब उनकी प्रतिबिम्बकारी बिजली बन्द कर दी जाती है। जबकि छविगृह के पर्दे पर छवि को प्रकाश विद्युत-उत्पादक से मिलता है, विश्व-पर्दे पर मानव को प्रकाश उन नौ ग्रहों से मिलता है। जब वे सूर्य का चक्कर लगाते हैं और अपने दीर्घावृत्तीय चक्करों में पृथ्वी से दूर या उसके निकट जा पहुँचते हैं, तब उनके द्वारा प्रकाशित मानव-छवि या तो कष्ट भोगती है अथवा

मुस्कानों से प्रफुल्लित हो जाती है। इस विचार का स्पष्ट ज्ञान हो जाने पर किसी भी व्यक्ति को इसमें सन्देह नहीं रहना चाहिए कि मानव-जीवन की उन्नति और अवनति की कुंजी इन ग्रहों की गतिविधि में ही है।

जैसा ऊपर कहा गया है, ग्रहों के ये तथाकथित 'अचेतन' ज्योतिष्क पिण्ड मानव जीवन को वास्तव में प्रभावित करते हैं या नहीं, फिर भी उनकी गतिविधि मानव-कार्यकलापों की कुंजी हो सकती है। आइए, हम समुद्र-स्नान करने वाले कुछ व्यक्तियों का उदाहरण लें। स्नान के पश्चात् गीली रेत से निकलकर जब सूखे रेतीले तट पर से होकर दल का प्रत्येक व्यक्ति वस्त्र बदलने के लिए लौटता है, तब वह अपने पदचिह्न छोड़ जाता है। वे पदचिह्न एक कहानी कहते हैं। उनके आकार से ही उस व्यक्ति की आयु को भी बताया जा सकता है। उन पदों का क्रम खोजते रहने से वह दिशा बतायी जा सकती है जिस ओर वह व्यक्ति स्नान के पश्चात गया हो। वास्तविकता यह नहीं है कि पदचिह्न विभिन्न व्यक्तियों को उनकी भिन्न-भिन्न दिशाओं में ले गए। वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत है। विभिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न दिशाओं में प्रस्थान ही अपने पीछे पद-चिह्न छोड़ गए। वे पदचिह्न उन लोगों द्वारा अपनाए मार्ग की ओर संकेतक का अब कार्य करते हैं। इसी प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति इस तथ्य को दर्शाती है कि इस लौकिक-यात्रा में वह व्यक्ति कैसा जीवन व्यतीत करेगा। ग्रहों की 'प्रतिछाया' का मत जिन लोगों को मान्य नहीं होता है, उनको भी 'संकेतक' मत स्वीकार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। 'संकेतक' मत का अर्थ (भाव) यह है कि जन्म के समय ग्रहों की स्थिति एक मानव के जीवनकाल में होने वाले सुखों-दुःखों का संकेतक, मार्गदर्शक अथवा सूचक हो सकती है।

मानव जीवन की घटनाओं की पूर्वसूचना देने के लिए ज्योतिष के अध्ययन की न्याय्यता में विश्वास स्थापित करने में अभी भी जिन लोगों को सन्देह हो, वे भी उन असंख्य भविष्यवाणियों की ओर से आँखें नहीं मूंद सकते जो प्रतिदिन घोषित होती हैं और सत्य निकलती हैं। ऐसी सत्य भविष्यवाणियाँ तो ज्योतिष के उपहासकों के अपने जीवन, अथवा उनके मित्रों तथा सम्बन्धियों के सम्बन्ध में भी की जा सकती हैं। यद्यपि

ज्योतिषीय प्रक्रिया के सैद्धान्तिक-स्पष्टीकरण से भी वे प्रभावित न हों, तो भी इससे इन्कार नहीं कर सकते कि ज्योतिषीय सूत्रों की सहायता से की गयी भविष्यवाणियाँ सत्य सिद्ध होती हैं। यदि किसी पकवान का प्रमाण उसको खाने में ही है, तो नित्यप्रति की जानेवाली हजारों भविष्यवाणियों की सत्यता भी ज्योतिष की वैधता का पर्याप्त प्रमाण होना चाहिए।

अभी तक प्रस्तुत स्पष्टीकरण के बावजूद ज्योतिष के विरुद्ध जिनके हृदय में घोर-द्वेष जड़ें जमाए हुए है तथा जो इसकी मिथ्या कहकर इसका उपहास करते हैं, उनके लाभार्थ अगले पृष्ठों में हमने एक अध्याय संग्रहीत किया है जिससे कुछ विशिष्ट ग्रहों की स्थिति से उद्घोषित कुछ ज्योतिषीय परिणामों की वैधता वे लोग भी अपने मित्रों आदि की जन्मकुण्डलियों में देखकर सत्यापित कर सकें।

५

ज्योतिष के लाभ

बहुत लोग ऐसे हैं जो ज्योतिष के अध्ययन को अनेक कारणों से निरुत्साहित करते हैं।

कई बार तर्क दिया जाता है कि ज्योतिष प्रबल उद्योग करने की भावना को नष्ट कर देता है। अनेक कारणों से इस आपत्ति को निराधार ठहराया जा सकता है। चूँकि मानव चाबी भरे हुए एक खिलौने की भाँति है तथा उसका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, इसलिए इस बात का कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि उसे क्या बताया जाता है क्योंकि उसे तो वही कार्य करने हैं जिनके लिए उसकी रचना की गयी है।

दूसरी बात और भी है। ऐसा भी देखा गया है कि किसी की भावनाओं को शिथिल करने की अपेक्षा एक भविष्यवाणी तो व्यक्ति की प्रबल उद्योग भावना को तीक्ष्णता प्रदान करती है। यदि किसी व्यक्ति को यह बताया जाय कि उसके प्रयत्न निष्फल होंगे, तो वह इसे चुनौती स्वीकार करता है और अत्यधिक सचेष्ट हो जाता है, यद्यपि वह ग्रहों की क्रूर स्थिति से भलीभाँति अवगत रहता है। इसके विपरीत, दूसरी ओर, यदि उसे बता दिया जाय कि उसे सफलता मिलना निश्चित है तो वह अपने उद्देश्य की संसिद्धि के लिए अधिक आशा और विश्वास के साथ कार्यरत होता है।

ज्योतिष किस प्रकार प्रयत्नों और साहस में तीव्रता लाता है, इस तथ्य का एक ज्वलन्त ऐतिहासिक उदाहरण शिवाजी-औरंगजेब की कथा में उपलब्ध होता है। १७वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब धूर्त औरंगजेब

बादशाह ने महान मराठा योद्धा शिवाजी को एक व्यक्तिगत बैठक के लिए आमन्त्रित किया, तो उस घटना में अनेक क्रूर सम्भावनाएँ थीं। प्रायः निश्चित ही था कि शिवाजी को बन्दी बनाकर मौत के घाट उतार दिया जाता। किन्तु तत्कालीन राजनीतिक अपरिहार्यता के कारण उस अवसर का साहस के साथ सामना करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प न रहा था। उस समय पर सौभाग्य से ज्योतिषी लोग ही थे जिन्होंने शिवाजी की सुरक्षित वापिसी और उनकी अन्तिम सफलता के लिए आश्वासन देते हुए उनको परामर्श दिया था कि वे साहस और विश्वास के साथ आगे बढ़ें। इसके अतिरिक्त, जिन लोगों को स्थिति की ज्योतिषीय सुखदावस्था का ज्ञान नहीं था। उन्होंने तो निर्दिष्ट उद्देश्य में घोर भ्रमोत्पादक बातें की थीं। अतः, प्रेरणा नष्ट करने के स्थान पर ज्योतिष तो इसमें प्रखरता लाता है।

प्रायः तर्क दिया जाता है कि यदि भावी को टाला नहीं जा सकता तो उस अवश्यम्भावी को अग्रिम जानकर लाभ क्या होगा! इस आपत्ति द्वारा, घटनाओं और परिणामों को पहले ही जानने की मानव की सामान्य कमजोरी का अज्ञान ही प्रगट होता है। विद्यार्थी और उनके संरक्षक कुछ घण्टों पूर्व ही तार द्वारा परिणाम जानने को उत्सुक रहते हैं। चाहे कुछ ही घण्टों बाद समाचार पत्रों में परिणाम प्रकाशित होना ही होता है, फिर भी उनकी इच्छा होती है कि कुछ घण्टों पूर्व ही सही, यह परिणाम उनको दूरभाष अथवा तार द्वारा मिल ही जाना चाहिए।

बस या रेल से यात्रा करने वाला व्यक्ति उसी ओर मुख किए रखना पसन्द करता है जिस ओर से बस या रेल आना निश्चित होता है। वह जनाना चाहता है कि आ क्या रहा है!

ये दो उदाहरण प्रदर्शित करते हैं कि चाहे ज्योतिष के और कोई लाभ न भी हों, तो भी अपना भविष्य अग्रिम में जान लेने की मानव की सहज रुचि तथा अधीरता के आधार पर ही इसका अध्ययन न्यायोचित ठहराया जा सकता है।

किन्तु, मानव-उत्सुकता तथा अधीरता को ज्योतिषीय भविष्यकथन द्वारा शान्त करने के अतिरिक्त भी ज्योतिष के अनेक विधायक तथा

प्रत्यक्ष लाभ हैं।

ज्योतिष विद्या इसके ज्ञाता को इस योग्य बना देती है कि वह जिन व्यक्तियों को कभी न मिला हो, तब भी उनके स्वभाव व व्यक्तित्व का मानस-दर्शन कर सके। इस प्रकार, यदि पहले कभी भी न मिले हुए किसी व्यक्ति से किसी हवाई-अड्डे, रेलवे-स्टेशन अथवा बस-अड्डे पर भेंट करना हो, तो आगन्तुक की जन्मकुण्डली उसके चित्र से भी अधिक दिग्दर्शक हो सकती है। प्रतीक्षित व्यक्ति की जन्मकुण्डली का अध्ययन उसका व्यक्तित्व, शारीरिक-गठन, वेशभूषा, आयुष्य, स्वभाव और वित्तीय-स्तर स्पष्ट कर देगा।

ज्योतिष का एक अन्य लाभ यह है कि व्यापार या आमोद-प्रमोद के लिए किसी व्यक्ति को बुलाना हो तो उसकी जन्मकुण्डली का अध्ययन करके उस व्यक्ति की रुचि-अरुचि और सामर्थ्य व दौर्बल्य का पता लगाया जा सकता है। सम्बद्ध व्यक्ति से व्यवहार करने में ऐसा अध्ययन एक लाभदायक मार्गदर्शक की भाँति होगा।

जहाँ भी कहीं मानवचित्र नहीं भेजे जाते या उनका परस्पर आदान-प्रदान नहीं हो सकता, वहाँ जन्मपत्रियाँ अभावपूर्ति कर सकती हैं। बिना परस्पर भेंट किए ही पत्र-व्यवहार करने वाले अथवा नये-नये परिचित व्यक्ति और अधिक परिचय के लिए एक-दूसरे की जन्मपत्री पढ़ लें ताकि उन्हें सत्य ज्ञान हो सके। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति के लिए ज्योतिष से नमस्कार करना सदैव अच्छा ही है, तथापि किसी व्यक्ति या घटना के सही ज्ञान के लिए किसी ज्ञानी पुरुष को अपनी अथवा अन्य व्यक्ति की जन्मपत्री दिखाकर उनके ज्ञान से लाभान्वित होना श्रेयस्कर है।

यद्यपि मानवचित्रों का आदान-प्रदान होता है अथवा हो सकता है, तथापि जन्मपत्रियों का अध्ययन लाभदायी रहेगा क्योंकि इनके माध्यम से मनुष्य के मस्तिष्क और हृदय में झाँका जा सकता है। जन्मपत्रियाँ यह अवसर प्रदान करती हैं।

ज्योतिष का एक महान लाभ यह है कि घोर विपत्तियों की घड़ियों में यह बहुत सान्त्वना तथा सुविधा का स्रोत हो सकता है। उन मामालों में, जबकि एकमात्र पुत्र शोचनीय स्थिति मे रोगी पड़ा हो, अथवा परिवार में

किसी व्यक्ति को घोर दुर्घटना का शिकार होना पड़ा हो, अथवा किसी को उसके पद से अवनत, बर्खास्त या निकाल दिया गया हो, अथवा यदि किसी को घोर लज्जा अथवा सन्देह की अवस्था में गुजरना पड़ रहा हो, या वित्तीय संकट, वैवाहिक-घृणा अथवा अथवा अन्य किसी प्रकार का घोर मानसिक अथवा शारीरिक कष्ट भोगना पड़ रहा हो, तब ज्योतिष ही एकमात्र विज्ञान है जो इस बात का सुनिश्चित सूचक हो सकता है कि उस व्यथित आत्मा को कब छुटकारा मिलेगा तथा कब उसके अच्छे दिन आएँगे। विपत्ति के क्षणों में एक प्रश्रयदाता और मार्गदर्शक के रूप में ज्योतिष निश्चित ही अद्वितीय विज्ञान है।

ज्योतिष की इस विशिष्ट पात्रता के कारण दुःखी और पीड़ित लोग ज्योतिष और ज्योतिषियों का मूल्यांकन उन थोड़े-से भाग्य-वशात् सुखी लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ रूप में करते हैं जिनका जीवन विघ्नरहित सतत सफलता की कहानी है। ज्योतिष का उपहास अथवा असम्मान करनेवाले प्रायः वे लोग हैं जो आत्म-महत्व बहुत अनुभव करते हैं। इस अनुभव की विनम्रता का उनमें अभाव होता है कि उन लोगों को इस विश्व में भेज दिया गया है और बिना उनकी इच्छा के ही उनको विलुप्त कर दिया जायेगा। वे अपनी सफलता का श्रेय अपनी प्रतिभा और मौलिकता को देते हैं तथा अनुभव करते हैं कि यदि अन्य लोग सफल नहीं हुए हैं तो इसमें उनके अपने दोष और न्यूनताएँ हैं। उस अत्युद्धत तथा उच्च स्थान से वे एक विशाल ब्रह्मांण्ड की भयंकर विविधता तथा व्यापकता में अपनी नगण्यता अनुभव करने में विफल रहते हैं। कोई भी व्यक्ति, जिसमें यह अनुभव करने की विनम्रता है कि मनुष्य का जन्म, जीवन और मरण विश्व के अपरिवर्तनशील सिद्धान्तों द्वारा नियन्त्रित होते हैं, ज्योतिष की प्रासंगिकता तुरन्त अनुभव कर लेगा।

जन्मकुण्डली-अध्ययन राजकौशल, सरकार-प्रशासन और सुरक्षा-सेवाओं के लिए अत्यन्त लाभदायक हो सकता है। जन्मपत्रियाँ प्रामाणिक व्यक्तियों की स्पष्ट सूचक होती हैं। जिन विभागों में भ्रष्टाचार के अवसर होते हैं, वहाँ पर यदि इन लोगों को अध्यक्ष नियुक्त किया जाय, तो एक स्वच्छ प्रशासन की आशा की जा सकती है। जन्मकुण्डलियाँ साहस, शौर्य

और सफलता भी स्पष्ट सूचित करती हैं। यदि ऐसे व्यक्तियों को देश की सशस्त्र सेनाओं का सर्वे-सर्वा बना दिया जाय, तो वे देश के लिए सफलता और यश, दोनों, का अर्जन कर लाएँगे।

सरकारी या व्यापार-समवायों में सेवा के इच्छुक व्यक्तियों को प्रपत्रों और स्तम्भों का प्राचुर्य पूर्ण करना पड़ता है। नियोक्ताओं के हित में होगा कि वे जन्मपत्रियाँ भी साथ ही मँगाएँ। जन्मपत्रियाँ मनुष्य की झलक रुचि-परीक्षणों, साक्षात्कारों तथा मनोवैज्ञानिक-परीक्षणों के समवेत रूप से भी स्पष्ट प्रगट कर देती हैं। जन्मपत्रियों का अध्ययन नियोक्ताओं को इस योग्य बना देगा कि वे प्रारम्भ में ही ऐसे उम्मीदवारों की छँटाई कर सकें जो सुस्त और भ्रष्ट हों अथवा बिना कोई ठोस या महत्त्वपूर्ण काम किए ही अकड़ते-फिरने के आदी हों।

जन्मपत्रियों में ऐसे व्यक्तियों के अचूक संकेत उपलब्ध होते हैं जो प्रामाणिक हों, जो निश्चित समय पर काम करेंगे, वचनों का पालन करेंगे और लिए हुए धन को वापिस कर देंगे। अतः, ज्योतिष का ज्ञान नित्यप्रति के कार्यों में, मित्रों के चयन में, पैसा उधार देने में और घरेलू नौकरों व अन्य कर्मचारियों को नियुक्त करने में अत्यन्त सहायक होता है।

जिस प्रकार ऋतु-विज्ञान के अध्ययन से, सभी सम्बद्ध व्यक्तियों को भावी तूफानों की सूचना देकर सावधान कर दिया जाता है उसी प्रकार जन्मपत्रियों के अध्ययन से भी, सम्बद्ध व्यक्तियों को शारीरिक व्याधियों, चोटों, दुर्घटनाओं अथवा अन्य विपत्तियों से सावधान किया जा सकता है। इस प्रकार की अग्रिम सूचना किसी भी व्यक्ति को उन विपत्तियों को धैर्य और साहस के साथ सहन करने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से सिद्ध कर देती है। व्यक्ति को यह भी ज्ञात होता है कि वह कब विपत्तियों के समूह से बाहर निकलने वाला है। प्रजापति परमेश्वर के प्रति विनम्रता एवं समर्पण तथा सहयोगियों के प्रति सम्मान की भावना के संस्कार बनाने में भी ज्योतिष सहायक होता है। ज्योतिषीय सिद्धान्तों द्वारा प्रदर्शित दुःखों और प्रतिकूलताओं की अवश्यम्भाविता व्यक्ति को साहस और धैर्य प्रदान करती है कि वह इनको शान्तिपूर्वक मौन-भाव से सहन कर सके।

सफलता और उत्कर्ष की अवधि में ज्योतिष अच्छा मार्गदर्शन कर

सकता है कि किन अवसरों का लाभ उठाना चाहिए और सफलता व उन्नति की कितनी आशा रखनी चाहिए।

ज्योतिष बता सकता है कि व्यक्ति को किस समय जोखिम नहीं उठाना चाहिए और किस समय सुयोग को हाथ से नहीं निकलने देना चाहिए। इस विद्या से व्यक्तियों और स्थितियों का बेहतर अनुमान लगाया जा सकता है। सबसे बढ़कर बात यह है कि यह विद्या आत्मप्रदर्शन, मिथ्याभिमान और अहम् भाव को अनुशासित करती है।

ज्योतिष के ऊपरी लाभों के अतिरिक्त अन्य लाभों में से कुछ ये हैं कि लोगों को भावी जीवन के लिए मार्गदर्शन में इसे निःशुल्क समाज सेवा के रूप में अपनाया जा सकता है, और यदि आवश्यकता हो तो इसे अंश-कालिक आय या पूर्ण व्यवसाय के रूप में भी अंगीकार किया जा सकता है। ज्योतिष मित्रता का एक अच्छा साधन हो सकता है, क्योंकि प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने अज्ञात भविष्य के सम्बन्ध में कुछ बताया जाना पसन्द करता है। ज्योतिष एक लाभदायक गुण और अत्यन्त मूल्यवान अभिरुचि है। इस प्रकार, यह भी स्वीकार कर लेने पर कि प्रारब्ध को हटाया या बदला नहीं जा सकता, ज्योतिष के अनेक महत्त्वपूर्ण लाभ हैं।

ज्योतिषी लोग अपने ग्राहकों को विपत्तियों का दुष्प्रभाव अन्य उपाधानों से कम करने अथवा उनकी कठोरता कम करने के लिए परामर्श देते हैं। ऐसे उपायों में साधारणतः पवित्र मन्त्रोच्चारण, दान देना, रक्षाकवच धारण करना, अथवा संकल्पित कार्य करना आदि हैं। ये उपाय यद्यपि वर्तमान अथवा भावी दुर्दिनों को सँवारने में अत्यधिक लाभकारी नहीं होते तथापि प्रतिकूल-स्थिति को सहन करने और भविष्य में यशस्वी होने के लिए मन की स्थिति वैसे बनाने में प्रायः लाभदायक सिद्ध होते हैं।

६

ज्योतिष-चक्र के १२ भाग

यह स्वीकार कर लेने पर कि ज्योतिष कोई मनगढ़न्त बात न होकर अथाह तथा अत्यधिक विकसित विज्ञान है, और, चाहे प्रारब्ध टाला न जा सकता हो फिर भी इसका अध्ययन बहुत लाभदायक हो सकता है, आइए अब हम विषय-विशेष का अध्ययन प्रारम्भ करें।

पाठक को परामर्श दिया जाता है कि वह ज्योतिष का अध्ययन गम्भीरता एवं विश्वासपूर्वक प्रारम्भ करे। इसके सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से आतंकित होने की आवश्यकता नहीं है। आगे वर्णित सभी बातों को पढ़े और सावधानीपूर्वक पुनः-पुनः पढ़े। ज्योतिष के मूल सिद्धान्त समझने और मनन कर हृदयंगम करने में किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं है। ज्योतिष कोई ऐसा दुर्बोध विषय नहीं है जैसा इसके सम्बन्ध में प्रायः कहा जाता है। जन्मपत्रियों का स्थूल रूप में विवेचन करने योग्य बनने के लिए ज्योतिष के मूल सिद्धान्तों को हृदयंगम करना किसी भी व्यक्ति के लिए कठिन बात नहीं है। यदि एक ही बार के पढ़ने से इसे समझा न जा सके, तो पाठक को किसी प्रकार हताश होने की आवश्यकता नहीं है।

पृथ्वी एक विशाल अन्तरिक्ष-यान है। यह अन्तरिक्ष में से एक अति वेगवान गति से संघर्षण करती है। जिस प्रकार एक बँदरिया अपने नवजात-शिशु को अपनी छाती से चिपकाए हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूद जाती है, उसी प्रकार पृथ्वीमाता भी हम सबों को अपनी रहस्यमयी गुरुत्वाकर्षण-शक्ति से दृढ़तापूर्वक सुरक्षित बनाए रहती है। पृथ्वी के आकार की तुलना में तो हम लोग सूक्ष्म अदृश्य जीवाणुओं की भाँति हैं जो पृथ्वी की धूल में असहाय लोट-पोट होते रहते हैं। जिस प्रकार मनुष्य का भारी पैर अपने नीचे असंख्य चींटियों को कुचलकर उनके प्राण हरण-

कर सकता है, उसी प्रकार प्रचण्ड आंधी, ज्वालामुखी-विस्फोट, बाढ़ें, भूचाल, हिमधाव और युद्ध जैसी जागतिक शक्तियां डींग हांकने वाले लाखों लोगों के जीवन को क्षण भर में समाप्त कर सकती हैं।

मक्खियों और मच्छरों के झुण्डों तथा अदृश्य सूक्ष्म जीवाणुओं से लेकर अतिविशाल दनुसरट, ह्वेल व स्थूल-चर्म पशुओं के समान ही मनुष्य-जीव की पीढ़ियां भी जीवन और मरण के अन्तहीन खेल में धूल से ही उदित होती हैं और उसी में समा जाती हैं। यह विशाल जागतिक नाटक कुछ विशिष्ट निश्चित नियमों से संचालित होता है। ज्योतिष उन नियमों के उस अंश को समझने का यत्न करता है जिसका सम्बन्ध मनुष्य-जीव के जीवन सुख, दुःख और मरण से है।

सूर्य और अन्य ग्रहों के रूप में जागतिक शक्तियों के पारस्परिक खेल से ही पृथ्वी पर जीवों की सृष्टि और उनका विनाश होता है। अतः, उन आकाशीय पिंडों और शिरोबिन्दु नाम से पुकारे जाने वाले दो चंचल अमूर्त स्थलों की गतिविधियों का अध्ययन मानव-प्रारब्ध को समझने में लाभप्रद है।
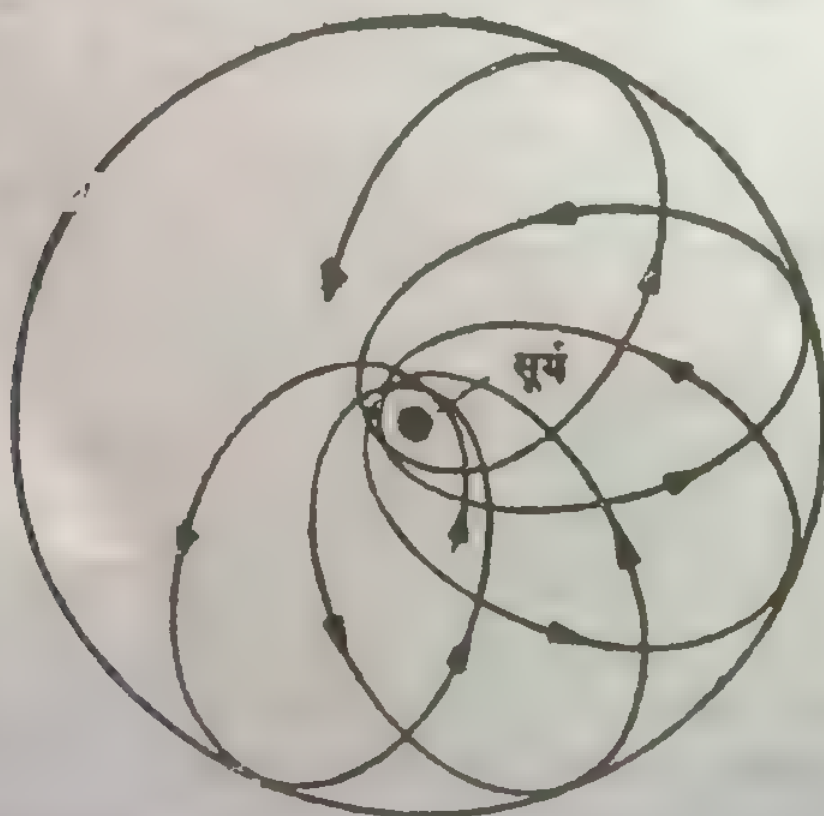
अपने शानदार पिंड पर हम सबको धारण किए हुए जब यह पृथ्वी

अन्तरिक्ष में चक्कर लगाती है, तब यह सूर्य के चारों ओर वर्षावधिक दीर्घवृत्तीय ग्रहपथ में घूमती है। किन्तु, सब समय, सूर्य से यह एक ही समान अन्तर पर नहीं रहती। कई बार, यह अत्यन्त निकट होती है और अनेक बार, सूर्य से अत्यन्त दूर अन्तरिक्ष में भटकने को चली जाती है।

पृष्ठ ६६ पर दिए गए चित्र में जिस प्रकार दिखाया गया है, पृथ्वी और अन्य आकाशीय पिंडों की अन्तरिक्ष की गतिविधि, यद्यपि केवल दीर्घवृत्तीय ही वर्णन की जाती है, अनेकों दीर्घवृत्तों से परिपूर्ण होती है। ग्रह अनेकों बार सूर्य के निकट आ जाते हैं और अनेकों बार सूर्य से अत्यन्त दूर भटक जाते हैं; इसका कारण गुरुत्वाकर्षणीय बाधाओं से जागतिक अन्तरिक्ष का 'अव्यवस्थित' हो जाना अथवा 'निर्बाध राजमार्ग' का प्राप्त हो जाना है।

वह ज्योतिष-चक्र अथवा दीर्घवृत्त, जो पृथ्वी सूर्य के चारों ओर लगाती है, २७ समान भागों में विभक्त होता है। चूंकि दीर्घवृत्त ३६० अंशों का होता है, प्रत्येक नक्षत्र (अर्थात् भाग) १३$\frac{१}{३}$ अंशों अथवा १३ अंशों व २० मिनटों—उस ज्योतिष चक्र का अन्तर प्रदर्शित करता है।

उत्तराषाढ़ और श्रावण के मध्य स्थित एक २८वें नक्षत्र (भाग) का भी कई बार सन्दर्भ दिया जाता है।

ज्योतिष-चक्र के २७ नक्षत्र-भाग क्रमानुसार निम्न नामोल्लेखित हैं :

(१) अश्विनी (२) भरणी (३) कृतिका (४) रोहिणी (५) मृगशीर्षा (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु (८) पुष्य (९) आश्लेषा (१०) मघा (११) पूर्वा अर्थात् पूर्वा फाल्गुणी (१२) उत्तरा अर्थात् उत्तरा फाल्गुणी (१३) हस्ता (१४) चित्रा (१५) स्वाति (१६) विशाखा (१७) अनुराधा (१८) ज्येष्ठा (१९) मूल (२०) पूर्वाषाढ़ा (२१) उत्तराषाढ़ (२२) श्रावण (२३) धनिष्ठा (२४) षट्-तारक (२५) पूर्वा-भाद्रपदा (२६) उत्तरा-भाद्रपदा (२७) रेवती।

ज्योतिष-चक्र का प्रत्येक लक्षण (राशि) अंश ३० अंशों अर्थात् २$\frac{१}{४}$ नक्षत्रांशों का होता है।

जैसाकि पृष्ठ ६८ पर दिए गए चित्र से स्पष्ट है, एक वृत्त ३६० अंशों का होता है। इन अंशों को जब दीर्घवृत्त के सीमांकक २७ तारकीय नक्षत्र-राशियों से विभाजित किया जाता है, तो हमें एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र के मध्य का अन्तर १३ अंश व २० मिनट प्राप्त होता है।
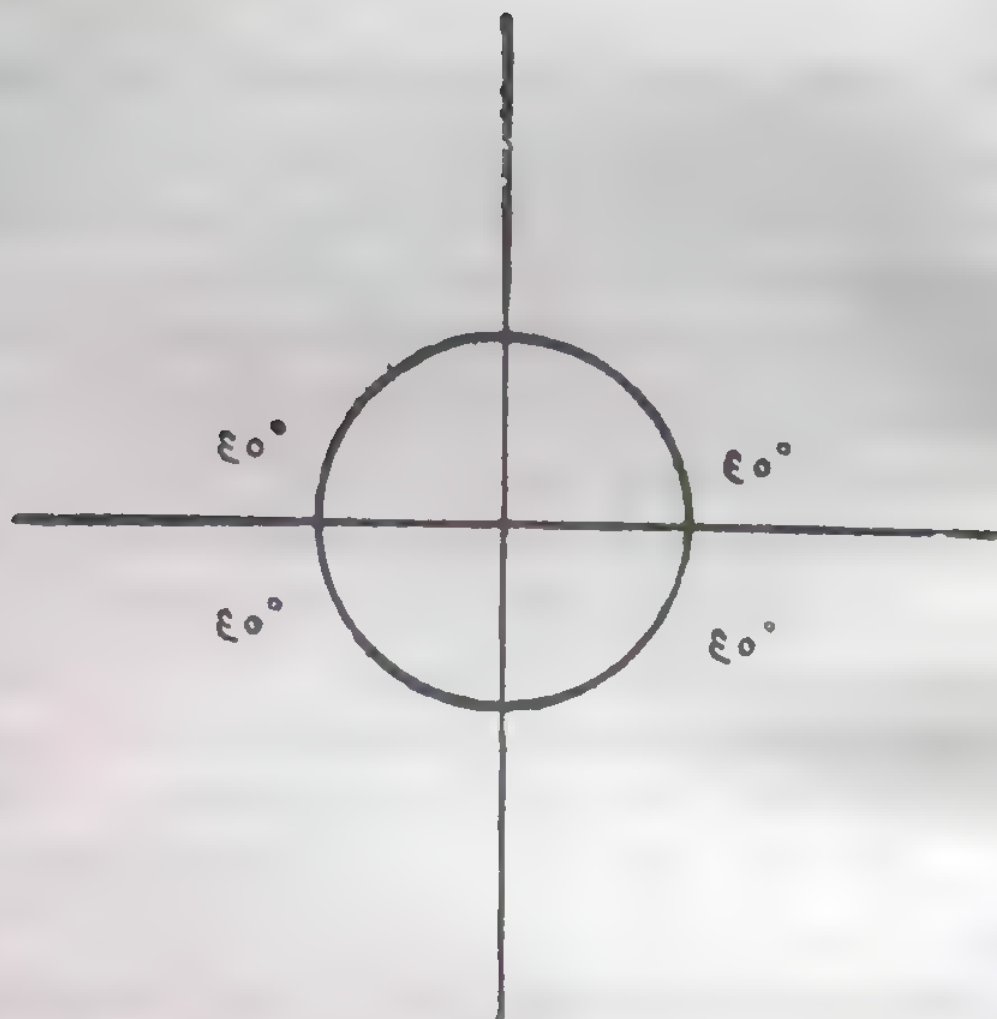
पृथ्वी सूर्य का चक्कर अण्डाकार-मार्ग में लगाती है जैसा निम्नलिखित चित्र में दिखाया गया है :
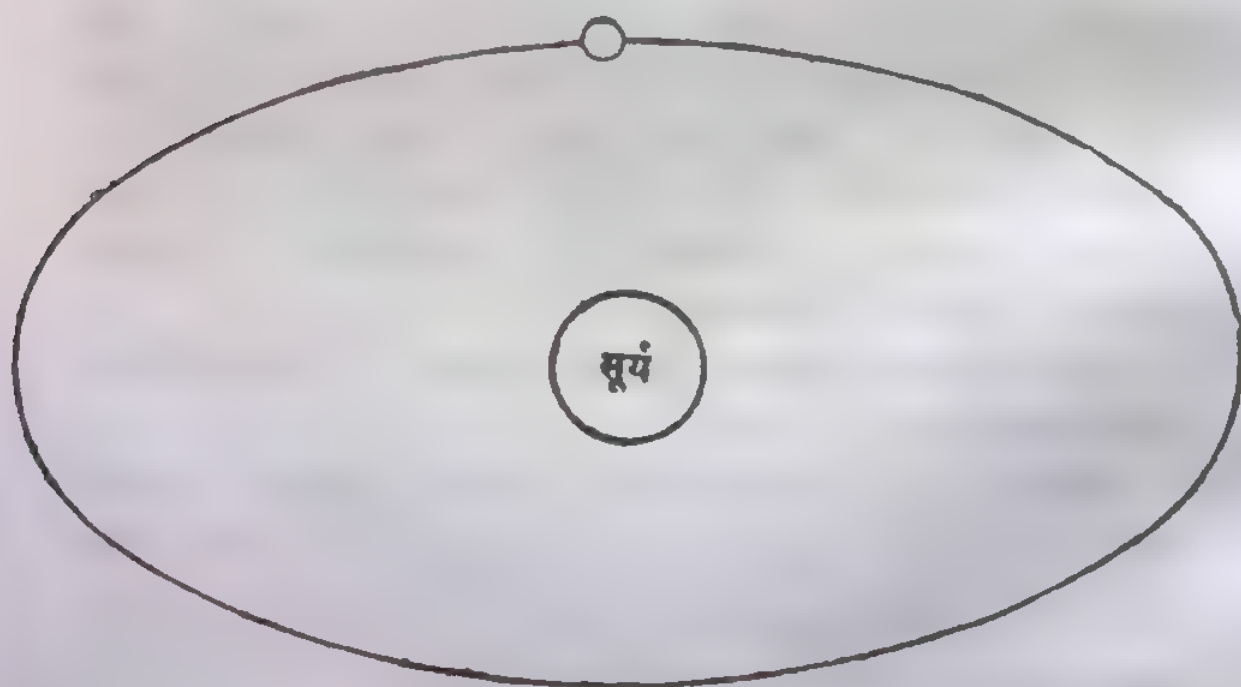
उपर्युक्त अण्डाकार वृत्त को ज्योतिष में राशि चक्र (ज्योतिष चक्र) कहते हैं। जिस प्रकार एक चक्र को तीलियों से विभाजित करते हैं उसी
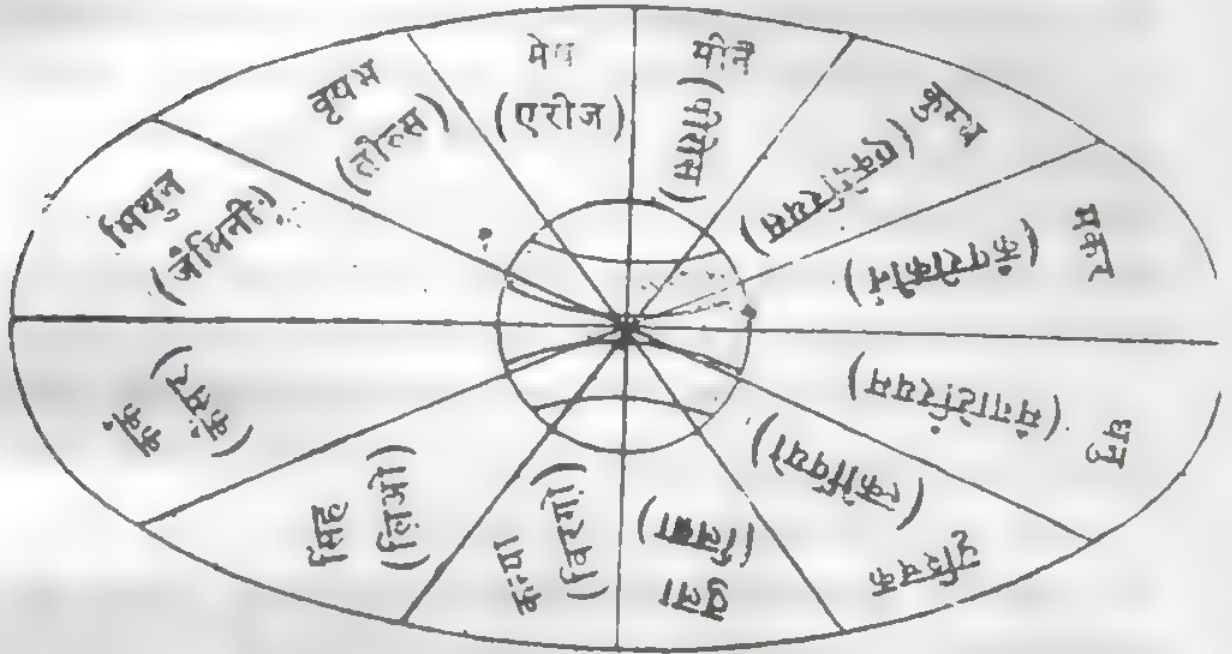
प्रकार इस राशि चक्र को १२ खण्डों में इस प्रकार विभक्त किया है :

राशि चक्र के १२ खण्डों के भारतीय नाम नीचे क्रमानुसार दिए गए हैं। उनके अंग्रेजी-पर्याय कोष्ठकों में उल्लेखित हैं। (१) मेष (एरीज) (२) वृषभ (तौरुस) (३) मिथुन (जैमिनी) (४) कर्क (कैन्सर) (५) सिंह (लिओ) (६) कन्या (विरगो) (७) तुला (लिब्रा) (८) वृश्चिक (स्कौरपिओ) (९) धनु (सैगिटेरियस) (१०) मकर (केपरी-कौन) (११) कुंभ (ऐक्वेरियस) (१२) मीन (पीसेस)

ऊपर दिया प्रत्येक भाग भारतीय शब्दावली में 'राशि' कहलाता है। पश्चिमी ज्योतिष में प्रत्येक भाग को 'लक्षण' (चिह्न…साइन) कहते हैं।

उपर्युक्त नाम अत्यन्त अर्थपूर्ण हैं और इनमें से प्रत्येक का एक अत्यन्त उपयुक्त परम्परागत चिह्न साथ है। इस प्रकार, मेष का अर्थ मेंढ़ा है। इसका चिह्न वही पशु है। वृषभ का अर्थ एक सांड है। मिथुन एक दम्पति है जिसका मूर्तिकरण एक यौवनमय पुरुष व महिला से होता है। कर्क एक केंकड़ा है। सिंह शेर है। कन्या एक कुमारी है। तुला तराजू है। वृश्चिक एक बिच्छू है। धनु एक धनुप है। इसका चिह्न घोड़े के शरीर पर मनुष्य के सिर वाला धनुर्धर है। मकर मगरमच्छ है। कुम्भ का अर्थ एक जल-

कलश है। मीन का अर्थ मछली है। इसका चिह्न जल में तैरती हुई दो मछलियों की एक जोड़ी है।

ज्योतिष सीखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को राशि चक्र के ये १२ भाग, जिनको राशि अथवा चिह्न कहते हैं, हृदयंगम करने आवश्यक हैं। प्रत्येक राशि की क्रम-व्यवस्था तथा संख्या उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना महत्व-पूर्ण इसका चिह्न है। इस प्रकार, उदाहरणार्थ, प्रत्येक विद्यार्थी को तुरन्त बता सकना चाहिए कि पांचवीं राशि का नाम सिंह है और इसका चिह्न शेर है। इसी प्रकार, ११वीं राशि का नाम कुम्भ है और इसका चिह्न कंधे पर जलकलश धारण किए हुए एक व्यक्ति है।

ज्योतिष के विद्यार्थी को जब ये विवरण पूर्णतः कण्ठस्थ हो जाएँ, तभी उसे आगे विषय-प्रवेश करना चाहिए।

आगे अध्यायों में यह बताया जाएगा कि इन चिह्नों का भी अपना-अपना महत्व है, और राशिचक्र के प्रत्येक भाग अर्थात् राशि (चिह्न) को स्मरण रखने में ये पाठक के लिए सहायक का कार्य करते हैं।

वह व्यक्ति, जिसकी जन्मपत्रिका का अध्ययन करना होता है, जिसका विगत और भविष्यकाल आपको पूछा जाता है, जन्मधारण करने वाला 'जातक' (नेटिव) कहलाता है। इसे संसार में 'नवागन्तुक' भी कहते हैं।

(जातक) नवागन्तुक की जन्मकुण्डली उसके जन्म के समय दृश्यमान राशिचक्र का मानचित्र होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। राशि-चक्र १२ भागों अर्थात् राशियों में विभक्त किया जाता है और उन ९ ग्रहों को (जातक) नवागन्तुक के जन्म के समय उनकी स्थिति के अनुसार उस राशिचक्र में प्रस्थापित कर दिया जाता है।

ज्योतिष के प्रत्येक विद्यार्थी के पास न केवल चालू वर्ष का पंचांग तुरन्त प्राप्य होना चाहिए, अपितु पिछले ५० से १०० वर्षों में नक्षत्रों की स्थिति की द्योतक तालिकाएं पुस्तकाकार रूप में जिल्द बंधी होनी चाहिए। ऐसे पंचांग, उचित मूल्यों पर, विश्व के लगभग सभी बड़े नगरों-उपनगरों में पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य हैं। इस प्रकार की तालिकाएँ ज्योतिष के विद्यार्थी को न केवल नई जन्मपत्रिकाएँ बनाने में अपितु सन्देहात्मक जन्मपत्रियों का संशोधन व भविष्य कथन करने में भी सहायक होंगी।

१२ राशियों अर्थात् राशिचक्र के चिन्हों के अपने-अपने विशिष्ट अधिष्ठाता ग्रह हैं जो उनके स्वामी हैं। यहां यह स्मरण रहना चाहिए कि (राहु और केतु) शिरोबिन्दु केवल अमूर्त स्थल होने और तात्विक विशाल पुंज अथवा ज्योतिष्क पिंड न होने के कारण किसी भी अपनी राशि के अधिष्ठाता, स्वामी नहीं हैं। शेष सात आकाशीय पिंडों में से सूर्य एक नक्षत्र और चन्द्र एक उपग्रह होने के कारण वास्तविकता में ग्रह नहीं हैं। इसके अतिरिक्त ये दोनों अपनी गतिविधियों में अधिक नियमित हैं तथा किसी भी सरलतम व्यक्ति द्वारा भी पहिचाने जा सकते हैं। सूर्य सिंहराशि का स्वामी है, और चन्द्र कर्क राशि का। अब शेष रह जाते हैं ५ ग्रह और १० राशियां; अत: प्रत्येक ग्रह दो-दो राशियों का स्वामी होता है। ग्रह और राशिचक्र के भिन्न-भिन्न खण्ड (चिह्न अथवा राशियाँ) तथा उनके स्वामी निम्न-लिखित तालिका में देखे जा सकते हैं :

लक्षण	क्रमसंख्या	राशि	अंग्रेजी नाम	स्वामी का संस्कृत-नाम	स्वामी का अंग्रेजी नाम
मेंढ़ा	१	मेष	एरीज	कुज, भौम, मंगल	मार्स
सांड	२	वृषभ (वृष)	तौरुस	शुक्र	वीनस
युवादम्पति	३	मिथुन	जैमिनी	बुध	मर्करी
केंकड़ा	४	कर्क	कैन्सर	चन्द्र	मून
शेर	५	सिंह	लिओ	सूर्य, रवि	सन
कुमारी	६	कन्या	विरगो	बुध	मर्करी
तराजू	७	तुला	लिब्रा	शुक्र	वीनस
बिच्छू	८	वृश्चिक	स्कोरपियो	कुज, भौम, मंगल	मार्स
धनुर्धर	९	धनु	सैगिटेरियस	गुरु, बृहस्पतिवार	जुपिटर
मगरमच्छ	१०	कुम्भ	कैपरीकौर्न	शनि	सैटर्न
मनुष्य के कन्धे पर कलश	११	कुम्भ	अक्वेरिअस	शनि	सैटर्न
मछलियों की जोड़ी	१२	मीन	पीसेस	गुरु, बृहस्पति	जुपिटर

पाठक को उपर्युक्त तालिका को स्मरण रखने में अत्यधिक विषम समझ

कर घबड़ा उठने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक स्तम्भ के महत्व से, पृथक-पृथक, हम पाठक को पहले ही परिचित करा चुके हैं। यहां हमने केवल इतना ही किया है कि सभी स्तम्भों के परस्पर सम्बन्धों के दिग्दर्शन के लिए उनको एक ही स्थान पर एकत्र कर दिया है। जो उपर्युक्त व्यवस्था को उलझन में डालने तथा हताश करने वाला पाएँ, उनको चाहिए कि वे इनके सम्बन्धों में पूर्व पृष्ठों में कही गयी बातों को फिर से पढ़ लें।

भारतीय शैली पर बनी जन्मपत्रिकाओं में अनेकों ज्योतिषियों द्वारा मंगल को कुज, भौम अथवा मंगल की संज्ञा दी जाती है। अतः, वे तीनों भारतीय नाम ऊपर उल्लेख कर दिए गए हैं। क्षेत्रीय प्रचलन अथवा वैयक्तिक रुचि के कारण सूरज को रवि या सूर्य, तथा गुरु को बृहस्पति या गुरु कहा जाता है।

जैसाकि पीछे तालिका में उल्लेख किया है, मंगल (मंगल, कुज अथवा भौम) मेष तथा वृश्चिक अर्थात पहली व आठवीं राशि का स्वामी है।

बुध, मिथुन, कन्या राशि अर्थात् तीसरी, छठी राशि का स्वामी है।

शुक्र वृषभ, तुला राशि का अर्थात् दूसरी, सातवीं राशि का स्वामी है।

गुरु, बृहस्पति, धनु, मीन अर्थात् नवीं-बारहवीं राशि का स्वामी है।

शनि मकर, कुम्भ अर्थात् दसवीं-ग्यारहवीं राशि का स्वामी है।

मंगल	राशि क्रमांक	१	और	८	का	स्वामी	है।
बुद्ध	,,	३	और	६	,,	,,	,,।
गुरु	,,	९	और	१२	,,	,,	,,।
शुक्र	,,	२	और	७	,,	,,	,,।
शनि	,,	१०	और	११	,,	,,	,,।
सूर्य	,,	५	...	...	,,	,,	,,।
चन्द्र	,,	४	...	...	,,	,,	,,।

राहु और केतु का भौतिक अस्तित्व न होने के कारण वे ज्योतिष-चक्र के किसी भी खण्ड अर्थात् राशि के स्वामी नहीं।

तथापि, यह साधारणतः विश्वास किया जाता है कि राहु मिथुन तथा केतु धनु में अधिक स्वगृही होता है। किन्तु, पाठक चाहे तो इसे शास्त्रसम्मत सत्य न माने, यदि उसका अनुभव कुछ भिन्न हो।

७

ग्रहों और राशियों के विशेष लक्षण

ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह का अपना एक विशेष लक्षण अथवा स्वभाव होता है। अतः ज्योतिष-चक्र की जिन राशियों (खण्डों, भागों, चिह्नों) के वे स्वामी होते हैं, वे उनके स्वभाव से युक्त हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, राशियां अपने स्वामीग्रहों के गुण-दोषों को ग्रहण कर लेती हैं।

प्रत्येक ग्रह के विशेष लक्षणों का स्मरण करने में पुराण-विद्या बहुत सहायक सिद्ध होती है। मंगल युद्ध-देवता, देवताओं की सेना का सेनाध्यक्ष है। अतः मंगल गरम स्वभाव का, धैर्यहीन और झगड़ालू-लड़ाका है। वह कृशकाय, दृढ़ एवं नमनीय तथा लम्बा है क्योंकि, जैसा हमारा नित्य का अनुभव है, तुनुकमिजाजी लोग शायद ही कभी स्थूलकाय हों। मंगल चुस्त है, जैसा एक सैनिक होना चाहिए। वह मुंहफट है। उसमें बहुत सहनशीलता है। वह यातना सहता रहेगा, धैर्य और शान्ति से, बिना बाह्य प्रदर्शन किए, एक अनुशासित सैनिक की भांति, चाहे हृदय से वह अमान्य करता हो व रुष्ट भी हो। किन्तु एक बार उसका क्रोध जागृत हो गया (प्रायः अन्तिम बात पर—जो बड़े-बड़े अपमानों की घूंटों की तुलना में छोटी-मोटी बातें ही होती हैं) तो वह पूर्ण प्रतिकार करेगा और अपने क्रोध के शिकार व्यक्ति की स्थिति अथवा उसके पद की तनिक भी चिन्ता किए बिना ही अपना सारा जहर उगल देगा।

चूंकि मंगल मेष राशि का स्वामी है, अतः नवागन्तुक (नवजन्मा—जिसका जन्मचिह्न मेष हो—यह शब्दावली हम आगे चलकर स्पष्ट

करेंगे) कृशकाय, दृढ़ एवं नमनीय, चुस्त, अनुशासित, शीघ्र रुष्ट होनेवाला और बहुत उतावला होगा। चाहे परिणाम प्रतिकूल ही हो, किन्तु वह शीघ्र परिणाम का इच्छुक व्यक्ति होगा; परन्तु अपनी अन्तिम सफलता के लिए कुटिल उपायों से धीरे-धीरे व धैर्यपूर्वक कार्य करते रहने का धैर्य अथवा सहनशीलता उसमें न होगी। उसके लिए, अनिश्चय मानसिक-सन्ताप और इधर या उधर—एक ओर निश्चय अत्यन्त क्लेशहरण वस्तु है।

यद्यपि मंगल वृश्चिक-राशि का भी स्वामी है, तथापि एक वृश्चिक व्यक्तित्व (इसका अर्थ क्या है—यह हम बाद में बताएँगे) मेष-मनुष्य से थोड़ा-सा भिन्न है। वृश्चिक, जिसका अर्थ बिच्छू है, एक जहरीला जानवर है। इसका डंक कष्टदायक है। अतः, एक वृश्चिक-व्यक्तित्व को साथ-साथ निभा सकना कठिन होगा। एक वृश्चिक बालक प्रायः झूठी बातें बनाएगा, अन्य बच्चों को सताएगा, धक्के देगा, ठगेगा तथा मारेगा। यह जब तक ये सब कार्य नहीं कर लेगा, तब तक प्रसन्न नहीं होगा। यह इसका स्वभाव है। वृश्चिक-व्यक्ति सरलता से ही ईर्ष्यालु हो जाते हैं, (अन्य लोगों की अपेक्षा) वे द्वेष के कारण जलते रहते हैं, डींग हाँकते रहते हैं, गुप्तता रखते हैं, विलक्षण होते हैं, अनिश्चित मनःस्थिति वाले, अपने कार्यों में कुटिल तथा प्रायः अप्रसन्न रहते हैं। स्वाँग करना उनके रक्त में है। वे अन्य लोगों की नकल बड़ी आसानी से कर सकते हैं। जो कुछ वे लिखते हैं, उनमें उनकी सामान्य विफलताएँ, झाँसेबाजी, जालीपन, भ्रष्ट-व्यवहार, घमण्ड, द्वेष, वक्रोक्ति, गन्दगी, अस्वच्छता और शब्दों, वाक्यों, विचारों अथवा अंकों को छोड़ जाना है। वृश्चिक और मेष व्यक्तियों को अपने लिखे हुए को पुनः देख लेने का ध्यान रखना चाहिए।

ज्योतिष-चक्र के १२ खण्डों में से निकृष्ट खण्ड मकर है। दुःखों की दृष्टि से दूसरा स्थान वृश्चिक का है। वृश्चिक-व्यक्ति बड़ी आसानी से झूठ बोल सकता है। यदि ऐसे व्यक्ति कारखानों के मालिक हों तो वे इसको बिलकुल स्वाभाविक समझेंगे कि अन्य व्यक्तियों द्वारा मरम्मत के लिए भेजी गयीं उन व्यक्तियों की मशीनों के नए, अच्छे यन्त्रों को वे अपने पास रख लें तथा उनके बदले में पुराने, घिसे-पिटे पुर्जे उन यन्त्रों में लगा

दें। संक्षेप में, वृश्चिक-मनुष्य अविश्वसनीय तथा निर्भर न रहने योग्य होता है और इसलिए किसी भी विश्वास अथवा उत्तरदायित्व के स्थान पर ऐसे व्यक्ति को कभी नहीं रखना चाहिए। अति भाग्यशाली न होने के कारण ऐसे व्यक्तियों को उन कार्यों के सम्पन्न करने के लिए सर्वेसर्वा नहीं बनाना चाहिए जहाँ विजयी होने की कामना हो, जैसे युद्ध में अथवा खेल-कूद प्रतियोगिताओं में। वृश्चिक व्यक्तित्व में मंगल के प्रायः सभी के सभी दुर्गुण साकार होते हैं।

बुध निष्पक्ष ग्रह माना जाता है। सूर्य से हटकर केवल २८ अंश दूर होने के कारण बुध की सभी विद्युत्-चुम्बकीय शक्ति सूर्य द्वारा निरस्त हो चुकी है। अतः बुध एक निष्पक्ष, निस्तेज ग्रह माना जाता है। अतः, एक बुध-मनुष्य को समझ पाना, उसकी गहराई आँक सकना कठिन है। वह सदैव सुरक्षित स्थान पर रहेगा तथा व्यक्तिगत लाभ को ध्यान में रखकर अपनी निष्ठा परिवर्तित करता रहेगा। बुध व्यक्ति विसंयुज, गोलमोल तथा अस्पष्ट बना रहना ही उत्तम समझते हैं। अपने मन की बात साफ-साफ बताने में वे सदैव अनिच्छुक रहेंगे। तथ्य रूप में, उनके मन में दृढ़ आस्था होती ही नहीं क्योंकि वे पैसे और धन को ही प्राथमिक महत्त्व का समझते हैं। वे प्रायः मुस्कराते हैं चाहे अन्दर ही अन्दर, अपने कार्यों में, भावभंगिमाओं में वाणी में तथा लेखन में वे क्रुद्ध हों, ईर्ष्यालु हों और प्रतिशोध की भावना रखते हों। वे कूटनीतिक होते हैं। उनका सम्पूर्ण दृष्टिकोण व्यावसायिक है। वे प्रत्येक गतिविधि को अपने हितों को आगे बढ़ाने के साधन के रूप में देखते हैं। बुध-व्यक्ति आमतौर पर वाणिज्य, जन-सम्पर्क, न्यायालयों, राजनीति, बीमा, वायुमार्गों तथा अन्य ऐसे क्षेत्रों में दिखायी पड़ेंगे जहाँ नित्यप्रति सामान्य जनता से सम्पर्क बनता हो।

बुध मिथुन और कन्या अर्थात् तीसरी और छठी राशि का स्वामी होता है। बुध महत्वाकांक्षी तथा द्वि-अर्थक होने के कारण अविश्वसनीय है। ऐसे व्यक्ति नियत समय पर कार्य नहीं करते अथवा अपने वचनों का पालन नहीं करेंगे यदि ऐसा करने से उनको हानि होती हो। वे जीवनक्रम को गुप्त रखने अथवा अपने स्वार्थ-साधन के लिए बात पलट जाने में संकोच नहीं करते। बुध-व्यक्ति किसी को भी सच्चा मित्र समझते ही

नहीं। वे विश्वास करने लगते हैं कि धन तथा सत्ता ही जीवन में सच्चे मित्र हैं। बुध, जिन दो राशियों का स्वामी है, उनमें से मिथुन आमतौर पर कम या मध्यम डीलडौल का होता है और कन्या-राशिवाला व्यक्ति स्थूलकाय होता है।

गुरु (बृहस्पति) धनु और मीन का स्वामी है। गुरु का परम्परागत भारतीय चित्र अपने मानस में स्मरण कर पाठक का यहाँ लाभ हो सकता है। पुरातन भारतीय परम्परा में गुरु को सर्वाधिक सम्मान प्राप्त होता था क्योंकि गुरु में उच्च ज्ञान, विद्वता, सरलता, सत्यवादिता, क्षमाभाव, नैष्ठिकतावाद, सहायता करने की इच्छा, आदर्श व्यवहार, बड़ों के प्रति श्रद्धाभाव, आचरण की विशुद्धता, उच्च विचार और साधारण जीवन व्यतीत करना आदि गुणों का संग्रह होता था। गुरु (बृहस्पति) देवताओं का आचार्य है। संस्कृत-भाषा में गुरु का अर्थ 'बड़ा' भी है। बृहस्पति बड़ा ग्रह होने के कारण इसके लिए चुना गया संस्कृत-नाम प्राचीन भारतीय नक्षत्रीय पर्यवेक्षणों की यथार्थता और उन्नति का स्पष्ट सूचक है।

बृहस्पति-ग्रही (हम आगे बताएँगे कि इसका अर्थ क्या है) व्यक्ति में उपर्युक्त गुण विशिष्टतापूर्वक होते हैं। ये उसके स्वभाव में प्रमुखता से मिलते हैं। वह बहुत विश्वास करनेवाला होता है, और बुध-ग्रही अथवा वृश्चिक-राशि वाले व्यक्ति द्वारा सरलता-से ही ठगा जाता है। ऐसा व्यक्ति सफेद वस्त्र, सादा भोजन (न अधिक मीठा, न अधिक चटपटा) तथा स्पष्ट वाणी पसन्द करता है। वह पूर्ण प्रामाणिकता की प्रशंसा करता है। वह आडम्बर तथा बेईमानी को घृणा करता है। वह शिष्टाचरण, अच्छे नियमों और सरलता का पोषक है। जहाँ तक उसका अपना सम्बन्ध है, वह मितव्ययी है। वह अपनी सुख-सुविधाओं पर कभी भी अधिक खर्च करना पसन्द नहीं करेगा। किन्तु, अन्य लोगों के प्रति वह अत्यन्त उदार होगा। वह छल-ठगी को घृणा करता है। उस पर विश्वास किया जा सकता है कि वह किसी के भी मुख पर स्पष्ट बात कह देगा। उसका धैर्य और शान्तियुक्त साहस उसकी आनुवंशिक प्रामाणिकता तथा अ-महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण से उत्पन्न होता है। बृहस्पति-ग्रही व्यक्ति अच्छे न्यायाधीश तथा परामर्शदाता बन जाते हैं। विश्वासयोग्य स्थान पर उनको सदैव

नियुक्त किया जा सकता है। वे यथाक्रमी, सब ध्यान रखने वाले तथा परिश्रमी हैं। वे शारीरिक और मानसिक शुद्धता में विश्वास रखते हैं और अपने में निपुणता का एक सुनिश्चित स्तर लाने के लिए कठोर परिश्रम करते हैं।

शुक्र वृषभ और तुला का स्वामी है। यूनानी पौराणिकता में शुक्र (वीनस) प्रेम की देवी है। भारतीय पौराणिकता में शुक्र दैत्यों का गुरु है। इसलिए, शुक्र आमोद-प्रमोद और धन-व्यय के जीवन का द्योतक है। वृषभ और तुला राशि वाले व्यक्ति सुविधाएँ और ऐश्वर्य पसन्द करते हैं। वे सादगी और निर्धनता में जीवन व्यतीत करना घृणा की वस्तु समझते हैं। वे धनी परिवेश श्रेष्ठ समझते हैं। वे संगीत, आभूषण, बहुमूल्य धातुएँ, श्रृंगार, चटपटे भोजन, मिष्ठान्न, धन और सम्पत्ति को प्रेम करते हैं। वे कभी ऐसी यात्राएँ नहीं करेंगे जिनमें कठिनाइयाँ और असुविधाएँ हों। वे ऐसी बातों से बचते हैं। शुक्र-ग्रह से प्रभावित होने वाले व्यक्ति (हम बाद में बताएँगे कि इसका अर्थ क्या है) जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण रखते हैं कि यह कष्ट-यातनाएँ सहन करने के लिए नहीं अपितु आनन्दोपभोग करने के लिए है। शराब पीना, नृत्य, और ऐश करना उनके जीवन की दार्शनिकता है। रात्रि में देर तक होनेवाले कलात्मक प्रदर्शनों एवं कार्य-क्रमों में ये लोग ही दर्शकों के रूप में उपस्थित रहते हैं। वे आनन्दोपभोग की असमाधेय चाह के पीछे स्वास्थ्य के नियमों की भी उपेक्षा कर देते हैं। ज्योतिष में ये सब शुक्र के गुण हैं। और चूंकि शुक्र वृषभ और तुला राशियों का स्वामी है, अतः उन राशियों में ये गुण आ गए हैं।

शनि मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी है। मकर का प्रतिनिधित्व मगरमच्छ करता है, जबकि कुम्भ का चिह्न जलकुम्भ अपने कन्धे पर धारण किए हुए एक व्यक्ति है। भारतीय जन्मपत्रिका में समाविष्ट सभी ग्रहों में शनि ग्रह ही सूर्य से सर्वाधिक दूरी पर है। अतः, शनि एक ठण्डा, निस्तेज, उदास और शिथिल ग्रह है। सूर्य से बहुत अधिक दूरी पर होने के कारण इसे एक बड़ा चक्कर लगाना पड़ता है। अतः सूर्य की पूरी एक परिक्रमा करने में इसको ३० वर्ष लगते हैं। एक शनिग्रही-व्यक्तित्व उग्र, उदास, निराशावादी तथा सनकी होता है। शनि दीर्घ, दूरस्थ लक्ष्य के लिए

कठिन, अनथक प्रयत्न का द्योतक है। मंगल-ग्रही के विपरीत, एक शनि-ग्रही व्यक्ति में अत्यधिक धैर्य होता है। वह प्रतीक्षा कर सकता है, और अतिदूरस्थ उद्देश्य के लिए धैर्य के साथ यत्नशील रह सकता है। शनिग्रही व्यक्ति प्राय: कठोर हृदय अथवा क्रूर होते हैं, वे भावुक प्रकृति के नहीं होते। विरले अवसरों पर ही उनकी आँखों में आँसू दिखायी पड़ें। जीवन के प्रति एक वियुक्त दृष्टिकोण का ही वे प्रदर्शन करते हैं। शैशवकाल से ही उनके मुख पर एक गम्भीर, दार्शनिकता की छाप दिखायी देती है। शनिग्रही व्यक्ति ठण्डे, बासी, परिरक्षित भोजन को पसन्द करता है।

(राशिचक्र के खण्डों या चिह्नों) राशियों में से सबसे दुर्भाग्यशाली मकर राशि है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कम-से-कम एक ओर आघात तो भोगता ही है। प्राय: सभी व्यक्तियों के दु:ख उसी घर से सम्बन्ध रखते हैं, जिसमें मकर राशि का वास होता है।

कुम्भ-व्यक्तित्व विद्वत्तापूर्ण होता है। कुम्भ राशि का लक्षण कुम्भ (घड़ा, मटका, जलपात्र) चूंकि गहरा है, अत: ऐसा व्यक्ति गम्भीर विचारक होता है। वह अकेला ही बैठा हुआ, घण्टों आत्मचिन्तन मे तल्लीन रह सकता है। वह एकान्तवास का प्रेमी है। वह चाहता है कि वह अकेला ही रहे। उसकी प्राकृतिक अभिरुचियाँ रेगिस्तान और जंगल हैं। एक कुम्भ-ग्रही व्यक्ति गम्भीर चिन्तक तथा बहुज्ञ होता है। वह ज्ञान का सहज समावेश पसन्द करता है। वह अल्पभाषी होता है और स्वभाव से गम्भीर प्रकृति का व्यक्ति होने के लिए विख्यात होता है। लोग उससे बात करने और उसकी एकाग्रतामय निर्वाच्यता को भंग करने में संकोच अनुभव करते हैं। ठेस पहुँचने अथवा अपमानित होने पर एक शनि-ग्रही व्यक्ति उस ठेसजनक अथवा अपमानजनक बात को छुपा जायगा और उचित समय पर बदला ले लेगा। वह अत्यन्त गुप्त-स्वभावी होता है। मकर सघन और निस्तेज होता है जबकि कुम्भ गम्भीर और विद्वान होता है। मकर-व्यक्ति प्राय: अशोभन, उजड्ड, असंस्कृत, अशिक्षित और अपरिमार्जित होता है। कुम्भ-व्यक्ति विद्वान और दार्शनिक दृष्टिकोण वाला होता है। मकर-व्यक्ति लोभी, स्वार्थी, प्रतिकारी, क्रूर, सुस्त, रोगी-सा, द्रोही, द्वेषी, भाग्यहीन हताश तथा निराश होता है।

कुम्भ-राशि भाग्यहीन नहीं है किन्तु मकर-राशि निश्चित रूप में ऐसी है। शनिग्रहियों का भाग्योदय ३६$\frac{३}{२}$ वर्ष की आयु के बाद ही होता है। तब तक वे लोग पीड़ित और दु:खित अनुभव करते हैं।

शनिग्रहियों को उनकी गतिविधियों और विचारधारा में निस्तेज समझा जाता है। उनकी प्रतिभा जीवन के प्रारम्भ में विकसित नहीं होती। ये लोग दीर्घसूत्री योजनाएँ बनाने में सक्षम होते हैं। वे अपने हृदय की बात कभी किसी के सम्मुख नहीं कहते। महान प्राचीनता अथवा ऐसे विषयों में जिनमें कठोर श्रममय अनुसन्धान की आवश्यकता होती है, शनिग्रही लोगों को अधिक रुचि और उनकी पैंठ होती है। पुरातत्व, इतिहास, भूविद्या, खनन, शिल्पशाला, लेखा-परीक्षा एवं लेखा, भण्डार एवं अभिलेख, अभिलेखागार, निस्सार गोदाम, अपरिष्कृत, अव्यवस्थित परिवेश शनिग्रहियों के स्वाभाविक रुचि-केन्द्र हैं।

इस प्रकार, ग्रहों और उनके स्वामित्व की अपनी-अपनी राशियों का विचार करने के पश्चात् हम अब सूर्य और चन्द्र तथा उनके प्रभुत्व की राशियों का विचार कर निर्णय करेंगे कि एक जन्मपत्रिका में इनका क्या अर्थ है !

सूर्य विश्व का सम्राट् है। अतः यह तेजस्विता और ओज का द्योतक है। यह सर्व जीवन पर आधिपत्य करता है। यह रक्त और रक्त-प्रवाह पर अनुशासन रखता है। सूर्य की राजसी प्रकृति है। यह द्रुत और मांसल है। यह अपमान सहन नहीं करेगा, उदासीनता पसन्द नहीं करेगा। सूर्य प्रतिष्ठा में अपना पूर्ण अंश चाहता है। यह तड़क-भड़क का प्रेमी है और चाहता है कि छोटी-छोटी बातें भी बड़े शिष्टाचार से, व्यवस्थित रूप में सम्पन्न हों।

सूर्य सिंह राशि का स्वामी है। यह क्रमानुसार ५वीं राशि है, और इसलिए, कुल १२ राशियों में लगभग बीच की ही है। यह राशि वनराज सिंह के ही समान स्वभाव एवं दृष्टिकोण की द्योतक है। सिंह राशि वाले व्यक्ति सम्मान, सम्पत्ति, धन-दौलत एवं आदर-सत्कार में अपनी सर्वाधिक प्रतिष्ठा चाहेंगे। वे राजसी भोजन तथा भव्य परिवेश को अधिक पसन्द करते हैं। अपने साथ अनुयायी वर्ग रखना उन्हें अच्छा लगता है।

वे चापलूसी पसन्द करते हैं, और इस बहकावे में आ जाते हैं। अपने अत्यधिक चाटुकारों को बड़े-बड़े उपहार देने में भी वे कोई संकोच नहीं करते। सिंह—राशिवाले व्यक्ति शीघ्र ही कुपित हो जाते हैं, और उतनी ही शीघ्रता से उनका सम्मान अथवा उनकी चापलूसी भी की जा सकती है। किन्तु वे सुगमता से क्षमा नहीं करते। यदि उनके मन में कोई गाँठ है, तो वे उसे सुगमता से खोलकर समाप्त नहीं करेंगे। वे लोग अव्यवस्थित कार्यों, मलिन परिवेशों अथवा अनुपयुक्त व्यवहार को सहन नहीं कर सकते।

कर्क राशि का स्वामी चन्द्र है। ज्योतिष में, चन्द्र मस्तिष्क का द्योतक है। यदि हम जानना चाहें कि व्यक्ति का मस्तिष्क किस प्रकार कार्य करता है, तो हमें उसकी जन्मपत्री में चन्द्र की स्थिति का अध्ययन करना पड़ेगा।

कर्क शान्त, संग्रहीत, न्याय तथा क्षमाशील राशि है। कर्क राशिवाले व्यक्तियों को शीघ्र ही अपनी ओर किया जा सकता है क्योंकि वे लोग हृदय से दयालु होते हैं। 'क्षमा करना और भूल जाना' उनका सिद्धान्त है। उनके मानस की रचना में दया विशेष गुण है। ईंट का जवाब पत्थर से देने का वे कभी विचार नहीं करते। वे पुरानी दुश्मनी भुलाने के लिए तैयार रहते हैं। वे कभी भी कठोर हृदय अथवा क्रूर व्यक्ति नहीं हो सकते। किन्तु न्याय और औचित्य के उद्देश्य के लिए वे घोर संकल्प प्रदर्शित कर सकते हैं। राशिचक्र के १२ लक्षणों में कर्क सर्वप्रिय राशि है। कर्क व्यक्ति प्रायः शान्त, निर्बाध, सुविधाजनक जीवन व्यतीत करते हैं। उनका जीवन तूफानों और आघातों से प्रायः अछूता रहता है। वे शनैः-शनैः प्रगति करते हैं, समृद्ध होते हैं। वे धर्मार्थ कार्यों में योगदान करना पसन्द करते हैं। कर्क व्यक्ति स्वभाव से मिलनसार होते हैं। वे सादा किन्तु आमतौर पर आराम का जीवन व्यतीत करते हैं। वे कभी किसी की चुगली नहीं करते, न ही कभी क्रूर भावनाओं को आश्रय-प्रश्रय देते हैं। कर्क-व्यक्ति, वृहस्पति राशि वालों के समान ही, उदार व व्यापक दृष्टिकोण वाले होते हैं। वे किसी भी समाज अथवा देश में भलीभाँति निर्वाह कर सकते हैं। वे अश्लीलता अथवा अशिष्टता पसन्द नहीं करते।

८

जन्मकुण्डली-रचना

जन्मपत्रिका बनाने के यथार्थ ढंग की जटिलताओं में पड़ने से पहले हम नव-शिक्षु को यह समझाना चाहते हैं कि जन्मपत्रिका सचमुच क्या वस्तु है तथा इसको बनाने की स्थूल रूप में क्या विधि है ! सही व सूक्ष्म तत्वों से परिपूर्ण कुण्डली बनाना अभी उसको कदाचित कठिन और घबड़ा देने वाला प्रतीत हो।

यदि पाठक एक बार जन्मकुण्डली की प्रकृति और इसको बनाने की विधि समझ गया तो वह यह भी ठीक से समझ जाएगा कि पिछले अध्याय में वर्णित बृहस्पति या शनिग्रही-व्यक्ति से हमारा अभिप्राय क्या है।

एक जन्मपत्रिका को जन्मकुण्डली अथवा जन्मांक भी कहते हैं। जिस प्रकार एक हस्पताल में प्रत्येक रोगी की शैया के सिरहाने उस रोगी का पूर्ववृत्त, उसका रोग, उपचार तथा प्रगति-सूचक एक विवरण-पत्रिका टँगी रहती है, उसी प्रकार एक जन्मकुण्डली व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति स्पष्ट दर्शाती है। बड़ी जन्मपत्रिका में अनेक अन्य तालिकाएँ तथा गणनाएँ भी दी होती हैं जिसकी सहायता से ज्योतिषीगण उसका अध्ययन कर व्यक्ति का भूतकाल एवं भविष्यकथन करने में सक्षम हो जाते हैं।

सर्वप्रथम और अनिवार्य रूप में, भारतीय शैली पर बनी जन्म-पत्रिका यह बताती है कि व्यक्ति के जन्म के समय नवग्रह राशिचक्र के १२ घरों में से किस-किस घर में स्थित थे।

चूंकि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा अण्डाकार-मार्ग पर करती है, अतः एक

आदर्श जन्मपत्रिका आकार में अण्डाकार ही होनी चाहिए। किन्तु एक अण्डे का रेखांकन और उसका १२ समान भागों में विभाजन सरल कार्य नहीं है। अत:, जन्मकुण्डलियाँ प्राय: आयताकार बनायी जाती हैं। एक आयताकार बनाना और उसको हाथ से ही सरलता से समान १२ भागों में विभाजित करना सरल है, अत: सर्वाधिक जन्मपत्रियों में जन्मकुण्डलियाँ आयताकार ही बनायी जाती हैं। अन्य लोग परकार की सहायता से एक स्वच्छ वृत्त बना लेते हैं और फिर उसे अर्धव्यासवत् १२ समान खण्डों में विभक्त कर लेते हैं जो राशिचक्र के १२ भागों के प्रतीक होते हैं।

एक जन्मकुण्डली बनाने के लिए विद्यार्थी को कागज का एक कोरा पत्र लेना चाहिए। उस पर निम्न प्रकार का एक आयात बनाना चाहिए :-

अगला पग निम्न प्रकार कर्ण बनाना है :
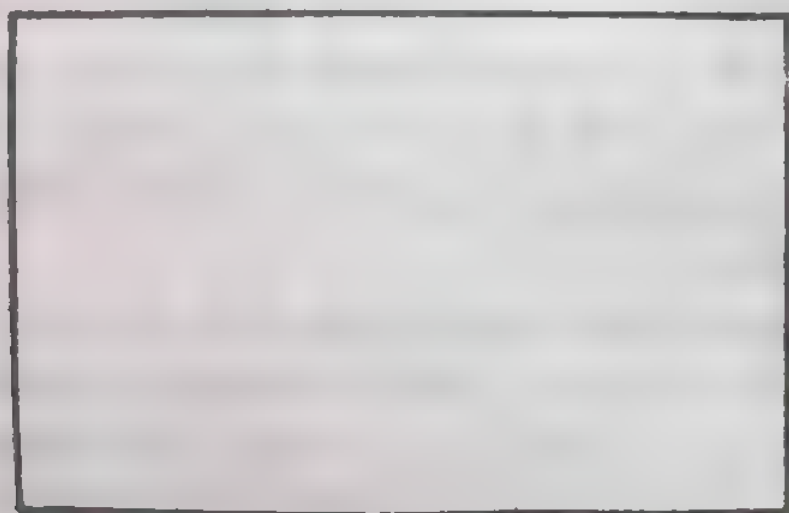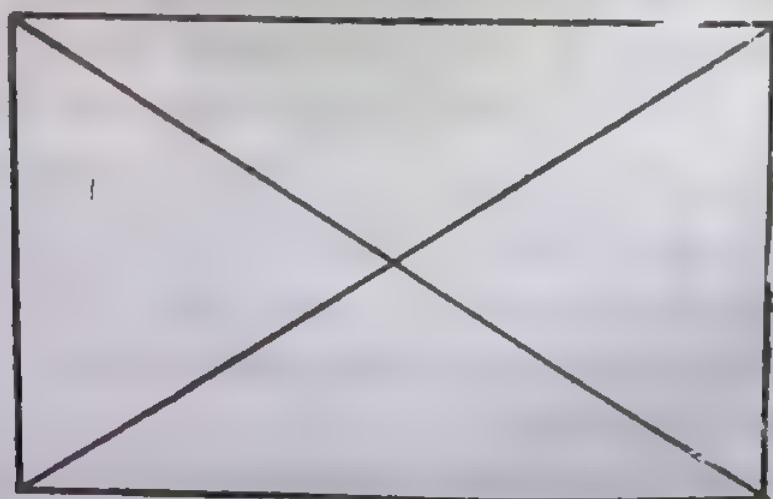
तीसरा पग आयत की भुजाओं के मध्य-बिन्दुओं को निशान लगाना और उनको परस्पर निम्न प्रकार मिला देना है :
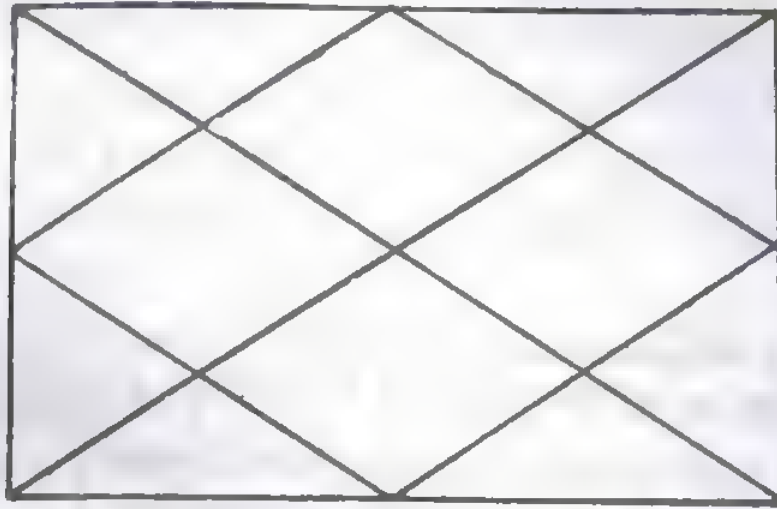
अब हमारे सम्मुख एक खाली जन्मकुण्डली है जिसमें १२ घर हैं। अब हम यह देखेंगे कि विभिन्न ग्रहों तथा राशियों को इसमें किस प्रकार प्रतिष्ठित करेंगे।

यह पृथ्वी एक रेलगाड़ी अथवा अन्तरिक्ष-यान के समान है जो हमको सूर्य के चारों ओर की निरन्तर-यात्रा पर वर्षानुवर्ष ले जाती है। जब हम रेलगाड़ी में यात्रा पर जाते हैं, तो अनुभव करते हैं कि वृक्ष तथा तार व दूरभाष के खम्भे हमारी विपरीत दिशा में गतिशील हैं। इसी प्रकार, यद्यपि सूर्य सानुपातिक रूप में स्थिर है, तथापि अनुभव करते हैं कि यह पूर्व में उदय होता है और पश्चिम में अस्त हो जाता है। पूर्व से पश्चिम की ओर सूर्य की यह प्रत्यक्ष गतिशीलता तथ्य रूप में इस बात का संकेतक है कि हमारा यह पृथ्वीयान अन्तरिक्ष में पश्चिम से पूर्व की ओर चल रहा है। दूसरे शब्दों में, हम सूर्य को दक्षिणावर्त गतिमय देखते हैं क्योंकि हम वामावर्त गतिमय हैं। कहने का अर्थ यह कि, जैसे-जैसे हम आकाश की विभिन्न राशियों के निकट से गुजरेंगे, हमारा यह क्रम वामावर्तीय व्यवस्था में होगा।

किन्तु हमें यह निश्चय तो करना ही होगा कि किस घर और किस अंक से संख्या डालना प्रारम्भ करें। अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र को देखिए :
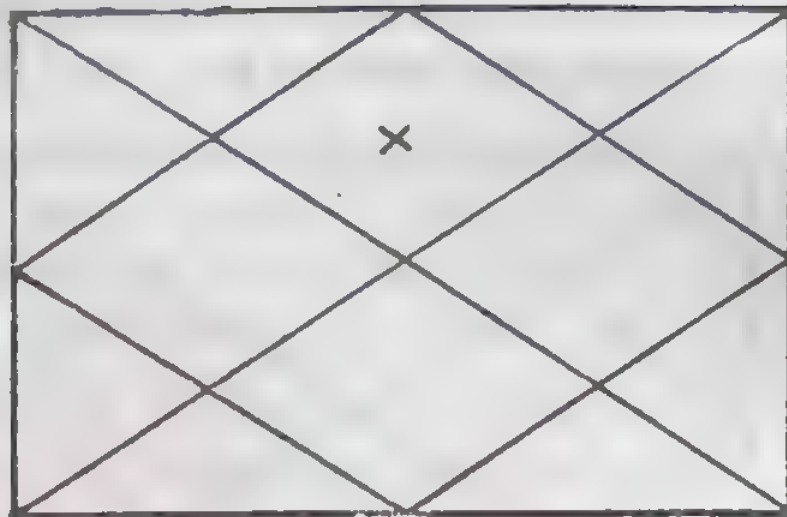
उपर्युक्त एक खाली जन्मकुण्डली है। इसके १२ विभाजन घर कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य-घर पहला घर विचारा जाता है। इसमें × का निशान लगा है। वह घर जन्मकुण्डली का सीधा-पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है, इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा, जिसे 'लग्न' भी कहते हैं। क्योंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र २४ घण्टों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक २ घण्टों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखाई देगा। पाठक को अब सूर्य के सब घरों में जाने का लगभग समय लिख लेना चाहिए। दूसरे शब्दों में, पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घण्टों के समय में हुआ था।
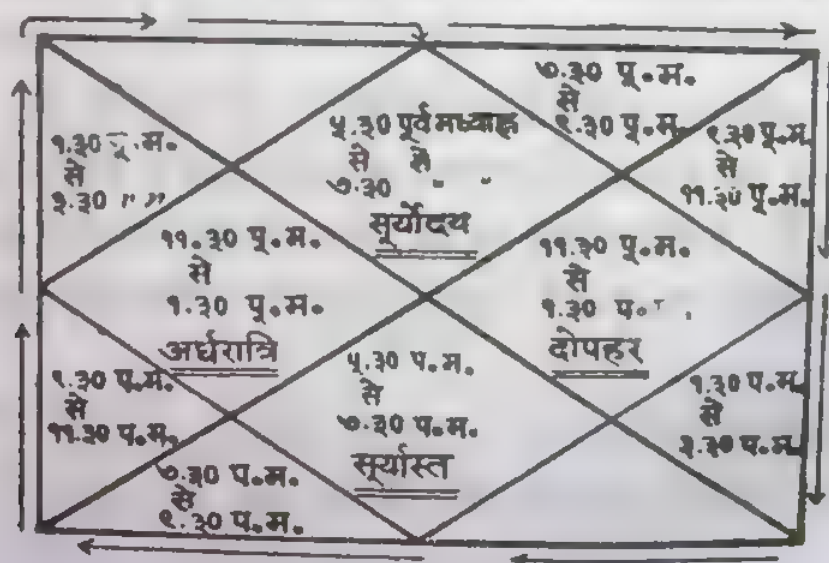
सूर्य दक्षिणावर्त चलता है। सूर्य सूर्योदय के समय जन्मकुण्डली के पूर्वीय घर में अर्थात् लग्न में होता हे। पाठक किसी भी जन्मकुण्डली को ले ले और देखे कि सूर्य उसमें कौन से घर में है। सूर्य की स्थिति से उस व्यक्ति के जन्म का समय बताया जा सकेगा। सूर्योदय और सूर्यास्त के घर एक-दूसरे के विपरीत हैं। दोपहर और अर्धरात्रि के घर भी एक-दूसरे के विपरीत हैं। इन्हीं के बीच अन्य घर हैं जिनमें सूर्य दो-दो घण्टे रुकता-रुकता चलता रहता है।

किन्तु, घरों का क्रम वामावर्त निश्चित किया गया है, किन्तु पृथ्वी सूर्य की दिशा के विपरीत दिशा में घूमती है। निम्न चित्र का अध्ययन करें :
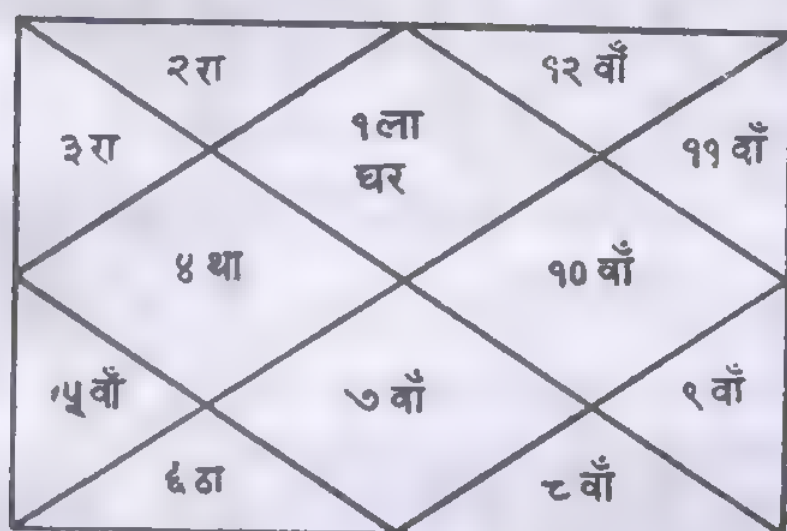
ज्योतिषीय शब्दावली में इन घरों को पहला, दूसरा, तीसरा आदि कहा जाता है, जैसाकि ऊपरी चित्र में है। प्रथम घर को लग्न भी कहा जाता है।

जन्मकुण्डली के भिन्न-भिन्न घर किन बातों के द्योतक हैं, इस तथ्य का अध्ययन निम्न तालिका से किया जा सकता है :

घर की क्रम संख्या	नाम	घर द्वारा संकेतिक वस्तुएँ
१.	तनु-स्थान (लग्न अथवा व्यक्ति का घर)	व्यक्तित्व, संरचना, रूपरंग स्वभाव, स्वास्थ्य।
२.	धन-स्थान (धन का घर)	पैतृक सम्पत्ति, वित्तीयस्थिति बायाँ नेत्र, चाचा का परिवार
३.	पराक्रम अथवा सहज-स्थान	भाई व बहिन, पराक्रम,

	(शौर्य, कर्तव्यशीलता का घर)	हस्तशिल्प, लेखनकार्य, शौर्य, देश के भीतर यात्राएँ।
४.	मातृ-स्थान अथवा सुख-स्थान (माँ का घर)	माता, उसका व्यक्तित्व, स्वास्थ्य एवं स्वभाव; घर का वातावरण, वाहन, मातृ देश।
५.	सन्तति-स्थान अथवा विद्या-स्थान (बच्चों का घर)	सन्तति, लौटरी, शिक्षा, प्रेमाचार।
६.	रोग-स्थान अथवा शत्रु स्थान (रोगों और शत्रुओं का घर)	रोग, शत्रुगण, जीवन के लिए नित्य संघर्ष।
७.	जय-स्थान (विवाहित जोड़ी का घर)	विवाहित जोड़ी (अर्थात् वर या वधू), विवाह व्यापार की साझेदारी, मुकदमेबाजी।
८.	मृत्यु-स्थान (मृत्यु का घर)	मृत्यु, मृत्यु की परिस्थितियाँ, मृत्युपत्र तथा उत्तराधिकार-प्रदान।
९.	भाग्य-स्थान अथवा धर्म-स्थान (भौतिक तथा आध्यात्मिक यश)	भाग्य, विधि, इहलौकिक-सुख, आध्यात्मिक रुझान, समृद्धि, व्यावसायिक प्रगति, विदेश यात्रा।
१०.	पितृ-स्थान (पिता का घर)	पिता, व्यवसाय, कार्यालय में स्थितियाँ, सरकारी प्रतिष्ठा।
११.	लाभ-स्थान अथवा मित्र-स्थान (मित्रों, तथा प्रासंगिक लाभ का घर)	मित्र, प्रासंगिक-आय, भत्ते।

१२.	व्यय-स्थान (खर्चे का घर : जीवन का देयांशपक्ष)	व्यय, धन-व्यय करने का ढंग, स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालने वाले तत्व, दाईं आँख, भ्रष्टशीलता।

सभी आकाशीय पिंडों में से सूर्य ही अपनी 'गतिविधियों' में नियमित है। मानव की स्मृति में तो यह उदय होने से कभी चूका नहीं है। इससे भी बढ़कर बात यह है कि वर्ष के भिन्न-भिन्न दिनों के लिए अपने समय को इसने पल-पल निभाया है।

जन्मकुण्डली के प्रत्येक घर में एक-एक मास रहकर सूर्य (अथवा पृथ्वी ही) १२ मास में एक चक्र पूर्ण करता है। चूँकि सूर्य एक पूर्ण वृत्त (३६० अंश) ३६५ दिनों (अर्थात् एक वर्ष) में चलता है, अतः यह प्रतिदिन लगभग एक अंश चलता है। अतः जन्मकुण्डली का प्रत्येक घर ३० अंशों की अवधि का द्योतक है। यही कारण है कि सूर्य एक मास में एक घर घूम लेता है।

भारतीय लोग प्रत्येक वर्ष १४ जनवरी को मकरसंक्रान्ति मनाते हैं। संक्रान्ति का अर्थ पारगमन है। जन्मकुण्डली की क्रमानुसार राशि से राशि पर सूर्य का संक्रमण स्मरण करने में यह तथ्य सहायक होना चाहिए कि प्रत्येक वर्ष १४ जनवरी को सूर्य मकर-राशि में प्रवेश कर जाता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि सूर्य जन्मकुण्डली के विभिन्न घरों में मास के बीच-दिनों से अगले मास के बीच-दिनों तक रहता है। सूर्य की संक्रमण-तिथियाँ तथा प्रत्येक राशि में ठहरने का समय नीचे दिया है :

सूर्य की प्रवेश-राशि	राशि का क्रम	प्रवेश-तिथि
मकर राशि में	१०वीं	१४ जनवरी
कुम्भ ,, ,,	११ ,,	१२ फरवरी
मीन ,, ,,	१२ ,,	१४ मार्च
मेष ,, ,,	१ली	१३ अप्रैल
वृषभ ,, ,,	२री	१४ मई
मिथुन ,, ,,	३री	१४ जून
कर्क ,, ,,	४थी	१६ जुलाई

सिंह राशि में	५वीं	१६ अगस्त
कन्या ,, ,,	६ठी	१६ सितम्बर
तुला ,, ,,	७वीं	१७ अक्तूबर
वृश्चिक ,, ,,	८वीं	१६ नवम्बर
धनु ,, ,,	९वीं	१५ दिसम्बर

किसी भी विशिष्ट दिन तथा समय पर सूर्य की स्थिति का जन्म-कुण्डली के घरों में निश्चय हो जाने वाली समस्त सामग्री से युक्त होने के पश्चात् पाठक को जन्मकुण्डली बनाने में सर्वाधिक महत्व का कार्य अर्थात् लग्न तथा सूर्य की स्थिति निश्चित करनी चाहिए। यह कार्य इस प्रकार हो सकता है—

एक खाली कुण्डली बनाओ :
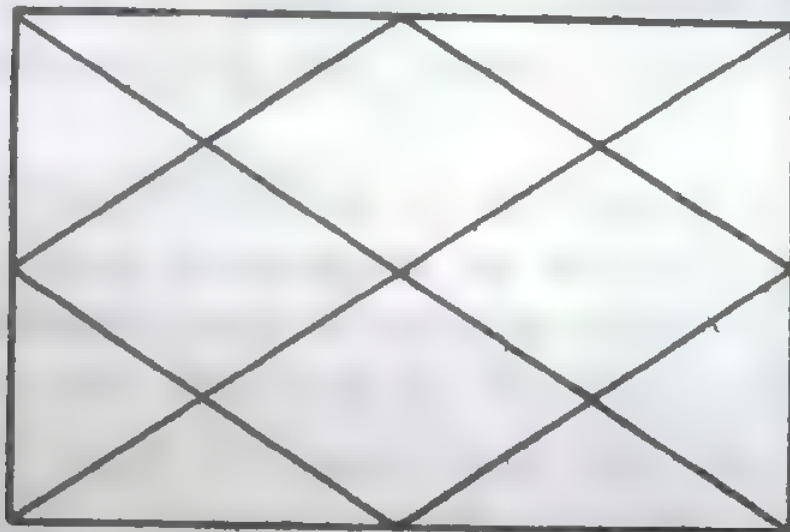
आइए, अब हम एक उदाहरण लें। यदि किसी व्यक्ति का जन्म रात्रि १०$\frac{१}{२}$ बजे का है तो (पहले दिये गये एक मानचित्र के आधार पर) हम जानते हैं कि (लग्न स्थान से वामावर्त क्रम में) सूर्य पांचवें घर में होगा। भारतीय ज्योतिष में (पश्चिमी ज्योतिष के विपरीत) ग्रहों के आद्यक्षर (रहस्यमय लक्षण नहीं) उनकी स्थिति बताने के लिए लिखे जाते हैं क्योंकि सूरज को संस्कृत में सूर्य अथवा रवि कहते हैं, अतः 'सू' अथवा 'र' अक्षर सूरज के द्योतक-रूप में लिख दिया जाता है।

रात्रि १०.३० पर उत्पन्न हुए व्यक्ति का सूर्य अनिवार्यतः ५वें घर में ही होगा। अतः हम 'सू' अथवा 'र' का अक्षर पांचवें घर में इस प्रकार लिख दें :
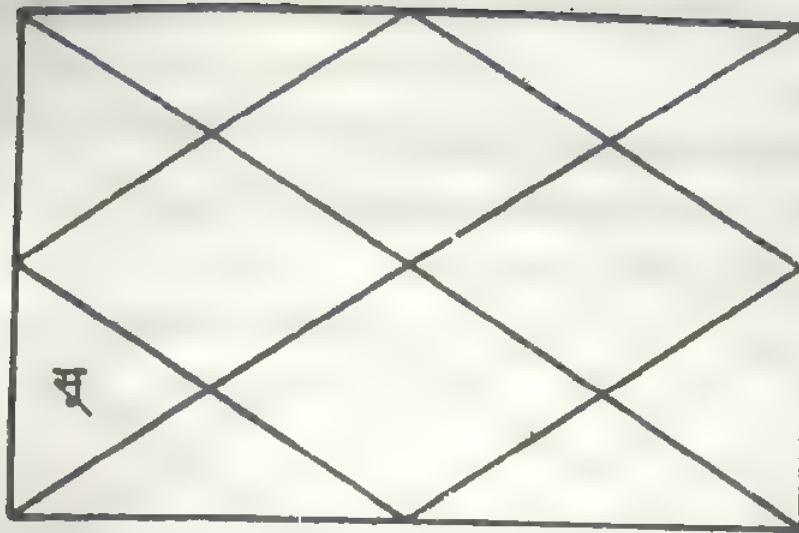
अब हम कल्पना कर लें कि सम्बद्ध व्यक्ति का जन्मदिन २५ दिसम्बर है। एक राशि से दूसरी राशि में सूर्य की प्रवेश-तिथि पूर्व पृष्ठों पर दी गई तालिका के अनुसार हमें ज्ञात है कि सूर्य १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक धनुराशि में रहता है। कहने का अर्थ यह है कि २५ दिसम्बर को सूर्य ९वीं राशि में है। अतः, हम ९ का अंक उस घर में लिखते हैं जिसमें हम सूर्य को पहले ही लिख चुके हैं, और राशि-अंकों को वामावर्त रूप में निम्न प्रकार पूर्ण कर देते हैं :
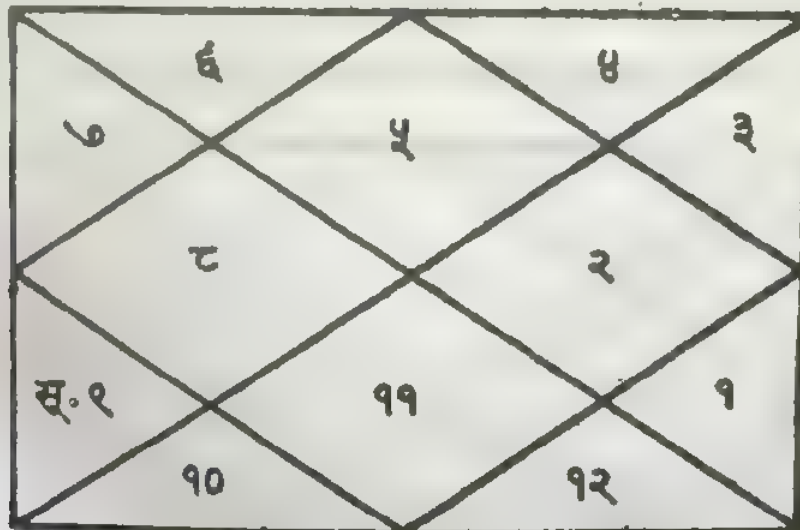
इससे हमें लग्न—सिंह—मिल जाती है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति की उपर्युक्त जन्मकुण्डली होगी, वह सिंह के समान सगर्व, राजसी वृत्ति का होगा। उसकी अन्य विशिष्टताएँ हमारे द्वारा विभिन्न राशियों के लिए दिए गये वर्णन में देखी जा सकती हैं।

हम कुछ और उदाहरण भी देख लें, जिससे किसी भी जन्मकुण्डली को

बनाते समय उसमें सूर्य और लग्न निश्चित करने में पाठक को कोई संशय न रह जाए।

भगवान श्री राम का जन्म अप्रैल मास के द्वितीय पक्ष में दोपहर बारह बजे हुआ था। यदि हम उनकी जन्मकुण्डली बनाना चाहें तो सर्वप्रथम एक खाली कुण्डली इस प्रकार बनायेंगे :
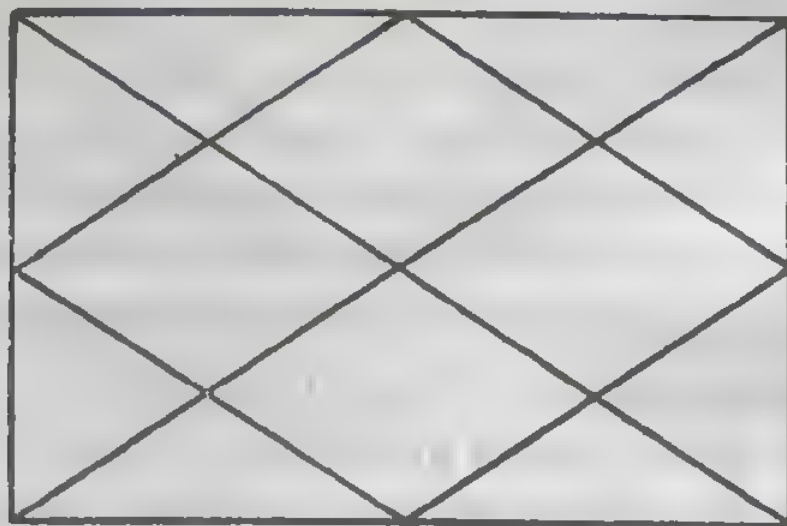
उपर्युक्त मानचित्र में, हम व्यक्ति के जन्म-समय के अनुसार सूर्य की स्थिति का निर्धारण करेंगे। हमारे द्वारा दी गई सूर्य की गति-सूचक तालिका से हमें मालूम ही है कि दोपहर १२ बजे होने के कारण सूर्य १०वें घर में है। इसलिए, हम सूर्य को १०वें घर में लिखते हैं :
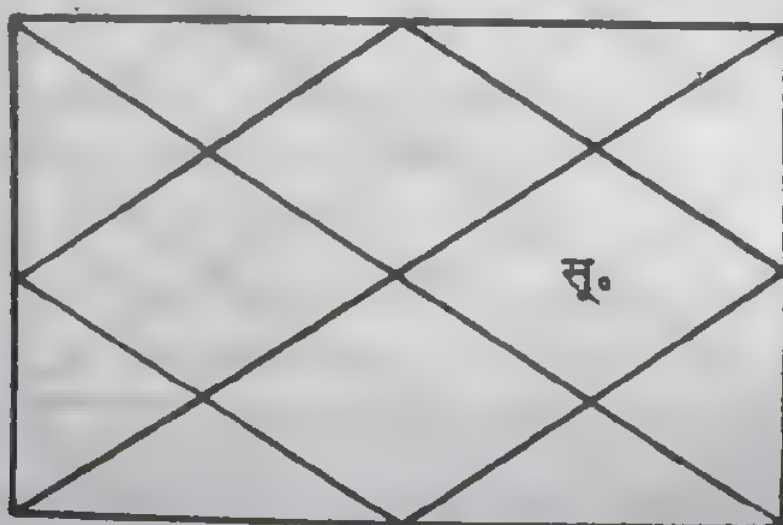
अगला पग सूर्य का लक्षण (चिह्न) अथवा राशि निश्चित करना है। जैसा सूर्य की गति-सूचक काल-सारणी में दिया जा चुका है, १३ अप्रैल से एक मास के लिए सूर्य मेष राशि में होता है। मेष राशिचक्र की प्रथम

राशि होने के कारण सूर्य वाले घर में हम १ अंक लिखते हैं तथा वामावर्त चलते हुए शेष घरों को पूर्ण कर देते हैं :
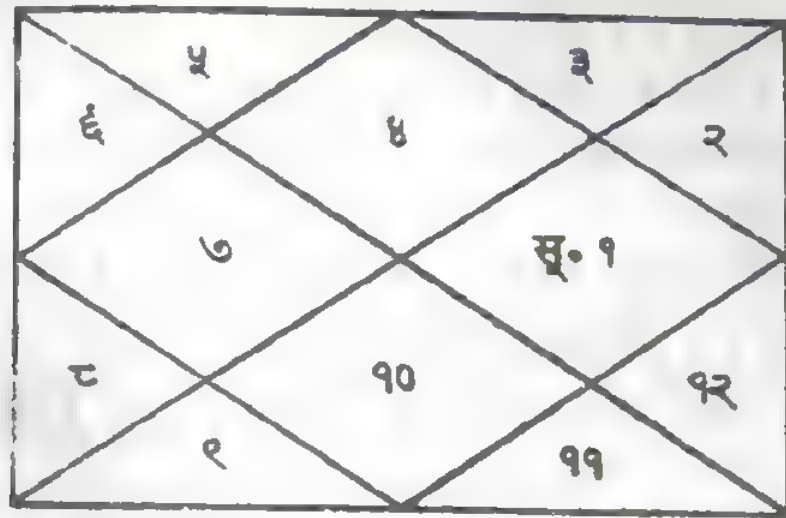
इस प्रकार भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में लग्न—कर्क है।

भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म १६ अगस्त के बाद रात्रि के १२ बजे हुआ था। चूंकि उनका जन्म रात्रि के १२ बजे हुआ था, अतः उनकी जन्म-कुण्डली बनाते हुए हम सूर्य को चौथे घर में उपस्थित करते हैं।

चूंकि १६ अगस्त से अगले एक मास तक सूर्य सिंह राशि (५वीं राशि) में रहता है, अतः हम सूर्य अंकित घर में ५ का अङ्क लिखते हैं, तथा अन्य अङ्कों को वामावर्त इस प्रकार पूर्ण कर देते हैं :
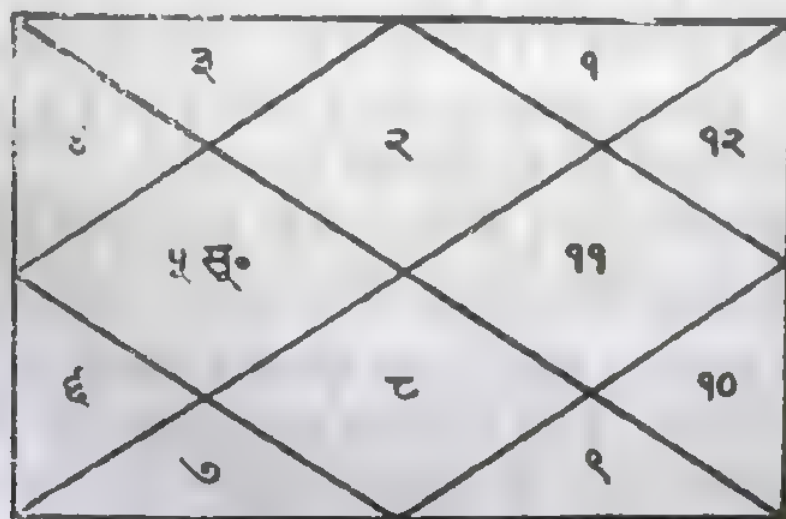
अतः भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मकुण्डली की लग्न वृषभ है।

जन्मकुण्डली के खाली मानचित्र में (राशिचक्र के विभिन्न खण्डों) विभिन्न राशियों की संख्या—अङ्क—लिखे जाने के पश्चात् सम्बद्ध घरों के

स्वामियों की स्थिति तो स्वतः निश्चित हो जाती है।

पीछे दी गयी जन्मकुण्डली क्रमांक-१ में लग्न 'सिंह' होने के कारण इसका स्वामी सूर्य है। केवल मात्र अंक देखने के आधार पर ही कहा जा सकता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का स्वभाव शुष्क, अभावुक, गर्वीला, आत्म-चेता, स्वमहत्वशाली होगा जबकि उसकी शारीरिक-संरचना लम्बाई एवं तान्तविक होगी।

लग्न का स्वामी—लग्नेय—सूर्य धनु-राशि में ५वें घर में है। राशि क्रमांक १, ५ व ९ अग्निवत् हैं, अतः ऐसी जन्मकुण्डली वाला व्यक्ति कभी भी अधिक मांसल अथवा स्थूल नहीं होगा। वह तो इकहरे-शरीर का होगा।

जन्मकुण्डलियों में सर्वाधिक महत्व के दो प्रमुख स्थान क्रमानुसार ९वें और ५वें होते हैं, जहाँ तक सांसारिक समृद्धि तथा पदलाभ का सम्बन्ध है। लग्नेश—अर्थात् सूर्य की सर्वोत्तम स्थिति इस कुण्डली में ९वें घर में होगी। किन्तु, कोई बात नहीं, यह द्वितीय सर्वोत्तम घर अर्थात् ५वें घर में है। यह इस बात का द्योतक है कि वह व्यक्ति जीवन में समृद्धि को प्राप्त होगा। चूंकि ५वां घर शिक्षा से सम्बन्ध रखता है, अतः उस व्यक्ति का पाण्डित्य-पूर्ण स्वभाव होगा। वह सीखने और पढ़ने में रुचि रखेगा। ५वां घर बाल-बच्चे भी बताता है। ५वें घर में सूर्य— एक पुरुषवाचक ग्रह की उपस्थिति प्रथम दर्शनों में ही स्पष्ट कर देती है कि उस व्यक्ति की प्रथम सन्तान एक पुत्र होगा। चूंकि उस व्यक्ति का लग्नेश सूर्य ५वें घर में है, इसलिए अर्थ यह है कि पिता अपने पुत्र पर अत्यधिक प्रेम करेगा।

जन्मकुण्डली क्रमांक-२ की लग्न कर्क है। अंक-रूप को देखकर ही कहा जा सकता है कि वह व्यक्ति दयालु, सरल, क्षमाशील स्वभाव और मिलन-सार प्रकृति का होगा। उसका झुकाव सत्य और न्याय की ओर रहेगा।

राशि क्रमांक ४, ८ व १२ (अर्थात् कर्क, वृश्चिक तथा मीन) जलमय हैं। कहने का भाव यह है कि कर्क-लग्न व्यक्ति में द्रव्य अथवा जलीय तत्व का प्राधान्य रहता है। उसकी मांसपेशियां कभी भी सुदृढ़ तथा कठोर नहीं दिखेंगी, उसका शरीर कोमल होगा। कर्क का स्वामी चन्द्र है। चन्द्र ज्योतिष में सभी द्रव्यों का नियामक है। हम जानते हैं कि भौतिक-संसार में समुद्रीय-

ज्वारभाटा चन्द्र द्वारा नियमित होता है। एक व्यावहारिक उदाहरण इस तथ्य से मिलता है कि पूर्ण ज्वार-भाटा का समय चन्द्र-तिथि का ३/४ आकलित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि शुक्ल-पक्ष अथवा कृष्ण-पक्ष का आज १२वाँ दिन है तो पूर्ण ज्वारभाटा का समय इसका ३/४ अर्थात् ६ बजे प्रातः अथवा रात्रि होगा। सागर में डुबकी लगाने वाले व्यक्ति समय की गणना ऊपर दी गयी विधि से प्रायः लगाते हैं और पूर्ण ज्वार-भाटा के समय से आधा घण्टा पूर्व या पश्चात् ही तट पर पहुँच जाते हैं।

महिलाओं का रजोधर्म भी चन्द्र द्वारा अनुशासित होता है। चन्द्र पृथ्वी की परिक्रमा लगभग २७ दिनों से कुछ ही ऊपर समय में पूर्ण करता है। यही वह समय है जब आदर्श और नियमित ऋतुस्राव होता है।

चन्द्र का पृथ्वी पर इतना व्यापक प्रभाव होने के कारण ही भारतीय लोग चान्द्र-पंचांग का अनुसरण करते रहे हैं।

और चूंकि प्राचीन भारतीय लोग विश्व के एक बहुत बड़े भाग पर शासन[1] करते थे, इसलिए उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया चान्द्र-पंचांग अविस्मरणीय युगों से अरेबिया, सीरिया, इराक, ईरान, टर्की और अफगानिस्तान जैसे अनेक देशों में अभी भी प्रचलित है।

जन्मकुण्डली क्रमांक-३ की लग्न वृषभ है। केवल लग्न के आधार पर ही (लग्नेश की स्थिति घर विशेष में विचार किए बिना ही) कहा जा सकता है कि वृषभ एक मृदु स्वभाव, एक आकर्षक व्यक्तित्व, एक उच्च और सुविधायोग्य पदलाभ का द्योतक है।

राशि क्रमांक २, ६ व १० (वृषभ, कन्या व मकर) पार्थिव हैं। इन लोगों में पृथ्वी-तत्व अधिक होता है जिसके कारण इनमें स्थूलता की सम्भावना होती है। वे लोग हट्टे-कट्टे व गठीले अथवा मोटे और भारी होने सम्भव हैं।

राशि क्रमांक ३, ७ और ११ (अर्थात् मिथुन, तुला और कुम्भ) वायवीय हैं। ये लग्न शरीर-संरचना में प्रायः वायवीय तत्व की प्रधानता के द्योतक हैं। इन तीनों राशियों को लग्न के रूप में धारण करने वाले

---

१. श्री पु० ना० ओक की "भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें" नामक प्रसिद्ध पुस्तक के अनेकों अध्यायों में भलीभाँति दिग्दर्शित।

व्यक्ति स्थूल होने सम्भव हैं, तथा वायु से पीड़ित होने की उनको पूरी-पूरी सम्भावना होती है।

जन्मकुण्डली में सूर्य तथा अन्य राशियों के अंक लिख लेने के पश्चात् नवजन्मा-व्यक्ति के जन्म-दिन के अनुसार अन्य ग्रहों की स्थिति भी पंचांग को देखकर लिखी जा सकती है।

ज्योतिष को व्यवसाय अथवा अभिरुचि के रूप में अपनाने के इच्छुक व्यक्तियों को पिछले १०, ३०, ५० अथवा १०० वर्षों में ग्रहों की तालिका सूचक पंचांग खरीद लेने चाहिए। ये सजिल्द पंचांग सभी प्रसिद्ध नगरों व उपनगरों में मिल जाते हैं। हम आगे चलकर एक अध्याय में स्पष्ट करेंगे कि किस प्रकार एक जन्मकुण्डली को सही-सही बनाया जाय और पंचांग को देखकर किस प्रकार अन्य ग्रहों को विभिन्न घरों में स्थिति किया जाय।

हम पाठक को पहले ही बता चुके हैं कि जन्मकुण्डली के अध्ययन से किस प्रकार ज्योतिषीय-निर्णय किए जाते हैं। इस विषय पर और अधिक प्रकाश हम तब डालेंगे, जब यह बता चुकेंगे कि जन्मकुण्डली पूरी तरह और सही तौर पर किस प्रकार बन जाती है।

९

ग्रहों का मूल्यांकन

यदि कोई ग्रह उसी राशि में होता है जिसका वह स्वामी है तो वह स्वग्रही अर्थात् वह अपने ही घर में है—ऐसा कहा जाता है। इस प्रकार यदि किसी जन्मकुण्डली में चन्द्र कर्क में, सूर्य सिंह में, मंगल वृश्चिक अथवा मेष में, बुध मिथुन अथवा कन्या में, बृहस्पति धनु अथवा मीन में, शुक्र वृषभ अथवा तुला में, और शनि मकर अथवा कुम्भ में हो तो समझा जाता है कि वह ग्रह अपने ही घर में है—स्वग्रही है, और अच्छे स्थान पर है। उस सीमा तक अर्थात् जहाँ तक उस घर से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं की बात है, फल हितकर रहेगा।

किन्तु यदि ग्रह उच्च के हों अर्थात् श्रेष्ठतर राशियों में स्थित हों, तो वे ग्रह और भी अच्छे परिणाम प्रकट करते हैं।

वे राशियाँ, जिसमें विभिन्न ग्रह उच्च-स्थानी होते हैं, निम्न तालिका से परखी जा सकती हैं :

ग्रह				उच्च राशि		
सूर्य	उच्च	(स्थान)	का	होता है	मेष	(१-ली) में
चन्द्र	"	"	"	" "	वृषभ	(२-री) में
मंगल	"	"	"	" "	मकर	(१०-वीं) में
गुरु	"	"	"	" "	कर्क	(४-थी) में
शुक्र	"	"	"	" "	मीन	(१२-वीं) में
शनि	"	"	"	" "	तुला	(७-वीं) में

बुध ग्रह सूर्य की समीपता से निस्तेज हो जाने के कारण किसी भी ऐसी राशि का पात्र नहीं होता जहाँ जाकर यह अन्य ग्रहों के समान कुछ विलक्षणता प्राप्त कर ले।

चूंकि ग्रह कुछ राशियों में 'स्वग्रही' होते हैं और कुछ अन्य राशियों में उच्च-स्थानी हो जाते हैं, इसलिए यह बात युक्तियुक्त प्रतीत होती है कि कुछ राशियों के ग्रह कमजोर अथवा नीच-स्थानी भी होने चाहिए। सचमुच ऐसा है भी। नीचे लिखी तालिका वे राशियाँ स्पष्ट दर्शाती हैं जिनमें विभिन्न ग्रह नीच के हैं—नीच-स्थानी हैं :

ग्रह						नीच राशि	
सूर्य	नीच	(स्थान)	का	होता	है	तुला	(७-वीं) में
चन्द्र	,,	,,	,,	,,	,,	वृश्चिक	(८-वीं) में
मंगल	,,	,,	,,	,,	,,	कर्क	(४-थी) में
गुरु	,,	,,	,,	,,	,,	मकर	(१०-वीं) में
शुक्र	,,	,,	,,	,,	,,	कन्या	(६-ठी) में
शनि	,,	,,	,,	,,	,,	मेष	(१-ली) में

बुध-ग्रह सूर्य की समीपता से निस्तेज हो जाने के कारण किसी भी राशि में न तो उच्च-स्थानी होता है और न ही नीच-स्थानी। यह अनेक प्रमाणों में से एक प्रमाण है कि ज्योतिषीय निष्कर्ष भौतिक-शास्त्र की वास्तविकताओं पर आधारित हैं।

उपर्युक्त दोनों तालिकाओं की तुलना करने पर पाठक को स्पष्ट ज्ञात होगा कि किसी भी ग्रह की उच्च-राशि अथवा नीच-राशि इसकी नीच-राशि अथवा उच्च-राशि के क्रम से ६-ठी है। जिस प्रकार पर्वत की तलहटी पर्वत का सबसे निचला भाग है और उसकी चोटी उसका सर्वोच्च भाग है, उसी प्रकार १२ राशियों के राशि चक्र में प्रत्येक ग्रह के उच्च और नीच-स्थान एक-दूसरे से ६ स्थान दूर हैं।

आइए, अब हम एक समेकित तालिका बना लें जिससे हमें प्रत्येक ग्रह की अपनी राशि और उसी ग्रह की उच्च और नीच-राशि भी, पृथक्-पृथक्, एक ही बार में, स्पष्ट ज्ञात हो सके।

ग्रह-नाम	अपनी राशि	अपनी राशि का क्रमांक	उच्च राशि	उच्च राशि का क्रमांक	नीच राशि	नीच राशि का क्रमांक
सूर्य	सिंह	५	मेष	१	तुला	७
चन्द्र	कर्क	४	वृषभ	२	वृश्चिक	८
मंगल	मेष और वृश्चिक	१ व ८	मकर	१०	कर्क	४
बुध	मिथुन और कन्या	३ व ६	×	×	×	×
गुरु	धनु और मीन	९ व १२	कर्क	४	मकर	१०
शुक्र	वृषभ और तुला	२ व ७	मीन	१२	कन्या	६
शनि	मकर और कुंभ	१० व ११	तुला	७	मेष	१

यहां यह ध्यान में रखने की बात है कि सूर्य और चन्द्र की अपनी राशियां तथा उनकी उच्च व नीच-राशियां साथ-साथ ही हैं।

भारतीय ज्योतिषीय-पौराणिकता के अनुसार सूर्य शनि का पिता है। आशय यह है कि हो सकता है कि प्राचीन भारतीय भौतिक-शास्त्र की उपलब्धि के अनुसार शनिग्रह सूर्य का ऐसा वायवीय-अंश मालूम हुआ हो जो अन्तरिक्ष में दूर चला गया, ठण्डा होकर घनीभूत पिण्ड बन गया और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करने लगा। अथवा, वायवीय-स्थिति में ही सूर्य की परिक्रमा करने लगा और फिर ठण्डा हो गया। यद्यपि पिता और पुत्र हैं तथापि ये दोनों (सूर्य और शनि) एक-दूसरे के जानी दुश्मन हैं। यह तथ्य उन जन्मकुण्डलियों से पूर्णतः चरितार्थ होता है जिनमें सूर्य और शनि एक ही घर में अथवा आमने-सामने घरों में स्थित हों। ऐसे अवसरों पर वे व्यक्ति उन वस्तुओं के सम्बन्ध में विरोध, मानसिक-यातना, असम्बद्धता, अशान्ति अथवा शत्रुता का अनुभव करते हैं जिनका सम्बन्ध उन घरों से होता है जहां सूर्य और शनि इकट्ठे हों अथवा जिन घरों के वे स्वामी हैं।

यह पारस्परिक शत्रुता युक्तियुक्त निष्कर्ष बताती है कि जिस घर में सूर्य उच्च अथवा नीच-राशिस्थ हो, शनि उसी घर में इसका विपरीत अर्थात् नीच अथवा उच्च-राशिस्थ हो। और, है भी ऐसा ही। सूर्य की उच्च और नीच-राशियां क्रमशः मेष और तुला हैं। शनि के मामले में स्थिति बिल्कुल विपरीत है अर्थात् शनि तुला में उच्च का होता है और मेष में नीच का। यह प्रदर्शित करता है कि ज्योतिष किस प्रकार तर्क एवं संगति पर निर्भर

है…न कि काल्पनिक सामान्यताओं पर आधारित है, जैसा कि कुछ अज्ञानी लोग कु-प्रचार करते हैं।

आइए, अब हम ग्रहों की 'दृष्टियाँ' अध्ययन करें। एक ग्रह की दृष्टि का अर्थ वह स्थान है जहाँ उसकी 'आँख' पहुँचती है। हम एक व्यावहारिक उदाहरण लें। कुछ दिनों के लिए ताला बन्द करके बाहर जाने वाला निवासी अपने घर के सामने वाले पड़ोसी से कह जाता है कि ताला लगे हुए मकान की चौकसी रखे। उदाराश पड़ोसी, अपने घर के एक कमरे में बैठा हुआ ही, सामने वाले घर पर निगरानी रखता हुआ उस मकान की रक्षा करता है।

उपर्युक्त उदाहरण के विपरीत ऐसे भी मामले हो सकते हैं जिनमें बुरी भावना से भी सतर्क दृष्टि रखी जाय। किसी मकान को डाकुओं द्वारा लूटने का उदाहरण लो। जब तक उनके साथी मकान लूटें, तब तक नागरिकों अथवा पुलिस को दूर रखने तथा उनका सामना करने के लिए डाकू लोग अपने ही कुछ साथियों को बाहर तैनात कर सकते हैं।

उपर्युक्त दो दृष्टान्त इस तथ्य को सुस्पष्ट करने के लिए पर्याप्त होने चाहिए कि एक घर में स्थित होने पर भी कोई ग्रह किस प्रकार अन्य घरों पर सुदृष्टि अथवा कुदृष्टि रख सकता है।

(चन्द्र के शिरोबिन्दु) राहु और केतु भौतिक अस्तित्व न होकर केवल अमूर्त स्थल होने के कारण कोई दृष्टि नहीं रखते। अतः, वे दोनों अन्धे समझे जाते हैं।

अन्य सभी ग्रह सप्तम-दृष्टि रखते हैं अर्थात् प्रत्येक ग्रह अपने विपरीत घर पर दृष्टि रखता है। एक जन्मकुण्डली में विपरीत घरों का अर्थ आगे दिए हुए चित्र में समान-वर्णों के युग्मों से स्पष्ट किया है :

आगे दिए हुए चित्र में 'अ' घर वाला ग्रह अन्य 'अ' घर पर दृष्टि रखेगा जो उसके बिल्कुल विपरीत—सामने हैं; 'फ' घर वाला ग्रह 'फ' घर पर ७-वीं दृष्टि रखेगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी हिसाब है। अतः पाठक को स्मरण रखना चाहिए कि (राहु और केतु के अतिरिक्त) सभी ग्रह ७-वीं दृष्टि रखते हैं। यह उसी प्रकार पूर्णतः स्वाभाविक है जिस प्रकार एक पड़ोसी पड़ोस के अन्य घर का ध्यान रखता है, अथवा कोई डाकू भी
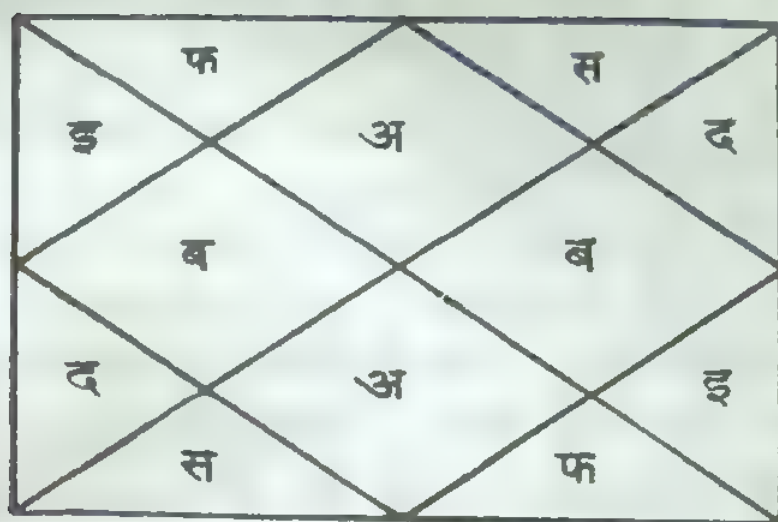
वहाँ उपस्थित होकर सतर्क रहता है कि उसके अन्य सहयोगियों के लूट-पाट के काम में कोई बाधा उपस्थित न हो सके।

ग्रहों की स्थितियों को अथवा घरों को गिनने में हम उस घर को प्रथम घर गिनते हैं जिसमें ग्रह उपस्थित होता है और वहाँ से वामावर्त गिनते हुए दूसरे ग्रह तक पहुंच जाते हैं। इस प्रकार, एक घर से ५-वें घर में स्थित ग्रह का निश्चय करने के लिए हमें दोनों घरों को गिनते हैं। नीचे का चित्र देखें :
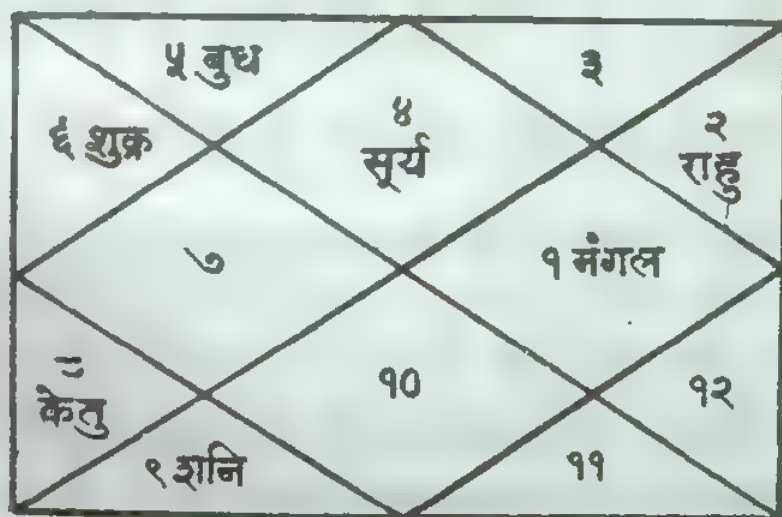
उपर्युक्त चित्र में यह पता करने के लिए कि सूर्य से कौन-कौन से घर में अन्य ग्रह स्थित हैं, हम उस घर को पहला घर गिनते हैं जिसमें सूर्य स्थित है। इसमें (काल्पनिक) लग्नेश कर्क है जिससे इस समय हमारा कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। जिस घर में सूर्य है हम उसे भी गिनते हैं और जिसमें बुध है उसे भी गिनते हैं और फिर कहते हैं कि सूर्य से दूसरे घर में बुध है। उल्टा

कहना हो तो कहेंगे कि बुध से १२ वें घर में सूर्य है। बुध से वामावर्त सूर्य तक पहुंचने की गणना कर इसका निश्चय किया जा सकता है। अतः सूर्य और बुध को २ : १२ के सम्बन्ध-सूत्र में कहा जाता है अर्थात् एक-दूसरे से दूसरे व बारहवें घर की स्थिति है।

इसी प्रकार शुक्र सूर्य से ३-रे घर में है जबकि सूर्य शुक्र से ११-वें घर में है। अतः वे दोनों एक-दूसरे से ३ : ११ की स्थिति में हैं।

इसी विधि में केतु सूर्य से ५-वीं स्थिति में है दूसरी प्रकार से, सूर्य केतु से ९-वीं स्थिति में है। यह ५ : ९ का सम्बन्ध कहलाता है।

सूर्य और शनि एक-दूसरे से ६-ठे और ८वें सम्बन्ध में हैं अर्थात् वे ६ : ८ के सम्बन्ध में हैं। शनि सूर्य से छठे घर में है जबकि सूर्य शनि से आठवें घर में है।

मंगल सूर्य से १०वें घर में है, जबकि सूर्य मंगल से ४-थे घर में है। इस प्रकार, वे परस्पर १० : ४ के योग में है।

सूर्य और राहू परस्पर ११ : ३ के सम्बन्ध में है।

प्रत्येक ग्रह की ७वीं दृष्टि के सम्बन्ध में पूर्व-वर्णित विषय को पुनः स्मरण करने के लिए हम कह सकते हैं कि उपर्युक्त चित्र में सूर्य मकर को देखता है, मंगल तुला को देखता है, बुध कुम्भ को देखता है और शुक्र मीन को देखता है।

७वीं दृष्टि के साथ-साथ कुछ ग्रहों की अपनी विशेष दृष्टियाँ भी होती हैं :

शनि ३-रे और १०-वें घर पर भी दृष्टि रखता है।
मंगल ४-थे और ८-वें ,, ,, ,, ,, ,,।
गुरु ५-वें और ९-वें ,, ,, ,, ,, ,,।

इसका अर्थ यह है कि जहाँ भी शनि स्थित होगा वहाँ से वह ३-रे, ७-वें और १०-वें घर पर दृष्टि डालेगा; मंगल ४-थे, ७-वें और ८-वें घर पर दृष्टि रखेगा और गुरु ५-वें, ७-वें और ९-वें घर को देखेगा। अन्य ग्रह केवल ७-वीं दृष्टि डालेंगे। इसी प्रसंग में तो घरों को ही प्रकार से गिनने की विधि का महत्व बढ़ जाता है।

ज्योतिष के प्रारम्भकर्ता प्रत्येक व्यक्ति को एक सामान्य भूल यह नहीं

करनी चाहिए कि वह राशि के अंक को घर के क्रमांक-रूप में समझ ले।

चाहे जन्मकुण्डली की घरों की व्यवस्था अंकों के हिसाब से जो भी हो, लग्न वाला ही प्रथम घर रहता है। अन्य घर उसके बाद वामावर्त रूप में प्रारम्भ होते हैं। नीचे दिया गया चित्र देखिए :
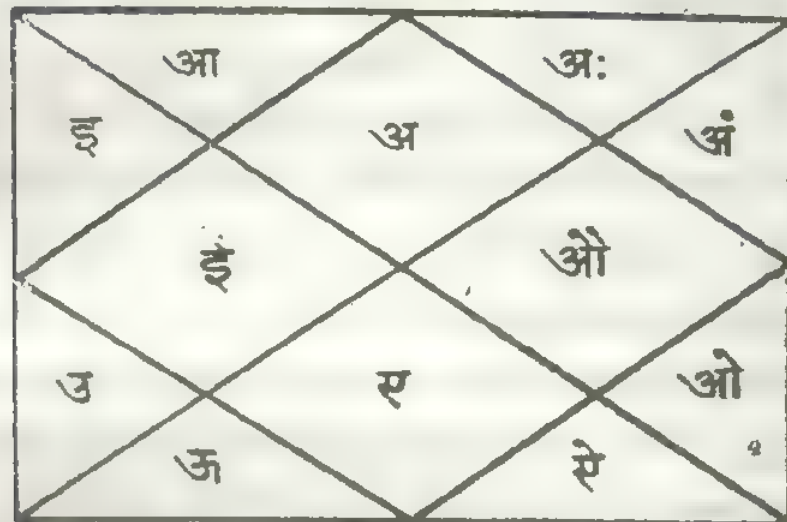
उपर्युक्त चित्र में 'अ' घर प्रथम घर है, 'आ' घर को ही दूसरा घर कहना चाहिए। शेष भी इसी क्रम में है, फिर चाहे उन घरों में राशि का कोई भी अंक क्यों न हो।

हम नीचे प्रभु के साक्षात् अवतार और रामायण महाकाव्य के महानायक भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली अध्ययनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

अविस्मरणीय युगों से भगवान श्रीराम का जन्म-दिन चैत्रमास के शुक्ल-पक्ष की नवमीं को दिन में १२ बजे सम्पन्न होता है। उनका जन्म-समय तथा चन्द्र-दिवस तो सही रूप में ज्ञात ही है। जहाँ तक उनके जन्म-वर्ष का सम्बन्ध है, उनको आविर्भूत हुए अनेकों युग बीत जाने के कारण हम उसको असमाधेय रूप में लुप्त कर चुके हैं। नक्षत्रीय-गणित में निपुण व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे उपलब्ध तालिकाओं, व ग्रहों की चक्र लगाने की गति का आकलन करके, भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति से पता लगाएँ कि आज से कितने युगों पूर्व उनका आविर्भाव इस धरती पर हुआ था!

भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली

जब कोई जन्मकुण्डली अध्ययनार्थ प्रस्तुत की जाय तो ज्योतिष के प्रत्येक विद्यार्थी को सर्वप्रथम कुछ सामान्य परीक्षणों से उसकी यथार्थ-स्थिति की जाँच कर लेनी चाहिए। कई बार, भूल से अथवा उपेक्षा-भाव के कारण अनेक भयंकर दोष जन्मकुण्डली की नकल करते समय रह जाते हैं। चाहे जन्मकुण्डली प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति शपथपूर्वक ही क्यों न कहे, फिर भी गल्तियाँ निकल आना कोई असाधारण बात नहीं है।

एक सामान्य परीक्षण यह देखना है कि राहु और केतु परस्पर आमने-सामने हैं। यदि वे ऐसे नहीं हैं, तो जन्मकुण्डली का अध्ययन नहीं करना चाहिए, जब तक कि उसे ठीक न कर दें। कई बार 'राहु' का आदि-अक्षर 'रा' भी 'शनि' के 'श' जैसा लिख दिया जाता है। तब ऐसा मालूम पड़ता है जैसे जन्मकुण्डली में दो राहु अथवा दो शनि हों। ऐसे अवसरों पर केतु की स्थिति सहायक होती है। 'केतु' का द्योतक 'के' अक्षर किसी अन्य शब्द के लिए प्रायः प्रयुक्त नहीं होता। केतु के विपरीत घर में आवश्यकीय रूप में राहु ही होता है। 'रा' के समान दिखायी पड़ने वाला अन्य अक्षर 'शनि' का द्योतक 'श' ही है।

दूसरा परीक्षण यह है कि बुध या तो सूर्य के साथ ही होगा अथवा एक घर आगे या पीछे होगा। यदि सूर्य और बुध एक घर से अधिक अन्तर पर हो तो जन्मकुण्डली को अशुद्ध कहकर अस्वीकार कर देना चाहिए क्योंकि राशि चक्र में सूर्य और बुध में केवल २८ अंश का अन्तर है जबकि जन्म-

कुण्डली के प्रत्येक घर में ३० अंश का कालखण्ड होता है। सूर्य वहीं कहीं उसके घर के पास ही होगा, अतः बुध एक घर से अधिक दूरी पर कभी हो ही नहीं सकता।

इसी प्रकार शुक्र भी सूर्य के घर से दो घरों के भीतर ही होना चाहिए। यह सूर्य से दो घरों की दूरी से अधिक दूरी पर नहीं हो सकता।

अन्य परीक्षण सूर्य की स्थिति जन्म-समय के अनुसार देखना है। भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में सूर्य १०वें घर में ठीक ही है क्योंकि उनका जन्म दिन में १२ बजे हुआ था।

जिस राशि अंक में सूर्य स्थित है, उसको भी सत्यापित किया जा सकता है। भगवान श्रीराम का जन्म १३ अप्रैल के पश्चात् हुआ था जबकि सूर्य मेष राशि में होता है।

भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली सभी परीक्षणों पर खरी उतरती है। इन ऊपरी परीक्षणों के अतिरिक्त भी, एक अच्छे ज्योतिषी को चाहिए कि जन्म-समय के पंचांग को देखकर जन्मकुण्डली में दिखाए गए अन्य ग्रहों की स्थितियों की भी जाँच कर ले। अच्छा यही है कि किसी का भी भविष्य बताने से पहिले अध्ययनार्थ प्रस्तुत जन्मकुण्डली की ग्रह-स्थिति को सभी प्रकार परख लेना चाहिए। जहाँ कहीं पंचांग उपलब्ध न हों, वहाँ ऊपर बताए गए तदर्थ-परीक्षण लाभदायक सिद्ध होते हैं।

भगवान श्रीराम साक्षात परमेश्वर होने के कारण, उनकी जन्मकुण्डली के लगभग सभी ग्रह उच्च-राशिस्थ हैं। ग्रहों का ऐसा योग अतिप्राकृतिक शक्तियों से सम्पन्न सम्मोहक व्यक्तित्व का द्योतक होता है।

भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली के लग्न में चन्द्र अपने ही घर में है। जैसा पहिले ही पर्यवेक्षण किया गया है, सभी राशियों में कर्क सर्वोत्तम है। कर्क लग्न सत्कर्मी और निष्कलंक यशस्वी व्यक्ति का परिचायक है। यह ऐसा व्यक्ति है जो अपने पूर्व जन्म से सत्कार्यों का सुफल अपने खाते में लिखा कर लाया है। यह सुमृदु, सुसंस्कृत, न्यायप्रिय, सत्यनिष्ठ, सुशील, क्षमाशील और विद्वान है।

जब कर्क लग्न के साथ-साथ लग्न का स्वामी अर्थात् चन्द्र भी उसी घर में है, तब यह सम्मोहक व्यक्ति का परिचायक होता है। ऐसा व्यक्ति

सामान्यतः बहुत भाग्यशाली होता है, और जीवन में उच्चस्थान को प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक सम्मान को प्राप्त होता है, और उसके साथियों में उसके प्रति अनन्य भक्ति की भावना जागृत होती है।

जब कर्क लग्न में चन्द्र के साथ-साथ गुरु भी इसी में स्थित होता है, तब वह व्यक्ति सत्य, न्याय और सद्व्यवहार की खान होता है। उन जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए किसी भी बलिदान को वह बहुत बड़ा नहीं समझता। किसी भी प्रकार के प्रलोभन से उस व्यक्ति को भ्रष्ट करने का किसी का भी साहस नहीं होता। उसकी सीमातीत शुद्धता, सरलता तथा चरित्र्य की श्रेष्ठता के कारण वह महान आदर-भाव व भय का अर्जन करता है। उसके निष्कलंक व्यवहार के स्तरों तक पहुँच पाना सामान्य स्तर के लिए अत्यन्त कठोर कार्य है। जब ऐसा व्यक्ति किसी सभा-भवन में अथवा समुदाय में प्रविष्ट होता है, तब उसके सम्मोहक व्यक्तित्व की सुगन्ध प्रत्येक व्यक्ति को उसके सम्मानार्थ उठ खड़े होने को विवश कर देती है। अनेक लोग तो उसके चरणों में नत होने को भी बाध्य हो जाते हैं। वह व्यक्ति उन लोगों को मानव सद्गुणों का अत्युच्च श्रृंग अथवा सजीव चट्टान प्रतीत होता है। चाहे वह अज्ञात ही हो, फिर भी उसे सहज सम्मान प्राप्त होता है और वह शीघ्र ही उन लोगों का प्रिय व्यक्ति बन जाता है जिनके साथ उसका एक बार भी सम्पर्क हो पाता है। वह जन्मजात नायक है—एक सम्राट, राजमुकुट हो अथवा न हो। उसकी मुखाकृति अथवा नेत्रों में ऐसी चमक होती है जो बिलुब्धकारी होती है। कर्क लग्न में गुरु और चन्द्र धारण करने वाला व्यक्ति ऐसी अदृश्य ढाल से युक्त होता है कि यदि वह गोलियों की बौछार में से भी गुजरे, तो उसके एक खरोंच तक भी नहीं आएगी। यदि वह व्यक्ति पशुओं के झुण्ड में से जाएगा, तो वे सहज रूप में ही बिखर जाते हैं और उसके लिए मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। ऐसा व्यक्ति वनैले पशुओं से युक्त जंगल में से भी निर्विघ्न, बिना किसी प्रकार की क्षति उठाए जा सकता है। ज्योतिष के अनेक सिद्धान्तों में से यह एक ऐसा सिद्धान्त है जो ज्योतिष में न-विश्वास करने वाले तथा अनभिज्ञ लोग भी सरलता से परख सकते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने यश का मूल्य विश्व की सकल सम्पदा से अधिक समझता है और छल-कपट के प्रति अत्यधिक अ-सहिष्णु

होता है।

भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली का दूसरा घर सिंह है। इसका स्वामी सूर्य उच्च-राशिस्थ तथा १०वें घर में मेष में है। १०वाँ घर व्यवसाय से सम्बन्ध रखता है। दिन में १२ बजे उत्पन्न हुआ व्यक्ति अपनी मध्य आयु में यश की चरम सीमा पर पहुँच जाता है क्योंकि सूर्य मध्य दिन में चरमोत्कर्ष पर होता है, और भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में यह उच्च-राशिस्थ भी है अर्थात् मेष राशि में है। दूसरे घर का स्वामी होने के कारण उच्च-राशिस्थ दोपहरी सूर्य महान पैतृक सम्पत्ति का द्योतक है। विशेषकर तब, जबकि सूर्य मंगल के घर में उच्च-राशिस्थ है, और मंगल स्वयं भी अन्य घर में उच्च-राशिस्थ है। मंगल मकर में है अर्थात् उस घर में है जिसका स्वामी शनि है। स्वयं शनि भी उच्च-राशिस्थ है। शनि तुला में है जिसका स्वामी शुक्र है, जो स्वयं भी उच्च-राशिस्थ है। शुक्र मीन में होने के कारण उच्च-राशि में है। मीन का स्वामी गुरु स्वयं लग्न में ही उच्च-राशिस्थ है। यह कर्क में है जिसका स्वामी चन्द्र अपने ही घर में अपनी ही राशि में है।

भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में हमें उच्च-राशिस्थ ग्रहों की एक श्रृंखला मिलती है जो चन्द्र के घर में समाप्त होती है, जो लग्न में है और स्वयं चन्द्र की उपस्थिति से सुशोभित हो रहा है। इस प्रकार की जन्म-कुण्डली प्रायः अभूतपूर्व ही है और एक ऐसे अद्वितीय व्यक्ति का चित्रण करती है जो समस्त विश्वों का प्रभु है, मानवों से सर्वोत्तम है, सम्राटों का सम्राट है—जो कभी पराजित नहीं होता।

प्रसंगवश, हम यहाँ पर अतिथि और आतिथेयी ग्रहों का सिद्धान्त भी समझा दें। जिस प्रकार मानव-कार्य-कलापों में हम देखते हैं कि एक धनी घर में एक अतिथि भी उत्सव मनाता है, उसी प्रकार जन्मकुण्डलियों में भी एक ग्रह, जो अपनी राशि से भिन्न राशि में होता है, उस घर में 'अतिथि' कहाता है जो किसी और ग्रह का होता है। यदि एक आतिथेयी ग्रह अर्थात् उस घर का स्वामी उच्च-राशिस्थ है तो अतिथि ग्रह भी शुभ-परिणामकारी होगा जहाँ तक इसके अपने एक घर या अनेक घरों का सम्बन्ध है। भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली के सन्दर्भ में हम यह बात समझने का यत्न करें।

बुध वृषभ में ११-वें घर में है। यहाँ पर बुध शुक्र का अतिथि है क्योंकि वृषभ का स्वामी शुक्र है। सामान्य रूप में बुध को दुर्बल ग्रह समझा जाता क्योंकि यह अपने घर में नहीं है। बुध निस्तेज (नपुंसक) ग्रह होने के कारण उच्च-राशिस्थ भी नहीं हो सकता। किन्तु, भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में बुध को बहुत सशक्त, सबल समझा जाना चाहिए क्योंकि यह ३-रे और १२वें घर का स्वामी होते हुए भी, इसका आतिथेयी ग्रह शुक्र उच्च-राशिस्थ है और भाग्यस्थान ६वें घर में है—जो कि जन्मकुण्डली में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घर है क्योंकि यह सांसारिक स्थिति, सत्ता और समृद्धि का द्योतक है।

अतः जन्मकुण्डलियों का अध्ययन करते हुए पाठकों को अतिथि और आतिथेयी ग्रहों के इस सिद्धान्त को स्मरण रखना चाहिए। एक ग्रह दूसरे ग्रह के घर में होते हुए भी अपने ही घर में अथवा उच्च-राशिस्थ समझा जाना चाहिए यदि आतिथेयी ग्रह अपने ही घर में अथवा उच्च-राशिस्थ में हो।

भगवान श्रीराम का वैवाहिक-जीवन बहुत सुखी नहीं था। उनकी अर्धांगिनी भगवती सीता लंका के राजा रावण द्वारा अपहृत हुई थीं। उनको वापिस लाने के बाद भी मतभेद उत्पन्न हो गए और उस साध्वी महिला को अपना शेष जीवन एक कुटिया में व्यतीत करना पड़ा था। इसका कारण है सातवें घर में—वैवाहिक तथा दाम्पत्य सुख के घर में—मंगल का मकर में होना। उच्च-राशिस्थ मंगल, आतिथेयी ग्रह शनि के भी उच्च-राशिस्थ होने के कारण महती प्रतिभा और सौन्दर्य वाली दिव्य-महिला का द्योतक है। किन्तु मंगल और शनि का जन्मजात वैषम्य (मंगल मकर में है जो शनि की राशि है) मतभेद और पारस्परिक कठोर-शब्दों के आदान-प्रदान का कारण है।

हम यहाँ प्रसंगवश एक और सिद्धान्त का वर्णन कर दें। वह सिद्धान्त है: ग्रहों का शृंखला-सम्बन्ध जो लग्न में अथवा लग्नेश में समाप्त होता है। भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली के अध्ययन से हमें ज्ञात हो ही चुका है कि ऐसी शृंखला कैसी होती है। उनकी एक असाधारण जन्मकुण्डली होने के कारण उनकी ग्रह-शृंखला सभी उच्च-राशिस्थ ग्रहों की थी। किन्तु उनके नीचे स्तर के व्यक्तियों में अ-उच्च-राशिस्थ ग्रहों की शृंखला हो सकती है, जैसे चन्द्र सूर्य के घर में हो, सूर्य मंगल के घर में हो, मंगल बुध के घर में, और यही क्रम अन्त तक चले जो लग्न में अथवा लग्नेश में समाप्त हो। ऐसा व्यक्ति अपने प्रकार में ही महान सिद्ध होना चाहिए—एक विलक्षण व्यक्ति होना चाहिए।

१०

ग्रह और उनकी दृष्टियाँ

पहिले ही वर्णित, ग्रहों की पारस्परिक-स्थितियों में ५ : ९ की स्थिति सर्वोत्तम है। वह नव-पंचम या त्रिकोण योग (अर्थात् त्रिगुणात्मक) कहलाता है। एक दूसरे से ५-वें और ९-वें स्थान पर स्थित ग्रहों की स्थिति शुभ होती है और वे सुफल दायक होते हैं। भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में शुक्र से गणना करने पर गुरु और चन्द्र ५-वें स्थान पर हैं। लग्न में स्थित गुरु और चन्द्र से गिनने पर स्वयं शुक्र ९-वें स्थान पर है। यह ५ : ९ का सम्बन्ध कहा जाता है।

दूसरा सर्वोत्तम सम्बन्ध ३ : ११ का अर्थात् त्रिर्-एकादश योग है। भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में, बुध से गिनना प्रारम्भ करें तो गुरु और चन्द्र तीसरे घर में है। दूसरी ओर, (लग्न-स्थिति) गुरु और चन्द्र से गणना प्रारम्भ करें तो बुध ११वें घर में है। यह ३ : ११ का सम्बन्ध सुखद सम्बन्ध है जो उन ग्रहों और उनके द्वारा सेवित घरों के मामले में सुखद परिणाम प्रकट करते हैं।

इन दो 'अच्छे' (शुभ) सम्बन्धों के समान ही दो 'बुरे' (अशुभ) सम्बन्ध हैं। ६ : ८ के सम्बन्ध में स्थित ग्रह परस्पर शत्रु होते हैं और उस व्यक्ति को उनसे सम्बद्ध मामलों में क्लेश देते हैं। इस प्रकार का योग (सम्बन्ध) परिवार में मृत्यु, चोरी, कुलवैर, बे-रोजगारी तथा द्वेषभाव कर सकता है। यह ६ : ८ का सम्बन्ध षड + अष्टक अर्थात् 'षडाष्टक' योग कहलाता है।
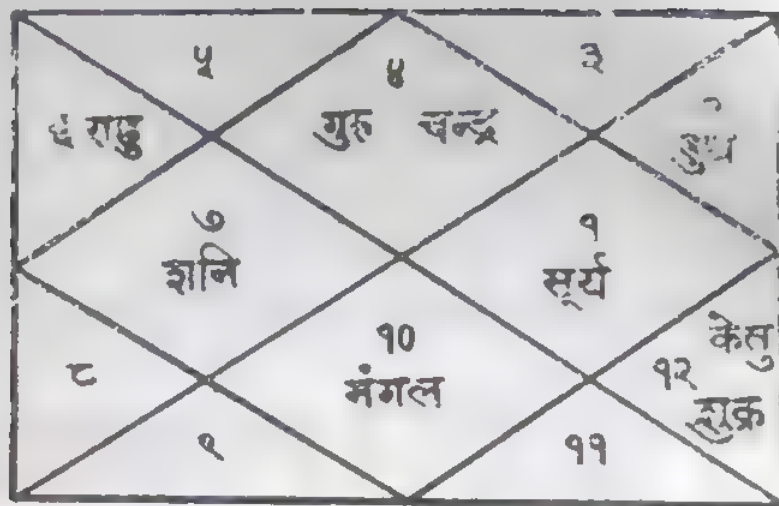
एक थोड़ा-सा कम बुरा योग अर्थात् ग्रहों की स्थिति सम-कोण सम्बन्ध है। जब एक ग्रह दूसरे से चार घर आगे होता है, तो दोनों ग्रहों को 'केन्द्र-योग' सम्बन्ध में कहा जाता है। इसको भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में मूर्तरूप में देखा जा सकता है :

उपर्युक्त चित्र में गुरु-चन्द्र शनि की स्थिति के साथ समकोण बनाते हैं। इसी प्रकार, वे सूर्य की स्थिति के साथ भी समकोण बनाते हैं। इसी प्रकार मंगल भी सूर्य और शनि के साथ समकोण बनाता है। यदि विभिन्न ग्रहों के यथार्थ अंशों का लेखा किया जाय तो ग्रहों की पारस्परिक स्थिति बिल्कुल ९० अंश अलग-अलग तो न निकले, तथापि जन्मकुण्डली में दृष्टिगत रूप से तो ऊपर सन्दर्भित ग्रह एक दूसरे से समकोण पर ही स्थित हैं।

तब भी, जब कि वे एक-दूसरे से समकोण पर स्थित नहीं दीख पड़ते, यदि वे चार घर दूरी पर हैं, तो भी वे केन्द्र-योग में आबद्ध माने जाते हैं
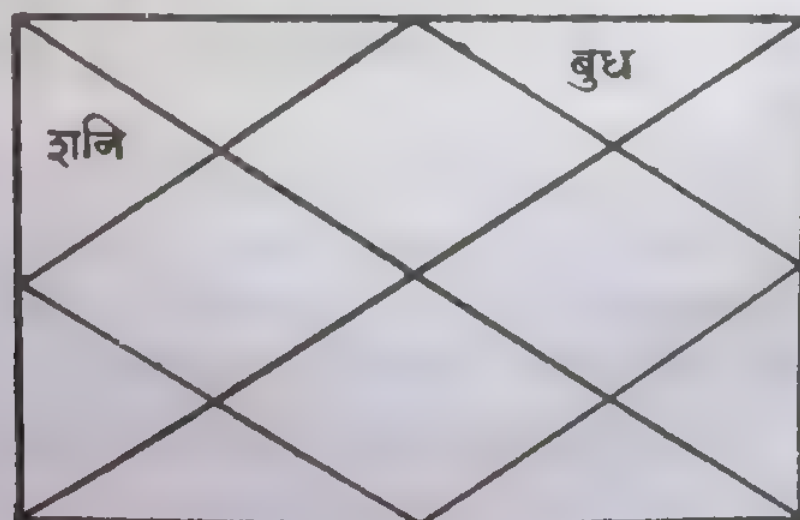
जैसा कि पीछे दिए गए चित्र में है :

यहाँ, बुध और शनि केन्द्र-योग में हैं क्योंकि वे चार घर दूरी पर हैं। जैसा षडाष्टक योग में है, उसी प्रकार ग्रहों का केन्द्र-योग भी क्लेश-युक्त जीवन का द्योतक है।

उसी घर में ग्रहों को संयोगावस्था में माना जाता है यदि वे एक-दूसरे से ५ अंश के अन्दर ही हैं।

भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली में अनेक केन्द्र-योग होने के कारण ही उनका जीवन उथल-पुथल, विलगाव, युद्धों और अन्य विपदाओं से परिपूर्ण था।

जन्मकुण्डली में समानान्तर चतुर्भुज के आकार वाले चार बड़े घर केन्द्र कहलाते हैं।

निम्न चित्र में समानान्तर चतुर्भुजाकारवाले चार घर—अ, ब, स, द पारिभाषिक रूप में केन्द्र अथवा केन्द्रस्थान कहलाते हैं। चूँकि 'ब' और 'द' घरों में स्थित ग्रह 'अ' और 'स' घरों में स्थित ग्रहों से समकोण पर हैं, इसलिए उनका सम्बन्ध केन्द्र-योग पुकारा जाता है।
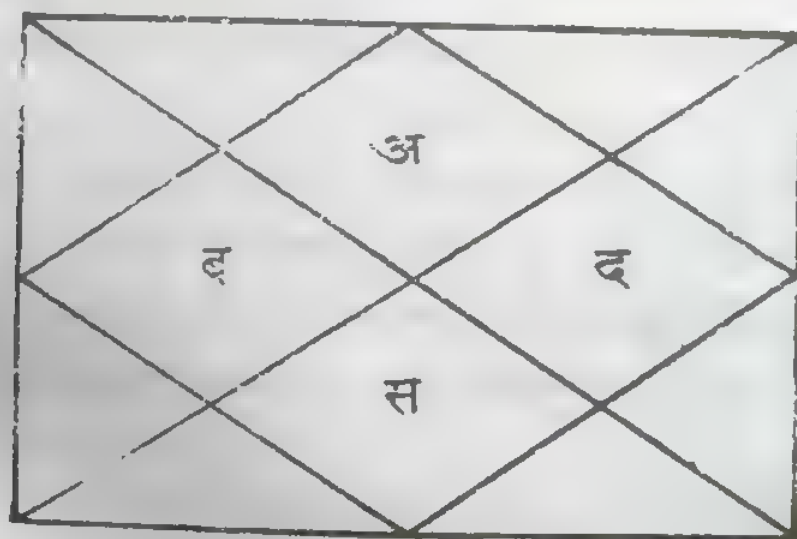
चूँकि केन्द्र-योग समकोण-सम्बन्ध का द्योतक है, इसलिए यह शब्दावली परस्पर चार घर दूर ग्रहों के लिए भी प्रयुक्त होती है चाहे वे केन्द्र नाम-से पुकारे जाने वाले वास्तविक समानान्तर चतुर्भुजाकार घरों में न हों।

आमने-सामने के घरों में स्थित ग्रहों को सम-सप्तक अर्थात् एक-दूसरे से ७वें घर में सम्बन्ध रखने वाला कहा जाता है।

जन्मकुण्डली में जितने अधिक नव-पंचम और त्रि-एकादश योग अर्थात् ५ : ९ व ३ : ११ सम्बन्ध होंगे, वह उतनी ही भाग्यशाली कही जाएगी।

जन्मकुण्डली में जितने अधिक षडाष्टक और केन्द्र-योग अर्थात् ६:८ व ४:१० सम्बन्ध होंगे वह उतनी ही अधिक दुर्भाग्यपूर्ण, अशुभ कहलाएगी।

ग्रह, यदि सूर्य और शनि की भाँति परस्पर विरोधी न हों तो, संयोग में अथवा सामने के घर में (सम-सप्तक) होने पर शुभ फलदायक होते हैं।

प्रथम दो हितकर योग तुलनात्मक रूप में निर्बाध, सुविधापूर्ण और समृद्ध जीवन के द्योतक हैं।

पिछले दो अहितकर योग जीवन में तूफान, दुःख और विपदाएँ लाते हैं।

एक-दूसरे के सामने स्थित ग्रह सम-सप्तक योग में अर्थात् परस्पर ७-वें घर में होते हैं चाहे उन्हें वामावर्त गिना जाय और चाहे दक्षिणावर्त। एक सम-सप्तक योग शुभ या अशुभ हो सकता है, यह निर्भर इस तथ्य पर करता है कि परस्पर आमने-सामने वाले ग्रह मित्र हैं अथवा शत्रु हैं। यदि गुरु और चन्द्र सम-सप्तक योग में हों तो वे दोनों मित्र होने के कारण उस व्यक्ति को उन मामलों में शान्ति और सुख की प्राप्ति होगी जो उन घरों द्वारा प्रदर्शित होते हैं जिनमें वे दोनों ग्रह स्थित हैं।

पीछे दिए गए चित्र में 'अ' और 'स' घर में स्थित ग्रह समसप्तक योग में होंगे। इसी प्रकार, 'ब' और 'द' घर वाले ग्रह भी समसप्तक योग में होंगे। राहु और केतु सदैव सम-सप्तक होते हैं किन्तु वे एक ही अस्तित्व के दो छोर हैं। एक कर्ण के अन्तिम छोर पर स्थित इधर-उधर के घर सम-सप्तक हैं।

एक जन्मकुण्डली के सभी ग्रहों में से सूर्य और चन्द्र ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। वे ही ऐसे हैं जो अपनी गतिविधियों में नियमित हैं। अन्य ग्रहों की गतिविधियाँ अव्यवस्थित हैं। सूर्य और चन्द्र जीवन-सरिता के दो फूलों की भाँति हैं। वे व्यक्ति जिनकी जन्मकुण्डलियों में सूर्य और चन्द्र नव-पंचम अर्थात् ९ : ५ का सम्बन्ध होता है, वे नियमित जीवन को पसन्द करते हैं। जिनकी जन्मकुण्डलियों में सूर्य और चन्द्र षडाष्टक (६ : ८) अथवा केन्द्र योग (४ : १०) में होते हैं, वे व्यक्ति उत्तेजित जीवन अर्थात् देरी में सोने

और भोजन करने का जीवन व्यतीत करते हैं।

शुभ सूर्य-चन्द्र के सम्बन्ध मानसिक शान्ति, सन्तुलन, धैर्य, नियमितता तथा सन्तोष के द्योतक हैं।

चन्द्रमा का जन्मकुण्डली में एक विशेष महत्व है। चन्द्र व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रतीक है। जन्मकुण्डली के अध्ययन में व्यक्ति के मस्तिष्क की स्थिति का निश्चय जन्मकुण्डली में चन्द्र की अवस्था का निश्चय करके हो सकता है। इस चित्र को देखिए :
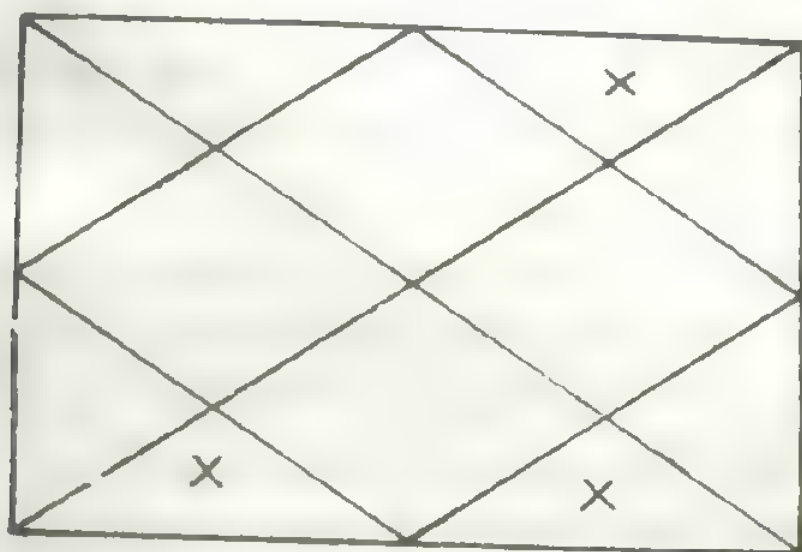
यदि चन्द्र उपर्युक्त जन्मकुण्डली की भाँति किसी जन्मकुण्डली में काटे का निशान लगे हुए किसी भी घर में अर्थात् ६-ठे, ८-वें अथवा १२-वें घर में हो, तो उस व्यक्ति का मस्तिष्क क्लेशयुक्त अथवा अशान्त रहेगा। यद्यपि सभी प्रकार से ऐसे व्यक्ति का जीवन शान्त और सुखमय होगा, तथापि वह चिन्ताएँ उत्पन्न कर लेगा और अनिश्चिय तथा असुरक्षा की भावना से स्वयं को ग्रसित अनुभव करेगा। ज्योतिष का यह नियम अपरिवर्तनीय-अटल है, और जिन लोगों को ज्योतिष का लेशमात्र भी ज्ञान नहीं है वे भी, इसको, अपने जीवन अथवा अपने से परिचित व्यक्तियों के जीवन से परख सकते हैं।

लग्न में वृषभ-चन्द्र वाले व्यक्ति का अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व होता है, और उसका रूप-ढंग प्रायः पिंगलवर्णी होता है। वृषभ-चन्द्र की लग्न में उपस्थिति को अज्ञानी व्यक्ति भी भली-भाँति पहचान सकता है, जैसाकि आगे दिए गए चित्र में दिखाया गया है :
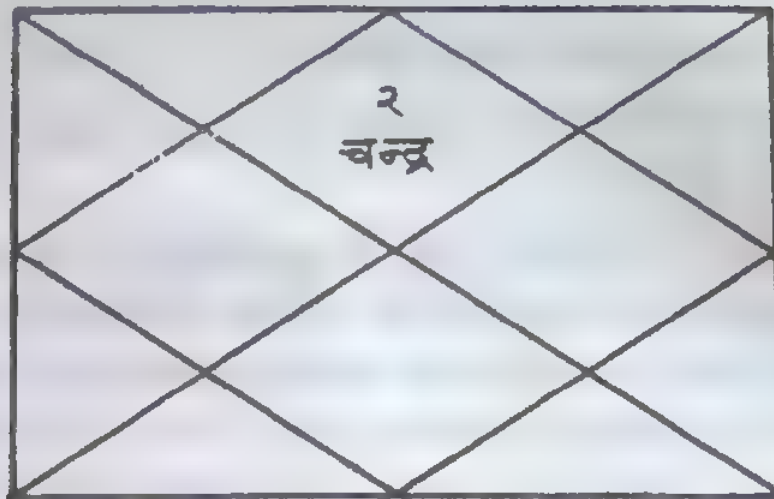
जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्र स्थित होता है, वही राशि व्यक्ति की जन्म-राशि कहलाती है। ऊपर के चित्र में वृषभ ही लग्न है और जन्म-राशि भी है। ऐसी जन्मकुण्डलियाँ विरली होती हैं।

अतः पाठक को ध्यान रखना चाहिए कि 'राशि' शब्द के दो अर्थ हैं। सामान्य दृष्टि से यह शब्द राशिचक्र के मेष से लेकर मीन तक—१२ भागों का द्योतक है। किन्तु अधिक विशिष्ट भावना में इसका अर्थ जन्म के समय चन्द्रमा की राशि से होता है (क्योंकि यहाँ राशि शब्द वास्तव में जन्म-राशि का संक्षेप शब्द होता है) भारतीय ज्योतिष में प्रायः व्यक्तियों से पूछा जाता है "आपकी राशि (अर्थात् जन्मराशि) कौन-सी है ?" ऐसे अवसरों पर प्रश्नकर्ता की इच्छा व्यक्ति की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति का पता लगाने की होती है।

वार्षिक भविष्यकथन के लिए राशि (अर्थात् जन्मराशि) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जन्मराशियों के संदर्भ में कहा गया भविष्यकथन राशि-भविष्य कहलाता है। प्रायः प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं के दीपावली-विशेषांकों में १२ जन्म-राशियों का वार्षिक भविष्य दिया होता है।

एक दिन, सप्ताह, मास अथवा वर्ष भर के लिए किए गए जन्मराशि भविष्य-कथन में जन्म-राशि को जन्मकुण्डली का केन्द्र मान लिया जाता है। यदि एक दिन का भविष्य बताना है, तो पंचांग से यह देखना पड़ता है कि विभिन्न नक्षत्र उस दिन किन-किन राशियों में होंगे। यदि जन्म-समय चन्द्र की स्थिति (जन्मराशि) के साथ वे सभी ६ : ८ (षडाष्टक) अथवा

४ : १० (केन्द्र) योग बनाते हैं तो वह दिन अशुभ होगा। यदि इसके विपरीत, अपनी नित्य परिक्रमा करते हुए अधिकांश ग्रह जन्म-राशि के साथ ५ : ६ (नव-पंचम) अथवा ३ : ११ (त्रिर्-एकादश) योग बनाते हैं, तो वह दिन शुभ होगा।

साप्ताहिक, मासिक व वार्षिक भविष्यकथन के लिए भी विभिन्न ग्रहों की उन दिनों की स्थितियों का अध्ययन करना पड़ता है जिन काल-खण्डों के लिए भविष्यकथन करना होता है। फिर उन दिनों का अध्ययन किया जाता है जिन दिनों विभिन्न ग्रह जन्मराशि के साथ हितकर, शुभ (५ : ६ और ३ : ११) तथा अहित-अशुभ (६ : ८ और ४ : १०) योग बनाते हैं। जिन भी तिथियों को ग्रह जन्मराशि के साथ शुभ-सम्बन्ध में होते हैं, उन दिनों में उन ग्रहों द्वारा स्वामित्व किए घरों के परिणाम हित-कर होंगे। जिन तिथियों की ग्रह जन्म-राशि के साथ अशुभ-सम्बन्ध में होते हैं, उन दिनों में उन ग्रहों द्वारा स्वामित्व किए गए घरों के परिणाम अहितकर होंगे।

आइए, हम एक दृष्टान्त लें। हम मान लें कि कुम्भ लग्न वाले एक व्यक्ति की जन्म-राशि मिथुन (पांचवें घर में) है जैसा नीचे चित्र में दिखाया गया है :

इस व्यक्ति का एक दिन का भविष्य बताने के लिए हम पंचांग लेते हैं और उस दिन ग्रहों की जो राशियाँ होंगी, वह इस कुण्डली में लिख लेते हैं। जिन घरों में 'नव॰' लिखा है, वे चन्द्र से नव-पंचम (६ : ५) हैं।

'षड' लिखे हुए घर जन्म के समय चन्द्र के साथ षडाष्टक (६ : ८) हैं। 'केन्द्र' अंकित घर चन्द्र के साथ केन्द्र योग (४ : १०) में हैं। 'त्रिर' लिखे हुए घर त्रिर-एकादश (३ : ११) योग में हैं।

पाठक को पहले ही बताया जा चुका है कि इनमें से कौन-से योग शुभ हैं और कौन-से अशुभ हैं। पारस्परिक सम-सप्तक (७ : ७) योग प्राय: शुभ होता है, जब तक कि आमने-सामने वाले ग्रह जानी दुश्मन न हों, जैसे सूर्य और शनि हैं।

उपर्युक्त चित्र में सूर्य ७वें घर का स्वामी है। १६ सितम्बर से प्रारम्भ होने वाले एक मास के लिए यह ८वें घर में कन्या-राशि में (जन्म के चन्द्र) जन्म राशि के साथ केन्द्र योग बनाएगा। सातवाँ घर विवाहित जोड़ी (पत्नी अथवा पति), व्यापारिक-समझौते और कानूनी मामलों से सम्बन्ध रखता है। उपर्युक्त सभी मामलों में इस (कुण्डली वाले) व्यक्ति को आघात लगेंगे और चिन्ताएँ होंगी जब भी सूर्य कन्या और मीन में से गुजरेगा; इसी प्रकार के आघात और भी कष्टकारक तब होंगे जबकि सूर्य वृश्चिक और मकर में से गुजरेगा। वे दो राशियाँ कष्टकारक होने के कारण और दूसरी (मकर) सूर्य से विशेषरूप में असहिष्णु होने के कारण, जब सूर्य १६ नवम्बर से एक मास के लिए और फिर १४ जनवरी से एक मास के लिए उन घरों से गुजरेगा, तब वे दिन उस व्यक्ति के लिए अशुभ, अहितकर होंगे।

चूँकि ८वाँ घर मृत्यु, घातक रोगों, दुर्घटनाओं और उत्तराधिकार-प्रदान (वसीयतों) का है, अतः चिन्ताएँ इन्हीं विषयों में होंगी।

उन चिन्ताओं की गहनता मूल जन्मकुण्डली में सूर्य-चन्द्र के सम्बन्ध पर भी निर्भर होगी। यदि वे पहले ही मूल-रूप में ६ : ८ अथवा ४ : १० के योग में हैं, तो सूर्य की गतिविधि के समय इसी योग की पुनर्निमित पर्याप्त रूप में कुपरिणामों की देने वाली होगी। जब सूर्य वृश्चिक में से गुजर रहा होगा, तब अशुभ घड़ी व्यक्ति के व्यवसाय अथवा पिता से सम्बन्ध रखने वाली होगी। जब सूर्य मकर में से गुजरेगा, तब दुर्दैव और भी घोर होगा, और इसका सम्बन्ध अस्वास्थ्य, गिरने से दुर्घटना तथा व्यय से होगा।

पिता, व्यवसाय, भाइयों (और बहिनों) तथा वीरता के घरों का

स्वामी मंगल होने के कारण जब यह ग्रह जन्म राशि के साथ ६ : ८ व ४ : १० की योग-स्थिति में होगा, तो उन सभी मामलों में चिन्ताएँ उत्पन्न कर देगा। ये चिन्ताएँ और भी घोर होंगी यदि मूल जन्मकुण्डली में मंगल और चन्द्र में ६ : ८ अथवा ४ : १० का योग है। इसके विपरीत, यदि मूल जन्मकुण्डली में मंगल और चन्द्र ५ : ९ अथवा ३ : ११ के सम्बन्ध में हैं, तो यह कल्पना करते हुए कि मंगल के गुजरने पर फिर ऐसा ही योग बनता है, मंगल द्वारा अनुशासित होने वाले व्यक्तियों तथा वस्तुओं के सम्बन्ध में सुखद परिणाम होंगे। यदि मूल मंगल-चन्द्र योग ठीक है किन्तु पारगमन स्थितियाँ बुरी हैं तो चिन्ताएँ नगण्य होंगी। इसी प्रकार यदि मूल मंगल-चन्द्र योग अशुभ है किन्तु पारगमन की अवधि में वे अच्छा योग बनाते हैं तो स्थिति में कुछ ऊपरी तथा अस्थायी सुधार होगा।

राशि (जन्मराशि) के सम्बन्ध में ज्योतिषीय भविष्यवाणियाँ इस प्रकार की जाती हैं।

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भविष्यवाणियाँ लग्न के स्वामी के संक्रमण को पता करके की जाती हैं। यदि लग्न सिंह है और शनि सिंहराशि में से संक्रमण—पारगमन कर रहा है तो वह व्यक्ति शिथिलता, गठिया, सर्दी, भारीपन तथा इसी प्रकार की उन अस्वस्थताओं से पीड़ित होगा जो ठंडे, निर्जीव शनि ग्रह द्वारा प्रकट होते हैं।

जब शनि उस घर में से पारगमन कर रहा हो जिसमें सूर्य स्थित है तो रोग अधिक शोचनीय होगा क्योंकि ये दोनों शत्रु हैं। यदि मंगल लग्न का स्वामी हो और शनि इसमें से पारगमन करे तो भी रोग उसी प्रकार गुरुतर होगा क्योंकि मंगल एक आग्नेय ग्रह है, जबकि शनि ठण्डा ग्रह है।

यदि मूल जन्मपत्री में सिंह-लग्न पर सूर्य की दृष्टि नहीं है (और व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रारम्भ से ही कमजोर है) अथवा मेष-लग्न (या वृश्चिक-लग्न) पर मंगल की दृष्टि नहीं है तो उन पर शनि का पारगमन घोर चिन्ताएँ उत्पन्न कर देगा। यदि उसी समय राहु भी उसी घर में पारगमन कर रहा हो और अन्य ग्रह ४ : १० अथवा ६ : ८ का योग बनाते हों, तो दुर्घटना अथवा शारीरिक आघात इतना घोर होगा कि किसी अवयव अथवा जीवन का ही अन्त हो जाय। आगे दिए गए चित्र को देखें :
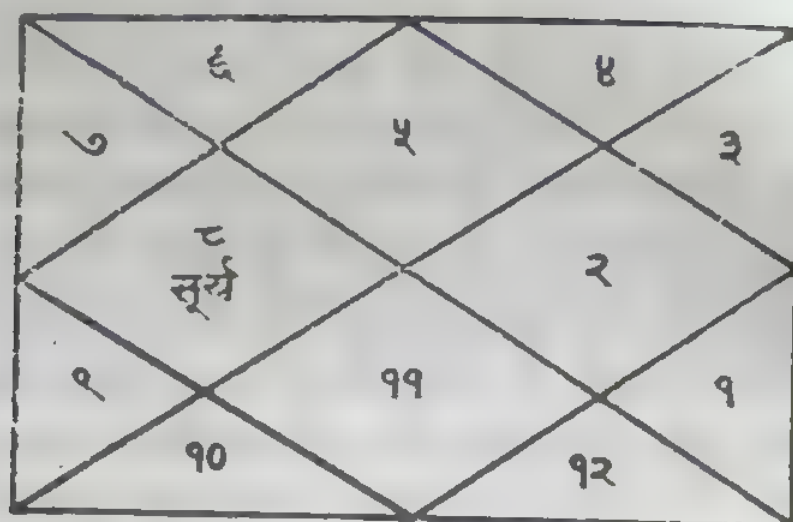
यह जन्मकुण्डली एक दुर्बल संरचना प्रदर्शितक है क्योंकि इसमें लग्न पर इसके स्वामी (सूर्य) की दृष्टि नहीं है। सूर्य वृश्चिक जैसी जल-प्रधान राशि में होने के कारण एक निर्जीव, जल-प्रधान अर्थात कम पिंड का द्योतक है। जब कभी शनि और राहु वृश्चिक में पारगमन करेंगे, वे दोनों तभी उस व्यक्ति को घोर शारीरिक यन्त्रणा देंगे। ये संक्रमण—पारगमन पंचांगों में अर्थात् ग्रहों की गतिशीलता प्रदर्शित करने वाली तालिकाओं में लिखे हुए मिल जाते हैं।

चूंकि राहु एक घर से दूसरे घर में १$\frac{१}{२}$ वर्ष में और शनि २$\frac{१}{२}$ वर्ष में पारगमन—संक्रमण—करता है, अतः उनकी गतिविधियां ज्योतिष में रुचि रखने वालों को सरलता से स्मरण रहती हैं। वास्तविक तिथियां, जिनमें वे अथवा अन्य ग्रह दूसरे घरों में प्रविष्ट होते हैं, पंचांगों में लिखी होती हैं। ज्योतिष में रुचि रखने वाले सभी व्यक्तियों को न केवल प्रचलित वर्ष का सजिल्द पंचांग सदैव अपने हस्तगत रखना चाहिए अपितु पिछले पंचांगों का संग्रह भी अपने पास रखना चाहिए ताकि अपने व्यक्तियों का विगत बताकर जन्मकुण्डली की सत्यता घोषित की जा सके।

ऊपरी चित्र में शनि का वृश्चिक में से पारगमन शोचनीय स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न कर देगा क्योंकि शनि (अपने शत्रु) सूर्य के साथ-साथ न केवल पारगमन कर रहा होगा जो लग्न का स्वामी है, अपितु सिंह (लग्न) पर १०-वीं दृष्टि से कोप-दृष्टि भी डाल रहा होगा। अतः जब कभी लग्न व इसका स्वामी, दोनों ही, किसी एक अथवा अनेक क्रूर ग्रहों द्वारा प्रभा-

वित होते हैं तब परिणामस्वरूप गंभीर बीमारी होना अवश्यम्भावी है।

चूंकि वृश्चिक जल-प्रधान राशि है, अतः इसमें सूर्य का आगमन पिंड में रक्त अथवा जल सम्बन्धी रोग, यथा मूत्र, को जन्म देगा। वह रोग दुर्गन्धमय होगा क्योंकि शनि उस राशि में होगा जिसका स्वामी मंगल है और जो (एक अन्य क्रूर ग्रह) सूर्य द्वारा सेवित है।

जब ऐसा स्वास्थ्य-प्रभावी संक्रमण वृषभ या तुला में चल रहा हो, जिनका स्वामी शुक्र है, तो बीमारी का सम्बन्ध रतिरोगों से होना संभव है।

किसी व्यक्ति की परीक्षा में सफलता अथवा उसके शैक्षिक-भविष्य के सम्बन्ध में सभी प्रश्नों के उत्तर पांचवें घर के स्वामी को देखकर तथा यह अध्ययन करने के पश्चात देने होंगे कि क्या यह उच्च-राशिस्थ है अथवा नीच-राशिस्थ है, क्या यह पाँचवें घर पर दृष्टि डाल रहा है, क्या यह लग्न के स्वामी के साथ शुभ-स्थिति में है, क्या यह शुभ तथा उन्नत ग्रहों के साथ सहयोगी है अथवा क्रूर व अमंगलकारी ग्रहों के साथ है, और क्या यह पहले अथवा नवें जैसे महत्वपूर्ण घरों में स्थित है।

सूर्य, गुरु, शुक्र और चन्द्र नम्र, उन्नत, शुभ, कृपालु तथा मंगलकारी ग्रह समझे जाते हैं, अतः ये सब सुखदायक कहलाते हैं। शनि, राहु, केतु और मंगल कठोर, शत्रुत्वपूर्ण, राक्षसी, अभद्र, अशिष्ट, क्रुद्ध तथा अवनत ग्रह माने जाते हैं। अतः ये सब दुःखदायक कहलाते हैं।

इन दुःखदायकों का परीक्षण यह है कि इनमें से एक भी ग्रह किसी भी राशि में चन्द्र के साथ होने अथवा उस पर दृष्टि डालने से ही क्लेशयुक्त, चिन्तित मानस उपस्थित कर देते हैं।

अनेक बार सूर्य को भी गलती से दुःखदायी ग्रहों में गिन लेते हैं, किन्तु हम उस विचार से सहमत नहीं हैं। हम तो इसे सुखदायकों में ही सम्मिलित करेंगे।

इस प्रकार हमें चार सुखदायक तथा चार दुःखदायक ग्रह प्राप्त होते हैं।

शेष ग्रह अर्थात् बुध निर्जीव (नपुंसक) होने के कारण न तो सुख-दायक है और न ही दुःखदायक है। किसी भी जन्मकुण्डली में इसका गुण इसके साथ वाले ग्रह से निश्चित किया जाता है। दुःखदायकों के साथ होने

पर यह दुःखदायक है। सुखदायकों के साथ एक ही घर में स्थित होने पर यह सुखदायक होता है। बुध तो जल के समान है जो विष अथवा अमृत में बदला जा सकता है इसमें वैसी ही वस्तु मिलाकर।

व्यक्ति के विवाह के सम्बन्ध में प्रश्नों का भविष्य ७वें घर के स्वामी के सन्दर्भ में घोषित किया जा सकता है : कि क्या यह ७वें घर पर दृष्टि डाल रहा है अथवा ७वें घर में स्वयं उपस्थित है, कि क्या कोई दुःखदायक बुरे ग्रह ७वें घर को देख रहे हैं अथवा इसमें उपस्थित हैं, कि क्या कोई बुरे ग्रह घर के स्वामी के साथ ही घर में उपस्थित हैं अथवा उस पर दृष्टि रखते हैं ! जैसाकि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, ७वें घर से अथवा इस घर के स्वामी से यदि किसी भी प्रकार बुरे ग्रहों का सम्बन्ध है, तो विवाह में देरी होगी, किसी वर या वधू को खोज निकालना सुगम कार्य न होगा तथा पति-पत्नी में सांसारिक सदृश्यता न होगी। इसके विपरीत, यदि ७वाँ घर तथा इसका स्वामी केवल मात्र सुखदायक—अच्छे—शुभ-ग्रहों से सम्बन्धित हैं या उनकी दृष्टि इन पर पड़ती है, तो विवाह जल्दी होगा तथा वैवाहिक-सम्बन्ध पूर्णरूपेण सुखद होंगे।

जहाँ तक भौतिक समृद्धि और व्यापारिक अथवा व्यावसायिक स्तर का सम्बन्ध है, ६-वें और १०वें घर की परीक्षा करनी चाहिए। यदि ६-वें,घर का स्वामी ६वें घर में है, या १०वें घर में है, या लग्न में है, या २-रे या ५वें घर में है, या उच्च-राशिस्थ है या ६वें घर को देख रहा है, तो वह व्यक्ति भाग्यशाली होगा तथा अपने जन्मकालीन सामाजिक व वित्तीय स्तर से पर्याप्त उन्नत स्तर को प्राप्त होगा।

लग्न, ५वें, ६वें तथा १०वें घरों के स्वामियों के अपने-अपने घर परस्पर बदल लेने से महान् समृद्धि, शक्ति तथा यश की प्राप्ति होती है। ६-वें और १०वें घरों के स्वामियों के एक-दूसरे के घर में होने से अथवा ५-वें और ६वें घरों के स्वामियों के परस्पर घर बदल लेने से, अथवा लग्न व ६वें घर के स्वामियों के परस्पर घर-परिवर्तन से महान सौभाग्य का उदय होता है। ऐसी अवस्थाओं में बुरे ग्रह भी उस व्यक्ति को धनी व यशस्वी बना देते हैं।

भाग्य-स्थान (६-वाँ घर—सौभाग्य का घर) का स्वामी लग्न में

होना पर्याप्त अच्छा है। इसी प्रकार लग्न के स्वामी का भाग्यस्थान में होना भी अच्छा है।

यदि ५वें और ९वें घरों के स्वामी, दोनों ही, लग्न में है तो वह व्यक्ति यश और धन को प्राप्त करेगा।

९वें घर में एक या अधिक ग्रहों का एकत्र होना सौभाग्य और समृद्धि का दाता है। इस घर में ग्रहों की जितनी अधिक संख्या होगी, उतनी ही अधिक आनन्द-स्थिति होगी।

इसी प्रकार, ५वें घर में भी एक या अधिक ग्रहों का एकत्र होना समृद्धि का द्योतक है, जितने अधिक, उतने ही श्रेष्ठ।

लग्न में या २रे, ३रे अथवा ११वें घरों में तीन या चार ग्रहों की उपस्थिति भी महान् समृद्धि देती है क्योंकि दो-दो घरों के स्वामी होने के कारण उनमें से कुछ का ५वें, ९-वें व १०वें घरों का मालिक होना निश्चित ही है।

अच्छा यही है कि ६-ठे, ८वें और १२वें घर में कोई ग्रह न हो। जिनके इन घरों में अनेक ग्रह होते हैं, उनको प्राय: जीवन में अनेक विफलताओं, पराजयों का मुख देखना पड़ता है।

शैशवकाल से ही उनकी दु:खभरी गाथा प्रारम्भ हो जाती है। उनका जन्म निर्धन अथवा अ-सुखी घर में होता है, उनकी शिक्षा में विघ्न होता है, अनेकों उथल-पुथल के कारण उनका व्यापारिक जीवन नष्ट हो जाता है और उनको किसी भी क्षेत्र में सफलता कठिन ही रहती है।

सभी जन्मकुण्डलियों में लग्न का स्वामी व्यक्ति के शरीर का, सूर्य उसकी आत्मा का, चन्द्र उसके मस्तिष्क का और ५वें घर का स्वामी उस व्यक्ति की बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है।

जिन लोगों को जीवन में महान कार्य करने होते हैं, उनकी जन्म-कुण्डली में अधिकांश ग्रह परस्पर सम्बन्धित होते हैं, चाहे वे उसी घर में हों अथवा अपनी दृष्टि रखते हैं।

अन्य ग्रहों से बिल्कुल अलग, शनि ग्रह की विलक्षण सामर्थ्य है। ३-रे ७वें और १०वें घरों पर दृष्टि डालने के साथ-साथ जिस घर में से यह पारगमन कर रहा हो अथवा जन्म के समय जिस घर में हो, उसके आगे

और पीछे के एक-एक घर को भी यह दूषित करता है, उसे भी प्रभावित करता है।

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मकुण्डली देखिए। महाभारत महाकाव्य के नायक भगवान श्रीकृष्ण भी भगवान श्रीराम के समान ही अवतारी पुरुष थे। भगवान श्रीकृष्ण की जन्मकुण्डली :
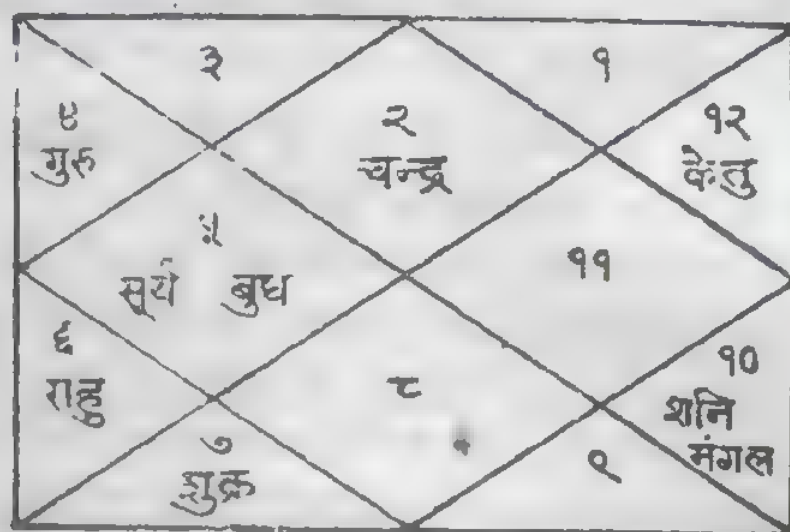
शनि प्रत्येक घर में २½ वर्ष ठहरता है। ७½ वर्ष का समय, जब शनि चन्द्र की उज्ज्वल कान्ति को अपनी छाया से दूषित करता है, साढ़े-साती (अर्थात् ७½ वर्ष का समय) कहलाता है। उपर्युक्त जन्मकुण्डली में साढ़े-साती तब प्रारम्भ होती है जब शनि मेष में प्रविष्ट होता है; क्योंकि ज्योंही शनि मेष राशि में प्रवेश करेगा, त्यों ही इसकी किरणें एक घर आगे प्रभावित करती हुई चन्द्र को दूषित करने लगेंगी। २½ वर्ष तक मेष में रहने के बाद शनि जब वृषभ में प्रवेश करेगा, तब भी वह चन्द्र के साथ २½ वर्ष के लिए और भी रहेगा। यह उस ७½ वर्ष की मध्यावधि होगी जिसमें शनि चन्द्र को प्रभावित करेगा। वृषभ में २½ वर्ष चन्द्र के साथ रहने के पश्चात् जब शनि आगे मिथुन में प्रवेश करता है, तब भी इसकी किरणें उस घर को बराबर दूषित करती रहेंगी जिसको यह पीछे छोड़ आया था अर्थात् वृषभ को। इस प्रकार, ७½ वर्ष का वह समय जिसमें शनि चन्द्र को दूषित करता है, साढ़े-साती कहलाता है।

जब शनि एक घर से दूसरे घर में जाता है, तब किसी की साढ़े-साती प्रारम्भ होती है और किसी की साढ़े-साती समाप्त हो जाती है।

साढ़े-साती को प्रायः सभी लोग अत्यधिक चिन्ता और संक्षोभ की दृष्टि से देखते हैं। शनि रोगवर्धक, निरानन्द तथा दुष्ट होने के कारण विपदा और दुःख को अपने साथ लाता है। चूंकि चन्द्र मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए अपने साढ़े-साती के प्रभाव से जब शनि इस (चन्द्र) को दूषित करता है तब वह व्यक्ति खेद, म्लान तथा मरणकाल अनुभव करता है। आमतौर से यह केवल एक शारीरिक परिवर्तन मात्र नहीं है। यह अधिकतर शैक्षिक परीक्षणों में विफलताओं, नौकरियों से निकाल दिए जाने, निकट-सम्बन्धी की मृत्यु, चोरी अथवा शारीरिक अपघात के रूप में प्रकट होता है।

किन्तु साढ़े-साती अपरिहार्य और अवश्यम्भावी रूप से सभी लोगों को ७$\frac{१}{२}$ वर्ष की सम्पूर्ण अवधि के लिए ही खराब नहीं होती।

किसी व्यक्ति के लिए सम्पूर्ण ७$\frac{१}{२}$ वर्ष के लिए अथवा इसके कुछ भाग के लिए ही साढ़े-साती खराब है—इसको परखने के लिए एक अत्यन्त सरल विधि है। यह निश्चित रूप से ही बहुत विपदाएँ देने वाली होगी यदि चन्द्र पहले ही राहु, केतु और मंगल जैसे दुष्ट ग्रहों से ग्रसित है। यदि चन्द्र मेष, सिंह तथा वृश्चिक में स्थित है तो साढ़े-साती प्रायः विपदाएँ लाएगी क्योंकि वे राशियाँ शनि के प्रति असहिष्णु हैं।

अन्य विचारणीय तथ्य यह है कि साढ़े-साती की अवधि में शनि क्या किसी महत्वपूर्ण ग्रह से ६ : ८ अथवा ४ : १० का योग बनाते हैं!! महत्वपूर्ण ग्रह १०वें, ६वें, ५वें, ७वें, ३रे व ११वें घर के मालिक हैं। यदि साढ़े-साती की अवधि में अपने संक्रमण में अधिकांश अथवा बहुत अधिक ग्रह ६ : ८ तथा ४ : १० का योग बनाते हैं, तो वे घोर चिन्ताएँ उत्पन्न करते हैं।

चूंकि शनि प्रत्येक राशि में २$\frac{१}{२}$ वर्ष तथा गुरु १ वर्ष रहता है, अतः अपने संक्रमणकाल में जब वे विरोधी स्थितियों में आ जाते हैं, तब वे ऐसे विनाश करते हैं जिनका दीर्घकालीन प्रभाव होता है यथा एक परीक्षा में विफल हो जाने पर एक शैक्षिक वर्ष की हानि हो जाती है। जब शीघ्र-पारगमक ग्रह (जैसे मंगल, सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र) अधिकांश ग्रहों (अथवा महत्वपूर्ण ग्रहों) के साथ अहितकर योगों का *निर्माण* करते हैं, तब

ये अकस्मात हानि अथवा विपदा के देने वाले होते हैं।

नीचे दिए गए चित्र को देखिए :
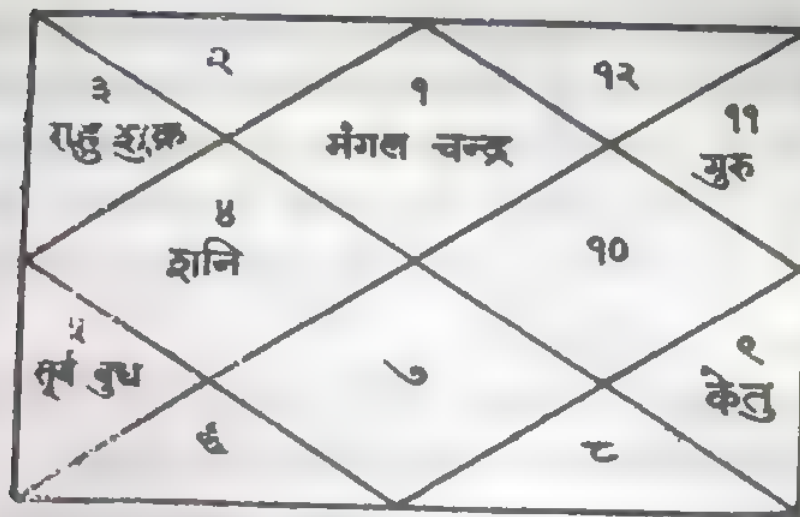
यह एक काल्पनिक जन्मकुण्डली है। इस चित्र में साढ़े-साती तब प्रारम्भ होगी जब शनि मीन में प्रवेश करेगा। इस मामले में साढ़े-साती व्यय-स्थान से प्रारम्भ होती है।

पाठक को इस जन्मकुण्डली के भयंकर स्थल ध्यानपूर्वक विचार करने चाहिए। शनि १२वें घर में मीन में प्रवेश करते ही अनेकानेक चिन्ताएँ उत्पन्न कर देगा, विशेष रूप से अत्यधिक व्यय, धन की हानि तथा ऋण-सम्बन्धी चिन्ताएँ लग जाएँगी।

शनि मीन में प्रविष्ट होकर गुरु को भी दूषित करेगा (जो ९वें घर का स्वामी है) क्योंकि शनि की किरणें अगले व पिछले, दोनों घरों को अपघात करती हैं।

शनि लग्न के स्वामी मंगल और चन्द्र को भी पीड़ित करेगा। शनि विशेषकर मंगल का घोर शत्रु होने के कारण और चन्द्र का कोई विशेष सहिष्णु सहयोगी न होने के कारण मंगल और चन्द्र के सानिध्य में शनि की उपस्थिति व्यक्ति के लिए शारीरिक और मानसिक चिन्ताओं का कुपरिणाम होना अवश्यम्भावी है। शारीरिक चिन्ताएँ लग्न का स्वामी मंगल होने के कारण दिखायी पड़ती हैं। मानसिक चिन्ताएँ शनि द्वारा मंगल के साथ-

साथ चन्द्र को भी दूषित करने के कारण स्पष्ट द्रष्टव्य हैं।

यह भी द्रष्टव्य है कि शनि का मीन में प्रवेश इसको एक ओर तो केतु व राहु और शुक्र के साथ ४ : १० के योग में ले आएगा और दूसरी ओर सूर्य व बुध के साथ षडाष्टक (६ : ८) योग में ले आएगा। इससे पाठक को बिल्कुल स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ऊपरी जन्मकुण्डली की भाँति जन्म-कुण्डली वाला व्यक्ति घोर शारीरिक तथा वित्तीय संकटों में पड़ जाएगा, ज्यों ही शनि मेष में प्रविष्ट होगा। यदि उसी अवधि में अन्य ग्रहों की गतिविधियों से भी (अधिकांशतः अथवा बहुमत में) अशुभ-योगों का निर्माण हो जाता है, तब २½ वर्ष के घोर संकट के समय में वे दिन विशेषरूप से दुःखदायी रहेंगे।

जब शनि लग्न में प्रवेश करेगा, तब व्यक्ति की वित्तीय-स्थिति सुधरेगी क्योंकि शनि अधिकांश ग्रहों के साथ शुभ-योगों (५ : ९ और ३ : ११) का निर्माण करेगा।

साढ़े-साती का अन्तिम २½ वर्ष भी असुखद रहेगा क्योंकि जब शनि वृषभ में (दूसरे घर में) प्रवेश करेगा तब भी अधिकांशतः इसका योग ४ : १० व ६ : ८ का ही बनेगा।

किन्तु यह केवल साढ़े-साती ही नहीं है जो घातक सिद्ध होनी सम्भव है। यह उपर्युक्त जन्मकुण्डली के सन्दर्भ में दर्शाया जा सकता है। ऊपर दी गयी कुण्डली में, शनि वृश्चिक में प्रवेश पाते ही व्यक्ति के लिए अत्यन्त घातक समय प्रारम्भ कर देगा। ८वाँ घर मृत्यु-स्थान अर्थात् मृत्यु का घर है। ऊपर दिए चित्र में इस घर में वृश्चिक स्थित है जो पहले ही पर्याप्त रूप में कष्टजनक है। इससे बढ़कर बात यह है कि शनि का वृश्चिक में प्रवेश ही विशेष अमंगलसूचक है क्योंकि वृश्चिक और शनि का जन्मजात कुल-बैर है।

जब शनि ८वें घर में प्रवेश करेगा, तब विपदाएँ प्रभाव में घातक अथवा घोर अनिष्टकारी हो सकती हैं क्योंकि ८वाँ घर मृत्यु से सम्बन्ध रखता है। विपदाएँ उन ग्रहों से सम्बन्धित होंगी जिनके साथ शनि ८-वें घर में साथ होगा अथवा (अपने साढ़े-साती के प्रभाव से) ७वें या ९वें घर को प्रभावित करेगा अथवा अपनी ३री, ७वीं और १०वीं दृष्टि से

देखेगा।

विवाह शीघ्र या देर से होने का विचार करते समय ७वें घर तथा उसके स्वामी का लेखा-जोखा करना पड़ता है। यदि इनमें से एक अथवा दोनों दुष्ट ग्रहों के साथ हैं अथवा उनकी क्रूर-दृष्टि इन पर पड़ती है, तो विवाह में विलम्ब होगा।

विवाह की तिथि का आकलन करने के लिए (व्यक्ति के प्रतीक) लग्न के स्वामी तथा (विवाह के प्रतीक) ७वें घर के स्वामी के संक्रमण का हिसाब लगाना पड़ेगा। जब भी कभी दोनों में से एक, दूसरे में, पारगमन करेगा तभी विवाह की सम्भावना होगी। यदि लग्न में अनेक ग्रह एकत्र हैं, अथवा ७वें घर में हैं, अथवा इन घरों पर दृष्टि डालते हैं या एक-दूसरे को देखते हैं तो विवाह तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक कि वे सभी शुभ दृष्टि वाले नहीं हो जाते।

जिन जन्मकुण्डलियों में मंगल और शुक्र एकत्र होते हैं अथवा एक-दूसरे पर दृष्टिपात करते हैं, उस व्यक्ति के विवाहेतर सम्बन्ध होते हैं। यदि मंगल और शुक्र एक ही घर में न हों किन्तु एक-दूसरे की राशि में हों अथवा एक-दूसरे पर दृष्टिपात करते हों तो जितने भी अन्य ग्रह उन दोनों के साथ होंगे अथवा उन पर दृष्टिपात करते होंगे, उस व्यक्ति के विवाहेतर सम्बन्ध उतने ही पृथक्-पृथक् व्यक्तियों के साथ होंगे। जब उनके साथ बुध ग्रह भी होता है, तब ऐसे सम्बन्ध चतुराईपूर्वक किए जाते हैं। यदि शनि और राहु अथवा केतु उनके साथ हैं तो ऐसे सम्बन्ध हिंसा से भी, बलपूर्वक भी किए जाने सम्भव हैं। यदि गुरु जन्मकुण्डली में उनके साथ हो अथवा अन्य किसी प्रकार से प्रमुख रूप में हो, तो विवाहेतर-सम्बन्ध पुरुष और महिला के मध्य एक-दूसरे की प्रतिभा और सुमधुर प्रशंसा के परिणामस्वरूप उत्पन्न होंगे।

जिन जन्मकुण्डलियों में एक या अधिक घरों पर दोनों ओर से केवल दुष्ट-ग्रहों की ही दृष्टि पड़ती हो, उन घरों के सम्बन्ध में व्यक्ति को सदैव दुर्घटनाओं, विपदाओं का ही मुख देखना पड़ेगा। आगे दिए गए चित्र को देखिए:
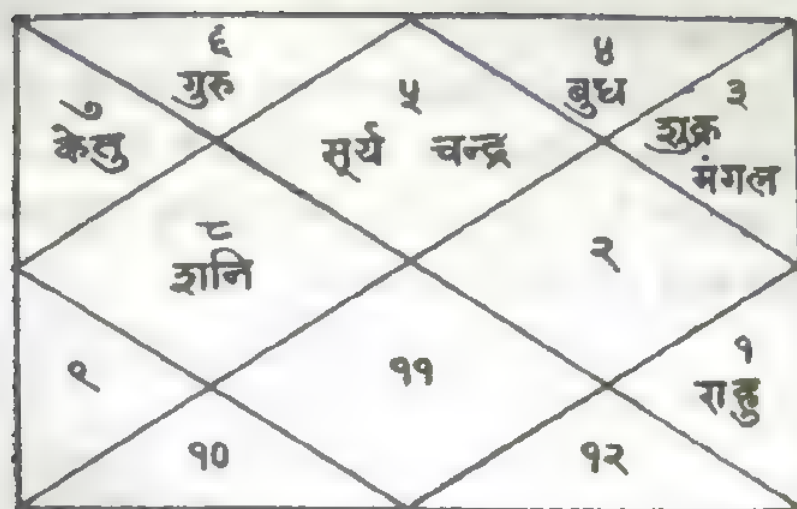
यह ग्रहों की काल्पनिक व्यवस्था है। पाठक देख सकता है कि एक ओर शनि और केतु से लेकर दूसरी ओर राहु तक के मध्य में शुक्र, गुरु अथवा चन्द्र जैसा कोई भी शुभ ग्रह नहीं है। अतः इन सभी घरों के सम्बन्ध में व्यक्ति को चिन्ताओं और विपदाओं को भोगना ही पड़ेगा।

तीसरा घर पराक्रम और भाई-बहिनों का है। वहाँ केतु स्थित है। साथ ही, साढ़े-साती के सिद्धान्त के अनुसार शनि भी उस घर को दूषित करता है। व्यक्ति का भाई अथवा बहिन अथवा दोनों ही अल्पायु में मृत्यु का शिकार हो जाएँगे। उस व्यक्ति को जीवन में कुछ घोर पराजयों का मुख भी देखना पड़ेगा। घर क्रमांक ४ माता तथा पारिवारिक सुख का घर है। शनि उस घर में स्थित है और कोई शुभ ग्रह इस घर को न तो देखता है और न ही शनि के प्रकोप के कुप्रभाव को कम करता है, अतः व्यक्ति की माता को संतप्त जीवन व्यतीत करना पड़ेगा तथा उसे घरेलू सुख प्राप्त नहीं होगा। घर क्रमांक-५ सन्तति तथा शिक्षा का है, अतः व्यक्ति की शिक्षा विफलताओं अथवा बाधाओं से परिपूर्ण रहेगी। घर क्रमांक-६ शत्रुओं और रोगों का होने के कारण, व्यक्ति को ये दोनों पर्याप्त मात्रा में मिलेंगे। घर क्रमांक-७ विवाह और व्यापारिक साझेदारी का है। उसका विवाह विलम्ब से अथवा असुखद होगा तथा व्यापारिक साझेदारी होनी या चलनी सम्भव नहीं है। घर क्रमांक-८ मृत्यु का घर है, अतः व्यक्ति को (युद्ध के समान) घोर संकटों से गुजरना पड़ेगा जिनमें प्राणों का भी जोखिम होगा।

घर क्रमांक-६ सांसारिक समृद्धि का घर है। व्यक्ति अभागा होगा, तथा अनेक सुअवसर खो देगा।

जब एक या दो घरों पर केवल मात्र दुष्ट ग्रहों की ही कुदृष्टि पड़ती है तो वह स्थिति 'पाप-कर्तरियोग' अर्थात् 'कैंची के दो फलकों के बीच में फँसा हुआ' कहलाती है। यह ज्योतिष का अत्यन्त महत्वपूर्ण अकाट्य सिद्धान्त है जो कभी असत्य नहीं हो सकता।

११

भविष्यवाणियाँ जो कभी असत्य नहीं होतीं

यद्यपि ज्योतिष ऐसा उलझा हुआ विज्ञान है जिसमें निपुणता प्राप्त करना पर्याप्त कठिन है तथापि इसके कुछ स्थूल पक्ष भी हैं जिनको ज्योतिष के आलोचक अथवा पूर्ण रूप में अनभिज्ञ व्यक्ति भी सहज रूप में पहचान कर ज्योतिष की विज्ञानरूप में वैधता, सत्यता को अंगीकार कर सकते हैं। इस अध्याय में कुछ ऐसी ग्रह-स्थितियों को तथा उनके सम्बन्ध में भविष्य-वाणियों को सार-रूप में संग्रहीत करने का विचार है जिनको पाठक सहज रूप में पहचान ले तथा अपने जान-पहचान के व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों में ग्रहों की वही स्थिति देखकर हमारी भविष्यवाणियों की सत्यता को परख ले।

(१) किसी भी जन्मकुण्डली में यदि चन्द्र १०वें अङ्क के साथ किसी भी घर में है तो उस व्यक्ति को जीवन में कम-से-कम एक भयंकर विफलता भोगनी ही पड़ेगी। यह अपघात इतना भयंकर होगा कि वह जनता में अपना मुख दिखाने में भी संकोच अनुभव करेगा।

आगे दिए हुए चित्र को देखिए। इसमें चन्द्रमा को १०वें अंक के साथ एक विशेष घर में दिखाया गया है किन्तु अंकों की चाहे जो भी व्यवस्था हो और १२ घरों में से चाहे जिस भी किसी घर में चन्द्र (१०वें अंक के साथ) हो, व्यक्ति को जीवन में कम-से-कम एक बार तो पर्याप्त दीर्घकाल के लिए 'शर्मिन्दा' अनुभव करना ही पड़ेगा। दूसरे शब्दों में, जिस भी किसी की जन्मराशि मकर होगी, उसे यह परिणाम अनुभव करना ही पड़ेगा।
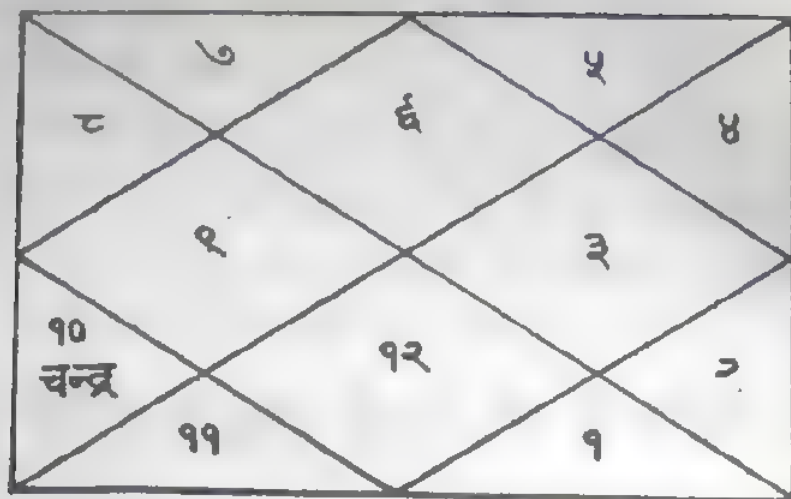
एक महिला ने हमें एक बार ऐसी जन्मकुण्डली दिखायी। जन्म-कुण्डली एक युवती की थी, जो विवाहित थी। जब जन्मकुण्डली हमें दिखाई गयी तब उस महिला को साढ़े-साती लगी हुई थी। जन्मकुण्डली का अध्ययन करते हुए हमने उस कुण्डली को लाने वाली महिला को बताया कि उस विवाहित महिला को इस समय घोर मानसिक बोझ होना चाहिए और वह बाहर लोगों से मिलने-जुलने अथवा वार्तालाप से दूर रहती होगी। हमारे पास जन्मकुण्डली लाने वाली महिला स्पष्टत: बिल्कुल असावधान एवं जानकारीहीना थी। वह और उस विवाहिता महिला की माता ब्रिज, ताश के लिए क्लब में मिला करती थीं। उस महिला की पारिवारिक स्थिति अत्यन्त धनाढ्य थी; वह परिवार व्यक्त रूप में सुखी और धन-सम्पन्न था क्योंकि उसकी माता नित्य-सन्ध्या समय अपनी बन्द मोटरकार में क्लब आया करती थी किन्तु उस महिला की माता ने अत्यन्त विवेकपूर्वक अपनी पुत्री की चिन्ता-स्थिति को अपनी उस सखी से भी अत्यन्त गुप्त रखा था जो हमारे पास उस जन्मकुण्डली को लायी थी। जब हमने उसको अपनी धारणा बतायी तो अपनी सहेली की पुत्री की घोर मानसिक व्यथा से अनभिज्ञ होने के कारण उसने ज्योतिष और ज्योतिषियों का उपहास करना प्रारम्भ कर दिया। हमने उसको कहा कि हमारी धारणा वह अपने सहेली अथवा इसकी पुत्री—जन्मकुण्डली वाली महिला—तक अवश्य ही पहुंचा दे। जब उसने, अत्यन्त संकोच एवं अविश्वास के साथ, उस सन्ध्या को क्लब में अपनी सहेली से अपनी धारणा कही, तो उस महिला ने उसे रहस्य

बताया कि उसका दामाद, जो एक सरकारी कर्मचारी था, सन्देहावस्था में होने के कारण निलम्बित था। हमें दिखाई गयी पत्नी की जन्मकुण्डली में उसके पति के पद की हानि और उसके विरुद्ध गम्भीर आरोपों की छाया स्पष्ट प्रतिबिम्बित थी। उस महिला ने, जोकि हमारे पास अध्ययनार्थ जन्मकुण्डली लेकर आयी थी, तब अनुभव किया कि वह ज्योतिष की वैधता—सत्यता पर सन्देह करने में जल्दबाजी कर गयी थी।

(२) जब कभी चन्द्र के साथ (एक ही घर में) शनि और राहु अथवा राहु व मंगल जैसे दो दुष्ट ग्रह हों, तो वह व्यक्ति मानसिक रूप में इतना परेशान होता है कि पूर्णरूपेण पागल मालूम पड़े अथवा ऐसा अनुभव करे कि वह पागल होने वाला है।
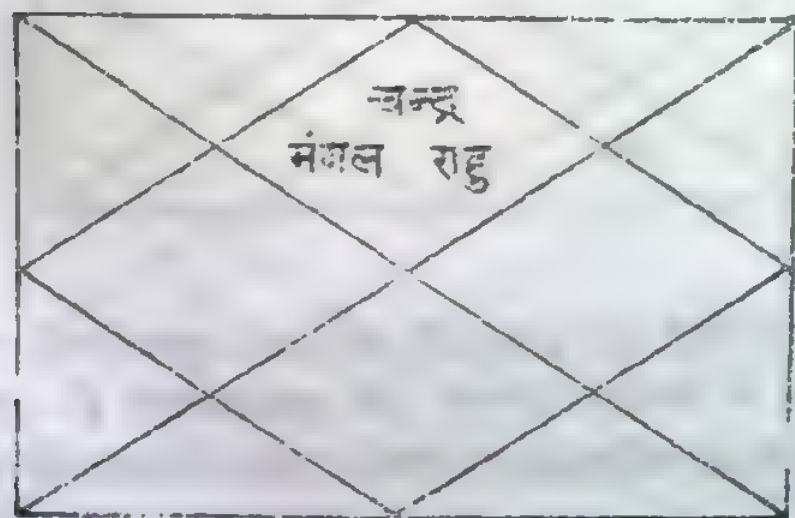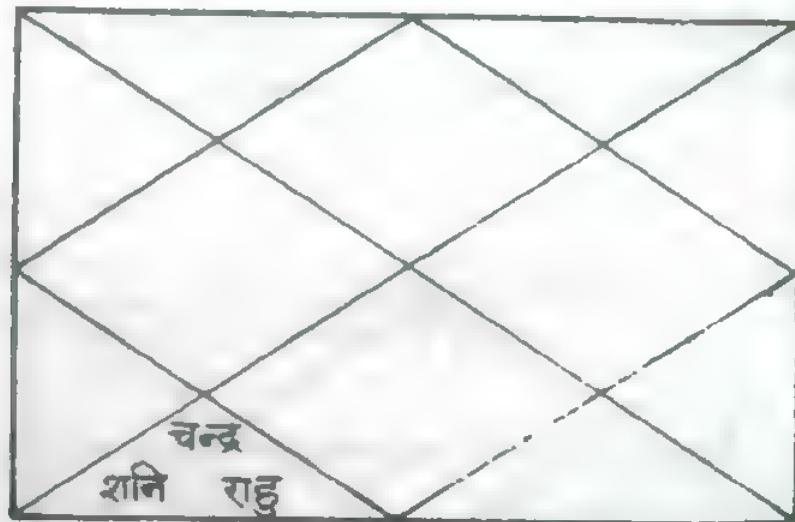
जैसा ऊपर के दो नमूने की जन्मकुण्डियों में दिखायी दे रहा है, चन्द्रमा

चार दुष्ट ग्रहों अर्थात् शनि, राहु, केतु और मंगल में से किन्हीं दो के साथ किसी भी घर में हो सकता है। ऐसा व्यक्ति कई बार बाह्यरूप में बहुत शान्त मालूम पड़ सकता है किन्तु यदि उसे विश्वास में लेकर पूछा जाय तो वह परेशानी की—मानसिक यातना की अपनी स्थिति को स्वीकार कर लेगा। ऐसे लोग, मालूम पड़ता है, इस जीवन में विगत जीवन का मूल्य चुका रहे हैं। शायद, जो यातनाएँ उन्होंने अन्य लोगों को पूर्वजन्म में दी थीं, उन्हीं का फल अब भोग रहे हैं। इससे ही मिलता-जुलता प्रभाव तब पड़ता है जब दो या अधिक दुष्ट ग्रह अन्य घरों से चन्द्रमा पर दृष्टिपात करते हैं।

चाहे दो दुष्ट ग्रह वास्तव में चन्द्रमा के साथ-साथ न हों किन्तु यदि वे अगले और पिछले घरों से चन्द्रमा पर क्रूर दृष्टि डालते हैं तो भी परेशानी और मानसिक यातना की भावना का अनुभव उस व्यक्ति को होता ही रहेगा।
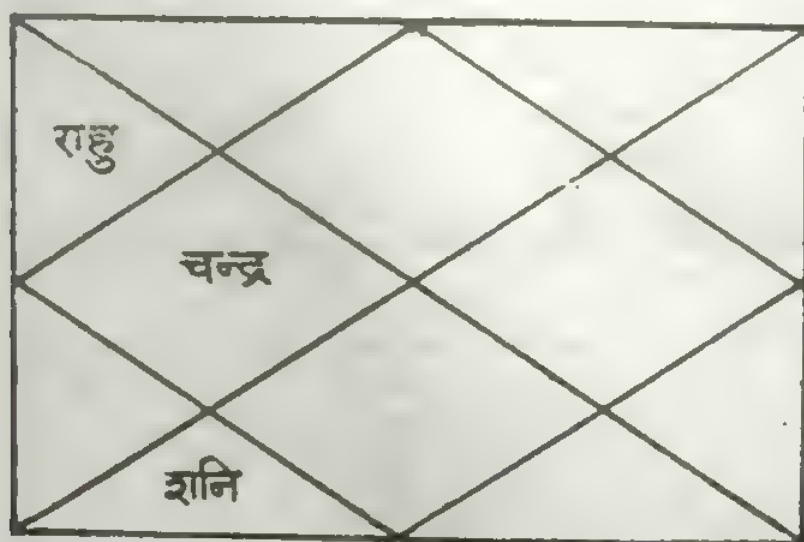
(३) जब किसी जन्मकुण्डली में मंगल और शुक्र एक ही घर में हों तो उस व्यक्ति के विवाहेतर-सम्बन्ध होने अवश्यम्भावी हैं—इससे कोई प्रयोजन नहीं कि वह व्यक्ति कितना संयमी, सदाचारी तथा विनीत प्रतीत होता है।

(४) किसी जन्मकुण्डली में यदि मकर राशि में दूसरे घर में मंगल
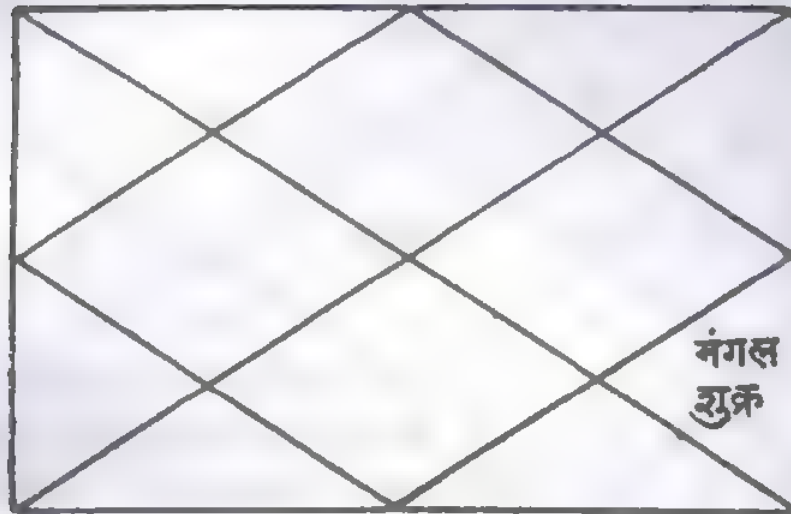
हो, तो दो परिणाम होते हैं। यदि जन्मकुण्डली किसी महिला की है तो उसके पिता का स्वभाव सामान्य बातचीत में भी भद्दी, गन्दी, गाली-गलौज वाली भाषा प्रयोग करने का होगा। यदि जन्मकुण्डली किसी पुरुष की है, तो ऐसी अभद्र भाषा उसका चाचा प्रयोग करेगा। दूसरा परिणाम यह है कि वह व्यक्ति प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी होगा।
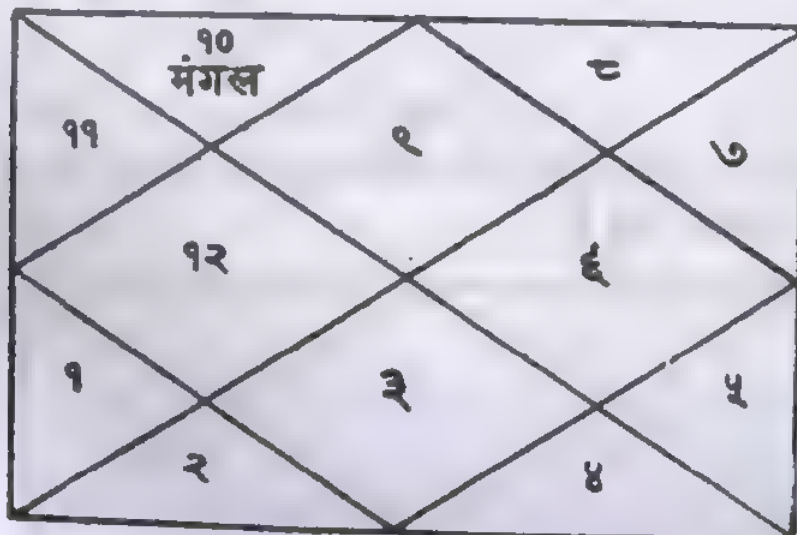
(५) शनि जब तुला लग्न में होता है, तब वह व्यक्ति विद्वान होता है तथा प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी होता है।

(६) जब गुरु कर्क लग्न में होता है, तो वह व्यक्ति विश्वासयोग्य, उदार-हृदय, सादा जीवन, स्पष्टवक्ता, सत्यप्रिय तथा चारित्रिक शुद्धता और विद्वत्ता के लिए प्रख्यात होता है।
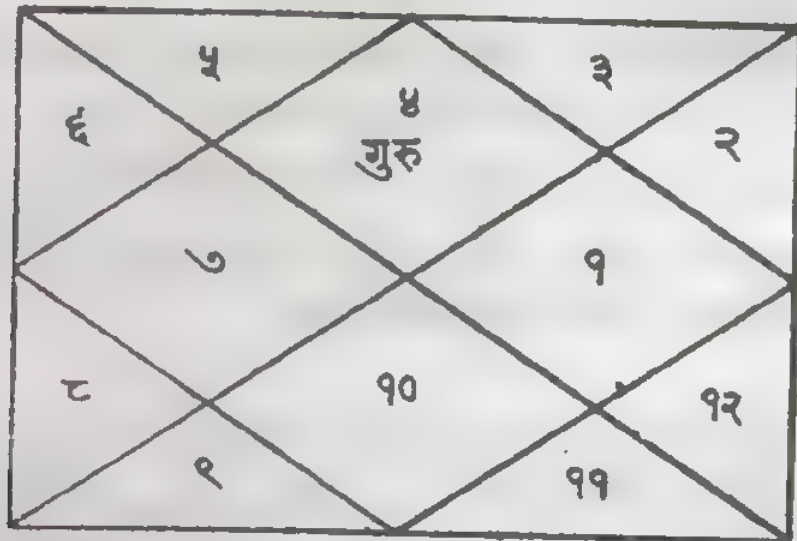
यही परिणाम तब भी होते हैं जबकि गुरु ५वें या ६वें घर में होता है। नीचे (×) निशान लगे हैं :
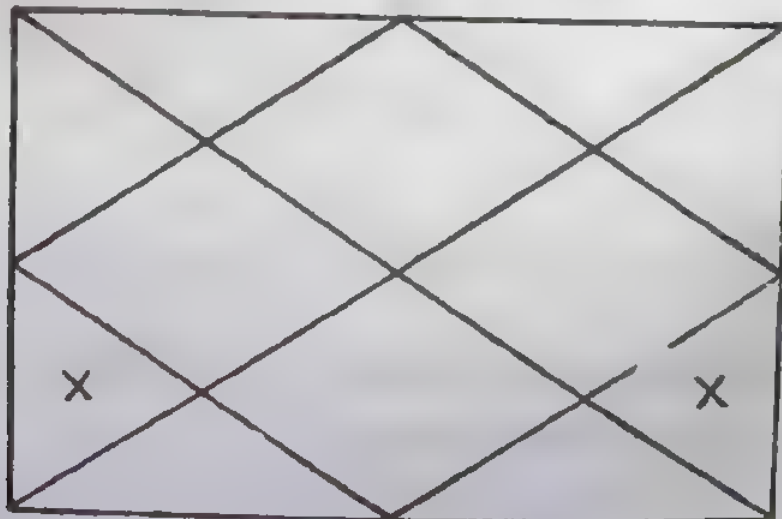
(७) यदि लग्न में किसी भी राशि में मंगल स्थित है, तो व्यक्ति शीघ्र क्रोधी स्वभाव का होगा।

(८) यदि मेष लग्न है तो व्यक्ति इतना अधैर्यवाला होगा कि अज्ञात भावी तिथि पर सफलता की प्रतीक्षा करने की अपेक्षा शीघ्र ही विपरीत परिणाम सुनना पसन्द करेगा।
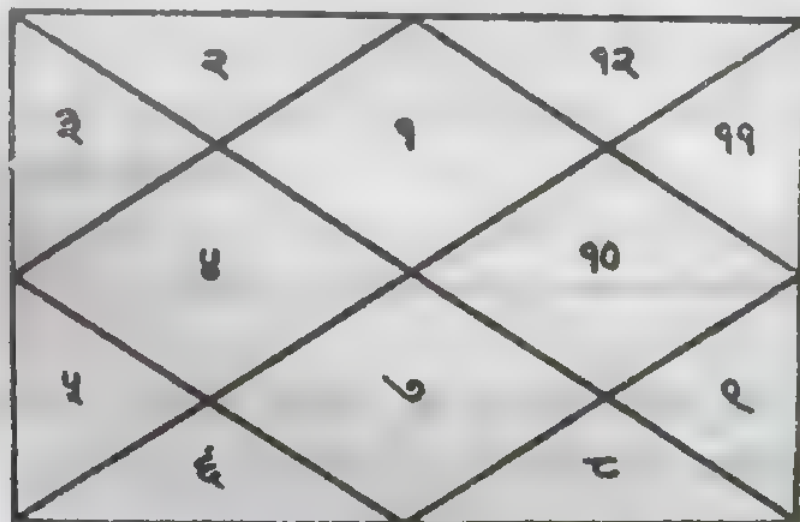
(९) यदि कर्क लग्न में अथवा ९वें घर में कर्क राशि में गुरु और चन्द्र स्थित हों, तो वह व्यक्ति महान् नेता तथा सत्य का निडर पुजारी हो महान् ख्याति का अर्जन करता है।
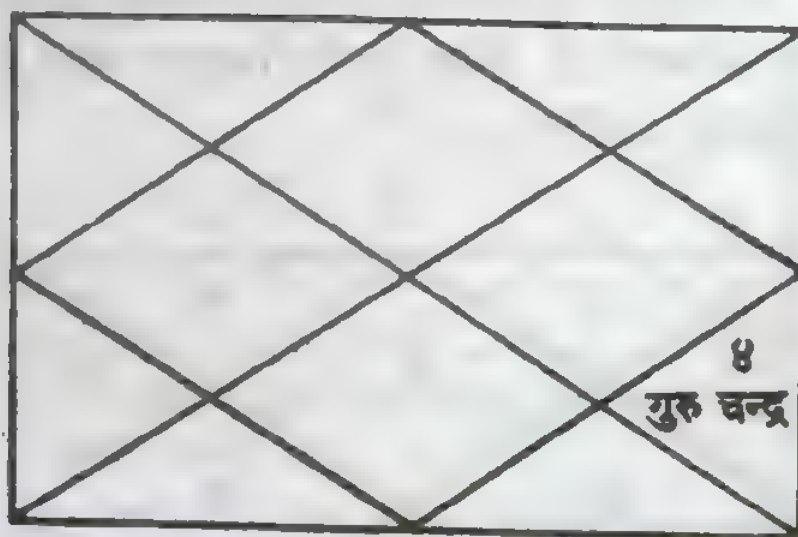
(१०) जब मकर लग्न में केतु अकेला होता है, तब वह व्यक्ति बुभुक्षित, क्षयोन्मुख, मांसहीन और पीतशरीर दिखाई देता है। उसे क्षय-रोग होना ही सम्भव है।

यदि मकर राशि में ७वें घर में केतु स्थित है, तो उसके दूसरे पक्ष को (अर्थात् पति या पत्नी को) भी क्षयरोग होने की सम्भावना है। दूसरा पक्ष बुभुक्षित, क्षयोन्मुख, मांसहीन और पीतशरीर दिखाई देगा।

(११) जब मंगल दूसरे घर में स्थित हो, तो चाचा के साथ व्यक्ति के सम्बन्ध खराब या अच्छे होते हैं (जो इस बात पर निर्भर करते हैं कि मंगल किस राशि में है)।
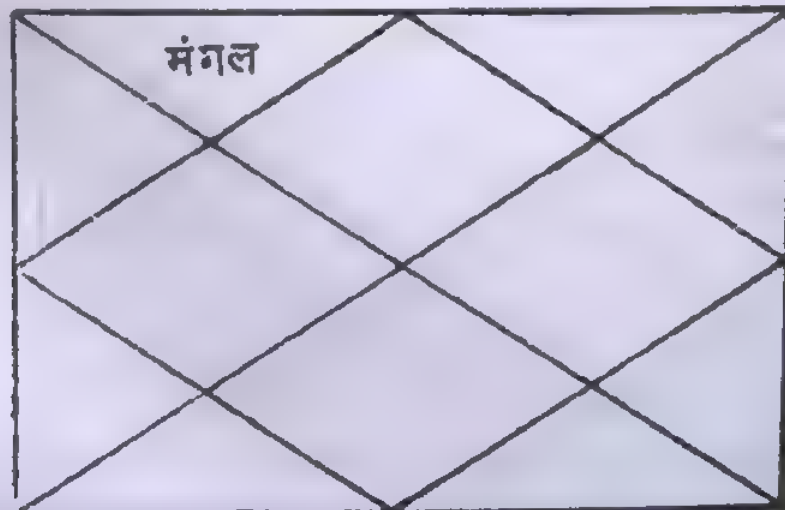
(१२) यदि मंगल (किसी भी राशि में) तीसरे घर में हो, तो वह व्यक्ति बहादुर और साहसी होता है तथा किसी भी युद्ध, संघर्ष अथवा लड़ाई में भाग लेने के लिए सहसा आगे बढ जाने से कभी भयभीत नहीं होता।
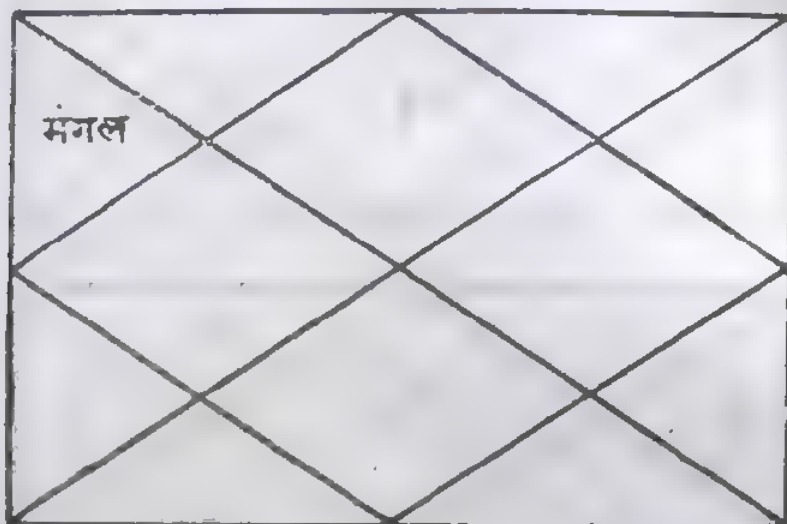
(१३) किसी भी घर में मकर राशि में चार या अधिक ग्रहों वाला व्यक्ति लज्जा, कलंक या पराजय की भावना से ग्रस्त होता है तथा समाज या उच्च लोगों की सन्निद्धता में प्रकट होने में असमर्थ होता है। महान् नेता, देशभक्त तथा योद्धा राणाप्रताप के तीसरे घर में (पराक्रम और शौर्य के घर में) पांच ग्रह-स्थित थे। किन्तु वे सभी चूंकि मकर राशि में थे, अतः महाराणाप्रताप को वह सफलता नहीं मिली जो उनको मिलनी चाहिए थी।
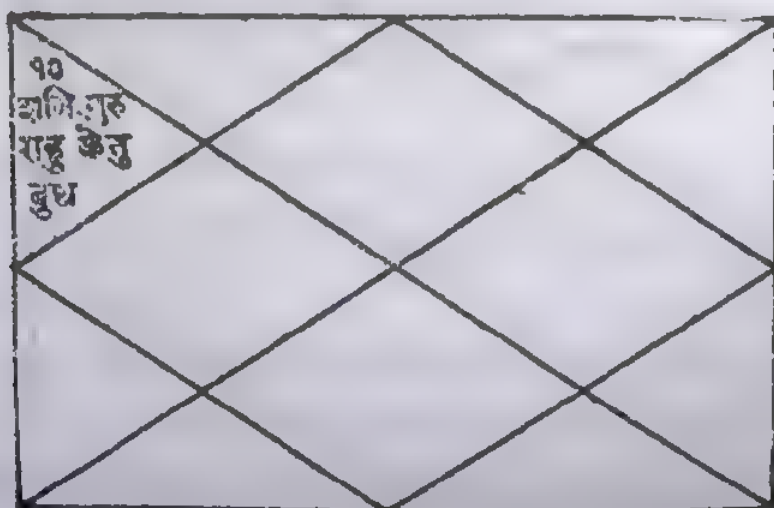
हमें एक उच्च-पदासीन रेल-कर्मचारी की जन्मकुण्डली दिखाई गयी थी जिसके ११वें घर में मकर-राशि में सूर्य, शुक्र, मंगल और बुध—चार ग्रह थे। वह व्यभिचारी तथा शराबी होने के नाते कुख्यात था, और इसलिए लज्जा और अपराध की भावना से ग्रस्त रहता था।
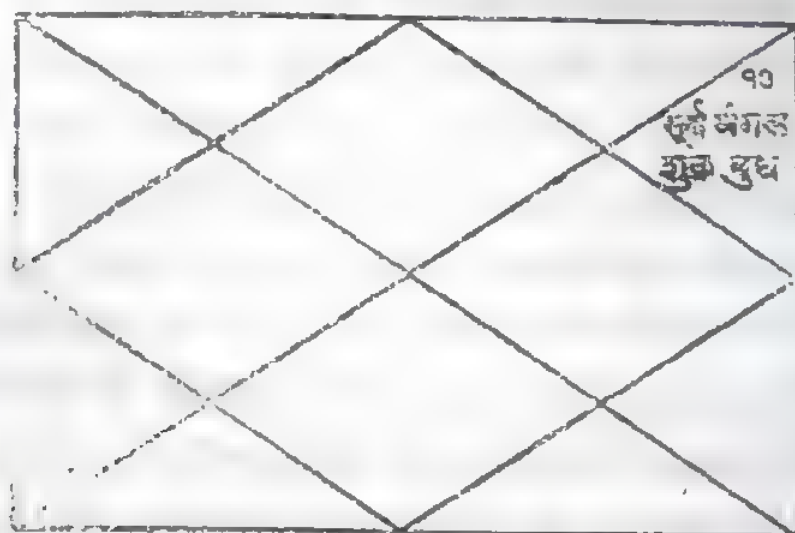
(१४) किसी भी जन्मकुण्डली में किसी भी घर में राहु और चन्द्र का इकट्ठा होना व्यक्ति के लिए कारावास, भयंकर आरोपों द्वारा उत्पन्न मुकदमेबाजी, परिवार में रोटी कमाने वाले की अकस्मात तथा दुःखान्त मृत्यु के कारण अनाश्रितावस्था, शारीरिक आघात आदि घोर विपदाओं का देने वाला है।
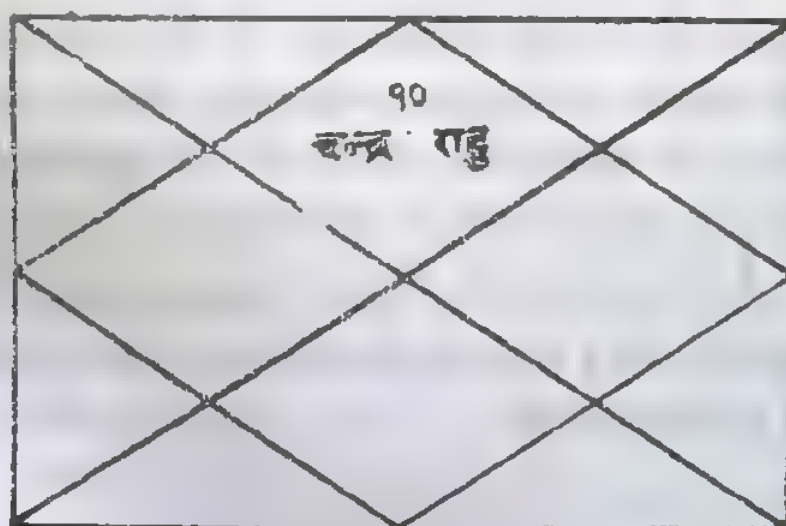
(१५) यदि किसी भी घर में, कर्क राशि में गुरु और चन्द्र अथवा शुक्र और चन्द्र एकत्र हैं, तो सम्बद्ध व्यक्ति अत्यन्त सुन्दर व स्वस्थ होगा। उदाहरणार्थ, यदि वे लग्न में हैं, तो वह व्यक्ति स्वयं बहुत सुन्दर होगा।

यदि गुरु और चन्द्र अथवा गुरु और शुक्र माता के घर में हैं, तो उसकी माता का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक होगा। यदि ये दोनों ग्रह सातवें घर में हैं, तो दूसरा पक्ष (अर्थात् पति या पत्नी) अत्यन्त लुभावनी मुखाकृति का होगा। यदि इन दोनों ग्रहों की कोई-सी भी जोड़ी १०वें घर में है, तो व्यक्ति के पिता का व्यक्तित्व आकर्षक तथा प्रभावी होगा।

यदि गुरु, शुक्र और चन्द्र सभी कर्क राशि में हैं, तो सम्बद्ध व्यक्ति का सौन्दर्य विशिष्टतापूर्वक सीमातीत होगा। अनभ्यस्त लोगों को स्मरण रखना चाहिए कि कर्क राशि '४' के अंक द्वारा प्रगट होती है।

(१६) चन्द्र और शनि का ४थे घर में इकट्ठा होना व्यक्ति के लिए शैशवावस्था और किशोरावस्था में घोर विपदाओं का फल देने वाला होता है। उत्तरोत्तर जीवन में भी यह संगति नौकरियों की अकस्मात हानि अथवा वित्तीय हानियों का कारण होती है। यदि चन्द्र तीसरे घर में हो और शनि चौथे घर में, तो भी परिणाम समान ही होंगे। किन्तु ऐसी स्थिति में व्यक्ति प्रचुरता अथवा प्राधान्य को उत्तरोत्तर जीवन में प्राप्त होता है विशेष रूप से तब जबकि चन्द्रमा मिथुन में और शनि कर्क में हो।

सुनिश्चित परिणामदायक ऐसे अनेकों द्रष्टव्य सत्यापन-योग्य ग्रहों की स्थितियों की सूची बनायी जा सकती है। किन्तु हम आशा करते हैं कि हमारे द्वारा प्रस्तुत कुछ ही उदाहरण ज्योतिष के आलोचकों अथवा इससे अनभिज्ञ व्यक्तियों को यह बात स्वीकार करा देने में पर्याप्त होंगे कि यह ऐसा विज्ञान है जिसको गम्भीरता व सम्मानपूर्वक ग्रहण करना चाहिए। चाहे यह अनुभूति होने पर किसी के अहंभाव को ठेस पहुंचे कि वह व्यक्ति शाश्वत रूप से चल रहे इस जीवन के विचित्र ब्रह्माण्ड-चक्र में केवलमात्र एक दांता भर है, किन्तु वह व्यक्ति ज्योतिष के उस प्रचुर-साक्ष्य की उपेक्षा नहीं कर सकता जो सिद्ध करता है कि जीवन प्रारब्ध द्वारा सुनिश्चित प्रणाली, मार्ग पर ही चलता है।

१२

सही जन्मकुण्डली बनाने की विधि

नये लोगों को समझाने के लिए कि जन्मकुण्डली क्या है, हम पहिले ही एक सामान्य तथा सरल विधि बता चुके हैं कि किस प्रकार जन्मकुण्डली बनानी चाहिए। ज्योतिष का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भी पंचांग आदि के अभाव में किसी भी नवजन्मा का भविष्य अभी तक बताए गए उपायों के आधार पर ही घोषित करते हैं। इस अध्याय में हम पाठक को सही-सही जन्मकुण्डली बनाने की विधि बताएँगे। यह विधि निम्न प्रकार है—

(१) जिस तिथि और समय के लिए जन्मकुण्डली बनानी हो, उसे लिख लीजिए।

(२) उस तिथि को सूर्योदय के समय से लेकर उस घड़ी तक का अन्तर निकाल लीजिए, जिस समय की आपको जन्मकुण्डली बनानी है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति का जन्म २० अप्रैल को १४.३० मिनट (२ बजकर ३० मिनट) पर हुआ है और सूर्योदय का समय ०५.२० मिनट है (यह सूर्योदय व सूर्यास्त का समय प्रायः सभी प्रसिद्ध नगरों के लिए समाचारपत्रों तथा पंचांगों में दिया होता है) तो लिख लीजिए कि वह नवजन्मा व्यक्ति सूर्योदय के ९ घण्टे व १० मिनट बाद उत्पन्न हुआ था।

(३) उपलब्ध तिथि तक सूर्य के अन्तिम संक्रमण से बीते दिनों को गिन लीजिए। कहने का अर्थ यह कि यदि आपको २० अप्रैल की जन्म-कुण्डली बनानी है तो चूंकि सूर्य का पूर्व-संक्रमण १३ अप्रैल को होता है (जब सूर्य मेष में प्रवेश करता है जैसा हम पहिले ही देख चुके हैं), इसलिए

हम २० में से १३ को घटाते हैं और हमें ७ का अंक प्राप्त होता है। इस सबका कारण यह है कि सूर्य २४ घण्टों में १ अंश यात्रा करता है, और हम जानना चाहते हैं कि सूर्य अपनी पिछली यात्रा से उस तिथि तक कितने अंश अथवा कितने दिन यात्रा कर चुका है जिस तिथि की हम जन्मकुण्डली बनाना चाहते हैं।

(४) प्राप्त अंक को नीचे दी गयी उस राशि के सम्मुख (सैकिण्डों के) अंक से गुणा कीजिए जिस राशि में सूर्य उस विशेष तिथि को है :

क्रमांक	राशि	अवधि (घण्टे—मिनट)	सैकिण्ड
१.	मेष	१—३६	१९२
२.	वृषभ	१—४८	२१६
३.	मिथुन	२—००	२४०
४.	कर्क	२—१२	२६४
५.	सिंह	२—१२	२६४
६	कन्या	२—१२	२६४
७.	तुला	२—१२	२६४
८.	वृश्चिक	२—१२	२६४
९.	धनु	२—१२	२६४
१०.	मकर	२—००	२४०
११.	कुम्भ	१—४८	२१६
१२.	मीन	१—३६	१९२

हमारे द्वारा प्रस्तुत उदाहरण में हम ७ को मेष राशि के सम्मुख दी गयी (सैकिण्डों की) संख्या से गुणा करते हैं क्योंकि जिस तिथि की हम जन्मकुण्डली बनाना चाहते हैं वह अप्रैल के पिछले खण्ड में आती है जबकि सूर्य मेष में संक्रमणशील है और ७ की संख्या उन दिनों की (अंशों की) है जितने दिन सूर्य मेष में व्यतीत कर चुका है। ७ को १९२ से गुणा करके हमें १३४४ की संख्या मिलती है।

चूंकि १३४४ की संख्या सैकिण्डों में है, अतः मिनटों में बदलने के लिए हम इसको ६० से भाग करते हैं। इस प्रकार १३४४ की संख्या ६० से भाग

करने पर भजनफल २२ आता है और २४ शेष रहता है। इस प्रश्न में शेष (२४) संख्या ४० से कम होने के कारण हम इसकी उपेक्षा कर देते हैं। यदि यह ४० या अधिक होता तो हम भजनफल में १ और जोड़ देते अर्थात् हमें २२+१=२३ मिनट की उपलब्धि होती। किन्तु प्रस्तुत उदाहरण में भजनफल २२ मिनट है जिसमें और कुछ जोड़ना नहीं है। यदि मिनट ६० से अधिक हों तो उनको ६० से भाग करने से घण्टे प्राप्त होंगे। शेष बचने वाली संख्या मिनट होगी।

(५) हमारे उदाहरण में हमारी गिनती का परिणाम २२ मिनट है। किन्तु अन्य उदाहरणों में यह घण्टों और मिनटों में हो सकता था। ऊपर दी गयी तालिका में मेष राशि में सूर्य की अवधि की संख्या (घण्टों मिनटों) में से २२ की संख्या घटाइये क्योंकि हमारे उदाहरण में सूर्य मेष में है। मेष में अवधि-अंक १ घण्टा, ३६ मिनट है। इसमें से २२ मिनट घटाने पर १ घण्टा १४ मिनट शेष रह जाते हैं।

(६) उपर्युक्त संख्या में ऊपर दी गयी तालिका में उत्तरोत्तर राशियों की अवधि संख्या तब तक जोड़ते रहिए जब तक कि कुल जोड़ ९ घण्टे २० मिनट के समान अथवा इससे अधिक न हो जाए जैसाकि नीचे दिखाया गया है :

अवधि	**घण्टे—मिनट**
मेष का शेषांश	०१—१४
वृषभ की अवधि	०१—४८
मिथुन " "	०२—००
कर्क " "	०२—१२
सिंह " "	०२—१२
	०९—२६

सूर्योदय और नवजन्मा (जातक) व्यक्ति के जन्म-समय के मध्य व्यतीत घड़ी ९ घ० १० मि० है। वह सिंह में आती क्योंकि हमें सिंह सहित अन्य राशियों की अवधि संख्याएँ कब तक जोड़ती रहनी पड़ीं जब तक कि हम ९ घ० १० मि० के समान अथवा उससे अधिक न हो गए। यदि नवोत्पन्न व्यक्ति १७ मिनट और विलम्ब से हुआ होता, तो हमें कन्या

राशि की अवधि संख्या भी जोड़नी पड़ जाती। उस अवसर पर कन्या लग्न होती, किन्तु हमारे उदाहरण में जन्म-समय सिंह के अन्त की ओर आता है, अतः हमारे उदाहरण में २० अप्रैल को १४.३० घण्टे पर जन्मे व्यक्ति की लग्न सिंह रहेगी। ऐसे मामले में जन्मकुण्डली का नमूना निम्न प्रकार होगा :
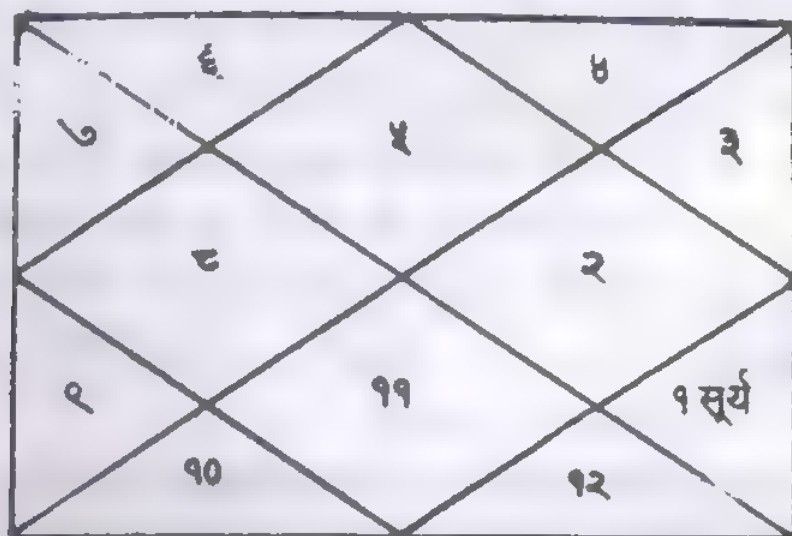
चूंकि १३ अप्रैल से एक मास के लिए सूर्य मेष राशि में रहता है, इसलिए उपर्युक्त कुण्डली में सूर्य '१' अंकित ग्रह में स्थित होगा। पहिले ही बतायी गयी शीघ्र सत्यापित करने की विधि में हम बता चुके हैं कि दोपहर १.३० बजे और ३.३० बजे के मध्य जन्म लेने वाले व्यक्ति का सूर्य ९वें घर में होता है। अर्थ यह हुआ कि जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति से हम व्यक्ति का जन्म-समय देख सकते हैं अथवा उसके विपरीत, हम सूर्य की स्थिति निश्चित करके लग्न का पता लगा सकते हैं।

प्रसंगवश, उपर्युक्त जन्मकुण्डली के समान जन्मकुण्डली वाला व्यक्ति मुखाकृति में अत्यन्त भव्य तथा प्रभावी होगा, उच्च पद को प्राप्त करेगा तथा अति भाग्यवान होगा। उसका भाग्योदय अल्पायु अर्थात् लगभग २२ वर्ष की आयु में होगा। हम उपर्युक्त निर्णयों पर पहुँचते हैं क्योंकि लग्न का स्वामी सूर्य उच्च राशिस्थ है और नवें घर में स्थित है जो कि भाग्य, समृद्धि तथा सौभाग्य का घर है। यह कभी गलत नहीं हो सकता, और ज्योतिष के आलोचकगण बिल्कुल ऊपर लिखे अनुसार ही जन्मकुण्डली को लेकर उस व्यक्ति के जीवन से इस ज्योतिषीय उपलब्धि की सत्यता को

परख लें। इस प्रकार की सत्यता के लिए उन्हें किसी भी प्रकार के ज्योतिषीय ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। एक साधारण आदमी भी इस कार्य को कर सकता है।

सही जन्मकुण्डली की रचना-विधि को प्रदर्शित करने के लिए हम एक और उदाहरण लें। हम कल्पना करें कि कोई व्यक्ति ४ जुलाई को १४.२४ पर जन्मा था। उसकी जन्मकुण्डली बनाने के लिए हम सर्वप्रथम सूर्य की राशि पता करते हैं। व्यक्ति के जन्म से पूर्व सूर्य का संक्रमण १४ जून को हुआ था जब यह मिथुन में प्रविष्ट हुआ था। चूंकि उस व्यक्ति का जन्म ४ जुलाई को अर्थात् २० दिन बाद हुआ था अतः सूर्य मिथुन में २० दिन पारगमन कर चुका है। हम मान लें कि व्यक्ति के जन्मस्थान पर ४ जुलाई को सूर्योदय ०६०४ घण्टे पर अर्थात् ६.०४ बजे था। सूर्योदय के समय से गणना करके हम जान पाते हैं कि व्यक्ति के जन्म होने तक सूर्योदय के पश्चात् ८ घण्टे २० मिनट बीत चुके थे। एक कागज के छोर पर हम इसे लिख लें। अब हम २० का अंक लेते हैं—वह अंश अथवा दिनों का द्योतक जबकि सूर्य मिथुन में रह चुका है। इसे हम २४० सैकिण्डों से गुणा करते हैं (मिथुन राशि के सम्मुख यही संख्या सम्बद्ध तालिका में दी हुई है)। गुणनफल संख्या ४८०० है। इसे ६० से भाग देने पर ८० मिनट मिले। ६० से और भी भाग देने पर १ घण्टे और २० मिनट का समय आया। इसे हम मिथुन की पूर्णावधि के समय अर्थात् २ घं० ०० मि० में से घटाते हैं। परिणाम = ० घण्टे ४० मिनट है। इसमें कर्क की तथा अन्य उत्तरोत्तर राशियों की अवधि तब तक जोड़ो जब तक कि हम ८ घं० २० मि० के समान या उससे अधिक न हो जाएँ, जो सूर्योदय और उस व्यक्ति के जन्म के मध्य का समय था। गणना इस प्रकार होगी :

	घण्टे—मिनट
	००—४०
कर्क	०२—१२
सिंह	०२—१२
कन्या	०२—१२
तुला	०२—१२
	६—२८

वह व्यक्ति सूर्योदय के ८ घण्टे २० मिनट बाद जन्मा था। विभिन्न राशियों की कालावधि कुल मिलाकर तब इस समयावधि से आगे जाती है जब तुलाराशि का समय इसमें जोड़ा जाता है। इसका अर्थ यह है कि ४ जुलाई को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उस स्थान पर जन्म लेनेवाले व्यक्ति की लग्न तुला होगी जहाँ सूर्योदय प्रातः ६ बजकर ४ मिनट पर होता हो। उसकी जन्मकुण्डली का नमूना निम्न अंकांकित होगा :
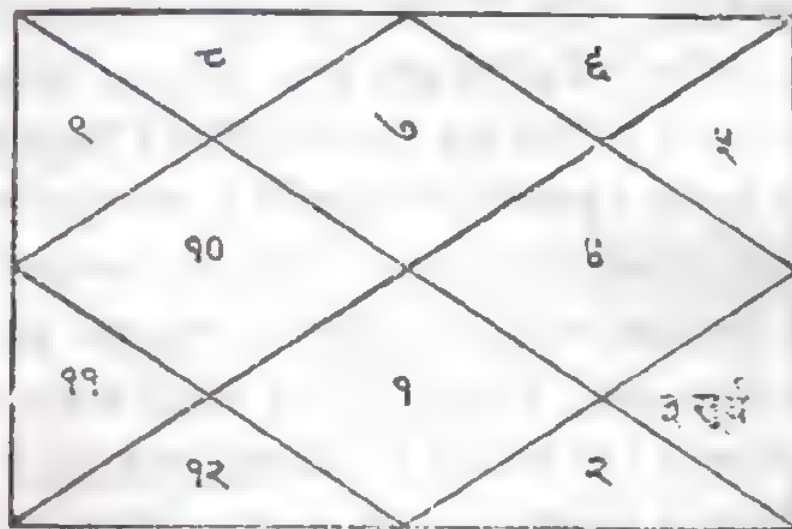
चूँकि व्यक्ति के जन्मदिन सूर्य मिथुन राशि में था अतः हम सूर्य को उस घर में स्थापित करते हैं जिसमें मिथुन राशि अर्थात् अंक ३ है जो लग्न से ९वाँ घर है।

कन्या राशि तक सभी राशियों की कालावधि जोड़ने पर हमें ७ घण्टे १६ मिनट की संख्या मिलती है। अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति के जन्म वाले दिन सूर्योदय के ७ घण्टे १६ मिनट बाद तुला राशि लग्न बन गयी है। किन्तु व्यक्ति का जन्म सूर्योदय के ८ घण्टे २० मिनट बाद हुआ था। इसमें से पूर्व संख्या ७ घण्टे १६ मिनट घटाने पर हमें १ घण्टा ०४ मिनट की संख्या मिलती है। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति के जन्म से पूर्व १ घण्टा और ०४ मिनट तुला राशि लग्न में रही।

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि तुला की कालावधि २ घण्टे १२ मिनट है। दूसरे शब्दों में, लग्न के ३० अंशों को पूर्ण करने में तुला को २ घण्टे १२ मिनट लगते हैं। अतः, त्रैराशिक नियम के अनुसार हम तुला-लग्न के अंशों को मालूम कर सकते हैं। हमारा मतलब है : यदि तुला ३०

अंशों को पूर्ण करने में २ घण्टे १२ मिनट लेती है, तो १ घण्टा ०४ मिनट में कितने अंश पूर्ण हो चुके थे? सरलता के लिए, समय को मिनटों में परिवर्तित कर लिया जाय और त्रैराशिक नियम से परिणाम निकाला जाय। २ घण्टे १२ मिनट का अर्थ १३२ मिनट है। १ घण्टा ०४ मिनट का अर्थ ६४ मिनट है। यदि १३२ मिनट ३० अंशों के समान है, तो ६४ मिनट कितने अंशों के समान है? हमें परिणाम में १४ अंश, ३२ कला तथा (लगभग) ४४ विकला मिले। कहने का अर्थ यह है कि जिस समय उस व्यक्ति का जन्म हुआ, उस समय तक लग्न में तुला के १४ अंश, ३२ कलाएँ तथा (लगभग) ४४ विकलाएँ बीत चुके थे। कल ३० अंशों के खण्ड में से इसे घटाने पर हमें ज्ञात होता है कि तुला को लग्न में विचरण करने के लिए अभी भी १५ अंश २७ कला व १६ विकला शेष हैं। इससे हमें भारतीय ज्योतिषीय शब्दावली में 'स्पष्ट लग्न' (लग्न के विवरण) नाम से पुकारे जाने वाली संज्ञा मिल जाती है। जन्मकुण्डलियों में इसे निम्न प्रकार से लिखा जाता है :

व्यक्ति की लग्न

राशि	६
अंश	१४
कलाएँ	३२
विकलाएँ	४४

जानकार ज्योतिषी उपर्युक्त की व्याख्या इस अर्थ में करता है कि जब व्यक्ति का जन्म हुआ तब लग्न ६ राशियाँ पूर्ण कर चुकी थी, तथा ७वीं राशि, लग्न में, १५ अंश २७ कलाओं और १६ विकलाओं के लिए अभी भी उपस्थित थी। अत: पाठक को किसी भी प्रकार अंक ६ से भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए। वह तो केवल इस बात का द्योतक है कि ६ठी राशि लग्न में से पूर्ण रूप में संक्रमण कर चुकी थी और ७वीं (तुला) राशि पूर्वी क्षितिज पर उदय हो चुकी थी। अत: हम व्यक्ति की जन्मकुण्डली नये विवरण के साथ फिर से निम्न प्रकार बनाते हैं :
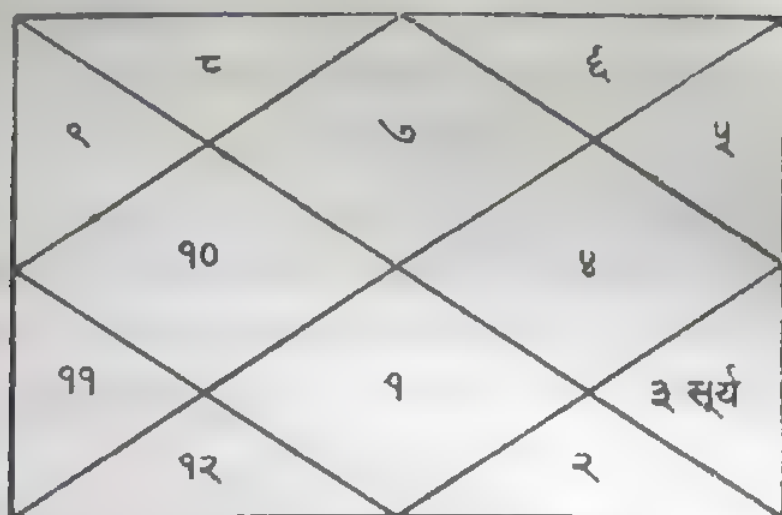
रुग्न विवरण

राशि	—	६
अंश	—	१४
कलाएँ	—	३२
विकलाएँ	—	४४

हमें ध्यान रखने की बात यह है कि उपर्युक्त जन्मकुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियों का भी अभी पता लगाना है, और यह भी पता करना है कि वे सब अपनी-अपनी राशियों में कितने अंश पारगमन कर चुके थे। यह कार्य हम पंचांगों अर्थात् ग्रहों की गतिविधियों के संग्रहों की सहायता से करते हैं।

पाठकों को पंचांगों और नक्षत्र-पत्री से भलीभाँति परिचित कराने के लिए हम दोनों में से दो-दो पृष्ठ नीचे दे रहे हैं जिससे उनके लिए स्पष्ट हो जाय कि नक्षत्रों की गतियों की तालिकाएँ देखकर उनको किस प्रकार कुण्डलियों में स्थान दिया जाता है।

लग्न का निश्चय और सूर्य को सही राशि में ठीक घर में प्रस्थापित कर लेने के पश्चात्, जन्मकुण्डली में अन्य ग्रहों को सुनिश्चित करने के लिए पाठक को भारतीय (हिन्दू) पंचांग अथवा पश्चिमी विधि की नक्षत्रीय तालिकाओं को देखना आवश्यक है।

पाठक जिन पंचांगों अथवा नक्षत्र-पत्रियों को खरीदेगा, उनमें प्रारम्भ

में ही, उन वस्तुओं के विभिन्न स्तम्भों में प्रयुक्त संक्षिप्ताक्षरों और अंकों की व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ मिलेंगी। तथापि, ऐसी तालिकाओं का 'अनुभव' पाठकों को भी हो जाय, इसी विचार से हमने इस अध्याय में प्रत्येक में से एक मास के नक्षत्रों की तालिका पृथक्-पृथक् दे दी है।

उपर्युक्त तालिकाएँ १ और २ ईसवी सन् १९६२-६३ (विक्रमी संवत् २०१८; शालिवाहन संवत् १८८४) के पंचांग से उद्धृत हैं। यह पंचांग ५३७-डी, कसबा पेठ, शोलापुर, भारत के श्री नाना दाते द्वारा प्रकाशित तथा मराठी भाषा में है। पंचांग के समय बम्बई-रेखांश के लिए हैं।

तालिका क्रमांक-१ कार्तिक मास के कृष्णपक्ष के लिए है। तालिका क्रमांक-२ मार्गशीर्ष मास के शुक्लपक्ष के लिए है। स्तम्भ (अ) में क्रमानुसार चन्द्रकलाएँ दी हुई हैं। स्तम्भ (ब) सप्ताह के दिन बताता है। स्तम्भ (स) में अंग्रेजी तारीखें हैं। स्तम्भ (द) और (ई) में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय दिए हुए हैं। ये बम्बई के लिए हैं। स्तम्भ (फ) वह राशि बताता है जिसमें चन्द्र स्थित होता है।

तालिका क्रमांक—१ के स्तम्भ (फ) के शीर्ष भाग में हम "९ नं वृ" लिखा पाते हैं जिसका अर्थ यह है कि (१२ नवम्बर को) सूर्योदय की ९ घटी के पश्चात (१ घटी २४ मिनट के बराबर होती है) चन्द्र वृषभ राशि में प्रवेश करता है। उसी स्तम्भ के भाग ३ में "१३ नं० मिनट" लिखा है जिसका अर्थ यह है कि (१४ नवम्बर को) सूर्योदय की १३ घटी के पश्चात चन्द्र मिथुन राशि में प्रवेश करता है।

अतः यदि किसी को नयी जन्मकुण्डली बनाते समय चन्द्रमा की स्थिति ज्ञात करनी हो तो त्रैराशिक नियम के अनुसार वह यह पता कर सकता है कि किसी विशेष जन्म-समय चन्द्रमा किसी विशेष राशि में किस अंश तक पारगमन कर चुका है।

तालिका क्रमांक-१ अन्तिम दक्षिणी छोर पर बनी हुई जन्मकुण्डली उस पक्ष के अन्तिम दिन की अर्थात् मंगलवार, दिनांक २७ नवम्बर, सन् १९६२ की है। ग्रहों की स्थिति उस दिन बम्बई में सूर्योदय के समय की है। उस दिन बम्बई में सूर्योदय के समय जन्मे किसी भी व्यक्ति के लिए पृथक् जन्मकुण्डली बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

जन्मकुण्डली के ऊपर दिए अंकों में २७ नवम्बर, सन् १९६२ को सूर्योदय के समय भिन्न-भिन्न ग्रहों की राशि और अंशों का उल्लेख है। इस प्रकार—

र
७
१०
५८
५२

का अर्थ है कि रवि (सूर्य) राशि चक्र की ७वीं राशि को पार कर चुका था और २७ नवम्बर सन् १९६२ के सूर्योदय के समय ८वीं राशि में १० अंशों, ५८ कलाओं और ५२ विकलाओं में था। अन्य ग्रहों के विवरण भी सप्ताह-दिवसों के क्रम से उस तालिका के अन्य स्तम्भों में दिए हुए हैं।

इससे पूर्व के पक्ष के अन्तिम दिन के लिए भी ऐसी ही एक तालिका पंचांग के पूर्व-पृष्ठ पर मिलेगी। यदि किसी व्यक्ति का जन्म दिन २७ नवम्बर को समाप्त होने वाले पक्ष के भीतर ही आता है तो पाठक त्रैराशिक नियम की सहायता से व्यक्ति के जन्मदिन और जन्म-समय के लिए एक ग्रह की स्थिति का अनुमान लगा सकता है। दोनों तालिकाओं की तुलना से पाठक को उस पक्ष में उस ग्रह की गति का वेग ज्ञात हो जायगा जिसमें उस व्यक्ति का जन्मदिन आता है।

यदि किसी पक्ष में कोई ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में पारगमन कर गया है तो पंचांग में उस तिथि के सामने वह पारगमन लिखा रहता है। तालिका क्रमांक—१ में १९ नवम्बर के सामने पाठक देख सकता है कि बुध का वृश्चिक में पारगमन $\frac{३}{३}\frac{=}{४}$ उल्लेखित है। इसका अर्थ यह है कि १९ नवम्बर को सूर्योदय के पश्चात २८.३४ घटी पर बुध वृश्चिक राशि में चला गया।

हम पहले ही सविस्तार बता चुके हैं कि किस प्रकार लग्न निश्चित की जा सकती है। अब हम पाठक को वह विधि बताना चाहते हैं जिससे वह जन्मकुण्डली में अन्य ग्रहों को प्रस्थापित कर सके। मान लीजिए कि अभी तक दिए गए पंचांगों की तालिकाओं के अनुसार ही हमें एक जन्मकुण्डली

८ दिसम्बर, १९६२ को बम्बई में सायं ७-३० बजे उत्पन्न हुए व्यक्ति की बनानी है।

दिनांक ८ दिसम्बर का सूर्योदय-समय स्तम्भ (द) में उस तिथि के सामने ७ बजकर १ मिनट दिया गया है।

अभी तक बताए गए सिद्धान्त के अनुसार हमें व्यक्ति की लग्न मिथुन मिलती है।

राशि	२
अंश	१३
कलाएँ	३०
विकलाएँ	००

अब हम एक-एक करके सभी ग्रहों की स्थिति सुनिश्चित करेंगे। हम सर्वप्रथम सूर्य को लें।

तालिक क्रमांक—१ में १६ नवम्बर के सम्मुख टिप्पणी देखिए; उस दिन सूर्य सूर्योदय के पश्चात ८.१ घटी पर अर्थात् प्रातः ६.४८ के लगभग ११५ मिनट बाद अर्थात् प्रातः ८.४३ पर वृश्चिक में प्रवेश करता है। चूँकि सूर्य २४ घण्टों में एक अंश संक्रमण करता है अतः इसने ८ दिसम्बर को ८.४३ (प्रातः) तक २२ अंश यात्रा की। उसी दिन सायं ७-३० तक यह आधे अंश से तनिक कम ही यात्रा कर पाया। अतः हम इसे २९ कलाएँ मान लेते हैं। अतः सूर्योदय स्पष्ट होगा :

राशि	७
अंश	२२
कलाएँ	२९
विकलाएँ	००

अब हम चन्द्र की स्थिति सुनिश्चित करेंगे। ८ दिसम्बर के सामने टिप्पणी से स्पष्ट है कि चन्द्रमा मेष राशि में है।

यह मेष राशि ७ दिसम्बर को सूर्योदय के पश्चात ३१ घटी पर अर्थात् ३१ × २४ मिनट पर प्रविष्ट हुआ। यह १२ घण्टे २४ मिनट के समान है। इसको उस दिन के सूर्योदय-समय में जोड़ने से हमें १९.२५ (रात्रि) मिला। यही वह समय है जब चन्द्रमा ७ दिसम्बर को मेषराशि में प्रविष्ट

हुआ। व्यक्ति का जन्म चन्द्र के मेष राशि में प्रवेश के लगभग ठीक २४ घण्टे बाद ही हुआ था। चूंकि चन्द्रमा प्रत्येक दो घण्टों में १ अंश संक्रमण करता है, अतः हम मान लें कि चन्द्रमा मेष के १२ अंश यात्रा कर पाया। चूंकि राशिचक्र की राशि-व्यवस्था में मेष प्रथम ही है, अतः हम इसका विवरण निम्न प्रकार लिखते हैं :

राशि	०
अंश	१२
कलाएँ	००
विकलाएँ	००

अब हम मंगल की स्थिति निर्धारित करेंगे।

१० दिसम्बर के सामने दी हुई टिप्पणी "सिंहे भौमः ४ ३/३ ६" प्रदर्शित करती है कि ८ दिसम्बर को मंगल कर्क राशि का पारगमन पूर्ण करने ही वाला था।

मंगल की स्थिति निश्चित करते समय हम तालिका क्रमांक—१ के दक्षिणी छोर के ऊपर मंगल के अन्तर्गत यह पाते हैं :

राशि	३
अंश	२६
कलाएँ	३९
विकलाएँ	४८

इसकी यह स्थिति २७ नवम्बर को सूर्योदय के समय थी। यह १० दिसम्बर को सूर्योदय के अर्थात् ७.०३ के पश्चात लगभग १६.४० घण्टों के बाद अर्थात् ११.४३ पर (रात्रि) सिंह-राशि में प्रवेश करता है।

यह प्रदर्शित करता है कि कर्क का शेषांश इसने १३ दिन और १६.४० घण्टों में पारगमन किया।

अंश	३
कलाएँ	२०
विकलाएँ	१२

चूंकि हमें मंगल की स्थिति ८ दिसम्बर को सायं ७-३० पर निर्धारित करती है, अतः हम इसका पता त्रै-राशिक-नियम से करते हैं। हमें ज्ञात है

कि ८ दिसम्बर के दिन रात्रि के ७.३० बजे मंगल को कर्क की लगभग ३७ कलाएँ ही पारगमन करनी शेष थीं, अतः हम मंगल की स्थिति निम्न प्रकार लिखते हैं :

राशि	३
अंश	२९
कलाएँ	२३
विकलाएँ	००

आइए, अब हम बुध का निर्धारण करें। ८ दिसम्बर के सामने उल्लेख है "धनुषि बुधः $\frac{३}{३}\frac{२}{८}$" जिसका अर्थ है कि बुध सूर्योदय के लगभग १३ घण्टे पश्चात अर्थात् रात्रि ८.२ बजे धनु राशि में प्रविष्ट हो गया। जिस व्यक्ति की जन्मकुण्डली हमें बनानी है, वह केवल आधा घण्टा पूर्व ही जन्मा था। यह प्रदर्शित करता है कि बुध को वृश्चिक-राशि की केवल कुछ विकलाएँ ही पारगमन करनी शेष रह गयी थीं, जबकि उस व्यक्ति ने जन्म लिया था। अतः, हम बुध को निम्न प्रकार स्थित करते हैं :

राशि	७
अंश	२९
कलाएँ	५९
विकलाएँ	१५

अब हम गुरु (बृहस्पति) को सुनिश्चित करें। तालिका क्रमांक—१ के दक्षिणी शीर्ष भाग में गुरु के अंक निम्न प्रकार दिए हैं :

राशि	१०
अंश	१०
कलाएँ	५०
विकलाएँ	३४

तालिका क्रमांक—२ के समानुरूप आंकड़ों में गुरु की स्थिति निम्न प्रकार उल्लेखित है :

राशि	१०
अंश	१२
कलाएँ	२५
विकलाएँ	०४

यह प्रदर्शित करता है कि १४ दिनों में गुरु ने निम्न संक्रमण किया :

अंश १
कलाएँ ३४
विकलाएँ ३०

त्रैराशिक-नियम के अनुसार हमें ज्ञात होता है कि व्यक्ति के जन्म के समय गुरु की स्थिति लगभग निम्न प्रकार थी :

राशि १०
अंश १२
कलाएँ ००
विकलाएँ ००

अब हम शुक्र को देखें। दक्षिणी छोर के शीर्ष भाग में शुक्र के आँकड़े (तथा तालिका-१ में नीचे लिखे 'व उ' अक्षर) दर्शाते हैं कि पृथ्वी की तुलना में शुक्र विपरीत-गति में है। तालिका क्रमांक---२ में शुक्र के नीचे 'मा अक्षर तथा ३ दिसम्बर के सामने की टिप्पणी भी दर्शाते हैं कि शुक्र "अपनी आगे की यात्रा ३ दिसम्बर से" पुनः प्रारम्भ करता है। उसकी ३ से ८ दिसम्बर की गतिविधि केवल कुछ कलाओं में ही अन्तर ला सकती हैं। अतः हम अनुमानतः उसे इस प्रकार निर्धारित करते हैं :

राशि ६
अंश १९
कलाएँ ५०
विकलाएँ ४०

आइए, अब हम शनि की स्थिति को ज्ञात करें। तालिका क्रमांक—१ और २ के दक्षिणी छोरों पर इसकी गतिविधि की सूचियों के पारस्परिक मिलान करने से प्रगट होता है कि १४ दिनों में शनि ने पारगमन किया :

अंश १
कलाएँ १०
विकलाएँ ५

चूँकि व्यक्ति का जन्म २७ नवम्बर के लगभग ११$\frac{3}{7}$ दिन बाद हुआ था, अतः हम गणना करते हैं कि २७ नवम्बर के लिए तालिका—१ में दी

गयी अपनी स्थिति से शनि ने लगभग एक अंश पारगमन किया। इसलिए, शनि के लिए तालिका क्रमांक—१ में दिए गए आंकड़ों में हम १ अंश जोड़ देते हैं और इसको अनुमानतः ऐसे रखते हैं :

राशि	६
अंश	१४
कलाएँ	१६
विकलाएँ	१३

राहु सदैव पीछे की ओर (वामावर्त) घूमता है। दोनों तालिकाओं में इसकी गतिविधि के आंकड़ों की तुलना करने पर हम पाते हैं कि राहु ने लगभग ४५ कलाएँ पारगमन की हैं। इसकी औसत गति तालिका में ३ कलाएँ और ११ विकलाएँ हैं।

तालिका क्रमांक—२ दिनांक ११ दिसम्बर को राहु की स्थिति निम्नलिखित मिलती है :

राशि	३
अंश	०८
कलाएँ	२७
विकलाएँ	४२

चूंकि व्यक्ति का जन्म लगभग ३½ दिन पूर्व हुआ था अतः हम लगभग १० कलाएँ उपर्युक्त अंकों में जोड़ देते हैं और राहु को निम्न प्रकार निश्चित करते हैं :

राशि	३
अंश	०८
कलाएँ	३७
विकलाएँ	४२

केतु की समरूप स्थिति का ज्ञान हमें उपर्युक्त अंकों में छः राशियाँ जोड़कर हो जाता है। अतः, हम उसकी स्थिति निम्न प्रकार निर्धारित करते हैं :

राशि	६
अंश	०८
कलाएँ	३७
विकलाएँ	४२

उपर्युक्त सभी आँकड़ों को एकत्र कर तथा एक सामान्य तालिका में रखकर हमें सभी ग्रहों की वास्तविक स्थिति ज्ञात हो जाती है, जिसे 'स्पष्ट ग्रह' कहा जाता है। यह निम्न प्रकार है :

: स्पष्ट ग्रह :

	लग्न	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	२	७	०	३	७	१०	६	६	३	६
अंश	१३	२२	१२	२६	२६	१२	१६	१४	०८	०८
कलाएँ	३०	२६	००	२३	५६	००	५०	१६	३७	३७
विकलाएं	००	००	००	००	१५	००	४०	१३	४२	४२

उपर्युक्त आँकड़ों की सहायता से हम निम्नलिखित जन्मकुण्डली बनाने में सक्षम हैं :

नवम्बर सन् १९५४ की पुनर्द्धृत नक्षत्र-पत्रियों से गणना सरल हो जाती है क्योंकि तालिका नक्षत्रों की नित्य स्थिति स्पष्ट दर्शाती है। केवल मात्र कार्य शेष रह जाता है विशेष दिन व्यक्ति के जन्म-समय विभिन्न नक्षत्रों की स्थितियों का कुछ घण्टों के लिए गणना भर कर लेना।

दक्षिण भारतीय जन्मकुण्डली—दक्षिण भारतीय शैली की जन्म-कुण्डली उत्तरी भारत की जन्मकुण्डली से थोड़ी ही भिन्न है। दक्षिण भारतीय कुण्डली एक वर्ग के भीतर अन्य वर्ग होती है, जैसी नीचे की आकृति से स्पष्ट है। दूसरा अन्तर यह है कि इसमें राशि चक्र की १२ राशियों के लिए सभी घर निश्चित—स्थायी रहते हैं। तीसरा अन्तर यह है कि दक्षिण भारतीय जन्मकुण्डली में राशियों का क्रम दक्षिणावर्त चलता है। '१'—अंकित घर मेष राशि के लिए है, '२'—अंकित घर वृषभ के लिए—आदि-आदि। किन्तु अंक कभी नहीं लिखे जाते। नीचे दी गयी आकृति में तो वे केवल इसलिए दिए गए हैं कि दक्षिण भारतीय जन्म-कुण्डली में राशियों का क्रम स्मरण रखना विद्यार्थियों को सरल, सुगम बना रहे। विशिष्ट दक्षिण भारतीय जन्मकुण्डली में अंक कभी नहीं लिखे जाते। विद्यार्थी को राशियों के लिए निश्चित घरों को सदैव के लिए स्मरण रखना पड़ता है।

१२	१	२	३
११			४
१०			५
९	८	७ लग्न	६

(उत्तर भारतीय शैली के विपरीत) ऐसी शैली की जन्मकुण्डली में लग्न के लिए कोई घर निश्चित नहीं रहता। अतः, लग्न का उल्लेख करना पड़ता है अथवा घर-विशेष में अन्य ग्रहों के साथ ही (अथवा उनके आद्याक्षरों के साथ ही) लिखना पड़ता है।

ऊपर आकृति में हमने लग्न लिखने की विधि बतायी है। हमने दृष्टान्त के रूप में इसे तुला राशि में लिखा है।

ऊपर बताए गए अन्तरों के अतिरिक्त दक्षिण भारतीय और उत्तर भारतीय जन्मकुण्डलियों के बनाने और उनका अध्ययन करने के प्रकार समान हैं।

विद्यार्थी सरलतापूर्वक दक्षिण भारतीय जन्मकुण्डली को उत्तरभारतीय जन्मकुण्डली में परिवर्तित कर सकता है। यदि वह लिपि न भी पढ़ सकता हो, तो भी इसको केवल इतना ही करना है कि जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति से अथवा अन्य किसी भी सामान्य व्यक्ति से ग्रहों के आद्याक्षर पढ़ने की प्रार्थना करनी है और उनको स्वयं अपनी लिपि में लिख लेना है।

यदि ऊपर दी हुई दक्षिण भारतीय जन्मकुण्डली को उत्तर भारतीय रूप में परिवर्तित करना है तो हम एक खाली चतुर्भुजाकर आयत बना लेंगे। इसके ऊपरी केन्द्रीय घर में हम '७' का अंक लिख देंगे क्योंकि यही लग्न है। उसके पश्चात वामावर्त-क्रम में हम अंकों की व्यवस्था पूर्ण कर देंगे। फिर, मेष राशि के घर में लिखे सभी ग्रहों को हम '१' अंकित घर में लिख देंगे, वृषभ राशि के घर में लिखे ग्रहों को '२' अंकित घर में, तथा शेष कार्य भी इसी प्रकार पूर्ण कर देंगे।

इसके विपरीत यदि एक उत्तर भारतीय जन्मकुण्डली को दक्षिण भारतीय शैली में लिखना हो, तो राशि के लिए निश्चित उपयुक्त घर में 'लग्न' शब्द लिख लिया जाय और सम्बद्ध राशियों के लिए निश्चित घरों में ग्रहों की स्थापना कर दी जाय।

किसी को कैसी जन्मकुण्डली बनवानी है, यह तो इस बात पर निर्भर करेगा कि उस व्यक्ति को अभ्यास किस बात का है! शैली तो केवल विशदता और ग्राह्यता सरल करने के लिए होती है। एक दक्षिण भारतीय तथा एक उत्तर भारतीय व्यक्ति एक ही जन्मकुण्डली को अपनी-अपनी शैलियों में लिख सकते हैं और व्यक्ति विशेष के भविष्य पर विचार-विनिमय कर सकते हैं। उनकी ज्योतिषीय अपरिचित भाषा एक समान होगी तथा दोनों ही व्यक्ति, एक-दूसरे द्वारा दिए गए तर्कों, युक्तियों से पूर्ण रूप में एकमत होंगे।

१३

ग्रह और उनकी 'कालावधियाँ'

जीवन-चक्र बहुरूपदर्शक ग्रहों की तीव्र जागतिक प्रगति एवं थर्राहट के स्वरैक्य में निरन्तर परिवर्तित होता रहता है। अतः अच्छा होगा यदि पाठक ग्रहों के आवर्तन तथा जागतिक जीवन पर उनके प्रभाव से भली-भाँति परिचित हो जाएँ।

आइए, हम सर्वप्रथम सौर-मण्डल की व्यवस्था का अध्ययन करें और यह देखें कि सूर्य के चारों ओर नृत्य करते हुए भी ये ग्रह उससे किस प्रकार आबद्ध रहते हैं। आगे दिए गये चित्र को देखिए :

यह उल्लेख योग्य है कि बुध सूर्य के निकटतम होने के कारण सूर्य के प्रकाश में बिना उपकरणों की सहायता के, आँखों से दिखाई नहीं देता। इस सूर्य की समीपता का दूसरा प्रभाव यह है कि बुध की विद्युत्-चुम्बकीय गुरुत्वाकर्षणीय शक्ति आच्छादित हो गयी है और सूर्य की अत्युज्ज्वल उपस्थिति से निष्प्रभ हो गयी है। बुध की सूर्य-समीपता जन्मकुण्डली में भी प्रतिबिम्बित होती है। जैसा पहले ही वर्णित है, बुध सदैव या तो सूर्य के साथ होता है, अथवा एक घर आगे या पीछे होता है। यह इससे अधिक दूरी पर कभी उपस्थित नहीं किया जा सकता। यही वह अर्थ है जब हम कहते हैं कि ज्योतिष भी भौतिकी तथा गणित से उतना ही सम्बद्ध है जितना अन्य कोई भी सम्मानित मानव-विज्ञान है। बुध निष्प्रभावित हो जाने के कारण ऐसी कोई राशियाँ नहीं हैं जिनमें इसे उच्चराशिस्थ समझा जा सके। सूर्य एक सम्राट् की भाँति और बुध तुच्छ सेवक है। अपने 'सम्राट्'
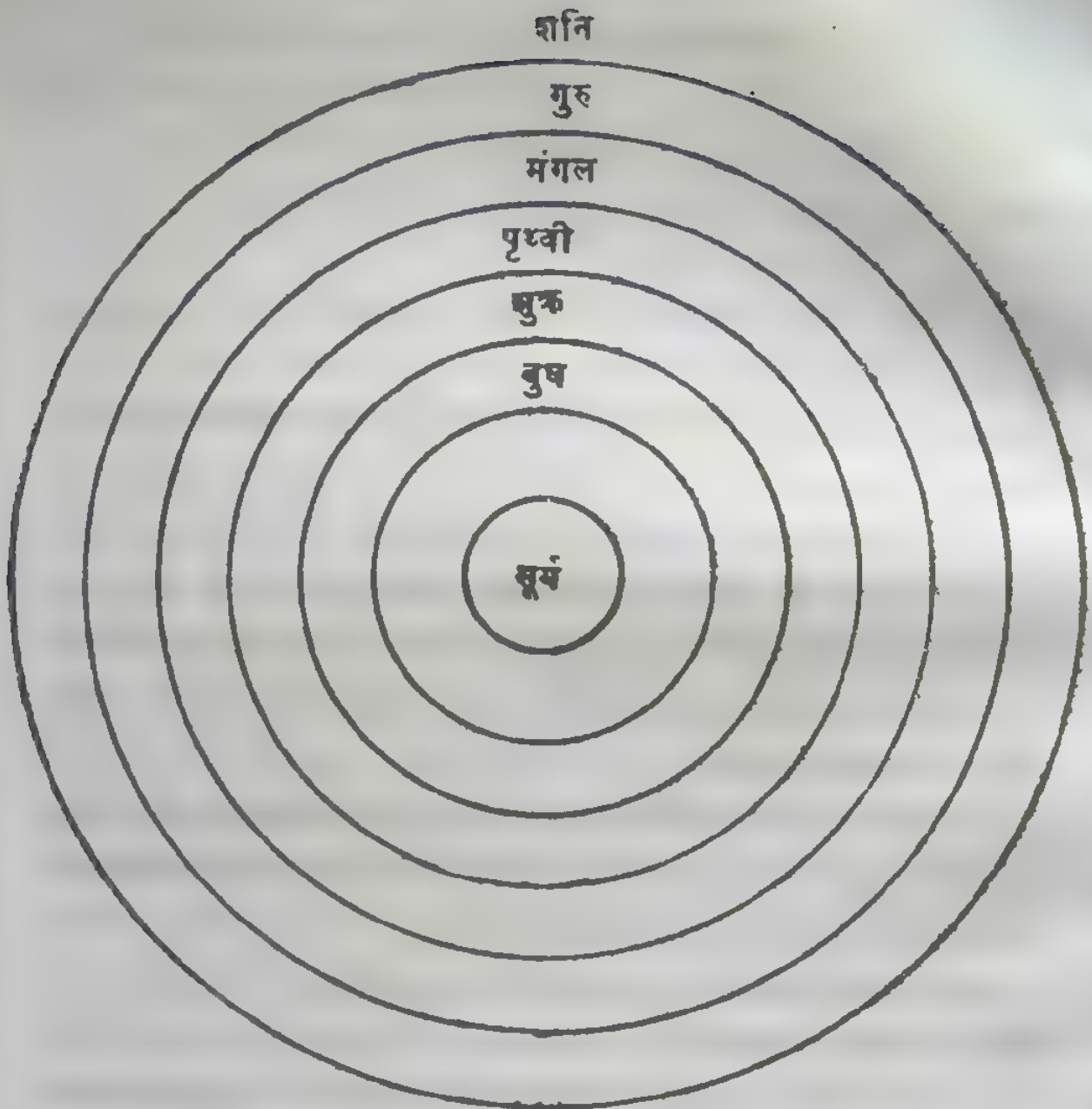
उपर्युक्त चित्र में सबसे भीतरी वृत्त सूर्य के गोल-बिम्ब का प्रतीक है। किन्तु बाहरी वृत्त विभिन्न ग्रहों की कक्षाओं को ही प्रकट करते हैं—न कि उनकी काया अथवा उनके पिण्ड को।

की उपस्थिति में बुध कभी भी प्रखरता, उज्ज्वलता प्राप्त नहीं कर सकता।

बुध की इस भौतिकी विशिष्टता से ही ज्योतिषीय व्याख्या निःसृत है। मिथुन अथवा कन्या लग्न वाला व्यक्ति कदाचित् ही कभी अपने मन की बात स्पष्ट बता सके। तथ्य रूप में उसके कोई सुनिश्चित विचार होते ही नहीं हैं। उसकी वृत्ति 'जी हुजूरी' की होती है, और अवसरों में प्रत्येक बदल के साथ ही उसमें भी बदल आ जाती है। जिस प्रकार बुध सदै वसूर्य

की सतत उपस्थिति में तथा चाटुकारिता में रत रहता है, उसी प्रकार यह व्यक्ति भी अवसर की तलाश में रहता है कि कब अपना उच्चाधिकारी जरा-सा संकेत करे और मैं सेवा में लग जाऊँ। अतः मिथुन और कन्या लग्न वाले व्यक्ति बहुत चालाक और सयाने होते हैं। ये राशियाँ अपनी अनिश्चित प्रकृति अपने स्वामी बुध से सहज रूप में ग्रहण करती हैं। अतः ऐसा व्यक्ति वकील, व्यापारी या राजनीतिक नेता होने के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। वह एक आधुनिक विक्रेता तथा जन-सम्पर्क व्यक्ति होने के भी योग्य है जो अपनी भावनाओं पर छलावरण कर सकता है, धाराप्रवाह बोल सकता है और किसी भी विचार को 'बेच' सकता है।

बुध राशि-चक्र की एक राशि में से दूसरी राशि में पारगमन करने में एक मास से कम समय लगाता है, क्योंकि वह सूर्य के निकटतम है।

शुक्र बुध से दूर होने के कारण एक राशि से दूसरी राशि में पारगमन करने में लगभग दो मास से कुछ कम समय ही प्रायः लगाता है।

इसके पश्चात् पृथ्वी चन्द्र के साथ एक धुरी में आबद्ध घूमती रहती है।

उनके पश्चात् मंगल है।

थोड़ी और दूरी पर गुरु है। गुरु शब्द का संस्कृत भाषा में अर्थ 'बड़ा या विशाल' है। यह इसके आकार के कारण है। यह धनु और मीन का स्वामी है। इसे एक राशि से दूसरी राशि में जाने में एक वर्ष लगता है क्योंकि यह सूर्य के चारों ओर एक विशालतर परिधि लगाता है। गुरु 'बड़ा' अर्थात् 'महान्' होने के कारण साथियों द्वारा सम्मानित होता है। उच्च आदर्श गुरु के समान वह स्वभाव में सरल तथा उच्च आदर्श वाला होता है।

शनि और भी अधिक दूरी पर होने के कारण सूर्य की परिधि में ३० वर्ष का समय लगाता है, और इसी के परिणामस्वरूप जड़ता तथा शिथिल गति का द्योतक माना जाता है। शनि मकर और कुम्भ का स्वामी है। इन दोनों लग्नों वाला व्यक्ति जड़, भारी, शिथिल, दार्शनिक-सा, निराशावादी होता है तथा उसे जीवन में हाथ-पैर मारने पड़ते हैं। यदि समृद्धि उसके पास आती ही है, तो केवल जीवन की उत्तरावस्था में और वह भी रो-रोकर। उसके मार्ग विपथगामी होते हैं, किसी निर्णय पर पहुँचने में वह

पर्याप्त समय लगाता है और प्रायः अपनी अन्तर्भावना पर छलावरण रखता है।

यह जानना भी अत्यन्त रोचक है कि विभिन्न ग्रहों को, किस प्रकार, सम्बद्ध राशियों का बँटवारा किया गया है। नीचे के चित्र को देखिए:
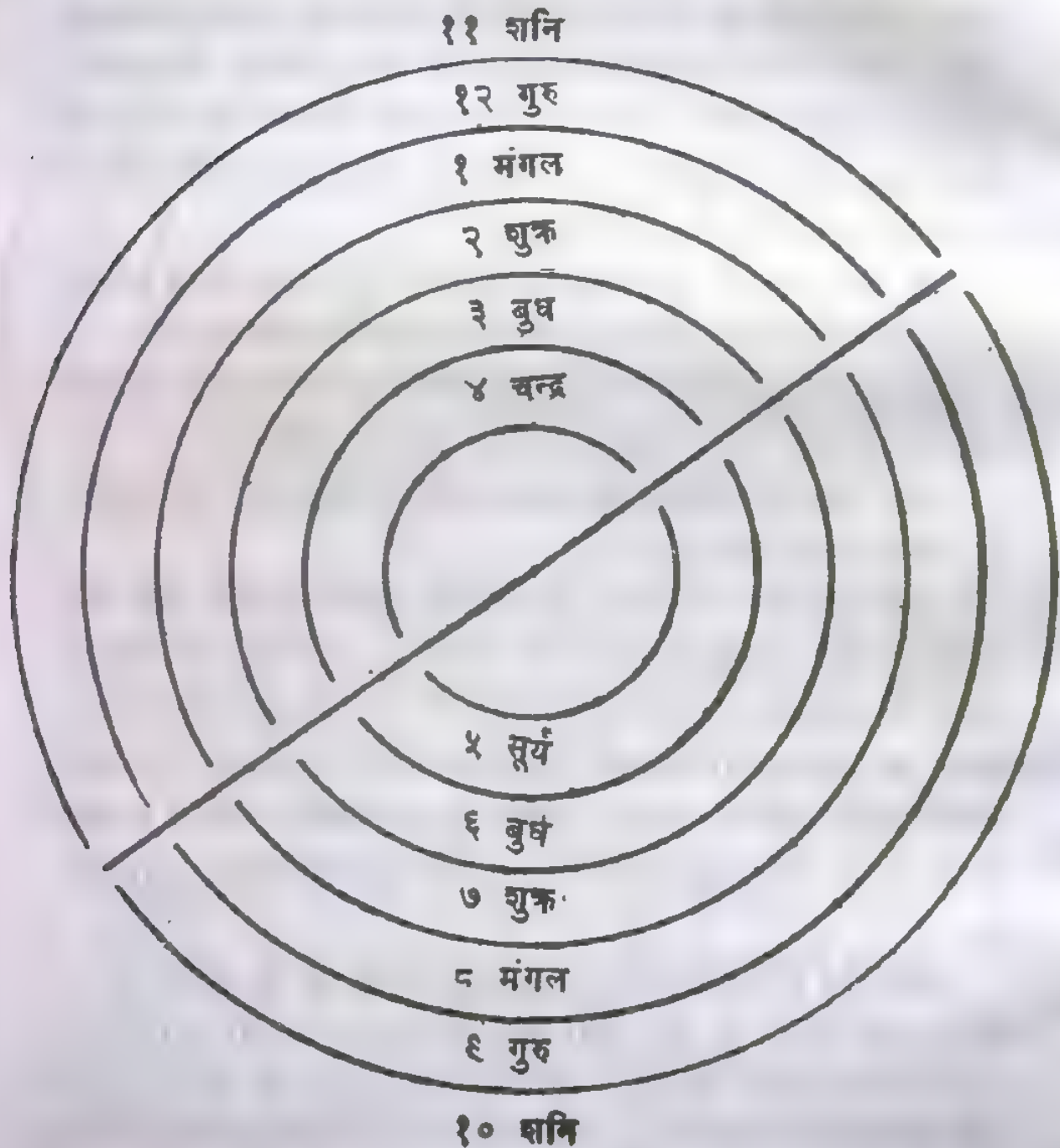
उपर्युक्त चित्र एक सामान्य व्यास के ऊपर और नीचे बने हुए दो अर्ध-वृत्तों से बना है। राशि क्रमांक ४ (कर्क) चन्द्रमा से अनुशासित होती है और राशि क्रमांक ५ (सिंह) सूर्य से। पाँच के पश्चात् छः और चार से पहले तीन आती है, इसलिए बुध, जो सूर्य के बाद दूसरा है, उनका स्वामी है।

क्रमशृंखला में अब २ और ७ अर्थात् वृषभ और तुला आती है। चूंकि अगला स्थान शुक्र का है, अतः वही राशिचक्र की इन दो राशियों का स्वामी है।

क्रमसंख्या में अब आती हैं १ और ८—अर्थात् मेष और वृश्चिक। चूंकि मंगल शुक्र से परे है अतः वह इन दोनों राशियों का स्वामी है।

उल्टी ओर जाने पर, राशि क्रमांक १ (अर्थात् मेष) के पश्चात् राशि-क्रमांक १२ आती है। नीचे की ओर ८ के पश्चात ९ आती है। अतः क्रमांक ९ और १२ राशियाँ (धनु और मीन) गुरु के द्वारा अनुशासित होती हैं, जो मंगल के पश्चात् है।

गुरु की राशियों से दूर, हमारे व्यास की दोनों ओर १०वीं और ११वीं राशियाँ आती हैं। अतः वे (जहाँ तक भारतीय ज्योतिष का सम्बन्ध है) दूरतम ग्रह शनि द्वारा अनुशासित होती हैं।

एक-एक मनुष्य का जीवन इन ग्रहों के महा तथा लघु कालखण्डों द्वारा अनुशासित होता है। विभिन्न प्रकार के तापमापियों की भाँत इन काल-खण्डों के दो विभिन्न मापक हैं। एक विंशोत्तरी कहलाता है अर्थात् मानव-जीवन को १२० वर्षों का कालखण्ड कल्पना करने वाला और दूसरा अष्टोत्तरी अर्थात् वह जो मानव-जीवन को १०८ वर्षीय चक्रों पर आधारित करता है।

नीचे विंशोत्तरी महादशा की तालिका है जो विभिन्न महा कालखण्डों तथा उपखण्डों की सूचक है। यह हम बाद में बतायेंगे कि किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली से उन कालखण्डों की गणना किस प्रकार की जाए।

(भारतीय ज्योतिषज्ञ-ऋषियों-दृष्टाओं द्वारा अनुमानित १२० वर्षीय मानव-जीवन की श्रेष्ठ कालावधि) विंशोत्तरी महादशा विभिन्न ग्रहों द्वारा अनुशासित निम्नलिखित महा कालखण्डों से बनती है :

सूर्य महादशा	(सूर्य का महा कालखण्ड)	०वर्ष
चन्द्र ,,	(चन्द्र ,, ,, ,,)	१७ ,,
मंगल ,,	(मंगल,, ,, ,,)	६ ,,
राहु ,,	(राहु ,, ,, ,,)	१८ ,,
गुरु ,,	(गुरु ,, ,, ,,)	१६ ,,
शनि ,,	(शनि ,, ,, ,,)	१९ ,,

बुध महादशा	(बुध का महा कालखण्ड)	१७ वर्ष
केतु ,,	(केतु ,, ,, ,,)	७ ,,
शुक्र ,,	(शुक्र ,, ,, ,,)	२० ,,

महादशाओं में से गुजरते हुए व्यक्तियों को विभिन्न उपखण्डों में से गुजरना पड़ता है। तालिकाएँ निम्न प्रकार हैं :

सूर्य की ६ वर्षीय महादशा निम्नलिखित अन्तर्दशाओं से बनती है :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
सूर्य	०	३	१८
चन्द्र	०	६	००
मंगल	०	४	०६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	०९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	०६
केतु	०	०४	०९
शुक्र	१	००	००

चन्द्रमा की १०-वर्षीय महादशा निम्नलिखित अन्तर्दशाओं से बनती है :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
चन्द्र	०	१०	००
मंगल	०	०७	००
राहु	१	०६	००
गुरु	१	०४	००
शनि	१	०७	००
बुध	१	०५	००
केतु	०	०७	००
शुक्र	१	०८	००
सूर्य	०	०६	००

मंगल की ७-वर्षीय महादशा निम्नलिखित अन्तर्दशाओं से बनती है :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
मंगल	००	०४	२७
राहु	०१	००	१८
गुरु	००	११	०६
शनि	०१	०१	०९
बुध	००	११	२७
केतु	००	०४	२७
शुक्र	०१	०२	००
सूर्य	००	०४	०६
चन्द्र	००	०७	००

राहु की १८-वर्षीय महादशा निम्नलिखित अन्तर्दशाओं से बनती है :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
राहु	०२	०८	१२
गुरु	०२	०४	२४
शनि	०२	१०	०६
बुध	०२	०६	१८
केतु	०१	००	१८
शुक्र	०३	००	००
सूर्य	००	१०	२४
चन्द्र	०१	०६	००
मंगल	०१	००	१८

गुरु की १६-वर्षीय महादशा में निम्नलिखित अन्तर्दशाएँ होती हैं :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
गुरु	०२	०१	१८
शनि	०२	०६	१२
बुध	०२	०३	०६
केतु	००	११	०६
शुक्र	०२	०८	००
सूर्य	००	०९	१८

चन्द्र	०१	०४	००
मंगल	००	११	०६
राहु	०२	०४	२४

शनि की १९-वर्षीय महादशा में निम्नलिखित अन्तर्दशाएँ होती हैं :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शनि	०३	००	०३
बुध	०२	०८	०९
केतु	०१	०१	०९
शुक्र	०३	०२	००
सूर्य	००	११	१२
चन्द्र	०१	०७	००
मंगल	०१	०१	०९
राहु	०२	१०	०६
गुरु	०२	०६	१२

बुध की १७-वर्षीय महादशा में निम्नलिखित अन्तर्दशाएँ होती हैं :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
बुध	०२	०४	२७
केतु	००	११	२७
शुक्र	०२	१०	००
सूर्य	००	१०	०६
चन्द्र	०१	०५	००
मंगल	००	११	२७
राहु	०२	०६	१८
गुरु	०२	०३	०६
शनि	०२	०८	०९

केतु की ७-वर्षीय महादशा में निम्नलिखित अन्तर्दशाएँ होती हैं :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
केतु	००	०४	२७
शुक्र	०१	०२	००

सूर्य	००	०४	०६
चन्द्र	००	०७	००
मंगल	००	०४	२७
राहु	०१	००	१८
गुरु	००	११	०६
शनि	०१	०१	०९
बुध	००	११	२७

शुक्र की २०-वर्षीय महादशा में निम्नलिखित अन्तर्दशाएँ होती हैं :

ग्रह	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	०३	०४	००
सूर्य	०१	००	००
चन्द्र	०१	०८	००
मंगल	०१	०२	००
राहु	०३	००	००
गुरु	०२	०८	००
शनि	०३	०२	००
बुध	०२	१०	००
केतु	०१	०२	००

मानव-जीवन के १०८ वर्षीय चक्र अर्थात् अष्टोत्तरी महादशा के लिए भी इस प्रकार की तालिकाएँ हैं।

ऊपर दी हुई तालिकाओं में यह तो स्पष्ट हो ही गया होगा कि प्रथम अन्तर्दशा अनिवार्यतः उसी ग्रह द्वारा अनुशासित होती है जिसकी महादशा यह होती है। इस प्रकार, शुक्र की महादशा में सर्वप्रथम अन्तर्दशा शुक्र की ही है।

ये महादशाएँ और अन्तर्दशाएँ व्यक्ति की जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थितियों के अनुसार ही अच्छी या बुरी होती हैं। जन्मकुण्डलियों में जो ग्रह नीच राशि में होते हैं अथवा चन्द्र या लग्न के स्वामी के साथ केन्द्रयोग अथवा षडाष्टक योग में होते हैं, उनकी महादशाएँ और अन्तर्दशाएँ व्यक्ति को क्लेशजनक होंगी।

ऐसी अशुभ-स्थितियों वाले ग्रहों को हम 'क्रूर' ग्रह कह सकते हैं।

क्लेशों अथवा दुःखों की प्रचण्डता में आधिक्य अथवा न्यूनता इस पर निर्भर होगी कि वह 'क्रूर' ग्रह ६-ठे, ८वें और १२वें जैसे बुरे घर का स्वामी है, अथवा १-ले, ३-रे, ५वें, ७वें, ९वें, १०वें तथा ११वें जैसे अच्छे घरों का स्वामी है।

दूसरा विचारणीय तत्व यह है कि जिस ग्रह की महादशा अथवा अन्तर्दशा इस समय प्रगति में है वह बुरा ग्रह है अथवा अच्छा ग्रह है (अर्थात् पाप-ग्रह या शुभ-ग्रह)। उदाहरण के लिए, सूर्य अथवा मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा का काल अवश्य ही स्पष्टतः क्लेशजनक रहेगा क्योंकि वे स्वभाव से ही असमन्वयवादी हैं। किन्तु, यदि व्यक्ति की जन्मकुण्डली में शनि और सूर्य अथवा शनि और मंगल एक-दूसरे से ९ : ५ अथवा ११ : ३ की स्थिति में हैं तो उनकी स्वाभाविक असहिष्णुता के होते हुए भी उनकी महादशाएँ और अन्तर्दशाएँ व्यक्ति के जीवन में प्रगति को प्रोत्साहन देंगी।

अगला प्रश्न यह है कि व्यक्ति की जन्मकुण्डली से किस प्रकार महादशा और अंतर्दशा पर आया जाय, इन्हें किस प्रकार निर्धारित किया जाय। इसके लिए पाठक को एक तालिका देखनी चाहिए। नवजन्मा व्यक्ति जिस महादशा में से गुजर रहा हो (और जिसका कुछ अंश वह जन्म के पूर्व ही भोग चुका हो) उसका निर्धारण चन्द्र की राशि तथा अंशों से होता है। एक बार महादशा (तथा जन्म के समय इसका शेष काल) ज्ञात हो जाने पर अन्य महादशाएँ उसी व्यवस्था से ज्ञात हो जाएँगी जैसी पहले ही वर्णित हैं। और प्रत्येक महादशा के लिए विभिन्न अन्तर्दशाएँ ऊपर तालिका में दी ही जा चुकी हैं।

निम्नलिखित तालिका चन्द्र की विभिन्न स्थितियों के लिए विंशोत्तरी महादशा का प्रारम्भ प्रदर्शित करती है :

नक्षत्र क्रमांक	नक्षत्र प्रारम्भ	चन्द्र की स्थिति राशि	अंश	कला	ग्रह की विंशोत्तरी महादशा	समय वर्षों में
१	अश्वनी	०	०	०	केतु	०७
२	भरणी	०	१३	२०	शुक्र	२०
३	कृत्तिका	०	२६	४०	सूर्य	०६
४	रोहिणी	१	१०	००	चन्द्र	१०

५	मृगशीर्षा	१	२३	२०	मंगल	०७
६	आर्द्रा	२	०६	४०	राहु	१८
७	पुनर्वसु	२	२०	००	गुरु	१६
८	पुष्य	३	०३	२०	शनि	१९
९	आश्लेषा	३	१६	४०	बुध	१७
१०	मघा	४	००	००	केतु	०७
११	पूर्व फाल्गुनी	४	१३	२०	शुक्र	२०
१२	उत्तरा फाल्गुनी	४	२६	४०	सूर्य	०६
१३	हस्ता	५	१०	००	चन्द्र	१०
१४	चित्रा	५	२३	२०	मंगल	०७
१५	स्नाति	६	०६	४०	राहु	१८
१६	विशाखा	६	२०	००	गुरु	१६
१७	अनुराधा	७	०३	२०	शनि	१९
१८	ज्येष्ठा	७	१६	४०	बुध	१७
१९	मूला	८	००	००	केतु	०७
२०	पूर्वाषाढ़ा	८	१३	२०	शुक्र	२०
२१	उत्तराषाढ़ा	८	२६	४०	सूर्य	०६
२२	श्रावणा	९	१०	००	चन्द्र	१०
२३	धनिष्ठा	९	२३	२०	मंगल	०७
२४	शतभिषा	१०	०६	४०	राहु	१८
२५	पूर्वा भाद्रपदा	१०	२०	००	गुरु	१६
२६	उत्तरा भाद्रपदा	११	०३	२०	शनि	१९
२७	रेवती	११	१६	४०	बुध	१७

यह चन्द्र पूर्ण होने के पश्चात पुनः प्रारम्भ हो जाता है :

१	अश्वनी	१२	००	००	केतु	०७
×	×		×	×	×	×

दो व्यावहारिक उदाहरण लेकर हम यह दर्शाएँगे कि किसी जन्मकुण्डली की विंशोत्तरी महादशा किस प्रकार निर्धारित की जाती है ।

४ जुलाई सन् १९५४, दिन के २ बजकर २४ मिनट पर जन्म लेने

वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में जन्म के समय चन्द्रमा की स्थिति निम्न प्रकार है :

राशि	८
अंश	२४
कलाएँ	३८
विकलाएँ	०१

ऊपर दी गयी तालिका में अंकों से इसका मिलान कीजिए। हम देखते हैं कि नक्षत्र क्रमांक २० (अर्थात् पूर्वाषाढ़) तब प्रारम्भ होता है जब चन्द्र की स्थिति निम्नलिखित होती है :

राशि	८
अंश	१३
कलाएँ	२०

अगला नक्षत्र प्रारम्भ तब होता है जब चन्द्र की स्थिति निम्न होती है :

राशि	८
अंश	२६
कलाएँ	४०

इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्र पूर्वाषाढ़ में था जो स्थिति शुक्र महादशा की २०-वर्षीय अवधि से मेल खाती है।

यहाँ हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि शुक्र महादशा तब प्रारम्भ होती है जब चन्द्रमा ८वीं राशि के पश्चात (अर्थात् ९वीं राशि अर्थात् धनु राशि में) १३ अंशों और २० कलाओं में होता है।

जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का चन्द्र (८वीं राशि के पश्चात् अर्थात् ९वीं राशि में) २४ अंशों और ३८ कलाओं में था।

२४ अंश ३८ कलाओं में से १३ अंश २० कलाएँ घटाने पर हमें ११ अंश १८ कलाएँ शेष मिलती हैं $= ११\frac{१८}{६०} = ११\frac{३}{१०} = \frac{११३}{१०}$ अंश।

अर्थ यह हुआ कि चन्द्र पहले ही २०वें नक्षत्र भाग (पूर्वाषाढ़ का $\frac{११३}{१०}$ अंश 'यात्रा' कर चुका था। प्रत्येक नक्षत्र का विस्तार १३ अंश २० कलाएं हैं अर्थात् $१३\frac{२०}{६०} = १३\frac{१}{३} = \frac{४०}{३}$ अंश।

२०-वर्षीय अवधि की शुक्र महादशा २०वें नक्षत्र भाग पूर्वाषाढ़ के

$\frac{४०}{३}$ अंश से मेल खाती है। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के उन $\frac{४०}{३}$ अंशों में से $\frac{११३}{१०}$ अंश तो चन्द्रमा व्यक्ति के जन्म से पहले ही यात्रा कर चुका था।

इसलिए, अब हम गणित का त्रैराशिक नियम लागू करते हैं और पूछते हैं : यदि राशि चक्र का $\frac{४०}{३}$ अंश अन्तर (शुक्र की महादशा के) २० वर्ष के समान है, तो $\frac{११३}{१०}$ अंश अन्तर कितने वर्षों के समान होगा ? उत्तर है :

$$\frac{११३}{१०} \times \frac{३}{४०} \times \frac{२०}{१} = \frac{११३}{१०} \times \frac{३}{२} \times \frac{१}{१} = \frac{३३९}{२०} \text{ वर्ष}$$

=२०)३३९(१६ वर्ष
२०
१३९
१२०
१९
× १२ मास
२०)२२८(११ मास
२०
२८
२०
८
× ३० दिन
२०)२४०(१२ दिन
२०
४०
४०
००

यह प्रदर्शित करता है कि जन्म के समय वह व्यक्ति शुक्र महादशा की २०-वर्षीय अवधि में से १६ वर्ष ११ मास १२ दिन पूर्ण कर चुका था।

शुक्र महादशा की २०-वर्षीय अवधि में से इसे घटाने पर हमें ३ वर्ष ०० मास १८ दिन की अवधि मिलती है जिसे जन्म के समय उस व्यक्ति ने भोगना शेष था।

वर्ष	मास	दिन
२०	००	००
१६	११	१२
३	००	१८

शुक्र की महादशा के अन्तर्गत दी गयीं अन्तर्दशाओं की तालिका से पाठक निश्चय कर सकता है कि वह व्यक्ति बुध की अन्तर्दशा भोग रहा था क्योंकि बुध और केतु दोनों की अन्तर्दशाएँ मिलकर ही शुक्र की २०-वर्षीय महादशा के अन्तिम ४ वर्षों का योग बनाती हैं।

एक बार उस महादशा का निर्धारण कर लेने पर—जिसे वह व्यक्ति जन्म के समय भोग रहा था—हम उत्तरवर्ती काल-दशाओं को निम्न प्रकार लिख सकते हैं :

शुक्र का शेष जन्म के समय		महादशा	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	आदि
वर्ष	३		०६	१०	०७	१८	१६	...
मास	००							
दिन	१८							

इसका अर्थ यह हुआ कि वह व्यक्ति जब अपने जीवन के ३ वर्ष और १८ दिन पूर्ण करता है तब वह सूर्य की महादशा में प्रवेश करता है। जब वह ६ + ३ वर्ष तथा १८ दिन का अर्थात् ९ वर्ष और १८ दिन का हो जाता है, तब वह चन्द्र की १०-वर्षीय महादशा में प्रविष्ट होता है...... आदि-आदि।

आइए, अब हम ४ जुलाई सन् १९६२ को दिन में २.२४ पर उत्पन्न हुए व्यक्ति की महादशा की गणना करें।

जन्म के समय चन्द्र की स्थिति यह थी :

राशि	३
अंश	१६
कलाएँ	२४
विकलाएँ	३०

हम महादशा तालिका से मिलान करने पर फिर यही पाते हैं कि शुक्र की २०-वर्षीय अवधि में चन्द्र 'पूर्वाफाल्गुणी' नक्षत्र (११वाँ क्रमांक) में

राशि	४	
अंश	१३	
कलाएँ	२०	में होता है।

इन अंशों और कलाओं को व्यक्ति के जन्म-समय चन्द्र की स्थिति से घटाने पर (अर्थात् १६ अंश २४ कलाओं में से घटाने पर) हमें ३ अंश और ४ कलाएँ शेष मिलती हैं।

जैसा पहले ही वर्णित है, अब हम त्रैराशिक-नियम लागू करते हैं और पूछते हैं : यदि १३ अंश और २० कलाएँ (अर्थात् $\frac{४०}{३}$ अंश) २० वर्ष के समान हैं, तो ३ अंश और ४ कलाएँ ($३\frac{४}{६०} = \frac{४६}{१५}$) कितने वर्ष के समान हैं ?

$= \frac{२०}{१} \times \frac{४६}{१५} \times \frac{३}{४०} = \frac{२०}{१} \times \frac{४६}{५} \times \frac{१}{४०} = \frac{१}{१} \times \frac{४६}{५} \times \frac{१}{२} = \frac{४६}{१०}$ वर्ष

= ४ वर्ष ७ मास ६ दिन।

इसको २०-वर्षीय अवधि में से घटाने पर हम पाते हैं कि जन्म के समय उस व्यक्ति को १५ वर्ष ४ मास और २४ दिन का शुक्र महादशा का कालखण्ड भोगना शेष था। इसके पश्चात् अन्य ग्रहों की महादशाओं का निर्धारित कालखण्ड चलता है।

सभी विस्तृत जन्म-पत्रिकाओं में, ग्रहों के अंश तथा महादशाओं और अन्तर्दशाओं की पूर्ण स्थिति लिखी रहनी चाहिए जिससे जन्म-पत्रिकाओं का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति उनका भली भाँति तुरन्त अध्ययन कर सकने में सक्षम हो।

१४

मनुष्य और ग्रह

पाषाणों को काट-काटकर आकर्षक मूर्तियां बनाने वाले शिल्पकार का अपना ही उपयुक्त मापक होता है जिसके आधार पर वह अपनी भाव-मूर्तियों को मूर्त रूप प्रदान करता है।

जीवन की अत्यन्त आश्चर्यकारी विविधताओं से परिपूर्ण इस विश्व के महाप्रभु तथा अद्‌भुत शिल्पज्ञ श्री ईश्वर के पास भी अपनी अद्‌भुत गणितीय तालिकाएँ होनी स्वाभाविक ही हैं। और, निश्चित भी है कि उनकी ऐसी ही विलक्षण सम्पत्ति है। यहां हम उसी विलक्षण तालिका का उल्लेख करना चाहते हैं जिसका उपयोग मनुष्य-जीव को इस संसार में भेजते समय वे सर्वशक्तिमान प्रभु करते हैं।

मनुष्य की ऊँचाई उसके चरणों की लम्बाई की छः गुणी होती है। यह महिलाओं के लिए भी तथा मोटे अथवा पतले, सभी लोगों के लिए सदैव सत्यमाप है।

यदि मनुष्य अपने दोनों बाजुओं को अपने कन्धों की ओर सीधा फैलाता है, तो छाती पर से होते हुए उसके दाहिने हाथ से बाएँ हाथ की बीच की उँगली का अन्तर उसकी ऊँचाई के समान होगा।

किसी भी मनुष्य की ठोड़ी से उसके मस्तक पर केश-रेखा तक का अन्तर उस मनुष्य की ऊँचाई का दसवां भाग होगा। यही अन्तर उसकी कलाई से बीच की उँगली के शीर्ष भाग तक होगा।

छाती के सामने का माप मनुष्य की ऊँचाई का एक-चौथाई होता है।

स्तनाग्र से सिर के ऊपर तक का माप छाती के सम्मुख-भाग के माप के समान होता है।

ठोड़ी से मस्तक के ऊपरी भाग पर केश-रेखा की संरचना तीन समान भागों में विभक्त है। ये भाग हैं : मस्तक पर शीर्ष-केशरेखा से आँखों पर भौहों के मध्य बिन्दु तक; उसी बिन्दु से नथुनों के मध्य तक; और नथुनों के मध्य-बिन्दु से ठोड़ी तक।

छाती से मस्तक पर शीर्ष केश-रेखा तक का अन्तर व्यक्ति की ऊँचाई का सातवाँ भाग होता है।

सुन्दर मानव-आकृतियों को बनाने के लिए सुविख्यात शिल्पकार उपर्युक्त दैवी मापों का अनुसरण करते हैं।

जिस प्रकार कुम्हार अपने चक्र पर विभिन्न प्रकारों के माटी के बर्तन गढ़ता है, उसी प्रकार ईश्वर भी अपने नवग्रही-चक्र पर जीवन की विविधतामयी मूर्तियाँ बनाता है। आइए, हम उन ग्रहों की ज्योतिषीय-विशिष्टताओं का अध्यन करें।

सूर्य, मंगल और गुरु स्वभाव में पुरुषों के समान माने जाते हैं।

चन्द्र और शुक्र स्त्रीप्रकृति हैं।

बुध और शनि नपुंसक (तटस्थ) श्रेणी से सम्बन्ध रखते हैं।

सूर्य मानवों की आत्मा का संरचनाकार है, चन्द्र मस्तिष्क का प्रतीक है, मंगल जीवनी-शक्ति का, बुध वाणी का नियामक है, गुरु जीवन का नियामक है, शुक्र रतिभाव का शासक है और शनि विपदाओं का।

सूर्य का वर्गीकरण स्थिर, अटल तत्वों में होता है क्योंकि यह आनुपातिक रूप में निश्चित है तथा सौर-मण्डल का केन्द्र-बिन्दु है। चन्द्रमा को अस्थिर माना जाता है क्योंकि यह द्रुततम संक्रमणशील 'ग्रह' है। मंगल झगड़ालू एवं शीघ्र क्रुद्ध होने वाला है। बुध विसंयुज (दो विरोधी गुणों में से एक अथवा दोनों को धारण करने वाला) है। गुरु सरल, प्रवंच्य तथा शीघ्रगामी है। शुक्र कोमल है। शनि हृदयहीन तथा विपद्ग्रस्त है।

गुरु-शुक्र को पुरोहितों की श्रेणी में वर्गीकृत करते हैं क्योंकि वे शैक्षिक अथवा कलात्मक उपलब्धियों के द्योतक होते हैं। सूर्य और मंगल योद्धा-वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। चन्द्र और बुध व्यवसायी-वर्ग का निर्माण

करते हैं। शनि शूद्र-वर्गी है। राहु और केतु कसाई और चर्मकार कहे जाते हैं।

सूर्य और मंगल 'आग्नेय' ग्रह हैं। चन्द्र और शुक्र जलयुक्त ग्रह हैं। बुध भौमिक ग्रह है। गुरु अन्तरिक्ष का प्रतीक है और शनि वायु का।

सूर्य, चन्द्र और गुरु गम्भीर तथा मृदुभाषी हैं। बुध और शुक्र आडम्बर तथा भव्यरूप पसन्द करते हैं, मंगल और शनि अधम तथा सीमातीत रुचियों के प्रतीक हैं।

सूर्य और चन्द्र ब्रह्माण्ड के शासक-युग्म हैं, मंगल सेनापति है, बुध युवराज है, गुरु और शुक्र राजकीय परामर्शदाता हैं और शनि नौकर।

हम पहले ही वे राशियाँ बता चुके हैं जिनमें गृह उच्चस्थ अथवा निम्नस्थ होते हैं। वास्तविक अंश, जिन पर विभिन्न ग्रह उच्चता के परमोच्च शिखर पर अथवा निम्नता के रसातल में पहुँच जाते हैं, निम्नलिखित तालिका में दिखाए गए हैं :

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्चस्थ	मेष	वृषभ	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
परमोच्चांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
निम्नस्थ	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
निम्नतमांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

विषम-राशियों में स्थित ग्रह शिशु (धीरे-धीरे चलने वाले) माने जाते हैं यदि वे (उस राशि में) ६ अंशों के भीतर हैं। ६ और १२ अंशों के बीच वाले किशोर, १२ और १८ के मध्य वाले युवक, १८ और २४ अंशों के मध्य वाले अस्थिर अथवा वृद्ध तथा किसी भी विषम-राशि के अन्तिम छः अंशों के भीतर वाले ग्रह मृत समझे जाते हैं।

सम-राशियों में स्थित ग्रहों के साथ यह बिल्कुल विपरीत बात है। सम-राशियों में स्थित ग्रह मृत (निर्जीव) समझे जाते हैं यदि वे प्रथम छः अंशों के भीतर हैं; ६ से १२ अंशों वाले वृद्ध हैं, यदि वे १२ और १८ अंशों के मध्य हैं तो वे युवक हैं, १८ और २४ अंशों के मध्य वे किशोर हैं तथा २४ से ३० अंशों के मध्य वे केवल शिशु मात्र समझे जाते हैं।

ग्रह की स्थिति, अन्य ग्रहों के साथ उसका सम्बन्ध अथवा सहयोग के

अनुसार ही कोई ग्रह निम्न वस्तुओं के सम्बन्ध में अच्छा या बुरा फल देगा :

सूर्य—पिता से सुख या दुःख, शारीरिक स्वस्थता, आध्यात्मिक गुण; मनोवैज्ञानिक-अभिरुचियाँ तथा औषधीय-अन्तर्दृष्टि।

चन्द्र—मातृपक्षीय सुख अथवा दुःख, सफलता, शारीरिक कान्ति, सौन्दर्य, ज्योतिषीय अन्तर्दृष्टि, सहज ज्ञान।

मंगल—मित्रता, वीरता, यश, साहसिक-कार्य, धनुर्विद्या, शल्य चिकित्सा।

बुध—सन्तति से सुख अथवा दुःख, मातृग्रह, गणित, तत्वज्ञान, स्थापत्य कला, लेखन-योग्यता, भाषण कला।

गुरु—भाइयों से सुख, विशद प्रतिभा, व्याकरण, योजना।

शुक्र—रति-सुख, संगीत, काव्यकला, शारीरिक प्रलोभन, कला और श्रृंगार, सांसारिक-सुख।

शनि—ओछे तथा निन्द्य-कर्म, नौकरों से सुख या दुःख, हृदयहीनता तथा विश्वासघात, निर्धनता, मृत्यु, कारावास।

राहु—सर्प-वशीकरण, पशु प्रशिक्षण।

केतु—गोपनीय मन्त्र तथा पद्धतियाँ।

बुध और गुरु सुदृढ़-स्थल आधार पर कहे जाते हैं यदि वे प्रथम घर (बिलकुल पूर्व) में हैं।

सूर्य और मंगल मजबूती से परिवारस्थ माने जाते हैं यदि वे दसवें घर में हों (जो बिलकुल दक्षिण में है)।

शनि को खोखला माना जाता है यदि वह सातवें घर में होता है (जो बिलकुल पश्चिम है)।

चन्द्र और शुक्र चौथे घर में बलवान माने जाते हैं। यह घर बिलकुल उत्तर में है।

यदि एक ग्रह पिछले घर में स्थित प्रतीपगामी ग्रह द्वारा अनुसरित हो और अगले घर में अपने सामान्य कक्ष में स्थित ग्रह द्वारा नेतृत्व प्राप्त कर रहा हो, तो केन्द्रस्थ घर का ग्रह उन दोनों घरों के बीच में पिस गया, दबोच दिया गया, भिंच गया माना जाता है क्योंकि अगले और पिछले, दोनों घरों के ग्रह केन्द्रस्थ घर में टकराव करते हैं। इसका परिणाम, विशेष रूप में

दबोचे गए घर अथवा ग्रह के सम्बन्ध में, बुरा होता है।

यदि एक खाली घर अथवा अनेक घर अथवा उनमें स्थित ग्रह दोनों ओर से पाप-ग्रहों द्वारा त्रासित हैं, तो वे पापग्रहों द्वारा दबोच दिए गए माने जाते हैं और इस कार्य का परिणाम उन घरों अथवा ग्रहों के सम्बन्ध में दुर्भाग्य, विपदाओं का सूचक होता है।

कुछ ग्रह अन्य ग्रहों के प्रति मैत्री-भाव रखते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि बाद वाले ग्रह भी पूर्व-ग्रहों के प्रति मैत्री-भाव रखें। ज्योतिष का यह नियम कोई विलक्षण नहीं है। एक-पक्षीय प्रेम, निष्ठा, मित्रता, अथवा आकर्षण सभी स्थानों पर स्पष्ट द्रष्टव्य है। माता अपने बच्चे पर अत्यधिक स्नेह करती है किन्तु उसके पुत्र को (विशेषकर युवा पुत्र को) माता के प्रति उतना ही प्रेम नहीं होता। यहाँ भी हम देखते हैं कि ज्योतिष किस प्रकार सांसारिक-सिद्धान्तों पर आधारित है—न कि केवल मनगढ़न्त धारणाओं पर जैसाकि कुछ लोग सोचते हैं।

प्रत्येक ग्रह का अन्य ग्रहों के साथ मैत्री-भाव, शत्रु-भाव तथा काम चलाऊ-सम्बन्ध निम्न तालिका में दर्शाया गया है :

विचारणीय	मित्र	शत्रु	काम-चलाऊ सम्बन्ध वाले ग्रह
सूर्य	गुरु, मंगल चन्द्र	शनि, शुक्र	बुध
चन्द्र	सूर्य, बुध	राहु	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	शनि, बुध	सूर्य, चन्द्र,	मंगल, गुरु
शनि	शुक्र, बुध	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
राहु	शनि, बुध शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
केतु	शनि, बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु

उपर्युक्त तालिका की प्रथम पंक्ति में सूर्य के मित्र, शत्रु तथा काम-चलाऊ सम्बन्ध रखने वाले ग्रहों की नामावली दी है।

चन्द्र, मंगल आदि के सम्बन्ध में भी ऐसी ही जानकारी अन्य अगली पंक्तियों में दी गयी है।

उपर्युक्त सम्बन्धों को समझने में भारतीय पौराणिकता का थोड़ा-सा ज्ञान भी अत्यन्त सहायक होता है।

शुक्र दैत्यों, दानवों, असुरों का गुरु व पुरोहित है। शनि, राहु, केतु दानवी ग्रह हैं। भारतीय पौराणिकता में व्यक्तिवाचक होने पर, देवों और असुरों के सामूहिक-प्रयत्नों द्वारा क्षीर-सागर से मथित अमृत को राहु और केतु ने छीन लेने का यत्न किया, किन्तु इसका पान करने में देवों द्वारा बाधा डाली गयी थी। अतः ये दोनों परस्पर मित्र हैं। बुध विसंयुज होने के कारण अनेक ग्रहों से मैत्री रखता है।

हम व्यक्ति की जन्मकुण्डली में ग्रहों के ऐसे पारस्परिक सम्बन्धों के कारण उत्पन्न व्यावहारिक परिणामों की व्याख्या राहु और चन्द्र की योग-स्थिति से दर्शा सकते हैं। हम जिस दृष्टान्त को प्रस्तुत कर रहे हैं, उसकी परिणामजन्य सत्यता को कोई भी साधारण व्यक्ति परख सकता है और उससे विज्ञान के रूप में ज्योतिष की वैधता के प्रति स्वयं को सन्तुष्ट कर सकते हैं।

जिस भी किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली में राहु और चन्द्र एक ही घर में एकत्र होंगे, उस व्यक्ति को जीवन में कम-से-कम एक घोर आघात लगेगा। साधारणतः यह ऐसा गम्भीर आरोप होता है जिससे जन-सामान्य में पद-प्रतिष्ठा की हानि हो जाती है। इसका परिणाम सामान्यतः शारीरिक यातनाओं को भोगने में होता है और इसमें अपहरण, दूरीकरण, पिटायी, कारावास, नजरबन्दी, अपयश तथा वित्तीय हानि होती है।

जिन जन्मकुण्डलियों में राहु और चन्द्र अंक—१० के साथ होते हैं (अर्थात् '१०'-अंक लिखे घर में वे दोनों होते हैं), तो व्यक्ति के जीवन के सर्वोत्तम-काल को दुर्भाग्य गहनतर कर देता है और यह दुर्भाग्य व्यक्ति की गर्दन के चारों ओर बंधा हुआ वास्तविक भारी पत्थर हो जाता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन विपदाओं की लम्बी कहानी बन जाता है। एक ही राशि में

जितने निकटतम अंशों पर चन्द्र और राहु होंगे, उतना ही तीव्रतर, तीक्ष्णतर यह दुर्भाग्य होगा।

सूर्य हृदय तथा रक्त-धमनियों पर शासन करता है। यह पुरुषों की दाहिनी और महिलाओं की बाईं आँख का नियमन करता है। नेत्र-रोग, मूर्च्छा, मोच तथा ज्वर अहितकर सूर्य के परिणामस्वरूप होते हैं।

चन्द्रमा मस्तिष्क का, प्रतिभा का नियामक होता है। अहितकर चन्द्र अशान्त मस्तिष्क का परिणामकारी है। जिसका चन्द्र मिथुन, तुला, मकर, तथा कुम्भ में स्थित होता है, वह व्यक्ति दूरदर्शी, सुनिश्चित-मन, गहन विचारक, अन्वेषक, एकान्त प्रेमी, कठोर परिश्रमी किन्तु संदिग्ध प्रकृति का होता है। वृषभ-स्थित चन्द्र व्यक्ति को हठीला बनाता है। सुखद-स्थान पर चन्द्र व्यक्ति को विश्वासयोग्य, निर्भर होने योग्य, दयालु, विनम्र, सज्जन और सहिष्णु बनाता है।

मंगल मांस का स्वामी है। तीसरे घर में होने पर मंगल व्यक्ति को वीर, शूर एवं दुर्धर्ष बनाता है। ज्योतिष का यह नियम अटल है और किसी भी व्यक्ति द्वारा कभी भी परखा जा सकता है। किसी भी घर में सूर्य-मंगल का योग रक्त-नेत्रों, स्वार्थी तथा प्रतिकारी स्वभाव का देने वाला होता है।

शुक्र लैंगिक अवयवों, वीर्य, गर्भाशय, छाती तथा गले का शासन करता है। उन भागों के रोग अहितकर शुक्र के दुष्परिणाम होते हैं।

जिस व्यक्ति की जन्मकुण्डली में ८वें घर का स्वामी ११वें, ५वें अथवा ९वें घर में होता है, उसका शैशवकाल असुखद होता है।

यदि चार या अधिक ग्रह १०वें अथवा ११वें घर में भी हों तो उस व्यक्ति की संन्यासी प्रवृत्तियाँ होती हैं और सम्भव है कि वह तपस्वी का जीवन व्यतीत करे।

यदि ९वें घर में सूर्य हो अथवा सूर्य उस घर का स्वामी हो तो ऐसे व्यक्ति के २२वें वर्ष में उसका सौभाग्योदय होगा। यदि यही स्थिति चन्द्र की हो, तो उसका २४वाँ वर्ष विशेष उल्लेखनीय होगा। मंगल २८वें वर्ष में समृद्धि देने वाला है। बुध ३२ वर्ष की आयु में भाग्यवान बनाता है। गुरु व्यक्ति के जीवन में १६ वर्ष में श्रेष्ठ दिशा-परिवर्तन करता है। शुक्र

भाग्योदय २४ वर्ष में करता है और शनि ३६½वें वर्ष में भाग्य को उज्ज्वल करता है।

२-रे और ७वें घर के स्वामी मारकेश अर्थात् मृत्यु या घातक परिणाम लानेवाले कहलाते हैं।

कर्क, सिंह, तुला अथवा धनु लग्न वाले व्यक्ति वीर होते हैं। कन्या, मकर, वृषभ तथा वृश्चिक लग्न वाले व्यक्ति प्रायः सुदृढ़ तथा कुचक्री होते हैं।

लग्न में, ५वें, ९वें अथवा १०वें घर में मंगल, चन्द्र अथवा गुरु स्थित होने से व्यक्ति को धन तथा शक्ति प्राप्त होती है।

सूर्य और चन्द्र एकत्र होने से व्यक्ति कुशल, कुयोजनावादी तथा तकनीकज्ञ बनता है।

सूर्य और मंगल का योग पुरुषत्व, कर्मठ स्वभाव, प्रगल्भता, साहसिकता तथा तुनुकमिजाजी की पूर्वसूचना है।

सूर्य और बुध का संयोग व्यक्ति को सर्वप्रिय, मृदुभाषी, विज्ञान-सम्मत विचारक, सहायक तथा समृद्ध बनाता है।

सूर्य और शुक्र का संगम संगीतात्मक-बुद्धि एवं विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करता है।

सूर्य-शनि व्यापारिक स्वभाव, कट्टर आस्था, समृद्धि, प्राचुर्य तथा प्रतिभा को ढूंढ़ निकालने में अचूक दृष्टि के द्योतक हैं।

चन्द्र-मंगल योग व्यक्ति को चालाक, बहादुर और (अपने माता-पिता के साथ भी) झगड़ालू बनाता है।

चन्द्र-बुध व्यक्ति को हृदयग्राही वक्ता, आकर्षक, दयालु और शीलयुक्त बनाते हैं।

चन्द्र-गुरु व्यक्ति को महान् योजनाकार, शिक्षित, धर्मप्रिय, अथक परिश्रमी कार्यकर्ता बनाता है।

चन्द्र-शनि का एक स्थान पर होना शिथिलता, और एक विनम्र दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

मंगल-बुध का सहयोग व्यापारिक लाभ, औषधीय अन्तर्दृष्टि, और स्त्रियों के प्रति अत्यधिक लालसा उत्पन्न करता है।

मंगल-गुरु का योग व्यक्ति को गूढ़-अन्तर्दृष्टि, सम्मान और बुद्धि प्रदान करता है।

मंगल-शुक्र की मित्रता कामुक-प्रकृति, सट्टेबाजी के सौदों में रुचि, घमण्ड तथा विरोधियों के साथ मेल करने की तत्परता की द्योतक है।

मंगल-शनि का साथ-साथ होना व्यक्ति को झगड़ालू, असुखद और अशास्त्रीय साधनों से धन कमाने वाले बनाता है।

बुध-गुरु का योग व्यक्ति को कृपालु, सन्तोषी, नियमपालनकर्ता और संगीत का पारखी बनाता है।

बुध-शुक्र की एकता से व्यक्ति बड़ा बातूनी, आश्रयदाता, संवर्धक, विचारशील और निपुण बनता है।

बुध-शनि का साहचर्य मनुष्य को अशान्ति और कलहप्रियता की ओर प्रेरित करता है।

गुरु-शुक्र का जोड़ा सभी प्रकार की समृद्धि और प्रतिभात्मक श्रेष्ठता का प्रतीक है।

गुरु-शनि व्यक्ति को वीर, खाता-पीता, सफल और अत्यधिक सम्मानित बनाता है।

शुक्र-शनि शारीरिक-शक्ति तथा ललितकलाओं में अभिरुचि उत्पन्न करते हैं।

दो ग्रहों का एक साथ होने का परिणाम देख लेने के पश्चात् पाठक तीन-तीन ग्रहों का परिणाम नीचे लिखे अनुसार देखें—

सूर्य, चन्द्र, मंगल—साहसी, पापी, तकनीकी, संगीतात्मक सहज-बुद्धि।

सूर्य, चन्द्र, बुध—निडर, देदीप्यमान, कूटनीतिज्ञ।

सूर्य, चन्द्र, गुरु—सद्-मनोवृत्ति, शीघ्र रुष्ट होना, करुणा दिखाना, यात्रा करना।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र—वैज्ञानिक, दूसरों के धन की चाहना करना।

सूर्य, चन्द्र, शनि—झगड़ालू, रुपये-पैसों का अभाव, निर्भर।

सूर्य, मंगल, बुध—साहसिक कार्य करने वाला, पहलवान, कठोर हृदय, न्यून वेतनभोगी।

सूर्य, मंगल, गुरु—वक्ता, सत्यनिष्ठ, राज्य-परामर्शदाता।

सूर्य, मंगल, शुक्र—भाग्यशाली, अच्छे पितृवंशज, नेत्र-रोगी।
सूर्य, मंगल, शनि—अस्वस्थ, जरूरतमन्द, विचारहीन, म्लान।
सूर्य, बुध, गुरु—धनी, कवि, बुद्धिमान और पीड़ित नेत्र वाला।
सूर्य, बुध, शुक्र—यात्रा करने वाला, वार्तारसिक, दाम्पत्य जीवन से असुखी।
सूर्य, बुध, शनि—भाग्यहीन, अभिमान-च्युत, परित्यक्त।
सूर्य, गुरु, शुक्र—राज्य-परामर्शदाता, वीर, बुद्धिमान, जरूरतमन्द।
सूर्य, गुरु, शनि—सम्मानित, अपने ही लोगों द्वारा परित्यक्त, निडर।
सूर्य, शुक्र, शनि—अशिष्ट व्यवहार करने वाला, हाथ-पांव से झुका हुआ और शत्रुओं से भयभीत होने वाला।
चन्द्र, मंगल, बुध—नीच, कमीना, मित्रहीन।
चन्द्र, मंगल, शुक्र—माता और पत्नी से बहुत सुखी नहीं, यात्राप्रिय।
चन्द्र, मंगल, शनि—माता का शीघ्र स्वर्गवास, स्वच्छन्द, अप्रिय, सन्तप्त।
चन्द्र, बुध, गुरु—समृद्ध, सुविख्यात, सुखी।
चन्द्र, बुध, शुक्र—सुशिक्षित, कमीना, विनम्र, लोभी।
चन्द्र, बुध, शनि—बुद्धिमान, सम्मानित, स्वतन्त्र विचारवान, अशान्त।
चन्द्र, गुरु, शुक्र—बुद्धिमान, कलाओं में सुनिपुण, सुविज्ञ, सुशिष्ट, अच्छी प्रकृतिवाली माता से उत्पन्न।
चन्द्र, गुरु, शनि—वैज्ञानिक, स्वस्थ, समुदाय का नेता।
चन्द्र, शुक्र, शनि—लेखक, भाग्यवान्।
मंगल, बुध, गुरु—कवि, धनवान्, सद्-प्रकृति पत्नी।
मंगल, बुध, शुक्र—बेडौल शारीरिक-संरचना, कठोर-हृदय, उत्साही।
मंगल, बुध, शनि—विनम्र, यात्रा, चेहरे के रोग।
मंगल, गुरु, शुक्र—राज्य द्वारा सम्मानित, सुशिक्षित सन्तति, घरेलू सुख, जनता को सुखी रखना।
मंगल, गुरु, शनि—हृदयहीन, नीच-क्षुद्र, जनता द्वारा घृणित।
मंगल, शुक्र, शनि—भाग्यहीन, प्रवासी।
बुध, गुरु, शुक्र—भाग्यशाली, सुयशवान्, सुशिष्ट, सु-सन्ततियुक्त।
बुध, गुरु, शनि—धनवान एवं समृद्ध, बुद्धिमान्, विरक्तिमय।

बुद्ध, शुक्र, शनि—चतुर, असत्यवादी, प्रतिभा-सम्पन्न, देशभक्तिपूर्ण।
गुरु, शुक्र, शनि—प्रसिद्ध, धन-सम्पन्न, सुशिष्ट।

प्राय: प्रश्न पूछा जाता है कि क्या भावी विपदाएँ पवित्र मन्त्रोच्चार तथा अन्य साधनों से टाली या रोकी जा सकती हैं?

निश्चित रूप में इसका उत्तर नकारात्मक है। यदि भावी दुःखों को टाला जा सकता होता तो सौभाग्य भी प्रस्थापित किया जा सकता था। ऐसा होने पर विधि का विधान—ईश्वरीय प्रारब्ध—प्रारब्ध ही न होता और ज्योतिषशास्त्र के विज्ञान का कोई अर्थ न होता।

किन्तु यह सम्भव है कि गलत आँकड़ों अथवा दैवज्ञ की भविष्यकथन की विधि पर उसकी पकड़ के अभाव के कारण भविष्यवाणी स्वयं ही अनिश्चयात्मक हो तथा आशंकित विपदा कभी आए ही नहीं। ऐसे मामलों में विज्ञान नहीं अपितु इसका अभ्यासकर्ता ही दोषी है। अत: किसी भी अहितकर भविष्यवाणी से किसी व्यक्ति को भीत होने की आवश्यकता नहीं है।

किन्तु यदि भविष्यवाणी यथार्थ रूप में सही है, तो इसको घटित होने से किसी प्रकार रोका नहीं जा सकता।

फिर भी, धार्मिक अनुष्ठानों तथा मन्त्रों के आयोजनों तथा कवचों और मणियों के धारण करने का महत्व हम किसी भी प्रकार कम नहीं आँकते क्योंकि ये वस्तुएँ मस्तिष्क को उस अवांछनीय घटना को सहन करने के योग्य बनाने में पूरी सहायता करती हैं और विश्व के नियन्ता महाप्रभु की इच्छा के सम्मुख विनीत और अकिंचन भाव प्रेरित करने की प्रेरणा देती हैं।

हमें दुर्घटनाओं के ऐसे अनेक उदाहरण अनुभव हुए हैं कि जो पग भावी दुर्घटनाओं को दूर रखने के लिए उठाए गये, उन्हीं से वे दुर्घटनाएँ हो गईं। भारत के मध्य प्रदेश राज्य के अन्तर्गत रायपुर में एक कर्मचारी को एक विशेष काम के दिन एक भावी दुर्घटना की सूचना अग्रिम दी गयी। यह सोचकर कि साइकिल पर कार्यालय जाना और घर वापस आना ही एकमात्र कारण था जिसमें कोई दुर्घटना हो सकती थी, उसने कार्यालय से छुट्टी रखी और घर पर ही बना रहा। पति के लिए थोड़ा परिवर्तन तथा स्वयं

के लि: नित्यकर्मों से कुछ छुटकारा व मन-बहलाव अनुभव करने की दृष्टि से उसकी पत्नी ने अपने पति से प्रांगणस्थित कुएँ से कुछ कलश जल भर लाने को कहा। पहले ही कलश में जल भरकर लाते समय वह व्यक्ति अपने ही घर के प्रवेश-द्वार पर लड़खड़ा गया और अपना पैर तोड़ बैठा।

सम्राट् विक्रमादित्य को उसके उत्तराधिकारी की १६ वर्ष की आयु में जंगली सुअर द्वारा दाँत घुसेड़ देने की भविष्यवाणी बताए जाने की भी एक कहानी सुनी जाती है। यह भविष्यवक्ता भारत के सुप्रसिद्ध निपुण ज्योतिषी 'मिहिर' के अतिरिक्त कोई न था।

युवराज के ग्रह-अ...कित जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने की इच्छा के कारण सम्राट् ने उसको एक विशाल राजमहल में निवास के लिए रख दिया। उस राज-प्रासाद के सभी द्वार बन्द थे; कोई मनुष्य या पशु भीतर नहीं जा सकता था। किन्तु दुर्भाग्यवश, ज्यों ही वह अशुभ घड़ी आयी, वह युवराज अपने विनोदी साथियों को छोड़कर राजमहल के सबसे ऊपर की छत पर कुछ स्वच्छ वायु के सेवन के लिए जा पहुँचा। जब वह शीतल मन्द समीर का आनन्द लेता हुआ सोफा पर लेटा हुआ था, तभी उसके ऊपर लहराता हुआ राजकीय ध्वज-स्तम्भ, जिसके ऊपरी भाग पर जंगली सुअर का सिर लगा हुआ था, हिला और जंगली सुअर का वह सिर धमाक्-से युवराज की छाती पर गिरा, उसके सींगों से युवराज की इहलीला समाप्त हो गयी।

ये दो उदाहरण दर्शाते हैं कि किस प्रकार किसी दुर्घटना को टालने के लिए किए गये उपायों से ही वे दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। अतः मनुष्य प्रारब्ध से बचाव नहीं कर सकता।

किन्तु, जैसा पहले ही कहा जा चुका है, किसी को यह धारणा बना लेनी आवश्यक नहीं है कि भविष्यवक्ता गलती कर ही नहीं सकता। वह गलती कर सकता है, और उसकी भविष्यवाणी कभी घटित ही न हो। चूँकि मनुष्य का स्वभाव ज्ञातव्य दुर्घटनाओं से बचाव के यत्न करने का है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को निश्चित रूप में ही सभी सम्भव उपाय करने ही चाहिए।

किन्तु यह सब कुछ क्षुद्र मानव दृष्टिकोण से देखना ही है। इस पर अद्भुत चराचर जगत के दृष्टिकोण से देखने पर ज्ञात होता है कि विशाल

जगत की तुलना में तो मनुष्य उस जीवाणु से भी नगण्य है, जिसे हम सूक्ष्म-वीक्षण यन्त्र द्वारा नहीं रेंगता हुआ पाते हैं। व्यक्तियों, साम्राज्यों, पीढ़ियों और सभ्यताओं को प्रतिदान, प्रतिक्षण चूर-चूर कर विलुप्त करता हुआ यह जागतिक-चक्र अविचल और तटस्थ रूप में चलता रहता है। नगण्य, असहाय जन्मे, तथा निर्दयतापूर्वक ध्वस्त मानव के लिए इस विश्व में सूक्ष्मातिसूक्ष्म आकार का होते हुए भी, अपनी शूरवीरता तथा इच्छा की डींग हाँकना उतनी ही हास्यास्पद बात है जितनी (यदि हम सुन सकते) विशूचिका-कीटाणुओं की अपनी विशाल स्तर पर घातक महामारी फैला सकने की सामर्थ्य की डींग मारना।

किन्तु प्रारब्ध की अवश्यम्भाविता के होते हुए भी ज्योतिष के असंख्य लाभ हैं, जैसाकि हम पूर्व अध्यायों में पहले ही बता चुके हैं।

जिस प्रकार अस्वास्थ्यकारी न्यूनताओं के होते हुए भी औषधि शारीरिक-पीड़ा से छुटकारा दिला सकती है, उसी प्रकार ज्योतिष भी मानसिक दुःख, अशान्ति तथा निराशा से छुटकारा दिला सकता है।

बहुत लोग ऐसे हैं जिनकी जन्मकुण्डलियाँ उपलब्ध नहीं हैं तथापि वे भी अपनी घोर चिन्ताओं और विपदाओं के लिए ज्योतिषीय उत्तरों की जिज्ञासा रखते हैं। व्यक्ति की जन्मकुण्डली के अभाव में तत्काल पूछे गए प्रश्नों के दैवी उत्तर देने की भी अनेक विधियाँ हैं।

एक सर्वाधिक तर्कसंगत विधि उस समय और दिन को लिख लेने की है जबकि जिज्ञासु के मन में वह प्रश्न उत्पन्न हुआ। उस दिन और समय के आधार पर ज्योतिषी एक जन्मकुण्डली बना लेता है। यह प्रश्न की जन्म-कुण्डली है और 'प्रश्न कुण्डली' कहलाती है। यदि उस कुण्डली में शुक्र लग्न में अथवा दूसरे घर में, या गुरु तीसरे अथवा चौथे घर में हो, या बुद्ध और चन्द्र एक ही घर में हों, तो हितकर परिणामों की भविष्य-घोषणा की जा सकती है।

यदि प्रश्न कुण्डली की लग्न में शुभ ग्रह स्थित हो और उस पर दूसरे व तीसरे घर के स्वामी की दृष्टि पड़ती हो अथवा गुरु, शुक्र और चन्द्र ५वें या ७वें घर में हों, अथवा लग्न १ली, ४थी, ७वीं या १०वीं राशि में हो तथा इसमें सूर्य, बुध या शुक्र स्थित हों, तो परिणाम हितकर होगा।

व्यक्ति की जन्मकुण्डली के अभाव में, तत्काल पूछे गए प्रश्न का उत्तर

पता करने की एक विधि नव-ग्रहों की प्रतीक निम्नलिखित आकृति बनाना है :

४	३	८
९	५	१
२	७	६

प्रश्नकर्ता को ऊपर दिए गये किसी एक वर्ग में अँगुली रखने को कहो। यदि वह ३ अथवा ७ अंक पर अँगुली रखे, तो फल हितकर होगा।

यदि प्रश्नकर्ता की अँगुली ९, १ या ५ अंक पर ठहरती है, तो सफलता शीघ्र मिलेगी। यदि वह ८ या २ का अंक चुनता है, तो परिणाम अहितकर होगा। यदि उसकी अँगुली ४ या ६ अंक पर आती है, तो परिणाम देर से आएगा।

किसी व्यक्ति के विवाह की तिथि पता करने के लिए सर्वप्रथम उसकी जन्मकुण्डली में ७वें घर तथा उसके स्वामी की स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। यदि ७वाँ घर अथवा इसका स्वामी अगल-बगल से पाप ग्रहों के बीच में आ गया हो, तो विवाह देर में होगा, या होगा ही नहीं अथवा इसका परिणाम दु:खान्त होगा। जहाँ ७वें घर का स्वामी अथवा ७वाँ घर एक या अधिक पाप ग्रहों द्वारा दृष्टिगत होता है, वहाँ विवाह की बातचीत प्राय: टूट जाएगी और विवाह में विलम्ब होगा। जहाँ शनि ७वें घर का स्वामी नहीं हो और जहाँ शनि ७वें घर में हो अथवा (जन्मकुण्डली में कहीं भी) उस घर में हो जहाँ ७वें घर का स्वामी हो, तो विवाह में विलम्ब होगा। 'विलम्ब' शब्द का अर्थ समुदाय के अनुसार सानुपातिक होगा। विवाह की तिथि का निश्चय यह गणना करके किया जा सकता है कि लग्नेश व ७वें घर के स्वामी कब एकत्र होते हैं अथवा एक-दूसरे पर दृष्टिपात करते हैं। उसी समय लैंगिक सम्बन्धों के द्योतक शुक्र, चन्द्र तथा लग्न व ७वें घ- से

स्वस्थिति अथवा दृष्टिक्षेप के कारण पारस्परिक ३ : ११, ५ : ९, या ७ : ७ की लाभदायक योगस्थितियों में होना चाहिए।

विश्व के एक या अधिक राष्ट्रों तथा अन्तर्राष्ट्रीय-सम्बन्धों के भविष्यों का ज्ञान बताने वाली ज्योतिष-विद्या की शाखा का नाम विश्व ज्योतिष है।

विभिन्न राष्ट्रों की जन्मकुण्डलियाँ उपलब्ध हैं। भारत की परम्परागत तथा प्राचीन जन्मकुण्डली में जन्म-लग्न मकर है। कहने का अर्थ यह है कि भारत की प्राचीन जन्मकुण्डली में चन्द्र १०वें अंक के साथ है। जैसा पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है, मकर सर्वाधिक निकृष्ट-राशि है। यह जीवन को लज्जित एवं शोचनीय बनाती है। यह ज्योतिषीय-सत्य भारतीय-इतिहास से स्पष्ट रूप में पुष्ट होता है क्योंकि १००० वर्षों तक भारत पर क्रूर अत्याचार, नर-संहार, लूट-पाट, विध्वंस, विनाश, अपहरण, बलात्कार तथा बर्बर मुस्लिम नरराक्षसों द्वारा प्रत्यक्ष दासता तक हुई एवं बाद में अंग्रेजों द्वारा १५० वर्षों तक इस देश को लिपिकों और चपरासियों का देश बनाकर रख दिया गया।

जहाँ देश की पारम्परिक जन्मकुण्डली उपलब्ध न हो, वहाँ उसका शुभाशुभ उसके प्रधानमन्त्री, मन्त्रियों, राष्ट्रपति तथा सेनाध्यक्षों जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जन्मकुण्डली देखकर बताया जा सकता है।

पूर्व पृष्ठों में भलीभाँति स्पष्ट किए गए ज्योतिष विचार तन्त्र तथा इसके सामान्य सिद्धान्तों के प्रकाश में ज्योतिष के प्रत्येक निष्ठावान अध्ययन-कर्ता को जन्मकुण्डलियों के अध्ययन का अनुभव एकत्र करना चाहिए। उसे जन्मकुण्डलियों की एक सतत-वर्धमान पंजिका रखनी चाहिए जिसमें सभी व्यक्तियों के जीवन के विवरण यथा व्यक्तित्व, परिस्थितियाँ, आय आदि लिखे हुए हैं। तुलनात्मक अध्ययन से तो प्रत्येक अध्ययनकर्ता को ज्ञान हो जाना चाहिए कि किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की ग्रह-कुण्डलियों से उनकी विशिष्ट परिस्थितियाँ स्पष्ट दिखायी देती हैं। ऐसा अध्ययन एकाग्र करने वाला, रोचक तथा लाभदायक होगा। पुरानी परम्परागत पिष्टोक्तियाँ यदि अव्यवहार्य ज्ञात हों तो उनको त्याग देना चाहिए और नया स्पष्टी-करण खोज लेना चाहिए। एक सामान्य जिज्ञासु द्वारा ज्योतिषी को ठीक-ठीक तथा सहायक-मार्ग उपलब्ध कर देना भी बहुत महत्वपूर्ण है।

चूंकि ज्योतिषीय उत्तरों को विचारना पड़ता है, हल करना होता है तथा तर्कसंगत बनना पड़ता है, इसलिए ज्योतिषी के मस्तिष्क की पवित्रता तथा स्वस्थचित्तता सहायक होती है। एक पीड़ित अथवा अनेकाग्रचित्त ज्योतिषी में उस शान्ति एवं धैर्य का अभाव होगा जिसकी इस असीम विस्तृत जगत में मानसिक रूप से भ्रमण करने एवं 'ग्रहों के 'संन्देशों' को 'अध्ययन' करने के लिए नितान्त आवश्यकता होगी।

किसी ज्योतिषी का मन लोभवश दूषित अथवा असन्तुलित न हो इस कारण प्राचीन भारतीय ऋषियों और दृष्टाओं ने चिकित्सकों, शिक्षकों, पुरोहितों तथा ज्योतिषियों जैसे समाज की अनिवार्य सेवा करने वालों पर यह उत्तरदायित्व सौंपा था कि वे समाज की सेवा केवल निःशुल्क ही करें। युग व मूल्य तथा अभिलाषाएँ व जीवन मार्ग अत्यधिक बदल चुके हैं। प्राचीनकाल में, समाज के प्रतिभासम्पन्न हितैषी व्यक्ति अपनी वनस्थ एकान्त कुटियों में रहा करते थे और दान में उन्हें पुरस्कार-स्वरूप जो दुधारू पशु तथा हरे-भरे खेत मिलते थे, उन्हीं में संतोष किया करते थे। और अधिक वस्तु की उन्हें कोई आकांक्षा-अभिलाषा नहीं होती थी। किन्तु आधुनिक जीवन ने वह सब बदल दिया है और ज्योतिष के उपासकों को सामाजिक भंवर में फँसे होने के कारण अपने गम्भीर ज्योतिषीय अध्ययन तथा अन्वेषण में तल्लीन, एकाग्र होने के लिए कठिनाई से ही समय अथवा शान्ति मिल पाती है।

रुपये-पैसों की दृष्टि से तंग होने एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के कारण अन्यमनस्क बने रहने की स्थिति में ज्योतिषियों को मुक्त-हस्त से एवं साभार पुरस्कृत किया जाना चाहिए। इसके विपरीत हम देखते हैं कि केवल निर्धन व्यक्ति ही, जो कुछ भी दे पाने में असमर्थ होते हैं, ज्योतिषियों के पास जाते हैं। प्रचुर-राशि सम्पन्न व्यक्ति भी जब कभी ज्योतिषियों से परामर्श करते हैं, तब अपनी धन-सम्पत्ति एवं सत्ता के कारण उत्पन्न अकड़ व उपेक्षाभाव के कारण, उनको पहले ही बतायी गयी बातों के प्रति आभार-प्रदर्शन करने अथवा उनको केवल मात्र स्वीकार भी करने का कष्ट वे कभी करते नहीं। ज्योतिष में निपुणता एवं अन्वेषण के वर्तमान असंतोष-जनक स्तरों के लिए ऐसा अ-सौजन्य एवं उपेक्षाभाव भी आंशिक रूप में

उत्तरदायी है। प्राचीनकाल में राजा से लेकर रंक तक सभी व्यक्ति ज्योतिषियों को संरक्षण प्रदान करते एवं उनकी भविष्यवाणियों की विलक्षण यथार्थता, सत्यता का स्वयं अनुभव करने के उपरान्त प्रमाणित भी करते थे। यदि ज्योतिष को यथार्थता के वही प्राचीन कीर्तिमान पुनः प्राप्त करने हैं, तो ज्योतिषियों और उनके विज्ञान की उपेक्षा के कारण इसको क्षीयमाण न होने दिया जाना चाहिए।

अपनी ज्योतिषीय-समस्याओं के समाधान के लिए ज्योतिषियों के पास पहुँच करने वाले कार्यार्थी लोग भी प्रायः गलत ढंग से पहुँच करते हैं और इसीलिए असन्तुष्ट वापिस चले आते हैं। कुछ ऐसे हैं जो अपने अभिमान में एवं धृष्टता में अत्यन्त धृष्टतापूर्वक स्वयं ही किसी विशेष ज्योतिषी की निपुणता को परखने के लिए स्वयं को न्यायाधीश अथवा परीक्षक बनाए फिरते हैं अथवा ज्योतिष के विज्ञान की भर्त्सना करना ही स्वयं का जीवनोद्देश्य मानते हैं। इनमें से कुछ व्यक्ति कुछ विशेष ज्योतिषियों के प्रति अपने निजी वैरभाव का प्रतिशोध उनके विज्ञान की हीनता को प्रगट करके करते हैं। कुछ लोग ज्योतिष के विरुद्ध अपना शब्दाडम्बर इसलिए करते हैं क्योंकि उनके अभिमान को इस कथन से ठेस पहुँचती है कि ईश्वर द्वारा पलक झपकते ही रचित तथा दूसरे ही क्षण उसकी इच्छानुसार विनष्ट जीवन की विभिन्न प्रतिमाओं से परिपूर्ण इस संसार में वे केवलमात्र बन्धन एवं कठपुतली ही हैं।

लोगों का एक और वर्ग ज्योतिष और ज्योतिषियों को अत्यन्त हीनता के भाव से देखते हैं। उनका दृष्टिकोण ज्योतिषियों, सँपेरों, पशु-प्रशिक्षकों तथा देशी-नटों के प्रति समान है। वे ज्योतिष को मनबहलाव और ज्योतिषी को कौतुक की वस्तु के रूप में देखते हैं, जिसकी विलक्षण भविष्यवाणियाँ उनके व्यर्थ के समय की ऊब को समाप्त करने अथवा उनके मित्रों को एक नवीन वस्तु द्वारा मनोरंजन प्रदान करने में सहायक होती हैं। इस प्रकार के दृष्टिकोण से ज्योतिषी को संरक्षण प्रदान करते हुए वे एक-या-दो सिक्के उसकी ओर फेंककर अपनी आत्मा को शान्ति दे लेते हैं। अविश्वासियों के क्लेशकर जिहादी अतिक्रमणों तथा लांछनों के दृष्टिकोण से अधिक दुःखावह तथा व्याकुल करने वाली बात ज्योतिषियों

के लिए और कोई नहीं है।

दैवी इच्छा तथा प्रारब्ध का दर्शन कराने वाला सूक्ष्म, अगाध विज्ञान होने के कारण इसकी ओर अत्यन्त विनम्रता, आस्था तथा शुद्धि के भाव से विचार करना चाहिए। अच्छी बात तो यही होगी कि ये अविश्वासी लोग अपने विचारों को अपने तक अथवा अपने वर्ग तक ही सीमित रखें और ज्योतिष व ज्योतिषियों की गूढ़ता तथा श्रेष्ठता का उल्लंघन न करें। यदि वे अपने भविष्य के स्वामी तथा स्वर्ग-निर्माता होने के प्रति अत्यधिक सुनिश्चित, विश्वासी हैं, तो उन्हें अपनी समस्त शक्तियाँ विश्व को जीतने अथवा शासन करने में लगानी चाहिए, या फिर अपने दुःखी जीवनों को सुधारने अथवा अपना स्वयं का स्वास्थ्य ऐसा बढ़िया बनाने का यत्न करना चाहिए कि वृद्धावस्था, रोग अथवा मृत्यु सदैव के लिए समाप्त हो जाएँ। उनके लिए सिर-दर्द करने वाली तथा जिसके सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है, ऐसी मान्यताप्राप्त अध्ययन की शाखा के उन्मूलन में उन्हें अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए अथवा अपना सन्तुलन नहीं खोना चाहिए।

विज्ञान के रूप में ज्योतिष की जीविष्णुता में विश्वास करने किन्तु इसको गम्भीरतापूर्वक ग्रहण न करने वालों के लिए श्रेयस्कर है कि वे अपने विश्वास को विज्ञान में श्रद्धापूर्ण आस्था में परिवर्तित कर लें।

ज्योतिष में पूर्ण आस्थावान तथा पूर्णतः गम्भीरतापूर्वक परिणाम जानने की इच्छा वाले भी ज्योतिषी का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि वे उनका उपयोग गलत रूप में करते हैं। वे प्रायः अपनी जन्मकुण्डली उन ज्योतिषियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं और यह इच्छा रखते हैं कि ज्योतिषी उनके विगत और भविष्य दोनों ही युगों का पूर्ण विवरण उनको तुरन्त बता दे। यह भी मान लिया जाय कि ज्योतिषी को अपने अध्ययन में पूर्ण निपुणता प्राप्त हो चुकी है, तो भी किसी जीवन की घटनाओं का गणितीय अनुमान लगाने में तो उसे वर्षों का समय लगेगा ही। तब फिर उस ज्योतिषी से यह कैसे आशा लगायी जा सकती है कि वह जब कभी दो-चार क्षणों के लिए अपनी धुँधली, अपूर्ण जन्मकुण्डली लेकर चले आने वाले अभ्यागत को स्वतःस्फूर्त हो जीवन की भविष्यवाणियाँ तुरन्त बता दे ?

इसके अतिरिक्त, किसी भी ज्योतिषी से उसके विषय का पूर्ण

अधिकारी होने की अपेक्षा नहीं की जा सकती, जैसे सभी ओर चिकित्सक-ही-चिकित्सक तथा अर्थशास्त्री-ही-अर्थशास्त्री होने पर भी यह संसार जरा भी तो स्वास्थ्य और समृद्धि की दृष्टि से आदर्श-स्थिति को प्राप्त नहीं हुआ। फिर भी, उनका अपना उपयोग है— यही बात ज्योतिषियों की है। संसार को केवल ज्योतिषियों से ही निपुणता के मामले में अन्य लोगों से घोर विभिन्नता के स्तर की अपेक्षा क्यों करनी चाहिए ? अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि अध्ययन की उस शाखा से ऐसे अतुलनीय तथा परिपूर्ण स्तरों की अपेक्षा की जाती है जिसके आधुनिक राज्य-शासन अपने आय-व्ययक नें एक कौड़ी भी नहीं रखता, और जो स्वयं को प्रतिभावान तथा उदार समझते हैं, वे केवल इसकी निन्दा करने अथवा उपेक्षा और हानि पहुंचाने के अतिरिक्त और कुछ करते ही नहीं है।

ज्योतिष को यथार्थ सही भविष्यकथन की अपेक्षा करने में कोई गलती नहीं है किन्तु उसी मापदण्ड से समाज को भी इस विज्ञान के अध्ययन के लिए प्रोत्साहन तथा सहायता प्रदान करने में सभी कुछ करना चाहिए।

जन्मकुण्डलियों से भविष्य जानने की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को ज्योतिषी के सम्मुख जाकर सन्तति, नौकरी, स्वास्थ्य, घरेलू-दुःख-स्थिति, परीक्षा में सफलता, यात्रा, प्रेम, व्यापार में लाभ अथवा अन्य बातों के सम्बन्ध में विशिष्ट प्रश्न करने चाहिए। किन्तु केवल जन्मकुण्डली ज्योतिषी के सम्मुख रखकर उससे कुछ भी बता देने का आग्रह करना उसी प्रकार है कि समुद्र में नौका पर सवार होकर नाविक से कहना कि जिस दिशा में इच्छा हो, उधर ही चल पड़ें। अन्तरिक्ष भी विशाल अनन्त सागर जैसा है, और जब तक उसमें कोई निश्चित प्रश्न करके ज्योतिषी को विचार करने की दिशा प्रदान नहीं की जाती, तब तक किसी के भी भविष्य के सम्बन्ध में बिना विचारे तथा तुरन्त बता पाना ज्योतिषी के लिए कठिन है। उसके अनेक जिज्ञासुओं के अतिरिक्त उसकी अनेक घरेलू तथा अन्य चिन्ताएँ भी होती हैं। ऐसी परिस्थितियों में एक विशिष्ट प्रश्न ज्योतिषी को विचार करने के लिए उपयुक्त दिशा व आधार प्रस्तुत करता है। अतः, ज्योतिषियों का सर्वाधिक लाभ, उपयोग करने की दृष्टि से सभी लोगों को उनसे उन्हीं वस्तुओं के सम्बन्ध में विशिष्ट प्रश्न करने चाहिए जो उनको

अथवा अन्य लोगों के भविष्य के प्रति उनको सर्वाधिक चिन्तित कर रही हों।

ज्योतिषी को पर्याप्त मात्रा में पुरस्कृत भी करना चाहिए, और उसकी भविष्यवाणियों की सत्यता अथवा अन्यथा के सम्बन्ध में भी उसे स्पष्ट रूप में बता दिया जाना चाहिए। वह अन्वेषण को प्रोत्साहित करता है, और अन्य भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में उसका मार्गदर्शन करता है। यदि उसे बता दिया जाय कि उसकी भविष्यवाणी सत्य है, तो उसे अपनी तर्क-प्रणाली पर निश्चय हो जाता है। यदि उसने गलती कर दी है, तो उसे अपनी गणितीय तर्क-प्रणाली में दोष ढूँढ़ते का अवसर प्राप्त हो जाता है।

एक व्यक्ति एक बार हमारे पास आँखों में आँसू भरे हुए आया। वह कपड़े के कारखाने का एक धनी कर्मचारी था जिसने एक उच्च-पद का उपभोग किया था, किन्तु वृद्धावस्था में अकस्मात नौकरी से निकाल दिए जाने पर अत्यन्त पीड़ितावस्था में आ पड़ा था। हमने उसे बताया कि इस विस्मृति, बे-नौकरी तथा पीड़ितावस्था में उसे १$\frac{1}{2}$ वर्ष बिताना पड़ेगा तथा उसके बाद उसका पूर्व-पद उसे पुनः प्राप्त हो जाएगा। घटनाएँ ठीक उसी प्रकार हुईं जैसी बतायी गयी थीं, और वह पूर्ववत समृद्ध हो गया, किन्तु वह न तो कभी आया और नहीं कभी उसने कृतज्ञता का एक भी प्रशंसात्मक शब्द या सन्देश भेजा जिसमें दुःखद-स्थिति के समय निःशुल्क दी गयी ज्योतिषीय सहायता की यथार्थता वर्णन हो।

आकांक्षी ज्योतिषी को हम परामर्श देंगे कि अध्ययनार्थ प्रस्तुत जन्मकुण्डली की यथार्थता को परख लिया जाय। यदि उसके पास पंचांग तथा नक्षत्र-तिथियाँ उपलब्ध हों, तो वह देख सकता है दिए गए दिन व समय के अनुसार ही लग्न व अन्य ग्रहादि जन्मकुण्डली में दर्शाये गए हैं। जिस वर्ष की तिथियाँ आदि चाहिए, यदि वे उपलब्ध न भी हों, तो भी हमारे द्वारा पूर्व अध्ययन में बताए गए अन्य सीधे-साधे उपायों से जन्म-कुण्डली की सत्यता को जाँच लिया जाय। इस प्रकार की पड़ताल आवश्यक है क्योंकि हमारा अनुभव यह रहा है कि जन्मकुण्डलियों की सत्यता के सम्बन्ध में अत्यन्त निष्ठापूर्वक कहे गए उद्घोष भी गलत सिद्ध हुए हैं। जन्मकुण्डलियों की अनुकृति करने में अथवा उनको मूल रूप में बनाने में ही कुछ गल्तियाँ रह जाती हैं और वे जन्मकुण्डली को अयथार्थ, असत्य तथा अवैध बना देती हैं।

१५

राहु और केतु के प्रभाव

जैसा पहले ही बताया जा चुका है, राहु और केतु केवल मात्र अमूर्त स्थल हैं जहाँ पर पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए चन्द्र-पथ और सूर्य की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी-पथ पर एक-दूसरे को काटते हैं। और फिर भी मानव-प्रारब्ध का भाग्य-निर्माण करने में उनका उतना ही अंश है, जितना भारतीय जन्मकुण्डलियों में प्रविष्ट अन्य आकाशीय सप्त-ग्रहों का। राहु और केतु का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि सूर्य की परिक्रमा में चन्द्र और पृथ्वी एक सामान्य धुरी पर परस्पर गुम्फित हैं। राहु (और परिणामस्वरूप केतु) प्रति १८ महीनों में नामावर्त घूमता है।

दैव की ओर से अनुशासित मानव-प्रारब्ध का घटी-यन्त्र राहु और केतु के प्रभावों में देखा जा सकता है। यहाँ नीचे हम कुछ मार्ग-दर्शिका रेखाएं प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठकगण ज्योतिषीय-भविष्यवाणियों के लिए उनके पास आयीं अन्य जन्मकुण्डलियों के अपने अनुभवों से इन रेखाओं को और परिपुष्ट कर सकते हैं।

राहु और शनि, लग्न में स्थित होने पर, व्यक्ति को मादक-वस्तुओ का पीने वाला बनाते हैं। वह व्यक्ति कठोर दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। वह व्यक्ति (पुरुष या महिला) स्वयं माता-पिता पर भी बोझ हो जाता है। वह कान की बीमारियों से भी पीड़ित रहता है।

लग्न में केवलमात्र राहु स्थित होने पर व्यक्ति को चैतन्य, प्रभावशाली मुखाकृति मिलती है। ऐसे व्यक्ति को सिर-दर्द का रोग होता है। अपने

सम्पर्क में आने वालों को अथवा अपने सम्बन्धियों को, ऐसा व्यक्ति धोखा भी दे सकता है और सन्तप्त भी कर सकता है। वह कामुक होना भी बहुत संभव है। ऐसे व्यक्ति प्रायः इकहरे शरीर तथा वेश-भूषा की दृष्टि से बने-ठने रहते हैं। लग्न में, शुभराशियों में राहु वाली महिलाएँ अच्छी, योग्य गृहिणियाँ तथा प्रशासिकाएँ होती हैं।

लग्न में केतु व्यक्ति को विद्रूप शरीर प्रदान करता है। ऐसे व्यक्ति की मुखाकृति पर कोई स्थायी क्षतांक अथवा रोग होता है; व्यक्ति कायर, शीघ्र रुष्ट होने वाला, दरिद्र परिवारोत्पन्न तथा प्रायः वैवाहिक-चिन्ताओं से ग्रस्त होता है।

राहु दूसरे घर में होने पर प्रभावकारी व्यक्तित्व प्रदान करता है। दूसरे घर में राहु वाली महिलाएँ प्रायः बहुत अधिक चित्ताकर्षक, मोही होती हैं। राहु और शुक्र इकट्ठे होने पर प्रचुर मात्रा में धन-संग्रह कराते हैं किन्तु व्यक्ति का पारिवारिक-जीवन प्रायः अ-सुखद होता है। इसके विपरीत, केतु किसी पाप-ग्रह के साथ यहाँ होने पर व्यक्ति को अतिव्ययी बनाता है। राहु या केतु, मेष या वृश्चिक-राशियों में दूसरे घर में होने पर वाणी को अपघात पहुँचाते हैं। राहु किसी पाप-ग्रह की राशि में दूसरे घर में व्यक्ति को प्रायः अकिंचन, दरिद्र बनाता है। दूसरे घर में राहु या केतु व्यक्ति को दोषयुक्त दृष्टि एवं भ्रमणशील वृत्तिमय बनाता है। ऐसा व्यक्ति कोई बात गुप्त नहीं रख सकता। यदि वह पुरुष है, तो वह अपनी पत्नी के आदेशानुसार चलेगा। केतु धनु या मीन राशि में दूसरे घर में होने पर सुखी जीवन-यापन कराता है। शत्रु-राशि में होने पर ऐसा केतु मुख के रोगों, धन की क्षति तथा पारिवारिक-विग्रह का कारण होता है।

राहु तीसरे घर में होने पर व्यक्ति को वीर, सफल बनाने वाला, तथा आराम और भोग-विलास का जीवन देने वाला होता है। वह प्रायः भाइयों अथवा बहिनों को खो बैठता है। राहु सिंह-राशि में अथवा अन्य किसी भी सम-राशि में भ्रातृत्व सुख के लिए अच्छा है। अन्य मामलों में यह भाइयों अथवा बहिनों से विग्रह कराता है। राहु दूसरे घर में किसी शुभ-ग्रह की राशि में होने पर फोटोग्राफी या अन्य कलात्मक अभिरुचियों तथा विभिन्न तकनीकी कार्यों में बुद्धि अग्रसर करता है।

उसे अपने भाइयों या बहिनों के लिए भी धन व्यय करना पड़ता है। केतु तीसरे घर में होने पर व्यक्ति को वीर किन्तु गैर-मिलनसार वृत्ति का बनाता है। उसको प्रायः समाज में सम्मान प्राप्त होता है चाहे वह प्रायः निर्दयी, प्रतिकारी और षड्यन्त्रकारी होता है। वह गुप्त गति-विधियों वाला तथा मानसिक-रूप में असन्तुष्ट भी होता है। उसका नैतिक-जीवन प्रायः विकृत, दूषित होता है। वह प्रायः कान और हाथों के रोगों से पीड़ित रहता है। ऐसा व्यक्ति अधेड़ावस्था में बहरा होना सम्भव है, और अपने भाइयों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध नहीं रखेगा। किन्तु तीसरे घर में केतु व्यक्ति को किसी विधा में दक्ष, एक गुप्त पापी तथा उदास बनाता है।

राहु चौथे घर में कल्याणकारी राशि में होने पर व्यक्ति को पैतृक-सम्पत्ति प्रदान करता है। ऐसे व्यक्ति आम तौर पर छोटे उपनगरों में रहते हैं। यदि राहु चौथे घर में मकर, कुम्भ, मीन, धनु, मेष, वृश्चिक, कर्क, और तुला-राशियों में है, तो व्यक्ति किराये के मकान में अथवा आश्रित के रूप में दुःखी रहेगा। अपना स्वयं का मकान उसे मानसिक-शान्ति प्रदान करेगा। राहु चौथे घर में होने पर पूर्ण मातृ-प्रेम तथा साहचर्य में बाधक होता है। यह व्यक्ति को दुःखी एवं घुमक्कड़ बनाता है। सम्बन्धियों के साथ व्यापारिक-अनुबन्ध करने पर प्रायः वित्तीय हानि होती है। केतु चौथे घर में अकेला होने पर ही इसी प्रकार की दुःखद स्थितियों का जन्मदाता होता है।

राहु अशुभ राशियों में अथवा केतु किसी भी राशि में ५-वें घर में होने पर असुखद लैंगिक-जीवन तथा सन्तति सम्बन्धी दुर्भाग्यों का देने वाला होता है। गर्भपात, सन्तति में शारीरिक-विकृतियाँ, कई गुणे जन्म, अपरि-पक्व-मृत्यु अथवा घातक दुर्घटनाएँ होती हैं यदि केतु के साथ कोई अन्य पापग्रह की दृष्टि पड़ती है। राहु विरुद्ध-राशि में होने पर मित्रता में हानि, पेट-दर्द तथा मानसिक बुद्धिभ्रंश का देने वाला होता है। केतु किसी महिला की जन्मकुण्डली में ५वें घर में होने पर दारिद्र्य तथा दुःखी विवाहिता जीवन का कारण होता है। राहु शुभ राशियों में ५वें घर में होने पर सीमित-सन्तति तथा अच्छी शिक्षा देता है। किन्तु विरोधी राशियों में होने पर

यह उच्च-प्रतिभा के होते हुए विद्या (शिक्षा) में बाधक होता है। राहु ५वें घर में प्राय: ललित-कलाओं में, हस्तशिल्प में तथा फोटोग्राफी में मेधा का द्योतक होता है।

छठा घर 'शत्रुओं का घर' होने के कारण इस घर में राहु अथवा केतु होने से व्यक्ति बहादुर बनता है। वह अपने विरोधियों पर छाया रहता है। मित्रों की ही भाँति उसके शत्रु भी होते हैं। व्यक्ति दृढ़ एवं समृद्ध होता है। छठे घर में स्थिति राहु कमर के दर्दों का कारण होता है। छठे घर में केतु होने का परिणाम मामा अथवा ऐसे ही अन्य सम्बन्धों की शीघ्र हानि अथवा उनसे सम्बन्ध तोड़ना होता है। व्यापार अथवा व्यवसाय में यह श्रेष्ठ, शासकीय-पद का देने वाला होता है। छठे घर में किसी बुरी राशि में होने पर राहु या केतु दृष्टि-भ्रंश करता है अथवा नेत्र-पीड़ा का कारण होता है। ऐसे व्यक्ति के दाँत प्राय: खराब होते हैं।

७ वें घर में राशि क्रमांक १, ४, ८, ६, १०, में राहु होने का परिणाम दो विवाहों का देने वाला हो सकता है, और ऐसी पत्नी प्राय: कर्कशा, कलहप्रिया होती है। राशि क्रमांक ३, ५, ६ में राहु होने पर विवाह में विलम्ब अथवा इसकी समाप्ति ही हो जाती है। ७वें घर में केवल राहु ही होने पर व्यक्ति कामुक होता है। यदि राहु के साथ कोई अन्य पाप-ग्रह हो अथवा वह राहु पर दृष्टि रखता हो तो वह व्यक्ति को गोपनीय पापकर्मी बनाता है। किन्तु वृश्चिक राशि में ७वें घर में होने पर व्यक्ति को क्रमशः समृद्ध बनाता है किन्तु शारीरिक व्याधियों के कारण युगल-दम्पति चिन्तित बना रहता है। केतु अन्य किसी भी राशि में ७ वें घर में अति शीघ्र यात्राओं, धन-हानि तथा वैवाहिक अनबन का कारण होता है। ऐसे व्यक्ति को जल से जोखिम रहता है और वह साझेदारी के प्रतिष्ठानों में हानि उठा सकता है।

८वें घर में राहु या केतु होने से व्यक्ति को वनैले पशुओं, तीक्ष्ण-दन्त या रेंगने वाले जन्तुओं से खतरा रहता है। पालतू पशु भी खतरनाक सिद्ध होते हैं यदि किसी का राहु ८वें घर में राशिक्रमांक २, ४; ८ या १२ में हो। किन्तु प्राय: व्यक्ति दीर्घायुष्य होता है। लैंगिक-अवयवों के रोग ८ वें घर में राहु या केतु होने से होते हैं। महिलाओं के नवजात शिशु की

हानि के कारण प्रसव में कष्ट, जोखिम अथवा निःसारता उपलब्ध होते हैं। व्यक्ति का झुकाव अध्यात्म की ओर होता है।

९वें घर में राहु भाग्य का दाता होता है। राशि क्रमांक २, ३, ४, ५, या ६ में यह विशेष हितकर होता है। अन्य राशियों में भी यह विपत्तियों और विरोध में से समृद्धि की ओर ले जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने मूलस्थान से दूर रहकर समृद्धि को प्राप्त होता है। वह अपनी धार्मिक-आनुवंशिकता का सम्मान करता है और ३३ वर्षीय आयु पूर्ण कर लेने के बाद समृद्ध होता है। ऐसे व्यक्ति को भाइयों से दूर रहना पड़ता है अथवा उनका साथ छोड़ना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति यात्रा बहुत करता है, विशेषरूप में ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक केन्द्रों की। ९वें घर में केतु होने पर व्यक्ति अन्य देशीयों द्वारा सम्मानित होता है। व्यक्ति में अपना धन, समय, तथा शक्ति सामाजिक कार्य में दान करने की ओर झुकाव होता है। राहु ९वें घर में होने पर व्यक्ति को यशस्वी बनाता है विशेषरूप में तब जबकि यह राशि क्रमांक ३, ४, ५, या ६ में हो, तथा व्यक्ति को उच्चपदासीन करता है।

१०वें घर में राहु या केतु होने पर व्यक्तियों को उतना पैतृक-सुख नहीं मिलता जितना सामान्य रूप में अपेक्षित होता है। वह पेट के रोगों से पीड़ित होता है। अन्यथा, राहु १०वें घर में व्यक्ति को सौभाग्य, शक्ति तथा महत्ता प्रदान करता है। राहु १०वें घर में राशि क्रमांक २, ३, ५, ८, व १० में होने पर व्यक्ति को राजनीतिज्ञ बनाता है। राहु या केतु १०वें घर में विरोधी राशि में होने पर तथा एक या अधिक पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ने पर व्यक्ति को कार्यालय से निलम्बित अथवा निष्कासित कराता है। १०-वें घर में राहु एक बहुत बड़ी सम्पदा है जो व्यक्ति को अकिंचनावस्था से वैशिष्ट्य तथा धनाढ्य की स्थिति में पहुँचा सकती है। किन्तु १०वें घर में केतु बहुत सहायक नहीं है। राहु व्यक्ति के जीवन में हितकर परिवर्तन उसकी आयु के १९, ३८ और ५७वें वर्ष में लाता है। १०वें घर में राहु व्यक्ति को बड़ा भारी व्यापारिक कार्य करने के योग्य बनाता है।

केतु ११वें घर में होने पर. नेत्रों और गुप्त अवयवों के रोग प्रदान

करता है और व्यक्ति को अतिव्ययी बनाता है। राहु या केतु ११वें घर में होने पर सन्तति से सम्बन्ध रखने वाले दुःख देता है। यदि किसी के स्वस्थ एवं दीर्घायु बच्चे हों, तो वे प्रगल्भ तथा सुधारने की सीमा से बाहर हो जाते हैं। यदि राहु या केतु किसी पाप-ग्रह के साथ ११वें घर में हो तो कम-से-कम प्रथम सन्तति अत्यन्त बोझ एवं खतरे का कारण बन जाती है। राहु ११वें घर में समराशि में होने पर व्यक्ति को एक अच्छा, बहु-मूल्य वाहन, शकट अथवा सवारी और सभी प्रतिष्ठानों में सफलता एवं लाभ देता। राहु ११वें घर में केतु की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी तथा हितकारी होता है। राहु व्यक्ति को प्रचुरयोगी बनाता तथा वित्तीय चिन्ताओं से दूर रखता है।

राहु या केतु १२वें घर में होने पर व्यक्ति को शत्रुओं से संरक्षण प्राप्त होता है और वह अध्यात्म की ओर झुकता है। केतु १२वें घर में होने से व्यक्ति को आनन्दविहीन, कटु-प्रकृति, परास्त, अतिव्ययी तथा गुप्तांगों का रोगी बनाता है। १२-वें घर में राहु केतु से भी बुरा है। यदि यह विषम राशियों में हो, तो नेत्रों और पैरों के रोगों का जनक होता है और व्यक्ति के जीवन में मध्यम-स्तरीय बनाए रखता है। १२वें घर में राहु धन और भूमि की हानि करता है। व्यक्ति को अपने नाते-रिश्तेदारों के लिए बहुत खर्च करना पड़ता है।

लग्न में राशि क्रमांक २, ६ या १० में राहु वाली महिलाएं भाग्य-शालिनी सिद्ध होती हैं। किसी भी राशि में लग्नस्थित राहु महिला को कामुख,आराम-प्रिय, अनुशासित, ढंग से काम करने वाली और प्रतिकारी-प्रतिशोधी बनाता है। उनके पति भी उन पर लट्टू होते हैं। लग्न में वृश्चिक राशि में राहु होने पर सन्तति-मृत्यु और वैवाहिक असन्तोष होते हैं। ऐसी महिलाएँ स्थूल, ईर्ष्यालु और पियक्कड़ रुचियों वाली होती हैं। लग्न में २, ३, ४, ५, ६, ७, और १०वीं राशि में राहु वाली महिलाएँ भाग्यशालिनी, योग्य, शोभाचार-प्रबुद्ध तथा उद्योगी होती हैं।

लग्न में केतु वाली महिलाएँ ऊँची और कठोर परिश्रमी होती हैं, किन्तु अति भाग्यशाली सिद्ध नहीं होतीं। उन्हें जीवनभर अन्धाधुन्ध हाथ चलाने पड़ते हैं; विवाह देर में होते हैं।

लग्न में राशि क्रमांक १, ५ अथवा ९ में राहु वाली महिलाएँ पुरुष-गुणोंमय होती हैं। राहु ५वें घर में होने पर अनियमित मासिक-धर्म तथा गर्भाशय की पीड़ाएँ देता है। यह महिला को अच्छे वस्त्रों का शौकीन, आराम-प्रिय और उच्च जीवन-भोगी इच्छाएँ रखने वाली बनाता है। वे महिलाएँ, जिनके ५वें घर में राहु राशि क्रमांक २, ३, ६, ७ या १२ में होता है, अत्यधिक शोभाचार-प्रबुद्ध होती हैं किन्तु परम्परा-बद्ध होने के कारण मार्ग-च्युत नहीं की जा सकतीं।

राहु ५वें घर में यदि शुक्र के साथ राशि क्रमांक ४, ८, या १२ में हो तो ऐसी महिला प्रेम के मामले में फँस जाती है। राशि क्रमांक २, ३, ६ या ७ में राहु वाली महिलाएँ किसी कला में निपुण, शोभाचार-प्रबुद्ध होती हैं किन्तु परम्पराओं में बँधी होने के कारण अपने नैतिक चरित्र के सम्बन्ध में पर्याप्त सावधान होती हैं। ५वें घर में केतु वाली महिला अत्यन्त भावुक, सादा, अनाडम्बर-प्रिय होती हैं और किसी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट नहीं करती।

८वें घर में राहु या केतु वाली महिलाएँ स्त्री-रोगों तथा प्रसव-सम्बन्धी रोगों से पीड़ित होती हैं। यदि राहु या केतु राशि क्रमांक १, ४, ८ या १२ में हो, तो शल्यक्रिया अवश्यम्भावी हो जाती है।

८वें घर में केतु राशि क्रमांक १, ४, ५, ८, ९ ता १२ में होने पर चर्म रोगों का कारण होता है। यदि राहु अथवा केतु मंगल अथवा शनि जैसे किसी अन्य पाप-ग्रह के साथ होता है, तो यह श्वेतकुष्ठ, कोढ़ अथवा ग्रान्थिक क्षयरोग जैसे भयंकर किसी रोग को जन्म देता है। ऐसे रोगों के होने की सम्भावना राहु या केतु की महादशा अथवा अन्तर्दशा के काल में होने की है। गुरु और बुध की अन्तर्दशाएं फिर भी कुछ सहन योग्य हैं।

१६

उदाहरणस्वरूप जन्मकुण्डलियाँ

हम अध्ययनशील व्यक्तियों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के विचार से इस अध्ययन में कुछ विशिष्ट लक्षणों से युक्त जन्मकुण्डलियाँ दे रहे हैं जिससे इनके अध्ययन में पर्याप्त सहायता मिल सके।

हम जन्मकुण्डलियाँ बनाने की भारतीय विधि का अनुसरण करते हुए ही विभिन्न ग्रहों के परिचय उनके नामों के आद्याक्षरों से करेंगे। यह निम्न प्रकार है :

सूर्य = सू०
चन्द्र = च०
मंगल = मं०
बुध = बु०
गुरु = गु०
(अथवा बृहस्पति = बृ०)
शुक्र = शु०
शनि = श०
राहु = रा०
केतु = के०

(१) एक समृद्ध घराने में उत्पन्न तथा प्रचुरमात्रा में धन अर्जन करने वाले स्थापत्य कलाविद से विवाहित महिला चिकित्सा की जन्मकुण्डली :

९वें घर का स्वामी चन्द्र अपनी ही राशि में है। ५वें घर का स्वामी लग्न में है और ५वें और ९वें, दोनों, घरों पर दृष्टि रखता है। ३रे और ४थे घरों का स्वामी शनि उच्चस्थ है।

(२) भारतीय सिविल सेवा (आई. सी. एस.) के एक अधिकारी की
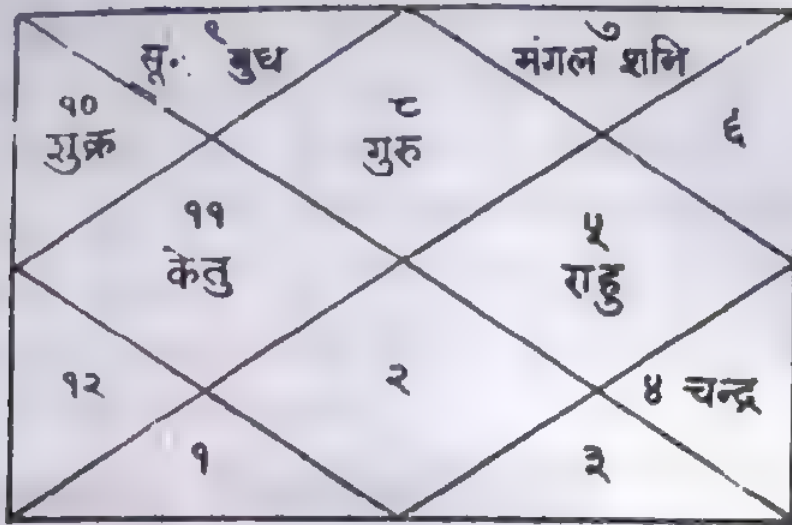
पत्नी की जन्मकुण्डली। इसके कोई सन्तान न थी क्योंकि ५वें घर का स्वामी गुरु जन्म के समय न केवल नीचस्थ है, अपितु प्रतीपगति है। लग्नेश मंगल १०वें घर में है और लग्न पर दृष्टि डालता है। १०वें घर का स्वामी सूर्य ९वें घर में है।
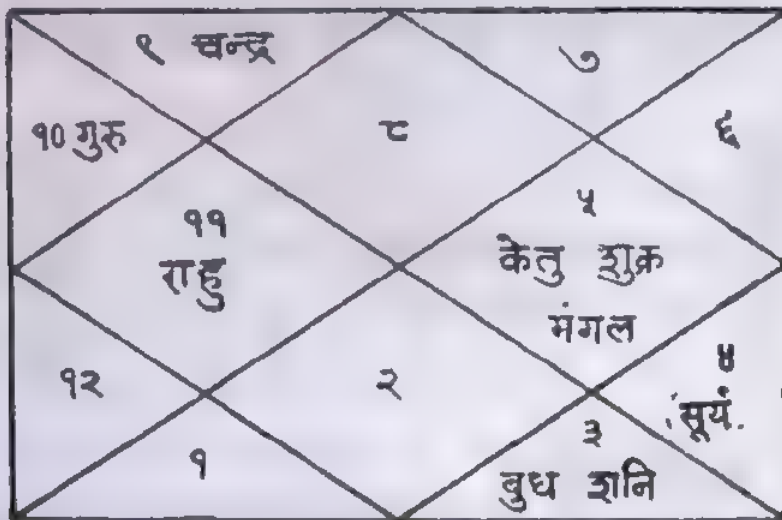
(३) नीचे एक छोटे भारतीय रजवाड़े की साम्राज्ञी की जन्मकुण्डली है। यह कुण्डली स्पष्ट रूप में सिद्धान्त को दर्शाती है कि कर्क लग्न भाग्यशाली होती है विशेषकर तब जबकि इसका स्वामी चन्द्र तुला राशि (शुक्र द्वारा अनुशासित) में स्थित होकर ऐश्वर्य और समृद्धि का द्योतन करता है। (धन के घर) दूसरे घर में चार ग्रह जन्मकुण्डली के ७ घरों के स्वामी
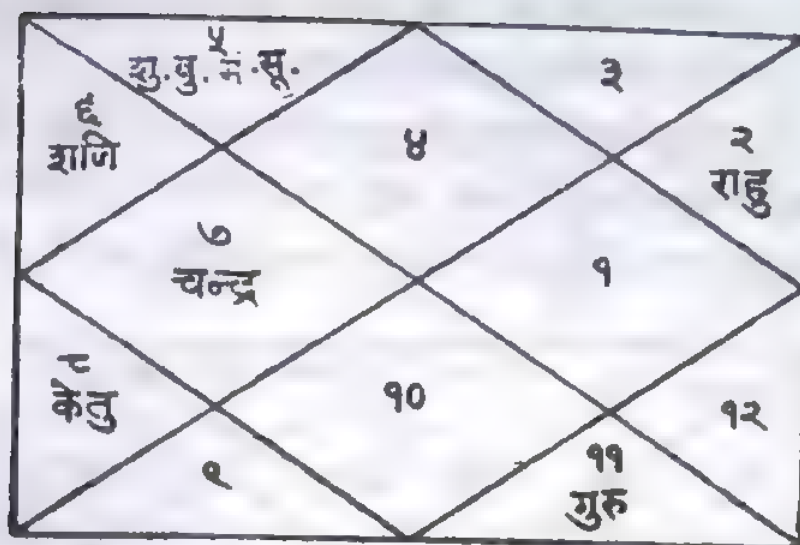
होकर 'धनी' समूह बनाते हैं, विशेषकर तब जबकि सूर्य स्वयं अपने ही घर में है।

(४) यान्त्रिक कारखाने के धनी उद्योगपति की पत्नी की जन्मकुण्डली। शनि लग्न में उच्चस्थ होने के साथ ही ४थे और ५वें घरों का स्वामी है। दूसरे घर में ५ ग्रहों का योग विशाल धन का द्योतक है। १०वें घर का

स्वामी चन्द्र उच्चस्थ है किन्तु राहु के साथ होने से व्यवसाय में घोर आघात का सूचक है। तथ्य रूप में एक बार ऐसा हुआ भी, जब साझेदारों ने धोखा दे दिया।

उपर्युक्त दो जन्मकुण्डलियाँ 'धन के घर में' अर्थात् दूसरे घर में अनेकों ग्रहों के सामूहिक योग के महत्व को स्पष्ट दर्शाती हैं। ज्योतिष की विज्ञान के रूप में वैधता को तो एक सामान्य व्यक्ति भी यह देखकर माना जाएगा

कि दूसरे घर में अनेकों ग्रहों का योग जिस कुण्डली में होगा, वह व्यक्ति समाज का धनी तथा सम्मानित सदस्य होगा।

(५) यह जन्मकुण्डली उस महिला की है जो अपने पति के दुर्व्यवहार के कारण अपने माता-पिता के पास लौट आयी थी और जिसने अपना शेष जीवन अपने भाई के घर में ही बिताया था। ज्योतिषीय कारण तो स्पष्ट है।
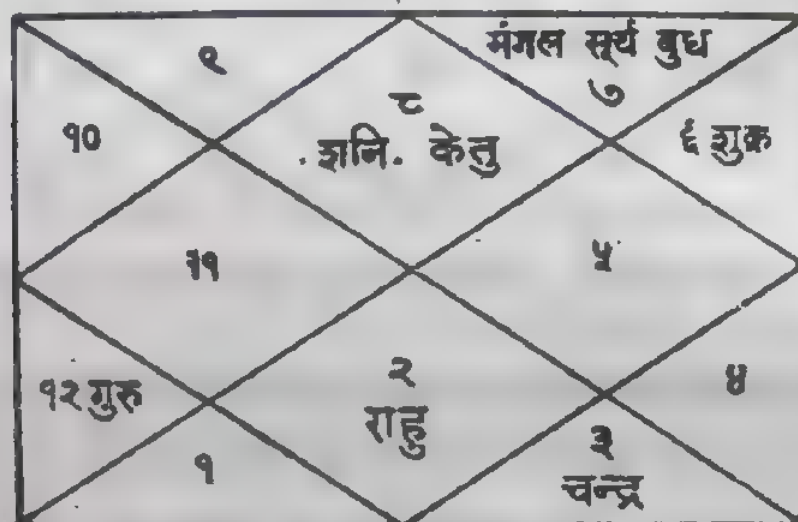
७वां (पति-पत्नी की जोड़ी का) घर राहु-मय है, शनि और केतु लग्न से इस पर (७वीं) दृष्टिपात कर रहे हैं। यह भी ध्यान रखने की बात है कि शनि वृश्चिक राशि में है, जो स्वयं ही पर्याप्त रूप में कष्टकारक है और शनि के लिए तो बहुत ही अनुकूल है। इसके साथ ही, मंगल (एक अन्य पापग्रह) भी (अपनी ८वीं दृष्टि से) ७वें घर पर कुदृष्टिपात कर रहा है। मंगल (लग्न का स्वामी) एक ही घर आगे होने के कारण शनि द्वारा पीड़ित हो रहा है। मंगल का अपना ही घर (लग्न घर) शनि की उपस्थिति से कष्टयापन कर रहा है। चन्द्र ८वें घर में होने के कारण चिन्ता, क्लेश-मय मानस का सूचक है। आत्महत्या अथवा अभद्र पति के द्वारा प्राणान्त कर दिए जाने की धमकियों ने महिला के मस्तिष्क को अवश्य ही पीड़ित किया होगा।

(६) यह जन्मकुण्डली एक महिला चिकित्सक की है जो स्थायी सरकारी सेवा में है। कर्क लग्न स्वयं भाग्यशाली है। इसका स्वामी चन्द्र उच्चस्थ है और इसके अतिरिक्त ११वें घर—लाभ स्थान में है। ९वें घर का स्वामी (गुरु) १०वें (व्यावसायिक आजीविका के) घर में है। मंगल

(१०वें घर का स्वामी) १०वें घर पर दृष्टिपात करके इसे सामर्थ्य प्रदान करता है। शनि अपने ही घर (७वें) को लग्न से दृष्टिपात करता है।

(७) यह एक धनाढ्य नाटककार की पुत्री है; दैनिक पत्रिका में सम्पादिका है और उपन्यास, कहानियाँ व कविताएँ लिखती है। वह एक
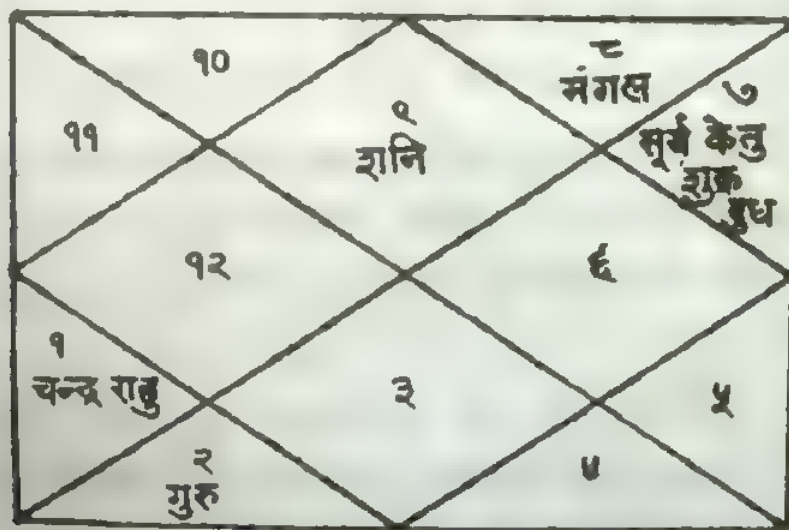
गृहिणी भी है। (विद्या के) ५वें घर में स्थित दो ग्रहों का योग तथा सामने के घर में स्थित ४ ग्रहों का इस ५वें घर पर दृष्टिपात करना साहित्यिक-प्रतिभा का सूचक है।

(८) यह एक सैनिक नर्सिंग सेवा की लेफ्टीनेन्ट नर्स की जन्म-कुण्डली है। ९वें और १०वें घरों का स्वामी शनि मृत्यु के (८वें) घर में मृतक अथवा 'म्रियमाण' से सम्बन्ध रखने वाले कार्य का संकेतक है। मंगल का (लग्न के स्वामी) शुक्र के साथ साहचर्य सैनिक वेश धारण करने क

द्योतक है। यह हमें ज्योतिष का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रदान करता है—अर्थात् जब भी कभी मंगल लग्न के स्वामी के साथ योग अथवा दृष्टि-पात द्वारा साहचर्य करेगा, तब उस व्यक्ति को सैनिक वेश धारण करना होगा, चाहे यह वेश छात्र-सेना का ही हो।

(६) एक धनी परिवार में उत्पन्न तथा उच्च शिक्षा प्राप्त यह महिला सन् १९५७ में विवाहित हुई थी। यह सन्तान के लिए लालायित है किन्तु कोई सन्तान होती नहीं क्योंकि सन्तति का ५वां घर एक पाप ग्रह शनिमय है। इसके अतिरिक्त यह घर अन्य पाप ग्रहों द्वारा दूषित हो रहा है। ६वें घर में केतु और ३रे घर में मंगल और राहु हैं। वह अपने पति के साथ भी बहुत सुखी नहीं रह सकी क्योंकि ७वां घर शनि और केतु द्वारा दूषित हो दबोचा जा रहा है जबकि उसकी लग्न का स्वामी शुक्र ७वें घर के स्वामी मंगल के साथ केन्द्र-योग की स्थिति में है। सन्तानोत्पत्ति में इस महिला की अक्षमता, जन्मकुण्डली में सन्तति-घर पाप ग्रहों द्वारा दबोचा जाने के कारण, ज्योतिष के वैज्ञानिक आधार को स्पष्ट रूप में चरितार्थ करती है। यह इस बात को भी सिद्ध करती है कि ज्योतिष किस प्रकार विज्ञानों का भी विज्ञान है, क्योंकि किसी भी प्रकार की चिकित्सा-प्रणाली कारण नहीं बता सकती किन्तु ज्योतिष विद्या स्पष्ट संकेत कर सकती है कि उसके बीजकोष उर्वर नहीं हैं।
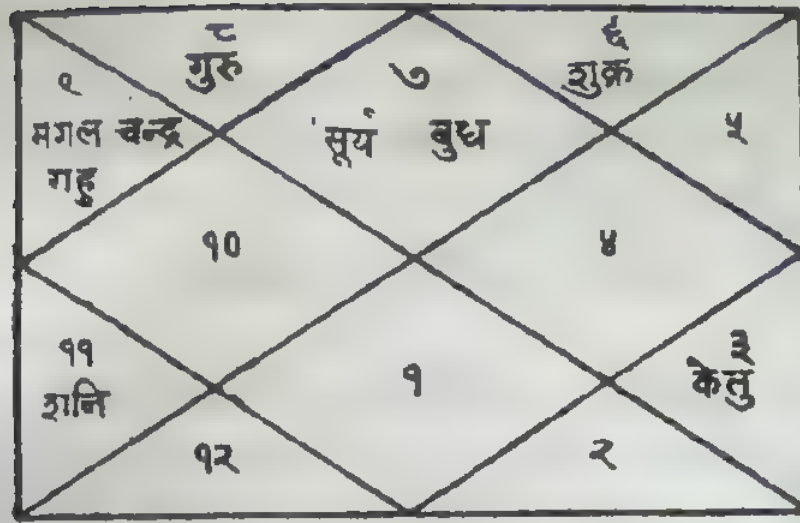
(१०) यह जन्मकुण्डली एक छोटी उपनगरीय पाठशाला के संस्थापक—प्रधानाचार्य की है। गुरु अपने ही १०वें घर में स्थित होकर शैक्षिक-व्यवसाय का द्योतक है। ९वें घर का स्वामी शनि, ११वें घर का स्वामी मंगल तथा धन के घर के स्वामी चन्द्र का लग्न में होना व्यक्ति का स्वयं अपने प्रतिष्ठान से जीविकोपार्जन का द्योतक है।
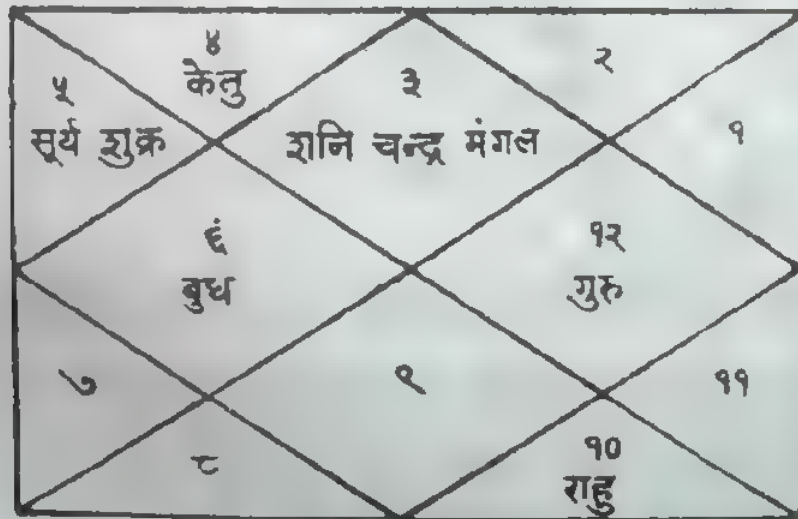
(११) इस जन्मकुण्डली के ३ घरों—लग्न, दूसरे व तीसरे घर—मे तीन पाप ग्रहों का अस्तित्व व्यक्ति को एक राजनीतिक हत्या में षड्यन्त्र करने और १६ वर्ष से अधिक के कारावास का दण्ड देने का फलदायक हुआ।

(१२) यह व्यक्ति उपर्युक्त जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का भाई है। इसके तीन घरों में भी—११वें, १२वें तथा लग्न में तीन अनवरत पाप ग्रह हैं। यह व्यक्ति भी पकड़ा गया था और राजनीतिक हत्या में षड्यन्त्रकारी

के सन्देह में निरोधक नजरबन्दी में रखा गया था। यह बहुत पहले ही छोड़ दिया गया था क्योंकि जबकि उसके भाई की लग्न में शनि शत्रु (सूर्य) की राशि में है, इस व्यक्ति की लग्न में मंगल अपने मित्र (सूर्य) की राशि में है। अतः इसकी वे शारीरिक यातनाएँ तथा उतना कारावास नहीं भोगना पड़ा जितना इसके भाई को। १०वें अंक (मकर राशि) में चन्द्र, जैसा हम अनेक बार स्मरण दिला चुके हैं, जीवन में कम-से-कम एक बार होने वाले घोर अनिष्ट की पूर्व सूचना देता है। इसके साथ ही, जब यह राहु के साथ होता है तो जीवन के सर्वोत्तम भाग में सतत वर्धमान चिन्ताओं को परि-

लक्षित करता है। यह तथ्य इस जन्मकुण्डली से स्पष्ट दृश्यमान है। इस व्यक्ति का लोहा-ढालने, गढ़ने का कारखाना था। जब इसे कारावास दिया गया तब इसके सभी साथियों ने उद्योग का दिवाला निकाल दिया। परिणाम यह हुआ कि इस व्यक्ति को सारा कार्य प्रायः शून्य से ही फिर से प्रारम्भ करना पड़ा, जबकि यह अपने कलंकित नाम को साफ करने की दिशा में भी यत्नशील था।

(१३) दूसरे घर में राहु व्यक्ति को प्रभावकारी व्यक्तित्व प्रदान करता है। इस व्यक्ति ने शोरबा का पिसा मसाला और अचार-मुरब्बा बनाकर खूब धन कमाया। उस सामग्री का निर्यात भी होने लगा। मंगल
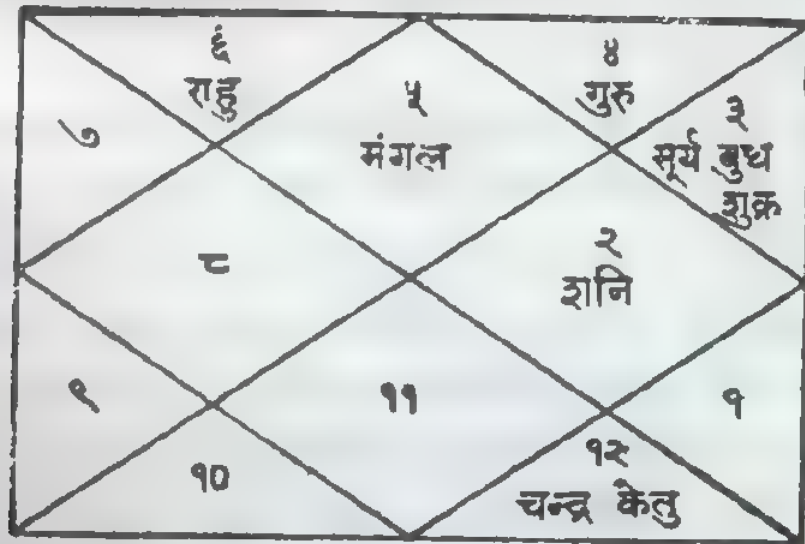
९वें घर का स्वामी लग्न में है। १०वें घर का स्वामी शुक्र ११वें लाभस्थान (११वें घर) के स्वामी बुध और लग्नेश सूर्य के साथ है। शनि १०वें घर में शुक्र की राशि में उपभोक्ता सामग्री से होने वाले लाभों का सूचक है।

(१४) यह व्यक्ति एक लेखक तथा सरकारी सेवा में जनसम्पर्क अधिकारी है। इसका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। पुरुष की जन्मकुण्डली में मंगल का १०वें घर में होना व्यक्ति के उज्ज्वल-भविष्य तथा अच्छे पदनाम का अचूक लक्षण है। यह उल्लेख योग्य एक लक्षण जो व्यक्ति को (उसकी जन्मावस्था के समय की स्थिति की तुलना में) अधिक सत्ता तथा समृद्धि दिलाने में कभी विफल नहीं होता। प्रारब्ध के रहस्यों में भी ज्योतिष की
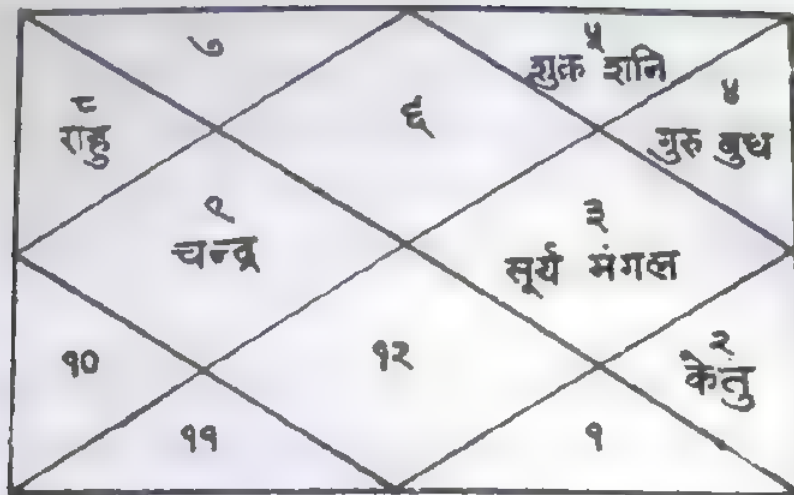
अन्तर्दृष्टि को परखने के लिए ज्योतिष के इस सिद्धान्त की सामान्य लोग भी जांच पड़ताल कर देखें।

(१५) अब एक महाराजा की जन्मकुण्डली है। उसकी लग्न में ५ ग्रहों का योग है। किन्तु शनि, लग्न में स्थित इन ५ ग्रहों के साथ केन्द्र-योग (समकोण) सम्बन्ध में है। इस प्रकार का विरोधी शनि इस महाराजा को ४२ वर्ष की आयु में राजगद्दी से उतारने वाला बन गया, जब शनि लग्न में आया और उसने पाँचों ग्रहों को ग्रसित किया। यहाँ पाठक यह समझ ले कि हम समय का आकलन किस प्रकार करते हैं। शनि एक पूरा चक्र लगाने में ३० वर्ष का समय लेता है। अर्थ यह है कि जन्म की स्थिति पर पुनः आने में इसे ३० वर्ष लगते हैं। फिर, लग्न सहित चारों घरों में से प्रवास करने में इसे १० वर्ष और लगते हैं क्योंकि शनि प्रत्येक घर में २$\frac{1}{2}$ वर्ष तक लटकता रहता है।

शनि लग्न को छोड़ने के बाद दूसर घर में संक्रमण कर गया। वहाँ इसने मंगल और गुरु को धर दबाया और पिछले घर के पांचों ग्रहों को भी दूषित किए रखा। केतु भी एक प्रकार से दुष्प्रभावित हुआ क्योंकि इसका 'शीर्ष' राहु गतिशील शनि के निकट वाले ही घर में था। इस प्रकार, चूंकि सभी ग्रह शनि द्वारा या तो ग्रसित थे अथवा दूषित हो गये थे, अतः इस स्थिति का परिणाम सार्वभौम-सत्ता का रूठ जाना और साम्राज्य की हानि हो जाना हुआ।

(१६) पुत्र पिता का उत्तराधिकारी हुआ। केवल ६वें और १०वें घरों में ही ५ ग्रहों का एकत्र हो जाना धन और सत्ता का स्पष्ट द्योतक है। किन्तु यह जन्मकुण्डली वैवाहिक सुख के अनुरूप नहीं है क्योंकि ७वाँ घर पाप ग्रहों द्वारा अतिक्रमित है, यद्यपि शनि स्वयं ७वें घर का स्वामी होने
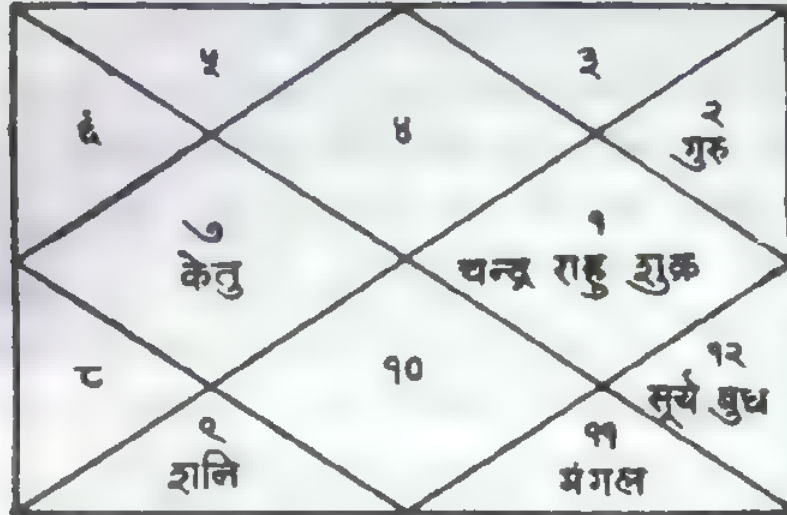
के कारण तथा अपनी किरणें उस घर में प्रक्षिप्त करने के कारण स्थिति को कुछ शान्त करता है। इस जन्मकुण्डली में जब शनि लग्न में और ४थे घर में जाएगा, तब इस व्यक्ति को क्लेश होगा। लग्न में, यह कर्क (चन्द्र की राशि) को दूषित करेगा। यह एक हानि होगी जो मानसिक-क्लेश की द्योतक होगी क्योंकि चन्द्र मस्तिष्क है। दूसरी हानि यह होगी कि शनि चन्द्र, राहु और शुक्र (१०वें घर में स्थित) ग्रहों के साथ केन्द्र-योग में होगा। तीसरी हानि यह होगी कि शनि अपनी १०वीं दृष्टि से चन्द्र पर दृष्टिपात भी करेगा। जब शनि (४थे घर में) तुला राशि में आ जाएगा, तब यह उच्चस्थ होने पर भी लग्न और १०वें घर में स्थित ग्रहों पर कु-दृष्टिपात करेगा। उसी समय यह ९वें घर में स्थित सूर्य और बुध के साथ तथा ११वें घर में स्थित गुरु के साथ षडाष्टक-योग (६ : ८) सम्बन्ध में होगा। शनि का उन घरों में जाना कब होगा, यह तथ्य नक्षत्र-पंचांगों में वर्षों पूर्व ही दिखा दिया जाता है। इसकी गणना मोटे रूप में की भी जा सकती है क्योंकि शनि प्रत्येक घर में $२\frac{१}{२}$ वर्ष रहता है।

गुरु एक घर से दूसरे घर में जाने में १३ मास के लगभग समय लेता है, जिसके कारण 'किसी घर में गुरु कब होगा' यह जानना सुगम हो जाता

है। चूंकि शनि और गुरु विभिन्न घरों में तुलनात्मक रूप में अधिक समय के लिए ठहरते हैं, इसलिए वे जब भी हितकर अथवा क्लेशकर स्थितियों में होते हैं, तभी सुख अथवा दुःख की घड़ियाँ लम्बी हो जाती हैं।

प्रत्येक जन्मकुण्डली में गुरु और शनि की हितकर या अहितकर स्थितियाँ निकाल लेने के पश्चात किसी भी विशेष घटना के होने का समय और भी सुनिश्चित किया जा सकता है। उसके लिए द्रुतगतिशील ग्रहों यथा सूर्य, बुद्ध, मंगल और शुक्र की हितकर अथवा अहितकर स्थितियों का पता लगाना होगा। यह कर लेने के पश्चात उस घटना का समय और अधिक निश्चित पता करने के लिए चन्द्र की गति का आकलन करना पड़ेगा क्योंकि चन्द्र प्रत्येक राशि में लगभग २$\frac{1}{3}$ दिन ही रहता है। मूल जन्मकुण्डली और नक्षत्रों की सही स्थिति की यथार्थ उपलब्धि होने के पश्चात किसी भी घटना के सुखद अथवा दुःखद होने का पूर्वाभास उस २$\frac{1}{3}$ दिन की अवधि में और भी सुनिश्चित किया जा सकता है, उसके लिए इतनी गणना करना आवश्यक है कि चन्द्र अन्य ग्रहों के साथ किस समय शुभफलदायक (५ : ९) त्रि-कोण योग अथवा अशुभ फलदायक केन्द्र या षडाष्टक (६ : ८) योग बनाता है।

भौतिक अथवा व्यावसायिक प्रगति अथवा अप गति के लिए ९वें और १०वें घरों के स्वामी ही सर्वेसर्वा हैं। और किसी घटना विशेष का समय-निर्धारण करने के लिए उन दोनों स्वामियों का—नित्य परिवर्तनशील, बहुरूपदर्शक उनकी गतिविधियों का—अन्य ग्रहों से सम्बन्ध पर विचार करना होगा।

स्वास्थ्य का सम्बन्ध रखने वाली बातों के लिए लग्न का स्वामी (और लग्न में ग्रह तथा लग्न पर दृष्टिपात करने वाले ग्रह) ही विचारणीय केन्द्र-बिन्दु हैं। विरोधी ग्रहों का लग्न में संक्रमण, अथवा जहाँ लग्न का स्वामी है वहाँ संक्रमण, अथवा लग्न या लग्न के स्वामी पर दृष्टिपात रोगावस्था या शल्यचिकित्सा का लाने वाला होता है। जब विवाह अथवा पारिवारिक सुख पर विचार करना हो, तो ७वें घर के स्वामी को केन्द्र-बिन्दु विचारना पड़ेगा।

(१७) यह लोकमान्य तिलक (स्वर्गवास १ अगस्त सन् १९२०) की

जन्मकुण्डली है, जो अपनी विद्वत्ता, राजनीतिक नेतृत्व और सम्पादकीय योग्यता की सामर्थ्य पर एक अकिंचनावस्था से यश और वैभव को प्राप्त हुए। राहु और चन्द्र के योग ने उनको राजनीतिक कारावास और क्लेशकर मुकदमेबाजी से अनेकों चिन्ताओं में ग्रस्त, उनसे पीड़ित रखा। गुरु-चन्द्र
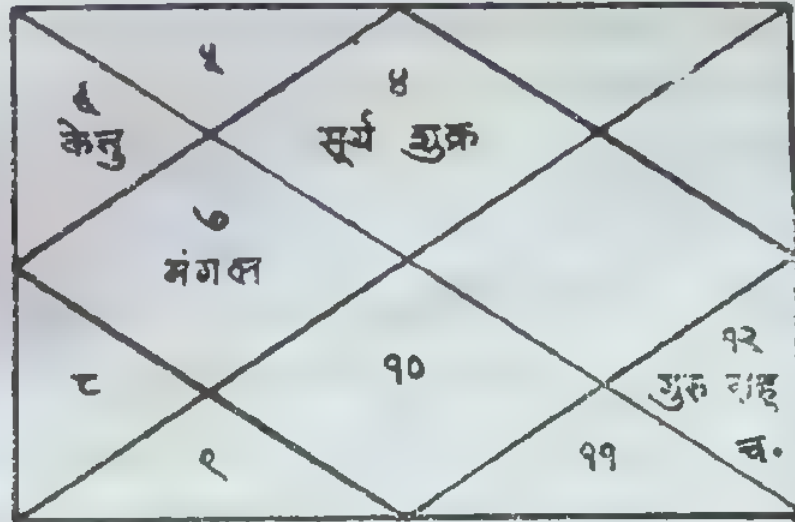
के योग ने उनको राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रचुरमात्रा में यश और अगाध-प्रेम का पात्र बनाया, जिनका सभी लोग आदर और अत्यन्त सम्मान करते थे। यह योग अपनी परम्परा और संस्कृति के प्रति प्रेम भी सूचित करता है। लोकमान्य तिलक एक दार्शनिक, लेखक, सम्पादक, भारतीय-विद्या-शास्त्री संस्कृत विद्वान और राजनीतिक नेता थे।

(१८) शनि द्वारा सूर्य व बुध, तथा लग्न (जो सूर्य की राशि है—शनि का शत्रु-पक्ष है) पर दृष्टिपात करने एवं शुक्र व मंगल के साथ ६ : ८
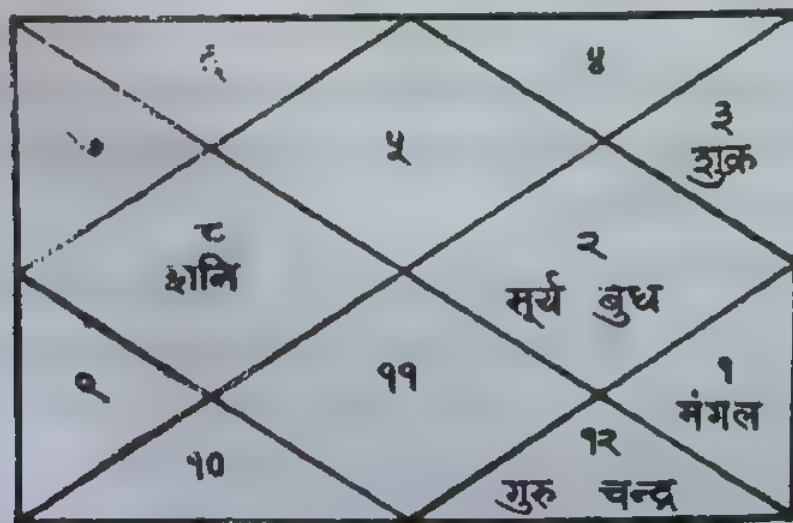
योग में होने के कारण अन्तिम जार को अपने उत्तर-जीवन के दिनों को

साइबेरिया में देश-निकाला के रूप में व्यतीत करना पड़ा। इस व्यक्ति का सम्मान व स्थान सुरक्षित रखने में गुरु-चन्द्र का योग दुर्बल सिद्ध हुआ। १०वें घर में सूर्य अपने वैभव पर है क्योंकि यह व्यक्ति लगभग दोपहर को ही जन्मा है। अतः अपनी मध्य-आयु के पश्चात जार को राज्यापहरण तथा देश-निर्वासन भोगना पड़ा।

(१९) निम्नलिखित जन्मकुण्डली स्पष्ट रूप में यह नियम दर्शाती है कि जिस व्यक्ति की जन्म राशि मकर होती है, वह सदैव लज्जावस्था में, मायाजाल-हीन अथवा अभ्रान्त होकर मरेगा। नैपोलियन की शूरता और
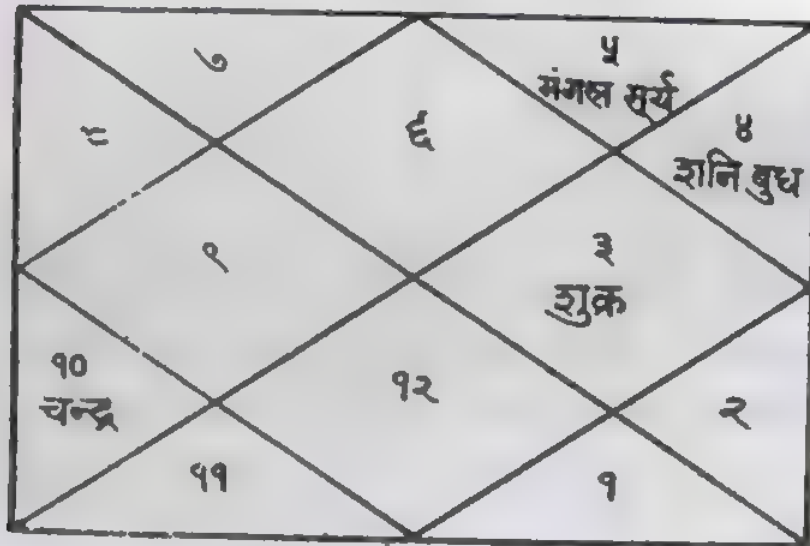
सैनिकी सूक्ष्म दृष्टि इस तथ्य द्वारा स्पष्ट है कि मंगल की राशि वृश्चिक शौर्य के घर में—तीसरे घर में—विद्यमान है। यह घर और भी अधिक सामर्थ्य-वान हो गया है क्योंकि मंगल अपनी चौथी दृष्टि से भी इस पर दृष्टिपात करता है। ९वें घर का स्वामी शुक्र १०वें घर में उपस्थित होना धन, सत्ता व राजसी वैभव का प्रतीक है।

(२०) जार्ज-पंचम की जन्मकुण्डली में ९वें घर का स्वामी मंगल ५वें घर में है, जो एक विरला ही योग है। ११वें (और १२वें) घर का स्वामी शनि उच्चस्थ है। १०वें घर का स्वामी गुरु अपने ही घर में (अपनी ही राशि में) है यह प्रसंगवश इस बात का भी द्योतक है कि इस व्यक्ति का पिता एडवर्ड—७ एक सुसंस्कृत सरल प्रकृति का व्यक्ति था।
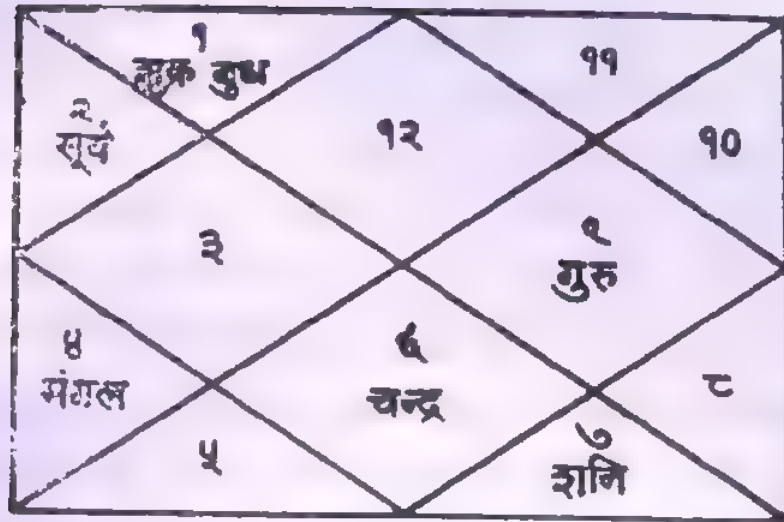
(२१) यह जन्मकुण्डली नाना फड़नवीस की है जो एक लिपिक की अकिंचनावस्था से उन्नति कर महान मराठा साम्राज्य के प्रधानमन्त्री पद पर जा विराजा। उनकी कुण्डली में ग्रहों की आश्चर्यजनक उपस्थिति को देखो। नवाँ घर भाग्य का घर है। उस घर में ५ ग्रहों की उपस्थिति ही उल्लेखनीय उत्कर्ष को बता देती है। अन्य विलक्षण बात यह है कि ९वें घर का स्वामी (मेधा के घर में) ५वें घर में विराजमान है। अपने जीवनकाल
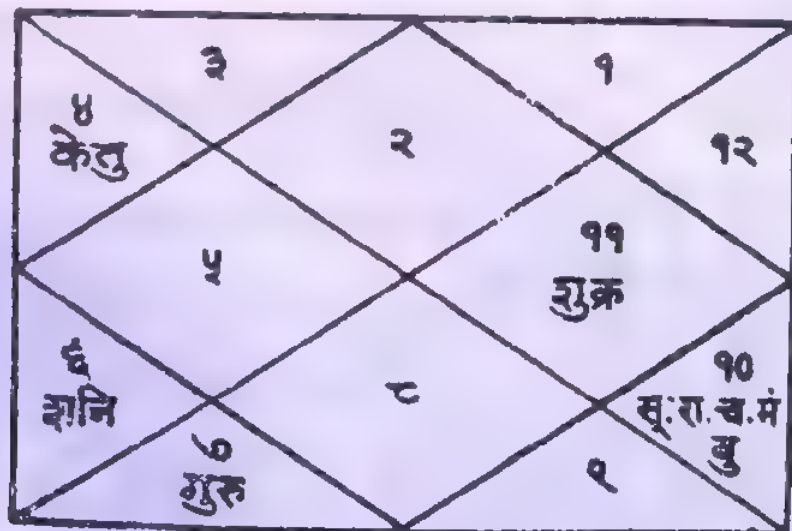
में नाना फड़नवीस एक ऐसी प्रतिभा के रूप में प्रख्यात था जिसे सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात थे। इसका कारण यह है कि शनि ५वें (मेधा, प्रतिभा के) घर में विराजमान है। नाना फड़नवीस की प्रतिभा की गहनता तथा तीक्ष्णता ५वें घर में कन्या राशि होने से और भी बढ़ गई है। कन्या राशि बुध द्वारा अनुशासित होने के कारण एक विरली तीक्ष्ण प्रतिभा की द्योतक है।

नाना फड़नवीस की जन्मकुण्डली ज्योतिष की एक अन्य अकाट्य उपलब्धि को भी दर्शाती है कि जब मकर राशि में अनेक ग्रहों की उपस्थिति होती है, तब वह व्यक्ति मायाजाल से मुक्त, भ्रान्तिहीन होकर मरता है। नाना का अवसान इस सत्य का पूर्ण रूप में चरितार्थ करता है। अपने जीवन की संध्या-बेला में उसने देखा था कि दुर्धर्ष मराठा सेनानायक उसके द्वारा उनके ऊपर लगाए गए देशभक्तिपूर्ण बन्धनों को तोड़ रहे थे, और अक्षम दावेदार राजसिंहासन के लिए ठगी, मक्कारी कर रहे थे।

यहाँ यह भी देखने योग्य है कि शनि ९वें और १०वें, दोनों घरों का स्वामी है। जब ऐसा ग्रह ५वें घर में स्थित होता है, तब उत्कर्ष अति त्वरित होता है। विशेषरूप में जबकि वह ग्रह शनि जैसा धृष्ट, समर्थ, धीमी चाल वाला पाप ग्रह हो, तब व्यक्ति का भाग्य विलक्षण उच्चता को पहुँच जाता है। लग्न का स्वामी शुक्र १०वें घर में होने के कारण इसने नाना को राजसी परिवेश में पहुँचा दिया।

(२२) भारत के प्रथम लोहा और इस्पात कारखाने के संस्थापक सर जमशेद जी टाटा स्पष्ट रूप में ही प्रारब्ध की अत्यन्त प्रिय सन्तान रहे हैं। कर्क लग्न कुछ विशिष्ट व्यक्ति को ही प्राप्त होती है। शुक्र उच्चस्थ होकर ९वें घर में, तथा इस घर का स्वामी गुरु इस घर पर दृष्टिपात करना,
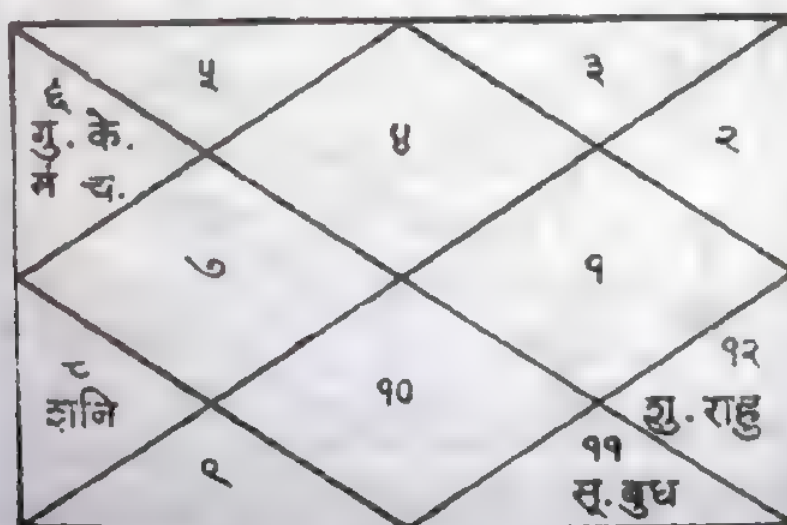
एक अत्यन्त सौभाग्यवर्धक योग है। ९वें घर में राहु भी इस व्यक्ति को संघर्षशील जीवन के माध्यम द्वारा उन्नत करता है। १०वें घर का स्वामी मंगल अपनी ८वीं दृष्टि से न केवल इस घर पर दृष्टिपात करता है, अपितु

स्वयं भी पराक्रम के घर में स्थित है जो इसकी सर्वाधिक अभीप्सित स्थिति है।

(२३) महाराजा जयाजीराव सिन्धिया। उनका राजसी जन्म जन्म-कुण्डली द्वारा बिल्कुल स्पष्ट है क्योंकि लग्न व धन का स्वामी शनि उच्चस्थ है। उनकी पत्नी न केवल अत्यन्त रूपवती रही होंगीं क्योंकि चन्द्र अपनी ही राशि में ७वें घर में है अपितु अत्यन्त दयालु, क्षमाशील, संवेदन-शील, न्यायप्रिय और धमार्थ प्रकृति की भी महिला रही होंगी।
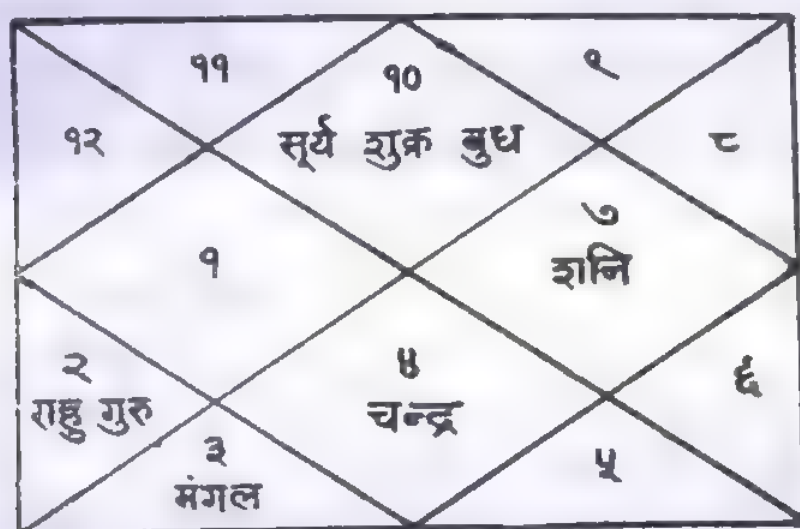
(२४) अब एक मितभाषी, मध्यवर्ग में उत्पन्न व्यक्ति की जन्म-कुण्डली है, जो अपने शैक्षिक जीवन में सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ, भारतीय सिविल सेवा (आई० सी० एस०) उत्तीर्ण की और जो प्रगति करते-करते एक उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश बना।
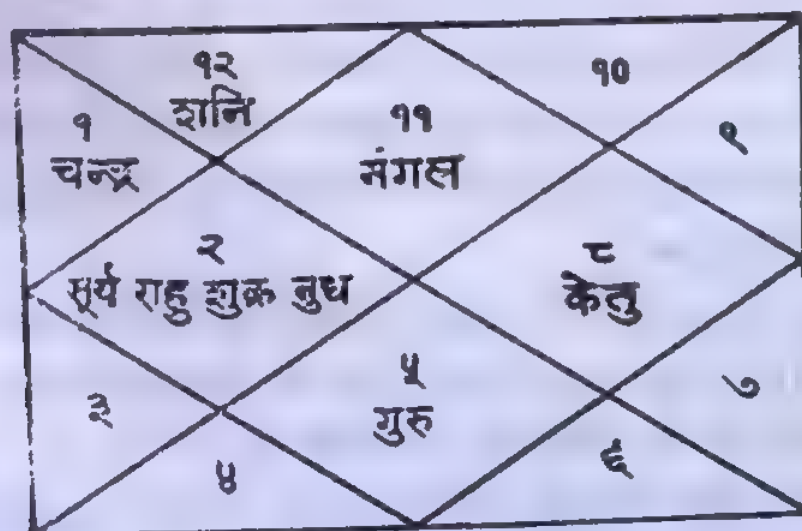
लग्न का स्वामी शनि धन के घर में है। यहाँ पर पाठक ज्योतिष के दो नियमों का ध्यान रखें। जब ५वें घर का स्वामी (यहाँ पर बुध) ४थे घर में हो, तो व्यक्ति शैक्षिक-परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में आएगा। किसी भी घर में चार या अधिक ग्रहों का एकत्र होना व्यक्ति को सामान्यरूप में धनी तथा समृद्ध बनाता है।

(२५) यह जन्मकुण्डली भी एक भाग्यवान व्यक्ति की है जो अपने शैक्षिक जीवन में सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। वह सरकारी सेवा के लिए चुन लिया गया था; वह प्रशासनिक-सेवा के उच्चतम पदों तक पहुँच गया। एक ईमानदार, कुशल, दयालु, विवेकी, दक्ष, शीघ्र कार्य करने वाले और कृपालु कर्मचारी के रूप उसका अद्वितीय असीमित यश-प्रसार
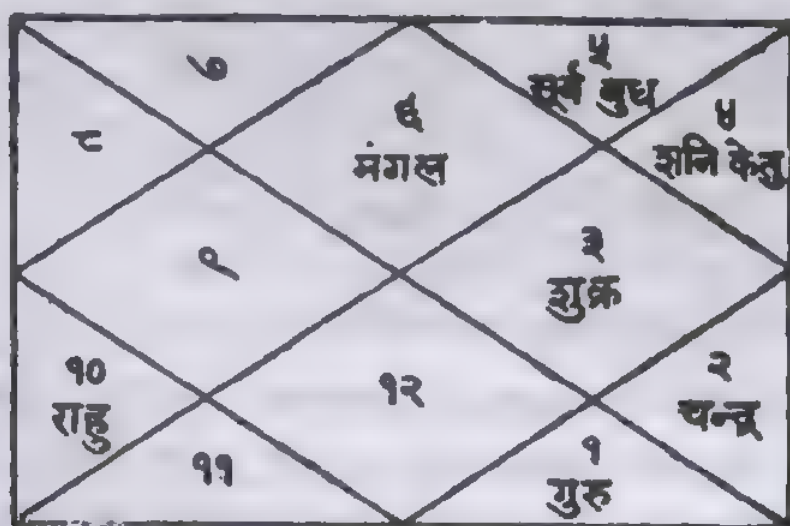
हो गया था। उसका सौभाग्य ९वें घर में उच्चस्थ चन्द्र और (५वें घर के स्वामी) शनि द्वारा अपने ही घर पर दृष्टिपात करने के कारण है। यह बाद का गुण उसकी शैक्षिक-परीक्षाओं में शानदार सफलताओं का कारण है। राहु भी ५वें अथवा ९वें घर में स्थित होकर व्यक्ति को उच्चस्थ करता है। ९वें घर का स्वामी (शुक्र) १०वें घर में स्थित है जो न्यायालय में उच्च-पदस्थ होने का सूचक है।

(२६) यह जन्मकुण्डली महान देशभक्त नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की है। १०वें घर में मकर राशि में तीन ग्रहों का होना ज्योतिष के इस नियम को पुष्ट करता है कि व्यक्ति की सक्षमताओं के बावजूद वह मायाजाल से मुक्त, अभ्रान्त तथा पराभूत होकर मरता है। विदेशी शासकों को विरोधी

स्वर में ललकारने वाले नेता के रूप में उनका जीवन, सूर्य का विरोधी मकर राशि में होने से, स्पष्ट है। नवें घर का स्वामी गुरु ५वें घर में होने के कारण नेताजी का शानदार शैक्षिक जीवन रहा जिसमें उनका शैक्षिक स्तर अत्यन्त उच्च रहा करता था। यद्यपि वे उच्चतम प्रशासनिक सेवा के लिए (आई० सी० एस० के लिए) चुन लिए गए तथापि उनको त्यागपत्र देना
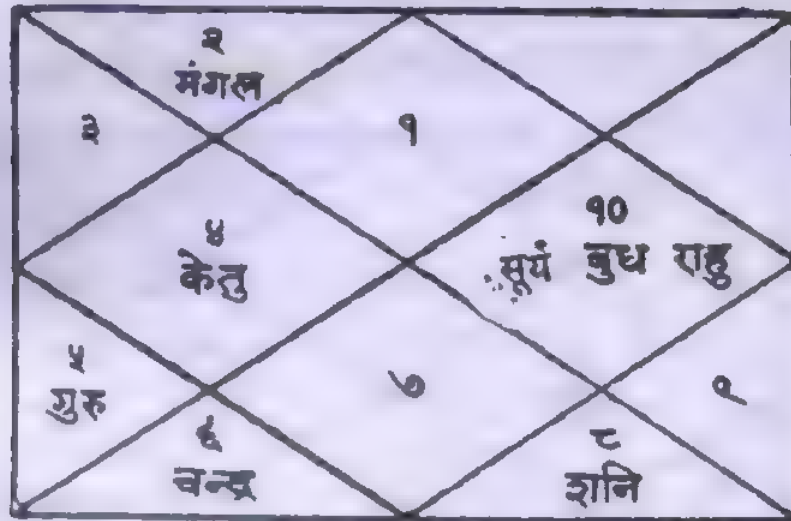
पड़ा और विदेशी शासन को चुनौती देनी पड़ी क्योंकि सूर्य विरोधी राशि में १०वें घर में है। गुरु के लग्न पर दृष्टिपात ने उनको घोर शारीरिक संकटों से बचाया। पराक्रम-स्थान (तीसरे घर) का स्वामी बुध होने के कारण, ब्रिटिश लोगों से स्वतन्त्रता के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 'शाब्दिक' संघर्ष के साथ ही उनका भाग भी रहा।

(२७) महात्मा गांधी का शनि, केतु के साथ, वृश्चिक राशि में, धनस्थान (दूसरे घर) में होने के कारण धनी-परिवेश में होते हुए उनको
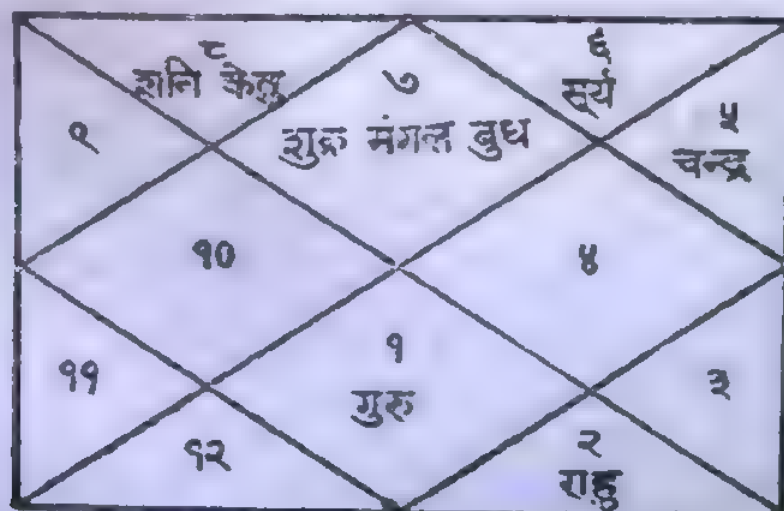
स्वानुशासित मितव्ययी जीवन व्यतीत करना पड़ा। धनी-परिवेश ९वें घर के स्वामी बुध के शुक्र सहित लग्न में उपस्थित होने से स्पष्ट है। लग्न में शुक्र, मंगल और बुध का योग सदैव साधु-प्रकृति, पारलौकिक दृष्टिकोण का तथा एक प्रतिस्पर्धात्मक व्यवसाय का भी परिचायक है।

(२८) यह एक भा० सि० से० (आई० सी० एस०) अधिकारी की जन्मकुण्डली है। चार ग्रहों का धनस्थान (दूसरे घर) में होना और शनि का अपनी ही राशि में ११वें (लाभस्थान के) घर में होना भाग्यशाली

योग हैं। पाठक को स्मरण रखना चाहिए कि दूसरा घर जब ग्रहों से भरा होता है, तब वह व्यक्ति धनवान बनता है। इस कुण्डली में लग्न का स्वामी ५वें और ९वें घरों के स्वामी, सभी एक ही स्थान पर हैं।

(२९) स्वतन्त्र भारत का जन्म सन् १९४७ के अगस्त मास की १४/१५ तारीख की मध्य-रात्रि को हुआ था। उसकी जन्मकुण्डली यह है।
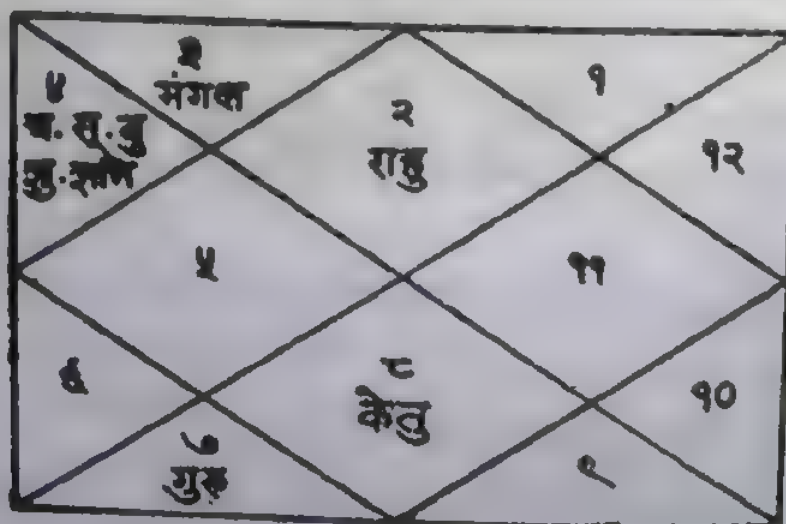
पाठक इस कुण्डली के सन्दर्भ में इस नवजात उदीयमान देश के उत्थान और पतन को खोज निकालें। तीन पाप-ग्रहों—राहु, मंगल, शनि—का लगातार तीन घरों—लग्न, दूसरा घर तथा तीसरा घर—में होना देखो। जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, ग्रहों की ऐसी स्थिति घोर विपत्तियों को लाने वाली होती है।

(३०) इतिहास में से मुगल बादशाह अकबर के जीवन की घटनाएँ इस जन्मकुण्डली के अध्ययन हेतु पता लगानी चाहिए; जिसका अवांछनीय यश—उसकी घोर लम्पटता, मक्कारी, और क्रूरता के होते हुए भी इस कुण्डली से सुस्पष्ट है :

(३१) राणा प्रताप—महान पराक्रमी तथा दुर्जेय योद्धा शासक देशभक्त। वृश्चिक लग्न, राहु-चन्द्र योग तथा ५ ग्रहों का असुखद मकर
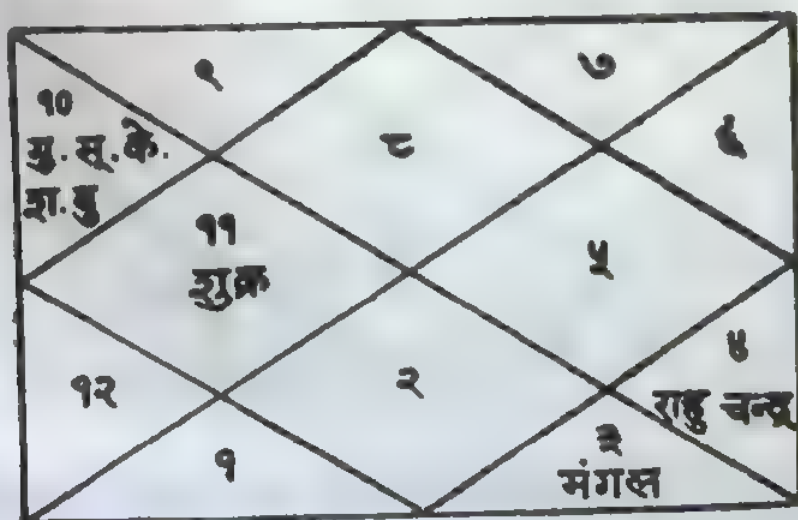
राशि में समन्वय—एक क्लेशकारी पीड़ित जीवन का पूर्व-कथन, भविष्य-दर्शन करा रहे हैं।

(३२) एक क्रूर, उत्पीड़क मुस्लिम लुटेरे हैदरअली की यह जन्म
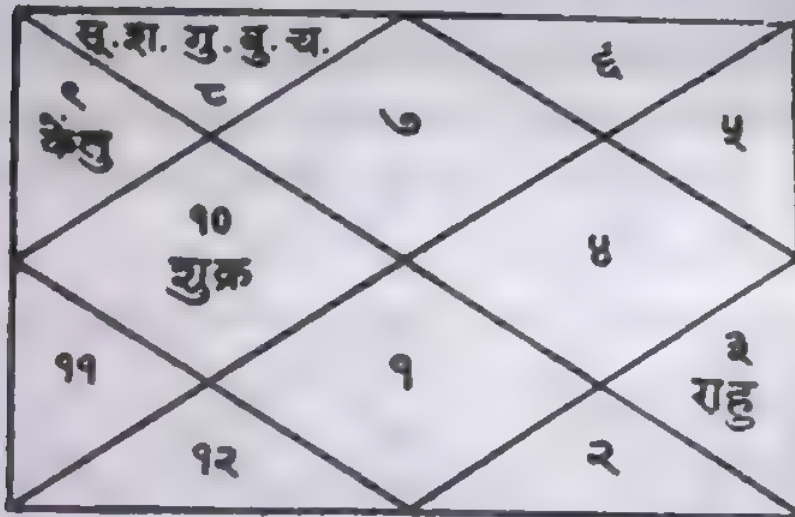
कुण्डली है, जिसे एक मुख्य नगर बसाने में सफलता मिली।

(३३) हैदरअली का कट्टर तथा क्रूर बेटा टीपू सुल्तान अपने बाप की राजगद्दी पर बैठा किन्तु श्रीरंगपटनम् के युद्ध मे यमलोक पहुँचा दिया
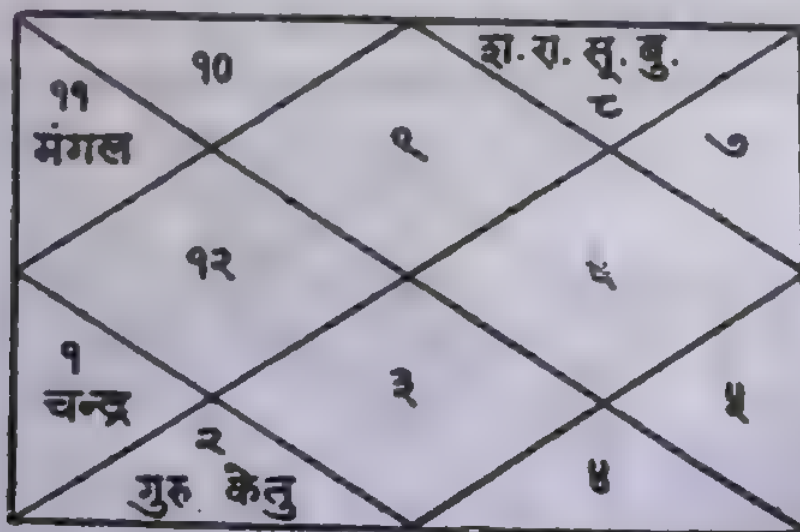
गया। मंगल तीसरे घर में होने के कारण वह बहादुर था और युद्ध में 'शेर' के रूप मे प्रसिद्ध था।

(३४) ड्यूक आफ विन्सर—उपनाम एडवर्ड अष्टम्—जिसे अपनी मनपसन्द महिला से विवाह करने के लिए राजगद्दी का बहिष्कार करना पड़ा था। देखिए, चन्द्र ग्रह इसमें एक ओर दो पाप-ग्रहों (मंगल और राहु)
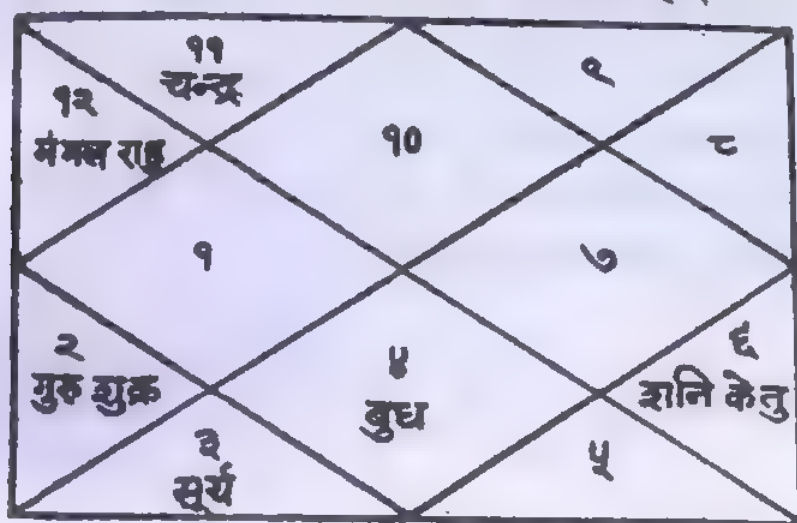
द्वारा और दूसरी ओर अन्य दो पाप-ग्रहों (शनि और केतु) द्वारा बुरी तरह भींच दिया गया है। इसी कारण सब अनर्थ हुआ।

(३५) मुस्लिम कु-शासन की शताब्दियों से भारत को चंगुल-मुक्त करने वाले दुर्जेय स्वप्न-दृष्टा, महान योद्धा शिवाजी का जन्म शुक्रवार, १९ फरवरी सन् १६३० को हुआ था।

महान शिवाजी का जीवन जादूगराना था जिन्होंने साक्षात मृत्यु के साथ हजारों मुठभेड़ों का सामना किया, और फिर भी अनाहत किन्तु
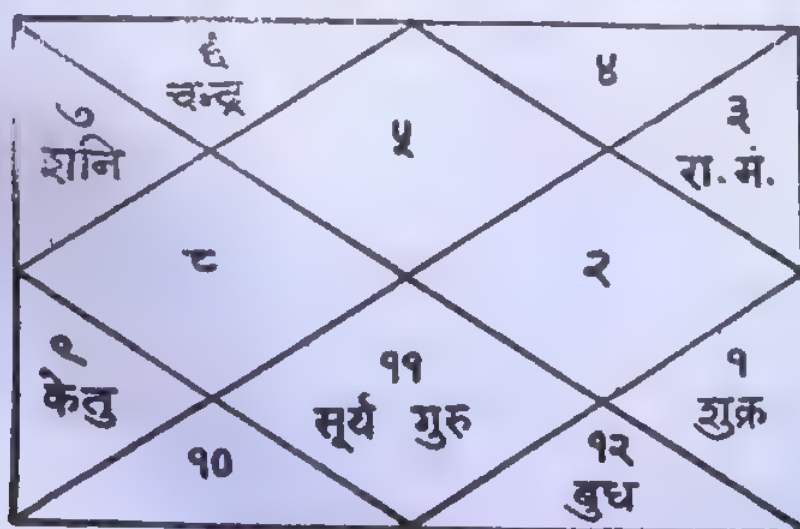
यशस्वी और सफल उदित हुए क्योंकि सिंह लग्न पर इसके स्वामी सूर्य की दृष्टि है। महान संरक्षक गुरु लग्न पर दृष्टिपात करता है, और उसी घर

में है जिसमें सूर्य है। ये दोनों कुम्भ राशि में हैं जो शनि की राशि है। इस राशि का स्वामी शनि पराक्रम-स्थान (तीसरे घर) में उच्चस्थ होने के कारण अतिथि-ग्रह सूर्य और गुरु को भी उच्चस्थ मानना चाहिए। शनि पराक्रम स्थान में होने के कारण शिवाजी एक दुर्धर्ष योद्धा होने के साथ ही कुशाग्र-बुद्धि युक्तिकुशल व्यक्ति थे। १०वें घर का स्वामी शुक्र ९वें घर में उपस्थित होकर राजसी-स्तर का परिचय देता है। राहु और मंगल का योग युद्ध-क्षेत्र में साहसिकता का सूचक है।

१७

नक्षत्रीय रत्न (मणि) : बहुमूल्य पत्थर

यह ठीक ही पर्यवेक्षण किया गया है कि जितने रहस्यों को मनुष्य की दार्शनिकता के विचारणीय क्षेत्र में लाया जा सकता है, विश्व में उनसे भी अधिक रहस्य हैं। ऐसी ही एक शक्ति रहस्यमय रूप में उन वस्तुओं में छिपी हुई है जिनको हम नक्षत्रीय मणि, रत्न, बहुमूल्य पत्थरों आदि के नाम से पुकारते हैं और जो आपके भाग्य का निर्णय, निश्चय करने में समर्थ हैं।

इनमें से अधिकांश रत्न प्रकाश देते हैं। उनकी विरली चमक ही स्वयं में इस बात का प्रमाण है कि वे अन्य भौमिक वस्तुओं से भिन्न हैं। भूमि के पर्तों के गहन गर्तों में दबे रहने पर भारी दबाव के कारण उनमें एक विशेष आलोक संचित हो जाता है—जिसे भौतिकशास्त्र में कान्ति कहते हैं—जो बिना जलाए ही अपनी चमक, कान्ति को फेंकता है।

यह भी हो सकता है कि इनमें से कुछ तो उन वास्तविक आकाशीय पिण्डों के अंश भी हो सकते हैं जो उल्काओं आदि के रूप में पृथ्वी से आ टकराते हैं। पृथ्वी की गहनतर गहराइयों की भट्टी में, पृथ्वी की उलट-फेर तथा ब्रह्माण्ड की उथल-पुथल में तथा अन्य ग्रहों द्वारा अपनी विद्युत्चुम्बकीय धाराएँ भेजने के कारण इन रत्नों में एक जादूगरी प्रभाव उत्पन्न हो जाता है जो मनुष्य के भाग्य का निर्णय करने वाली शक्ति का आधार है, कारण है।

एक विशाल नीलमणि, जो अब एक अमरीकी संग्रहालय में रखा हुआ है, एक विचित्र उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह एक यूरोपीय राजकीय

परिवार से अन्य परिवार के पास क्रय अथवा उपहार द्वारा ज्यों-ज्यों जाता रहा, त्यों-त्यों उसके रखने वाले या उसके निकट सम्बन्धियों अथवा उसके प्रियजनों पर विपत्तियाँ आती ही गयीं, उनका सर्वस्व चौपट होता गया।

जब से रेडियम खोज निकाला गया है, तब से यह भलीभाँति ज्ञात हो गया है कि ये प्रकाशमान खनिज पदार्थ प्राणघाती प्रभाव रखते हैं। इसके विपरीत, इसीलिए यह भी असंगत प्रतीत नहीं होना चाहिए कि कुछ ऐसे कान्तिमय पदार्थ भी हो सकते हैं जो मानव कार्य-कलापों पर सुखद प्रभाव डालते हों।

प्रकाश का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है, न केवल उस आनन्द व मार्गदर्शन के लिए जो यह प्रदान करता है अपितु जीवन बनाए रखने के गुणों के कारण भी है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर २४ घण्टों सीधी अथवा चन्द्र के द्वारा प्रतिबिम्बत होकर आने वाली सूर्य की किरणों के अभाव में पृथ्वी पर कोई जीवन ही नहीं होगा। मोती तथा अन्य प्रकाश-मान मणियाँ भी सूर्य की ऊर्जादाता प्रकाश का अंश है और इसके स्थायी भण्डार का एक रूप है।

कदाचित मानव जीवन पर नक्षत्रीय मणियों के प्रभाव का सर्वप्रथम सन्दर्भ सुविख्यात नाटककार महाकवि कालिदास विरचित सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में मिलता है। उस नाटक में नायिका शकुन्तला है। वह कण्व ऋषि की दत्तक दुहिता, कन्या है। वह वन में आखेट के लिए आए और उसकी कुटिया के निकट पड़ाव डाले हुए एक राजा दुष्यन्त के साथ प्रेम करने लगती है। वह उसे एक रत्नजड़ित अंगूठी दे जाता है। बाद में, आकर्षक बाला शकुन्तला राजा के राजमहल के लिए प्रस्थानी करती है। मार्ग बीहड़ों जंगलों और पर्वतों में से था। मार्ग में एक झरने पर स्नान करते समय उसकी प्रेम-मुद्रिका अँगुली में से फिसल जाती है और गुम हो जाती है। कठिन, कष्टमय प्रवास के पश्चात जब वह अपने राजसी प्रेमी के राजमहल में पहुँचती है, तो वह उसे पहचान नहीं पाता। राजा द्वारा वन में शकुन्तला से प्रणय-याचना करने की सभी बातें स्मरण दिलाने के उसके सभी प्रयत्न निष्फल रहते हैं।

उस कन्या को राजाप्रसाद से बाहर निकाल दिया जाता है। कुछ दिनों के पश्चात एक मछियारा कुछ मछलियों की भेंट राजा के सम्मुख प्रस्तुत करता है, और आश्चर्य है ! कि जब उनमें से एक मछली काटी जाती है, तो वही प्रेम-मुद्रिका बाहर टपक पड़ती है। वह छोटा-सा आभूषण राजा को उस वन की अप्सरा-बाला के साथ अपने प्रेमाचार का स्मरण दिलाने में सहायक होता है। वह फिर खोज करता है और शकुन्तला से विवाह करता है। यह कथा स्पष्ट रूप में दर्शाती है कि नक्षत्रीय मणि के प्राप्त करने अथवा गुम कर देने से भाग्य किस प्रकार उलट-पुलट होता रहता है।

वास्तविक जीवन में भी ऐसे अनुभव विरले नहीं हैं। रत्नागिरि-पाठशाला में एक शिक्षका कुमारी भिडे की रत्नजड़ी मुद्रिका पाठशाला जाते समय मार्ग में कहीं गिर गयी। पाठशाला पहुँचते ही, अनपेक्षित रूप में, उसकी नौकरी समाप्त कर दिए जाने की सूचना उसे मिली, यद्यपि न तो परिस्थितियाँ ही कोई ऐसी विशेष खराब थीं और न ही उसे ऐसी कोई लेशमात्र आशंका थी। प्रबन्धकों ने अत्यन्त विनम्रता एवं याचनापूर्वक तर्क प्रस्तुत किया कि चूंकि सरकार ने एक अनुदान कम कर दिया था, इसलिए प्रबन्धकों ने आर्थिक मितव्ययिता के पग उठाने के रूप में उसकी सेवाएँ समाप्त करने का, विवश होकर, निर्णय किया था। विवश शिक्षिका घर उदास मन लौट आयी और बाद में अपने पिता के घर पूना चली गयी। इसी बीच, उसी मार्ग से पाठशाला जाने वाली उसकी एक सहकर्त्री को वह मुद्रिका मिली; और उसने उसे अपनी सखी की मुद्रिका के रूप में पहचान कर वह मुद्रिका कुमारी भिडे को वापिस दे दी, जब वह पूना से एक मास बाद वापिस आयी; सौभाग्य से, उसी दिन दोपहर को पाठशाला का चपरासी आया, उसने एक पत्र प्रबन्धकों की ओर से दिया जिसमें कुमारी भिडे से वापिस नौकरी पर आ जाने की प्रार्थना की गयी थी क्योंकि अनुदान फिर मिलने लगा था।

इससे भी अधिक विचित्र घटना हमारे उस मित्र द्वारा सुनायी जाती है जो बर्मा में ब्रिटिश सरकार का जंगल (लकड़ी) का ठेकेदार था। उसकी सेवा-निवृत्ति की सन्ध्या-वेला में उसके सहयोगियों, व्यापारी मित्रों तथा

कर्मचारियों ने उसके सम्मान में एक स्वागत-समारोह का आयोजन किया। वनोत्पादन के एक स्थानीय उप-ठेकेदार ने विदाई-उपहार के रूप में उसे नीलमणि का एक कण्ठहार भेंट किया। नीलमणि-रत्न शनि-ग्रही होने के कारण व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार, अच्छा या बुरा—जैसा भी हो, अति शीघ्र प्रभाव करने के लिए प्रसिद्ध है। नीलमणि उसके अधिकार में आते ही भारतीय ठेकेदार पर विपत्तियों के पहाड़ टूटने प्रारम्भ हो गए। और इससे भी बढ़कर बात तो यह थी कि जितने नीलमणि जड़े हुए थे, विपत्तियाँ भी संख्या में प्रायः उतनी ही थीं। प्रभाव तुरन्त होने लगा। स्वागत-समारोह से घर वापिस आते समय वह फिसल गया और उसकी हड्डी टूट गयी। कुछ सप्ताह-पश्चात्, भारत लौटने पर, उसका एक दामाद मर गया और उसकी विधवा पुत्री, अन्य कोई सहारा न रहने के कारण अपने पिता के घर आ गयी। दूसरी पुत्री पागल हो गयी। ऐसी ही और कई दुर्घटनाएँ भी हुईं।

दुर्भाग्य के एक-पर-एक दुर्दिनाघातों से परेशान होकर वह सेवा निवृत्त व्यक्ति जिस-तिस व्यक्ति से परामर्श करने लगा। उसने तो नीलमणि कण्ठहार तथा उस पर पड़ीं विपत्तियों में कोई पारस्परिक सम्बन्ध तब तक समझा ही न था जब तक कि वह शान्ति और मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु एक सहिष्णु एवं ज्योतिषी के पास नहीं गया था, और उसने उससे यह नहीं पूछा था कि क्या तुम्हें कोई नक्षत्रीय-मणि आदि मिली है! वार्तालाप में ही उस ठेकेदार ने सामान्यरूप में उस कण्ठहार की चर्चा कर दी। ज्योतिष ने उस कण्ठहार की जाँच करने के बाद उसके स्वामी को परामर्श दिया कि उस कण्ठहार का परित्याग कर दिया जाय और उसका परिणाम देखा जाय। परामर्श को शिरोधार्य करते हुए उस स्वामी ने नीलमणियों को खोल डाला और अपने घरेलू नौकरों यथा सेविका, रसोइया, चालक आदि को एक-एक रत्न दे दिया।

नीलमणियों के ये आग्रहीता-व्यक्ति इस अनायास कृपा से प्रसन्न मन, अपने-अपने घर गए, किन्तु उनकी प्रसन्नता अल्पकालिक ही रही। नौकरानी को घर जाते ही अपना लड़का तेज बुखार से पीड़ित मिला। रसोइये पर उसके पड़ोसी ने चोरी का दोष लगा दिया। चालक को ज्ञात

हुआ कि उसकी अनुपस्थिति में उसके घर में सेंध लगा दी गयी थी। इस प्रकार, नीलम ले जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति दूसरे दिन इसको वापिस ले गया और सैकड़ों बुरी-भली बातें कहता हुआ इसके दाता के घर रोष-पूर्वक पटक आया।

कण्ठहार का पूर्व-वृत्त जानने के लिए उत्सुक उस ठेकेदार ने उपहार देने वाले व्यक्ति को पत्र लिखा। तब उसे बताया गया कि यह नीलम का कण्ठहार सदैव विपत्तियों का भण्डार रहा है और इन विपत्तियों से छुटकारा पाने के लिए ही परिवर्तनस्वरूप यह हार अन्य लोगों को दिया जाता रहा है।

अपनी विषमतम आशंका पुष्ट होने के पश्चात उस ठेकेदार ने दोष खोज निकालने वाले ज्योतिषी से दुर्दैव से संरक्षण का उपाय पूछा। ज्योतिषी ने परामर्श दिया कि शनि-मंत्रोच्चार के साथ इस नीलमणि-समूह को स्थानीय सरिता में समाधिस्थ कर दिया जाय। दूसरे दिन, प्रातः-काल ही सामान्य पूजनादि के उपरान्त वह भयप्रद कण्ठहार विधिवत सरिता की जल-धारा में प्रवाहित कर दिया गया। स्थिति, उस समय के बाद, सुधरने लगी और ठेंकेदार को अत्यन्त शान्ति प्राप्त हुई।

एक बड़ा पन्ना धारण करने वाले मित्र का कहना है कि जब से मैंने इसे पहिनना प्रारम्भ किया है, तब से इस मणि ने शारीरिक और व्याव-सायिक, दोनों ही, हित किए हैं।

ऐसे अनेक उदाहरणों का वर्णन किया जा सकता है।

स्पष्टीकरण खोजना कठिन नहीं है। हम सब जानते हैं कि काले वस्त्र किरणों को आत्मसात कर लेते हैं, उसके कारण पहिनने वाले को गर्मियों में असुविधा होती है। इसके विपरीत, श्वेत परिधान अधिक शीतल और सुविधादायक होते हैं। विभिन्न रंगों की बोतलों में भरा हुआ जल सूर्य की गर्मी से भिन्न-भिन्न गुणों वाला हो जाता है। चिकित्सा की एक ऐसी प्रणाली भी है जिसमें रोगी का उपचार विभिन्न रंगों वाली बोतलों में भरकर संग्रहीत जल से किया जाता है। यदि केवल रंगमात्र से इतना अन्तर पड़ सकता है तो कोई आश्चर्य नहीं है कि मणियों, रत्नों में संग्रहीत प्रकाश-पुंज तथा अन्य गुण मानव पर प्रभाव डालते हों।

मनुष्य की शारीरिक-संरचना तथा जीवनावधि की बहुविध गति-विधियों में नक्षत्रीय मणियों का नगण्य आकार उपहास का विषय न बन जाय, इसलिए महत्व देने के विचार से यहाँ बता देना आवश्यक है कि धातु का एक छोटा-सा टुकड़ा, जिसे हम विद्युत्-निरोधक (लाइटनिंग कन्डक्टर) कहते हैं, तथाकथित कुतुबमीनार अथवा गगनचुम्बी (न्यूयार्क-स्थित) एम्पायर स्टेट बिल्डिंग को बिजली से बचाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान करता है। इसके अभाव में अनन्त अन्तर पड़ जाय। जब एक धातु का छोटा-सा टुकड़ा किसी विशाल भवन के जीवन और मरण के मध्य एक विभाजक-रेखा बन सकता है, तब नक्षत्रीय मणियों का मनुष्य के तुच्छ कार्य-कलापों में सुख-दुःख लाने वाला जादूगराना प्रभाव किसी को आश्चर्यचकित क्यों करे? जिस प्रकार एक धातु का टुकड़ा किसी भवन को प्राकृतिक आघात से बचा सकता है, उसी प्रकार एक मणि रत्न भी इसके धारण करने वाले को लू अथवा हृदयघात से बचा सकता है, केवल यह सही प्रकार का हो।

एक छतरी भी अत्यन्त सस्ती तथा नगण्य विधि है जो किसी को भी गरम सूर्य और वर्षा तथा परिणामस्वरूप लू और ठण्ड से बचाती है। जब ऐसी बात है ही तब बहुमूल्य मणियों का प्रभाव संदेहास्पद नहीं हो सकता।

बाल-अवस्था में, बहुत लोगों ने देखा होगा कि सूर्य की किरणें एक शीशे के टुकड़े में से गुजारने पर कागज जलने लगता था। इसी प्रकार, लोगों ने सूचित किया है कि उनके घरों में अनायास अग्नि प्रज्ज्वलित होने लगी थी अथवा उनको आवाजें सुनायी देने लगी थीं, जब उनको एक मंगल-मणि प्राप्त हो चुकी थी।

ऊपर उद्धृत उदाहरणों से स्पष्ट है कि मनुष्य का भाग्य अच्छे से बुरा अथवा बुरे से अच्छा बनाने में नक्षत्रीय मणियों, रत्नों का कुछ-न-कुछ प्रत्यक्ष अथवा प्रासंगिक प्रभाव अवश्य होता ही है।

नक्षत्रीय-कुण्डली अथवा व्यक्ति की जन्मकुण्डली से इस बात का ज्ञान हो सकता है कि उस व्यक्ति को कौन-सा रत्न लाभदायक होगा! इस सम्बन्ध में विभिन्न धारणाएँ हैं कि व्यक्ति को कौन-से रत्न धारण करने चाहिए। जन्मकुण्डली में अच्छे ग्रहों द्वारा अनुमोदित रत्नों को धारण

करना चाहिए अथवा हानिकर तथा नीचस्थ ग्रहों के प्रतीक रत्नों को लेने से लाभ होगा। हमारा विश्वास है कि उच्चस्थ अथवा अन्यथा सुखद-स्थान पर स्थित ग्रहों को अपनी प्रभावी शक्ति बढ़ाने के लिए किसी अप्राकृतिक, बनावटी संवर्धन की आवश्यकता नहीं है। किन्तु जन्मकुण्डली में घातक ग्रहों के द्योतक रत्नादि यदि धारण किए जाएँ तो वे धारण करने वाले व्यक्ति से उन ग्रहों की हानिप्रद किरणों को अथवा उनके दुष्प्रभाव को दूर प्रतिबिम्बित कर सकेंगे। संक्षेप में, उनको वही प्रयोजन सार्थक करना चाहिए जो विद्युत्-निरोधक विशाल भवनों के मामले में करते हैं। इन मार्गों पर चलने वाले व्यक्तियों ने रत्नों को धारण करके प्रायः लाभ उठाया है।

प्रायः उचित यही है कि पहिले ही निश्चित कर लिया जाय कि रत्न से कौन-सा प्रभाव अभीष्ट है : रोग-निवारण, मानसिक-शान्ति, घर में श्रेष्ठ वातावरण, वैवाहिक-सुख, व्यवसाय में समझौता, अधिक लाभ अथवा नौकरी में उन्नति। जब यह मालूम हो, तो व्यक्ति की जन्मकुण्डली में उस विषय-विशेष का घर तथा ग्रह की स्थिति मालूम करके रत्न का विचार करना सरल हो जाता है।

कुछ विद्वानों, विशेषज्ञों के मतानुसार, प्रभावी होने के लिए चुना गया रत्न वजन में कम-से-कम ३½ कैरेट होना चाहिए।

किन्तु चाहे जिस भी विधि से किसी रत्न को लेने का, धारण करने का निश्चय किया जाय, उत्तम यही है कि इसे एकदम खरीदना नहीं चाहिए। नक्षत्रीय रत्न सदैव परीक्षणात्मक रूप में लेने चाहिए। व्यापारी लोग भी इन नक्षत्रीय रत्नों को साप्ताहिक-परीक्षणों के आधार पर देने को इच्छुक रहते हैं। यदि उस अवधि में, रत्न-धारण करने वाले को कोई अच्छा समाचार या सुख में वृद्धि करने वाला कोई सुयोग प्राप्त हो, तो वह रत्न खरीद लिया जाना चाहिए। यदि यह रत्न कोई बुरी, अशुभ खबर लाए, अथवा इसका परिणाम घर या कार्यालय में परस्पर संघर्ष, वाद-विवाद हो, अथवा कोई भी सुखद प्रभाव न हो, तो उसे खरीद कर धन-व्यय करने में कोई अर्थ नहीं है। ऐसी स्थिति में, इसे वापिस कर दिया जाना चाहिए और उसी प्रकार के अन्य रत्न अथवा नक्षत्रीय मणि को परख लेना

चाहिए। कुछ व्यक्तियों को इस विधि से उनके मनचाहे, उपयुक्त रत्न मिल सके हैं।

सन्तों और देवताओं के चित्रों में हमें दीख पड़ने वाले प्रभामण्डल की भाँति प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना अदृश्य प्रभामण्डल होता है। यह अदृश्य प्रभामण्डल ही किसी व्यक्ति के प्रति सहज सम्मान अथवा अवमान की भावना का कारण होता है। यह उस प्रभामण्डल में विद्युत्चुम्बकीय क्षमता अथवा गुण के कारण होता है। यह देखा जा सकता है कि एक अज्ञात व्यक्ति भी बहुत बार, सभास्थल में प्रवेश करते समय उपस्थित जनसमूह में अभूतपूर्व सम्मान प्राप्त करता है। सभी या अधिकांश व्यक्ति सहजरूप में ही उसका सहज-स्वागत करने के लिए खड़े हो जाते हैं, ज्यों ही वह वहाँ से गुजरता है। ऐसे व्यक्ति मूक पशुओं से भी सम्मान प्राप्त करते हैं। पशु सहज रूप में ही अलग-अलग हो जाते हैं और ऐसे पुरुषों के लिए मार्ग दे देते हैं। यदि ऐसे व्यक्ति अनायास ही किसी मुद्रा में हाथ ऊपर उठाते हैं, तो पशु अपने मुख मोड़ लेते हैं, मानों उस उठे हुए हाथ के प्रभाव से पीछे हटते जा रहे हों।

प्रत्येक जन्मकुण्डली उस व्यक्ति के प्रभामण्डल अथवा उसके चारों ओर विद्यमान चुम्बकीय-शक्ति को स्पष्ट इंगित करती है। उदाहरण के लिए, कर्क-लग्न में गुरु और चन्द्र जिस जन्मकुण्डली में होगा, वह व्यक्ति सर्वोच्च सम्मान का अधिकारी होगा तथा उसका प्रभामण्डल सर्वाधिक सामर्थ्यवान और पवित्रम होगा। जिन व्यक्तियों की लग्न में दूषित मंगल होगा, उनको प्रायः विरोध का सामना करना पड़ेगा। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में यदि ऐसा कोई असन्तुलन होगा तो वह उसकी जन्मकुण्डली से स्पष्ट देखा जा सकता है, और बहुत सीमा तक एक हितकर नक्षत्रीय रत्न से कम किया जा सकता है। अतः, चाहे आकार में छोटे ही हों, नक्षत्रीय रत्न महान शक्तियों के साधन सिद्ध हुए हैं।

आगे दी गई तालिका में विभिन्न ग्रहों से सम्बन्ध रखने वाले रत्नों के भारतीय तथा अंग्रेजी नाम दिये गए हैं—

क्रम संख्या	ग्रह	रत्न (भारतीय नाम)	रत्न (अंग्रेजी नाम)
१	सूर्य	माणिक	रूबी
२	चन्द्र	चन्द्रकान्तमणि, मोती	मून स्टोन, पर्ल
३	मंगल (कुज)	प्रवाल, मूँगा	कोराल
४	बुध	पन्ना	इमेराल्ड
५	गुरु (बृहस्पति)	पुष्कराज	टोपाज
६	शुक्र	हीरा	डायमण्ड
७	शनि	नीलमणि (नीलम)	सेफ्फायर
८	राहु	गोमेद, गोमेदक, शेषमणि	ओनिक्स
९	केतु	वैदूर्य	कैट्स आई

१८

व्यक्तिगत प्रभामण्डल

आपने सन्त महापुरुषों और देवताओं के ऐसे चित्र अवश्य ही देखे होंगे जिनमें उनके सिर के चारों ओर एक प्रकाश-वृत्त बना दिखायी देता है। वह एक प्रभामण्डल है। किन्तु कदाचित, आपने उस निराशाजनक धारणा को अपने मन में अवश्य ही स्थान दिया होगा कि आप अपने चारों ओर वह आदि भौतिक देदीप्यमान प्रकाशपुंज विकसित करने वाले भाग्यवान व्यक्ति न थे। यह बात ठीक नहीं है। हममें से एक-एक व्यक्ति का, चाहे वह पुरुष हो अथवा महिला, अपना-अपना एक-एक प्रभामण्डल होता है। प्रश्न केवल इतना रह जाता है कि वह कितना प्रकाशमय व सशक्त, अथवा निश्शक्त व अनर्थक है।

हम जिसे प्रभामण्डल कहते हैं, वह मानवों तक ही सीमित नहीं है, पशुओं तक भी नहीं, सामुद्रिक जीवन और वनस्पति जगत तक भी नहीं अपितु निर्जीव पदार्थों तक भी विस्तृत है। हम स्वयं पृथ्वी को ही देखें। इसकी गुरुत्वाकर्षण-शक्ति इसका प्रभामण्डल है, जो कहा जाए तो, इसके चारों ओर लाखों मील तक फैला हुआ है और न्यूटन के अनुसार, प्रत्येक पदार्थ की अपनी एक गुरुत्वाकर्षण-शक्ति है। वह इस बात को सिद्ध करता है स्प्रिग-तुला की अंकुड़ी में एक पदार्थ लटकाकर तथा यह पर्यवेक्षण करके कि इसका वजन बढ़ जाता है जब इसके नीचे इससे भारी पदार्थ रखा जाता है, क्योंकि वे पदार्थ स्प्रिग-तुला में लटके हुए ऊपर वाले पदार्थ की ओर खिचाव करते हैं।

चुम्बक का प्रभामण्डल और भी अधिक शक्तिशाली होता है—यहाँ तक कि कीलें तथा अन्य ऐसे ही पदार्थ उसके पास रख दिए जाने पर उड़ते हैं और चुम्बक से जा चिपकते हैं।

एक उच्च ऊर्जता विद्युत्धारा वाला सजीव विद्युत्तार अपने चारों ओर अति शक्तिशाली प्रभामण्डल रखता है। कोई व्यक्ति यदि ऐसे तार की पहुँच की सीमा के भीतर छः से आठ इंच के अन्दर अपना हाथ रख देता है, तो वह व्यक्ति इस भयंकर तार की ओर संकटापन्न अवस्था में खिंच जाता है।

रेडियम के चारों ओर भी इसी प्रकार का भयंकर प्रभामण्डल होता है। जुगनू का एक सुखद, प्रकाशमय प्रभामण्डल होता है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि स्वर्ण, रजत, पीतल, ताँबा, इस्पात सभी का अपना-अपना एक प्रभामण्डल होता है। इसी प्रकार जिन मणियों को हम हीरा, मोती, नीलम तथा माणिक कहकर पुकारते हैं, उनका भी एक प्रभामण्डल होता है। बहुमूल्य धातुओं और मणियों को मानवों द्वारा प्रमुख रूप में मूल्यवान इसीलिए समझा जाता है क्योंकि उनका एक विशेष प्रभामण्डल होता है जिसके कारण मनुष्य उनका सम्मान करता है। ऐसे मामलों में, 'बहुमूल्य' विशेषण ही इस बात का द्योतक है कि एक विशेष प्रभामण्डल उनके चारों ओर विद्यमान रहता है। इसी कारण है कि अपने विशिष्ट प्रभामण्डलों के होते हुए ही स्वर्ण और रजत ने किसी भी युग में अपना मूल्य समाप्त नहीं होने दिया, चाहे सामाजिक-व्यवस्था पूंजीवादी से समाजवादी अथवा साम्यवादी ही क्यों न हो गयी हो।

जड़-पदार्थों में भी किस प्रकार प्रभामण्डल विद्यमान रहता है—इसका एक अत्यन्त रोचक व्यावहारिक प्रमाण सौभाग्य से आधुनिक युग में उपलब्ध है। जब यूरेनियम का सर्वेक्षण तथा स्थल पता लगाने का साहसिक कार्य सरकारें अथवा बड़े-बड़े उद्योगपति करते हैं तो उपयोग में लायी जाने वाली एक विधि अत्यन्त सुग्राह्य उपकरणों तथा सामग्री से युक्त वायुयानों को पृथ्वी के गर्तों के भीतर गहरे छुपे हुए यूरेनियम का अस्तित्व ज्ञात करने के लिए उन क्षेत्रों पर उड़ाया जाता है। यह सम्भव तभी है क्योंकि यूरेनियम का प्रभामण्डल उसके ऊपर इतना सशक्त है कि वह उच्चाकाश

तक जा पहुँचता है। स्पष्ट है कि यह प्रभामण्डल इतना सशक्त एवं सवेग है कि चट्टानों, पृथ्वी और वायु की पर्तों को चीरकर, भेदकर सर्वाधिक ऊँचाई पर पहुँचने में सक्षम है।

जिस प्रकार अग्नि कष्टदायक अथवा सुविधाजनक हो सकती है, उसी प्रकार एक व्यक्ति का प्रभामण्डल आकर्षक अथवा विकर्षक हो सकता है। यदि आप अपनी स्मृति को सजग करें तो आपको स्मरण हो आयेगा कि आपने बस-यात्रा में अथवा अन्य किसी अवसर पर किसी व्यक्ति की समीपता को अत्यन्त सुखद, सुविधाजनक या सम्मोहक रूप में आकर्षक अथवा कष्टमय अनुभव किया है। यह उनके अपने प्रभामण्डलों की सानुपातिक अनुकूलता अथवा अननुकूलता के कारण है।

यह भी बिल्कुल अपरिचितों के लिए कोई असाधारण बात नहीं है कि चाहे वे एक ही योनि के क्यों न हों प्रथम बार मिलने पर ही या तो लड़-झगड़ पड़ेंगे या फिर अत्यन्त पारस्परिक आकर्षण का अनुभव करेंगे। इसका कारण यह है कि वे एक-दूसरे के समक्ष अपने प्रकाशवृत्त अर्थात् प्रभामण्डल प्रस्तुत कर देते हैं जो या तो संघर्ष करते हैं या एक-दूसरे में आत्मसात् हो जाते हैं या फिर सह-अस्तित्व बनाए रखते हैं।

प्रभामण्डल के विस्तार और शक्ति का क्षेत्र व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थिति के अनुसार बदलता रहता है, पृथक्-पृथक् रहता है। मस्तिष्क, जो मानव के भीतर दैवी-विद्युत्शक्ति-यन्त्र (डाइनेमो) है, एक प्रज्ज्वलित कोयले के समान है। जिस प्रकार अग्नि लुप्त-प्राय हो जाती है यदि इस कोयले के ऊपर राख, मिट्टी को जमा होने दें; उसी प्रकार यदि मनुष्य सांसारिक-बन्धनों में अधिकाधिक लिप्त होता जाता है, तो उसका प्रभामण्डल भी अधिकाधिक निर्जीव होता जाता है। तथा यह है कि यह 'प्रभामण्डल' रहेगा ही नहीं और एक भयंकर 'विकिरण पट्टी' में परिवर्तित हो जाएगा।

परिवार का भरण-पोषण करने तथा जिस-तिस प्रकार जीविकोपार्जन करके अस्तित्व बनाए रखने वाले साधारण नागरिकों का प्रभामण्डल 'प्रभामण्डल-मापी' के शून्य स्तर पर अथवा प्रारम्भिक स्थल पर माना जा सकता है। दुर्बल अथवा दोषयुक्त मस्तिष्क वालों का प्रभामण्डल शून्य से

भी कम अथवा ऋण की उल्टी दिशा में आएगा।

किन्तु, व्यक्तियों का अभी एक और वर्ग भी है। उनके सशक्त 'प्रभावकारी' मस्तिष्क होते हैं। किन्तु उनके प्रभाव के 'वृत्त' की तुलना एक भयंकर 'विकिरण पट्टी' से की जा सकती है। उनके 'प्रभामण्डल' एक बाधक, कष्टकारक प्रकार के होते हैं जो अपनी 'शक्ति' की उच्चतर सीढ़ी पर पहुंचकर रोग अथवा मृत्यु का कारण भी बन सकते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः "काले जादू के अभ्यास करने वाले" अथवा ऐन्द्रजालिक कहलाते हैं। जार के अन्तिम दिनों में उमके दरबार की पाप-प्रतिभा रस्पुटिन एक उल्लेखयोग्य उदाहरण है।

हो सकता है कि पाठक प्रभामण्डल का मूल्यांकन ठीक न कर पाएँ क्योंकि यह न तो देखा जा सकता है और न ही स्पर्श द्वारा अनुभव किया जा सकता है। किन्तु ये आपत्तियाँ बिल्कुल निरर्थक सिद्ध की जा सकती हैं केवल इतना स्मरण दिलाकर कि विश्व की कुछ महानतम प्राकृतिक शक्तियाँ भी न तो देखी जा सकती हैं और न ही स्पर्श की जा सकती हैं। स्वयं वायु, जिसे हम श्वास द्वारा ग्रहण करते हैं, न तो देखी जा सकती है और न ही स्पर्श की जा सकती है। और फिर भी यह वायु अपना रूप बदलकर मन्द-समीर बन सकती है, जो तेज हवा में भी बदल सकती है और यह परिवर्तित रूप भी बवण्डर में बदल सकता है। इन विभिन्न अवस्थाओं में विभाजक रेखा अत्यन्त क्षीण है। और फिर भी यह जो कुछ है, यह दृश्यमान नहीं है। और यद्यपि अपने आरम्भिक रूप में ही यह 'वायु' समस्त संसार को चूर-चूर कर सकती है, तथापि यह देखी नहीं जा सकती, न ही स्पर्श की जा सकती है। तथ्य रूप में, मूल, मृदु, जीवन प्रदान करने वाली वायु अपने आपको विनाशक झंझावत में परिवर्तित कर लेती है। विद्युत्-प्रवाह भी, जो एक भयंकर शक्ति है, ऊपर वर्णन के अनुसार 'आकर्षण' भी रखते हुए, न तो देखा जा सकता है और न स्पर्श द्वारा अनुभव किया जा सकता है। यही कारण है मार्ग के ऊपर लम्बे-चौड़े फैले हुए तार, उनमें विद्युत्-प्रवाह हों अथवा नहीं, एक-से लगते हैं।

अतः किसी को भी व्यर्थ में यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि अमुक वस्तु का अस्तित्व नहीं है यदि वह दिखाई न पड़ती हो अथवा स्पर्श द्वारा

उसकी अनुभूति न हो पाती हो। जिस संसार में हम विचरण करते हैं उसमें चुम्बकीय, विद्युत्, गुरुत्वाकर्षण, वायु, भयंकर विषाणु—सभी अदृश्य तथा 'अस्पृश्य' वस्तुएँ हैं, और फिर भी, उनका प्रभाव-क्षेत्र अत्यन्त विशाल है जिसमें सर्वाधिक विस्मरणशील उपस्थिति लेकर से सर्वशक्तिमान, सर्व-भयकर, सर्वव्याप्त बवण्डर हैं—जिनको वें स्वयं रूप प्रदान करती हैं, फिर भी सब समय वे अदृश्य और अग्राह्य बनी रहती हैं।

पाठक को इस सबसे यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि मानवों के चहुँ ओर का प्रभामण्डल भी अत्यन्त नगण्य से लेकर उस तक हो सकता है जो सर्वाधिक आकर्षण या विकर्षण करता है। इससे कोई अर्थ नहीं कि आप इसे 'देख' सकते हों। आप तो इसे 'स्पर्श' भी नहीं कर सकते। फिर भी आप इसे अनुभव कर सकते हैं अर्थात् आप इसके प्रति सजग, सचेत हो सकते हैं।

अतः हम सन्त-महात्माओं और देवी-देवताओं के मुखों के चारों ओर जिन प्रभामण्डलों को बनाया हुआ देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं, वे कोरी भावुकता न होकर वास्तविक भौतिक दृश्यमान वस्तु हैं—उतनी ही वास्तविक जितनी भौतिकी की पुस्तक में चुम्बकीय क्षेत्र की रेखाएँ बनी होती हैं। केवल मात्र अन्तर यह है कि भौतिकी की पुस्तक में दिखायी गयीं चुम्बक-क्षेत्रीय बाह्य रेखाएँ जड़ वस्तुओं से सम्बन्ध रखती हैं, जबकि सन्त-महात्माओं और देवताओं के चित्रों में परिधि-सीमाएँ जीवधारियों के 'चुम्बकीय-क्षेत्र' हैं।

प्रत्येक लघु अग्निका, चाहे वह चिंगारी हो, एक प्रज्ज्वलित कोयला हो अथवा स्वयं शक्तिशाली सूर्य ही हो, अपना एक विशिष्ट प्रभामण्डल होता है जिसकी अनुभूति उन्हीं सीमाओं तक की जा सकती है जहाँ तक इसकी गर्मी या चमक पहुँच पाती हो। इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का भी एक प्रभामण्डल होता है। यह ऐसा ही है क्योंकि कपाल के अन्दर परिवेष्टित मानव-मस्तिष्क दैवी सृष्टा के अपने विद्युत्शक्ति यन्त्र के द्वारा निर्मित है जो समग्र संसार में व्याप्त है। व्यक्ति के 'विद्युत्शक्ति-यन्त्र', 'अग्नि' अथवा प्रभामण्डल का विस्तार 'अग्नि' के प्रकार और परिमाण पर निर्भर करता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार चुम्बक की आकर्षण-शक्ति इसके आकार और इसकी शक्ति के अनुपात में ही विस्तीर्ण होती है।

परोपकारी प्रभामण्डल की शक्ति जितनी अधिक होगी, उतने ही अधिक अनुयायी किसी ऐसे परोपकारी व्यक्ति के होंगे। ऐसे व्यक्ति को उसके सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों से महान प्रेम और सम्मान प्राप्त होता है। कई अवसरों पर तो पशु भी ऐसे चुम्बकीय मानव की विशिष्ट अनुभूति करते हैं। यह देखा जा सकता है कि जब ऐसा व्यक्ति पशुओं के झुण्डों में से इधर से उधर जा रहा हो, तब पशु सहज रूप में ही इधर-उधर बिखर जाते हैं और ऐसे पुरुष के लिए स्वयं मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। यदि वह व्यक्ति अपना हाथ अथवा अँगुली भी ऊपर उठाए, तो वे पशुगण उसके प्रभामण्डल की शक्ति के कारण पीछे हट जाते हैं। ऐसा ही सम्मान वह था जो भगवान श्रीकृष्ण ने गौओं के मध्य जागृत किया था। किसी व्यक्ति के श्रेष्ठ प्रभामण्डल की शक्ति अन्य सुपरिचित अवसरों पर भी देखी जा सकती है। यदि समर्थ प्रभामण्डल वाला अपरिचित व्यक्ति किसी सभा-स्थल में प्रविष्ट होता है तो उपस्थित जन-समूह सहज रूप में ही खड़ा हो जाता है और उसका सम्मान करता है। कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जिनका चहुँ ओर का प्रभामण्डल इतना विद्युतीय होता है कि आगन्तुक अथवा एकत्र जन-समूह उसके सामने नत-मस्तक होने से भी स्वयं को रोक नहीं सकते। ऐसा ही व्यक्तिगत चुम्बकीय-आकर्षण भगवान राम और भगवान श्रीकृष्ण का था।

यह केवल व्यक्ति की भौतिक उपस्थिति ही नहीं है जो सम्मोहन करती है। अनेक बार व्यक्ति के लिखित अथवा कथित शब्दों का भी ऐसा प्रभामण्डल होता है। वे साधारण शब्द ही होते हैं किन्तु फिर भी चूंकि वे उसके मुख अथवा उसकी लेखनी से निस्रत होते हैं, अतः अप्रतिकार्य एवं सनसनी करनेवाले होते हैं।

ऐसा नहीं है कि सभास्थल में आने वाले सभी वक्ताओं अथवा जनान्दोलकों को ससम्मान स्वागत प्राप्त होता हो। वक्ताओं को उपस्थित श्रोताओं की भीड़ चीरते हुए मंच की ओर जाते हुए देखना और किसी का भी उनके सम्मानार्थ उठकर खड़े न होना देखना भी असामान्य बात नहीं है। कई बार वक्ताओं को धिक्कारा और उनका मजाक भी किया जाता है।

हितैषी प्रभामण्डल वाले व्यक्ति प्रायः अच्छे मध्यस्थ होते हैं। उनके स्वर अथवा उपस्थिति मात्र में उनको सम्मान मिलता है और वे युद्धरत वर्गों अथवा व्यक्तियों को समझौते के लिए तैयार कर सकते हैं।

ज्योतिष-शास्त्र एक व्यक्ति के प्रभामण्डल की शक्ति में अन्तरदृष्टि प्रदान करता है।

जिन व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियों में लग्न में कर्क है, उनमें से बहुत लोगों का प्रभामण्डल शक्तिशाली होता है। जब इसमें चन्द्रमा भी अवस्थित हो, जैसाकि भारत के भूतपूर्व स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री नेहरू की कुण्डली में था, तो ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों के ऊपर अत्यन्त प्रेमाकर्षण करता है। यदि इसके स्थान पर कर्क लग्न में गुरु (बृहस्पति) स्थित हो, जैसा कि श्री योगिराज अरविन्द घोष की कुण्डली में था जिसमें मंगल भी था, तो ऐसे व्यक्ति को प्रेम से अधिक भयांकित सम्मान प्राप्त होता है। किन्तु यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा और बृहस्पति दोनों ही स्थित हों, तो ऐसे व्यक्ति को भय, अत्यन्त श्रद्धा और गहन व्यक्तिगत ममत्व की दृष्टि से देखा जाता है। इन व्यक्तियों का प्रभामण्डल सर्वाधिक शक्तिशाली होता है। कर्क लग्न वाली कुछ सुप्रसिद्ध विभूतियाँ ये हैं—बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुज, त्यागराज, तिलक और स्वामी शिवानन्द।

चूँकि ज्योतिष जागतिक गणित के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, इसलिए यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि यह किसी प्रभामण्डल के 'आकर्षण' के आकार का परिमाप प्रस्तुत करे।

भाग्यवशात्, सत्य और नेकी के प्रति जितनी अधिक निष्ठा एवं श्रद्धा किसी व्यक्ति के अन्तर में संग्रहीत होगी, उतनी ही उसके प्रभामण्डल की विशदता और आकर्षणशक्ति अधिक होगी। इसके विपरीत, व्यक्ति का स्वभाव जितना अधिक दगाबाजी का, सांसारिक अथवा लोभी होगा, उतना ही अधिक 'धुंधला' उसका प्रभामण्डल होगा। तथ्य रूप में तो, उच्चतर केन्द्रीकरण में ऐसे घृण्य स्वभाव ऋण पक्ष में 'शून्य' से भी नीचे चले जाएँगे। ऐसे मामलों में, वे हानि और विकर्षण करते हैं। इसी के विपरीत, उदार प्रभामण्डल का सुखद, अनुकम्पामय प्रभाव होता है।

अतः प्रतीत यह होता है कि अपने व्यक्तित्व-निर्माण में आध्यात्मिकता

एवं सत्यनिष्ठा का संचरण कर अपने प्रभामण्डल के 'आकर्षण' में कोई भी व्यक्ति भी सुधार कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति में दैवी-विद्युत्-शक्ति-यन्त्र की चिंगारी है। किन्तु हम में से अधिकांश में यह सांसारिक आसक्ति के कूड़े-कर्कट के ढेर के नीचे गहराई में दबी पड़ी रहती है। यदि इस गन्दगी को आध्यात्मिक परिष्कृति से दूर फेंका जाय, तो यह 'चिंगारी' मलवे के ढेर से निकलकर, अधिक विशदता के साथ प्रकाशित होगी और एक सुरक्षात्मक वृत्त तथा प्रभावकारी क्षेत्र की भाँति एक चमत्कारी प्रभा-मण्डल का सृजन करेगी।

व्यक्ति का प्रभामण्डल सुरक्षात्मक वृत्त तथा उपकरण के रूप में सदा उसके साथ ही रहता है। किसी लड़की का पीछा कोई उपद्रवी गुण्डा कितनी ही दूरी से क्यों न कर रहा हो अथवा किसी राजनीतिक नेता के पीछे कोई गुप्तचर भीड़भाड़ पूर्ण बाजार में भी चाहे बहुत ही दूर क्यों न हो, फिर भी इन दोनों (लड़की व नेता) को अव्यवस्थित रूप में यह अनुभव हो ही जाता है कि उसके पीछे कोई अपरिचित चहलकदमी हो रही है। इसका कारण यह है कि एक मानसिक सम्पर्क द्वारा आगे जाने वाले व्यक्ति के प्रभामण्डल का बन्धन पीछा करने वाले व्यक्ति के प्रभामण्डल से हो जाता है। यही बात उनमें होती है जिनको हम भूत-प्रेत कहते हैं। यही कारण है कि एक व्यक्ति तो भूत-प्रेत की विद्यमानता के सम्बन्ध में अत्यन्त चौकन्ना होता है किन्तु उसके साथी को कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। अतः यदि आप अपने प्रभामण्डल को अधिक भावुक और तेजोमय वृत्त में विकसित कर सकें, तो आप अधिक आन्तरिक शान्ति, सुविधा, अनुकम्पा और शारीरिक सुरक्षा का आनन्दोपभोग कर सकेंगे। यह प्रभामण्डल भावी घटनाओं के सूचक 'राडार' यन्त्र की भाँति आपकी सेवा भी कर सकेगा। इस प्रकार, यह प्रभामण्डल जो अन्तरिक्ष में पहुँच जाता है, समय—काल में भी—विगत और भावी में भी—पहुँच सकता है। यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह उसी के साथ उत्पन्न दैवी-उपकरण के इस विलक्षण विरले पदार्थ को 'तीक्ष्ण' एवं 'प्रज्ज्वलित' करे।

विज्ञान और तकनीकी-शास्त्र के विद्यार्थी कुण्डलियों (कोइल्स) का महत्व जानते हैं—इनके ही माध्यम से ऊर्जा प्रवाहित होती है, आगे चलती

है। मानव का आन्त्र-भाग कुण्डलियाँ हैं।

पृष्ठवंश (रीढ़ की हड्डी) तार की रस्सी के समान है, कुछ मोटे दूर-संचार तार के समान जिसमें से अति-स्पन्दनशील सुकोमल शिरा-तन्तु प्रस्फुटित होते हैं।

शीर्ष (सिर), मानव-ऊर्जा का नियन्त्रण-केन्द्र, आन्त्र कुण्डलियों और पृष्ठवंशीय-रज्जु को संग्रहीत करने वाले इस शारीरिक-खोल के शीर्षबिन्दु पर है।

चरण मनुष्य की 'पृथ्वी सम्प्रति' (अर्थिंग) है जबकि वायु में ऊँचा उठा हुआ सिर दैवी-ऊर्जा का अत्यन्त लघु, अतिसूक्ष्म विद्युत् शक्ति यन्त्र (डाइनेमो) है। सहजबोध तथा अनिष्टादि के पूर्वज्ञान की क्षणिक घड़ियों में व्यक्तिगत मानव मस्तिष्क उस जागतिक ऊर्जा के निकट क्षण भर के लिए पहुँच जाता है जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म अणु से विशालतम ग्रहों को सचेतन करती है।

चूँकि विश्व की सभी गतिविधियाँ तथा घटनाएँ जागतिक गणितीय सिद्धान्तों के क्रियात्मक रूप से परिणामजनित होते हैं, अतः वे घटनाएँ—चाहे विगत हों अथवा वर्तमान—दैवी फीते पर कुण्डीकृत, परिवेष्टित रहती हैं। जब दैवी-घड़ियों में मानव-मस्तिष्क 'घटनापूर्ण' शब्दावली के साथ अनन्त समय तक पहुँच जाता है, तब मनुष्य अपने पूर्वजन्मों की घटनाओं और बातों को सुस्पष्ट रूप में स्मरण करता है अथवा भविष्य की उल्लेखनीय झलकियों को ग्रहण किए रहता है।

इस पृथ्वी के, भौमिक मानस को यह सब अत्यन्त रहस्यमय प्रतीत हो सकता है किन्तु गम्भीरतापूर्वक और सूक्ष्म विचार करने पर यह अनुभूति करना कठिन नहीं होना चाहिए कि समय और अन्तरिक्ष भी, वातावरण, वायुमण्डल को अथवा अन्तरिक्ष में प्रचुर मात्रा में विद्यमान शून्य को भरने वाली वायु के समान ही अनन्त हैं। हम चाहे घटनाओं को विगत और वर्तमान के रूप में मानते हों, समझते हों, किन्तु समय-अन्तरिक्ष सातत्य आदि के बिना तथा अन्त के बिना अर्थात् अनादि और अनन्त हैं।

एक विशाल चल सोपान अथवा दैत्यकाय चक्र की भाँति यह संसार-चक्र निरन्तर गतिशील है। जीवन की आचरण-संहिता तथा घटनाओं की

पुस्तिका रूपांकित और विनष्ट होती रहती हैं। यदि यह अति रहस्यमय तथा आदि भौतिक है, तो व्यक्ति अपनी स्मृति में केवल इतना चित्र सम्मुख ले आए कि किस प्रकार मानव-पीढ़ियाँ एक अनन्त-क्रम में उत्पन्न होती रही हैं और विनष्ट भी होती रही हैं। चाहे प्रत्येक व्यक्ति ने अपने जीवन-काल में अपने पराक्रम की कितनी ही डींग हाँकी, किन्तु उसे जीवन असहाय रूप में प्राप्त हुआ था और उसका जीवन भी उसी प्रकार निर्दय, क्रूर कराल-काल द्वारा असहायावस्था में समाप्त कर दिया गया। जिस प्रकार किसी लघुतम यन्त्र विद्या तथा अनोखे उपकरण के लिए भी नियम होते हैं, उसी प्रकार इस जागतिक-खेल के नियन्त्रक भी कुछ निश्चित, स्थायी नियम हैं। तथ्य यह है कि इस जगत, ब्रह्माण्ड के विभिन्न क्षेत्रों का नियन्त्रण करने के लिए भिन्न-भिन्न नियम हैं, जो आगे जाकर एक ही विधि में समीकृत हैं, एकत्र हैं, मिल गए हैं।

ज्योतिषशास्त्र मानवों के जन्मों, दुःखों, हर्षों और उनकी मृत्यु के नियन्त्रक जागतिक नियमों को उद्घाटित करता है, उनको मुखरित करता है, उन्हें स्पष्ट दर्शाता है।

१६

ज्योतिष और रोग निदान-शास्त्र

चिकित्सा-शास्त्र के सभी विद्यार्थियों को उनकी चिकित्सा को प्रभावित करने वाले उन सभी कानूनों का अध्ययन करना पड़ता है जिसके कारण कानूनी कमियों के लिए वे दण्डित न किये जा सकें। इसी प्रकार, चिकित्सकीय ज्योतिष का ज्ञान भी उनके शैक्षिक पाठ्यक्रम का एक अंग बना दिया जाना चाहिए क्योंकि, जबकि कानून का ज्ञान उनकी अपनी खाल बचाने में सहायक होता है, ज्योतिष का ज्ञान रोगियों की प्राण-रक्षा करने में सहायक होगा—जो उनके व्यवसाय का मूल लक्ष्य है तथा उनके जीविकोपार्जन का मुख्याधार है।

जब तक ज्योतिष को चिकित्सा-पाठ्यक्रम का एक भाग नहीं बना दिया जाता, तब तक चिकित्सकों को चाहिए कि वे इसको स्वत: प्रेरणा से अध्ययन-हेतु अतिरिक्त व्यवसाय-सहायक तथा परिपूर्णता की दृष्टि से अंगीकार करें।

जन्मकुण्डली व्यक्ति की संरचना में प्रधान तत्वों तथा कुछ विशिष्ट रोगों के प्रति उसकी नैसर्गिक प्रवृत्ति का ज्ञान देने में निश्चित रूप से सक्षम होती है। उदाहरणार्थ, जब लग्न का स्वामी लग्न में स्थित नहीं होता अथवा उस पर दृष्टिपात भी नहीं करता, तब व्यक्ति निश्चित ही शारीरिक रूप में दुर्बल होता है। साथ ही, जब लग्न अथवा लग्न के स्वामी पर शनि, राहु, केतु अथवा मंगल जैसे पाप-ग्रहों की दृष्टि पड़ती है अथवा किसी भी घर में उनका साथ हो जाता है, तब वह व्यक्ति रोगों (तथा दुर्घटनाओं)

का सरलतापूर्वक शिकार होना सम्भव होता है।

इसी प्रकार, जब किसी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा पर शनि, मंगल, राहु व केतु जैसे पाप-ग्रह की कुदृष्टि पड़ती है अथवा चन्द्रमा का उसके साथ योग हो जाता है, तब मानसिक-थकान, पागलपन, न्यूनबुद्धिता, अथवा खिन्नता का मानस-रोग प्रगट होता है। नीचे दी हुई जन्मकुण्डलियों को देखिए :
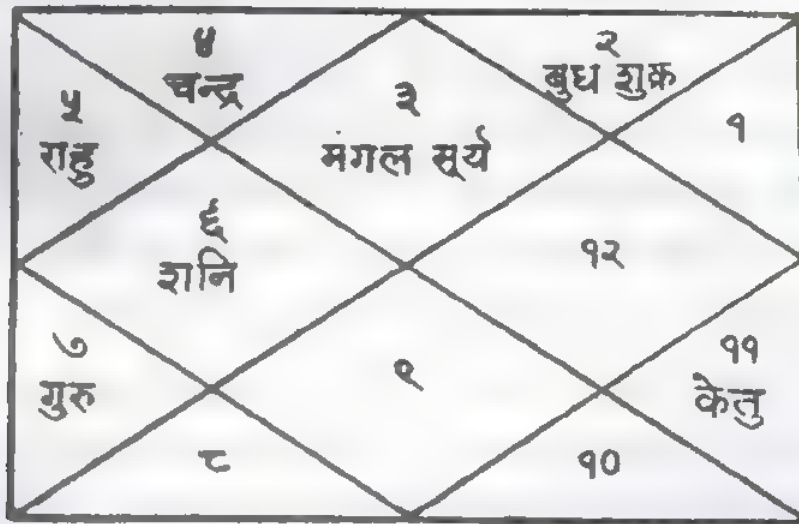
इस व्यक्ति ने हमको लिखा था कि जब तब अचेतन हो जाने और मानसिक-थकान से पीड़ित था। उसे सभी प्रकार के चिकित्सकीय परीक्षणों और जाँच-पड़तालों में से तथा अति-व्ययी चिकित्सकीय प्रतिष्ठानों के चक्कर लगाने पड़े हैं केवल मात्र यह भर बताए जाने के लिए कि कोई दोष
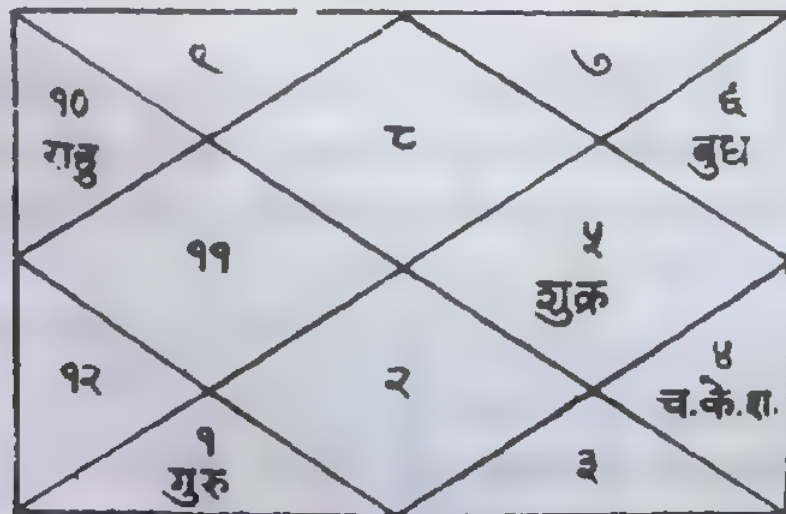
प्रगट नहीं होता। उसे इतना अधिक धन व्यय करने तथा इतने अधिक परीक्षणों का भार-वहन करने की आवश्यकता केवल मात्र यह बतलाए

जाने के लिए नहीं थी कि उसके मस्तिष्क में कोई दोष, खराबी नहीं थी। जन्मकुण्डली पर सामान्य दृष्टिपात ही वह दोष तुरन्त बता देखा जिसको अत्यन्त संश्लिष्ट आधुनिकतम चिकित्सकीय उपकरण न बता पाएँगे। कुछ भी हो, अन्ततोगत्वा जन्मकुण्डली व्यक्ति के अन्तर-बाह्य का मानचित्र है।

यह एक महिला है जो व्यामोह, मतिविभ्रम से पीड़ित है। वह बम्बई स्थित अपने निवास-स्थान से नीचे चल रहे यातायात को जब देखती है तो उसे ऐसा अनुभव होता है मानो अधिकांश पदयात्री तथा अश्वारोही-गण अपने हाव-भाव तथा गतिविधियों द्वारा उसको कोई गुप्त सन्देश देना चाहते हों। इसका कारण यह है कि उसकी जन्मकुण्डली में चन्द्र (मस्तिष्क) शनि और केतु नामक दो पाप-ग्रहों द्वारा दूषित हो गया है।

संयुक्त राष्ट्र के चिकित्सकों ने अब स्वीकार कर लिया है कि हृदय रोग का पता व्यक्ति की हथेली में हृदय-रेखा से लगाया जा सकता है। इसी प्रकार चिकित्सक लोग यह भी ध्यान रख सकते हैं कि किसी भी जन्म-कुण्डली में केतु क्षयोन्मुख यक्ष्मा-रोगी शरीर का प्रतीक है। यदि केतु मकर लग्न में है तो उस व्यक्ति का स्वयं का शरीर यक्ष्मा रोग का शरीर होगा। किन्तु यदि केतु मकर राशि में सातवें घर में हो, तो स्पष्ट है कि व्यक्ति की जोड़ी (वर या वधू) पतली, रोगी-समान, पीली तथा यक्ष्माग्रस्त होगी। यही बात उस व्यक्ति की माता के साथ होगी यदि केतु चौथे घर में होगा, तथा पिता के साथ भी यही सत्य होगा यदि केतु मकर-राशि में १०वें घर में हो।

मंगल लग्न में होने पर 'गरम' मिजाज तथा एक 'गरम' संरचना का द्योतक होता है जिसमें व्यक्ति गैसों और वायु से पीड़ित होना सम्भव होता है। ऐसे रोगियों का उपचार करते समय चिकित्सक-गण सरलतापूर्वक ऐसे उपाय बता सकते हैं जो इन प्रवृत्तियों को रोक सकें।

शनि एक ठण्डा, धीमी-गति वाला ग्रह होने के कारण ऐसे रोगों का जन्मदाता है जो बहुत लम्बे चलते हैं यथा सतत र्श (जुखाम), काली खाँसी, क्षयरोगादि। एक व्यक्ति ऐसे रोगों का शीघ्र शिकार हो जाता है यदि उसकी लग्न का स्वामी शनि है और वह शनि सिंह राशि में स्थित है, क्योंकि सिंह राशि शनि की विरोधी-राशि है। जब शनि चन्द्रमा के साथ

होता है, तब व्यक्ति सदैव जुखाम का रोगी होना सम्भव है क्योंकि शनि स्वयं एक ठण्डा ग्रह चन्द्रमा के साथ होता है जो एक अन्य ठण्डा ग्रह है। शनि सिंह जैसी विरोधी राशि में होने के कारण व्यक्ति कमजोर और रोग के लिए सहज शिकार बना रहता है। जब ऐसा शनि चन्द्रमा के साथ होता है, तब रोग स्वाभाविक रूप में ही सतत जुखाम होता है।

अतः चिकित्सक-गण ज्योतिष से अधिक परिचय प्राप्त कर उत्तम कार्य ही करेंगे। उनके अन्य व्यावसायिक ज्ञान के साथ-साथ ज्योतिष का ज्ञान भी उनके रोगियों की व्याधियों में स्पष्टतर अन्तर्दृष्टि प्रदान करेगा। उनको केवल रोगी की जन्मकुण्डली अपनी उपचार-पर्ची पर नकल कर लेनी है, और यदि जन्मकुण्डली उपलब्ध न हो, तो रोगी की जन्म-तिथि व उसका जन्म-समय लिखकर स्वयं जन्मकुण्डली बना लेनी है। नक्षत्रीय गतिविधि से उनको ज्ञान हो जायगा कि उनके रोगियों को किस प्रकार के रोग पीड़ित करते हैं।

उपर्युक्त जन्मकुण्डली वाला व्यक्ति चालीस वर्ष की प्रारम्भिक अवस्था में ही अतिश्वेतरक्तता के कारण चल बसा। शनि इसकी लग्न का स्वामी है। इसका विरोधी वृश्चिक राशि में होना अतिश्वेतरक्तता का द्योतक है क्योंकि वृश्चिक कीटाणुओं का प्रतीक है और एक 'जलीय' चिह्न के रूप में यह रक्त-द्रव्य का द्योतक है।

उपर्युक्त जन्मकुण्डली दर्शाती है कि व्यक्ति की संरचना पतली, क्षीण तथा क्षयरोगी होगी।
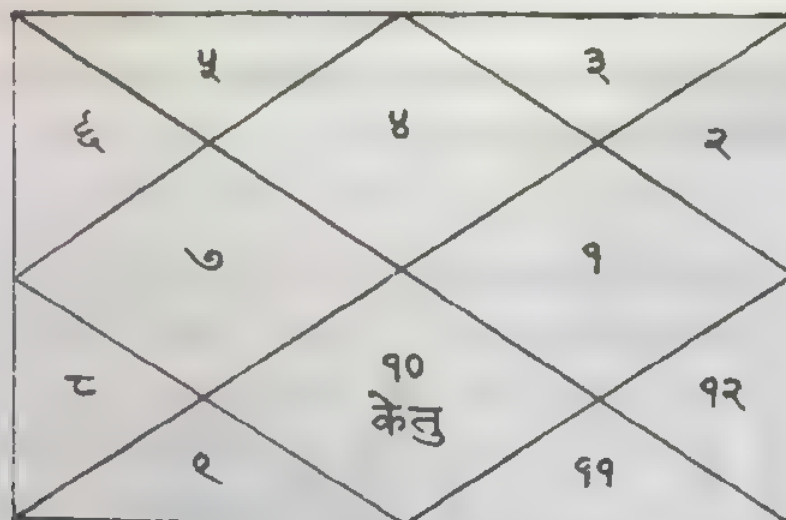
उपर्युक्त जन्मकुण्डली दर्शाती है कि इस व्यक्ति की जोड़ी (वर या वधू) पतली, क्षीण, पीली, क्षयरोगी होगी।
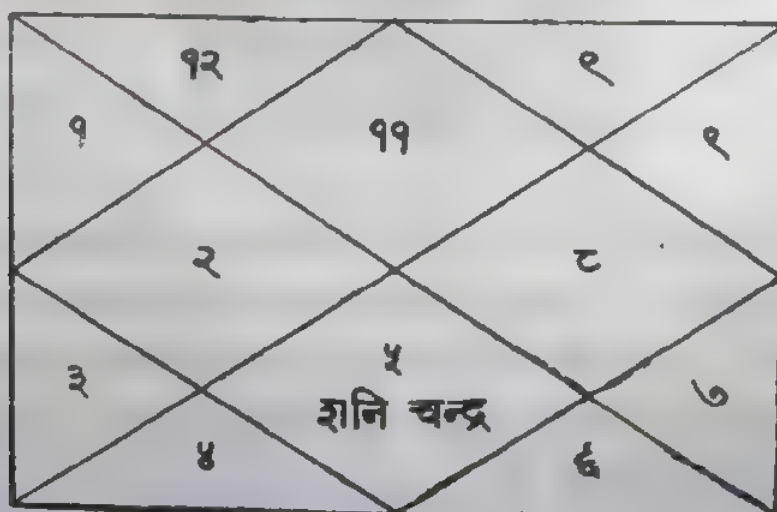
उपर्युक्त जन्मकुण्डली सतत जुखाम की द्योतक है, जैसा ऊपर पहले ही बताया जा चुका है।
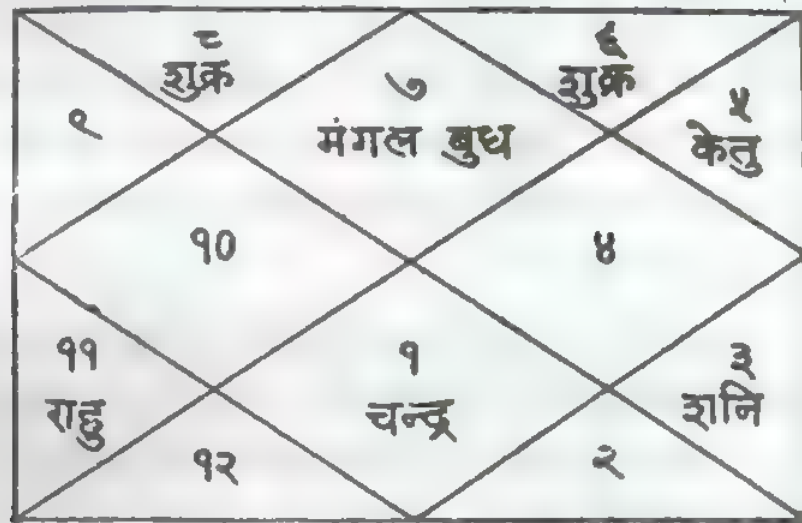
उपर्युक्त जन्मकुण्डली उस व्यक्ति की है जो चार वर्ष की आयु में ही पूरी तरह से अन्धा हो गया। प्रत्येक घर में एक-एक ग्रह का बिखरना देखिए। सूर्य और चन्द्र, दोनों ही, पाप-ग्रहों के मध्य पिस गए हैं, तथा लग्न ५वाँ और ९वाँ घर—सभी में पाप ग्रह स्थित हैं।

चिकित्सीय ज्योतिष का अध्ययन चिकित्सक और रोगी, दोनों को लाभकारी है। चिकित्सक के लिए तो रोग को शीघ्र पहचानने एवं उसका उपचार करने में एक नया मार्ग प्रशस्त करता है। यह उसके अतिशीघ्र और सफल उपचार का यश चहुँ दिशाओं में प्रसारित करेगा।

यह रोगी के लिए शीघ्र एवं सस्ता उपचार सिद्ध होगा क्योंकि उसको एक के बाद एक बहुमूल्य परीक्षणों के धक्के खाते हुए नहीं घूमना पड़ेगा-- वह भी केवल इतना बताए जाने के लिए कि कोई दोष मिला नहीं और इसीलिए उपचार सम्भव नहीं।

एक अतिरिक्त लाभ यह होगा कि चिकित्सक इस योग्य हो जाएगा कि वह रोगी को बता सके कि कब तक—किस विशेष तिथि तक रोग से पूर्ण-निवारण हो जाएगा। यह ज्ञान इस बात का निश्चय करके हो सकता है कि लग्न का अथवा लग्नेश का दूषित करण किस दिन समाप्त होता है।

व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले विभिन्न ग्रहों की महा-दशाओं तथा अन्तर्दशाओं एवं ग्रहों की नित्य की गतिविधियों का अध्ययन

रोग का निश्चय करने में सहायक होगा।

ज्यों-ज्यों चिकित्सक प्रत्येक रोगी की तथा अपने परिचित व्यक्तियों की जन्मकुण्डलियाँ लिखता जाएगा, त्यों-त्यों उसके पास एक ऐसा संवर्धनशील संग्रह होता जाएगा कि वह उनका पारस्परिक, तुलनात्मक मूल्यांकन कर सके। ज्यों-ज्यों उसका अनुभव बढ़ेगा, त्यों-त्यों वह रोग का पूर्वानुमान, उसका निदान व उपचार करने में सक्षम होता जाएगा और रोगावधि का भविष्यकथन भी कर सकेगा।

हम आशा करते हैं कि संसार भर में फैले हुए चिकित्सालय उपचार-पर्ची पर रोगी की जन्मकुण्डली बनाना भी प्रारम्भ कर देंगे और अपने अन्य विशेषज्ञों के साथ-साथ अच्छे ज्योतिषियों को भी नियुक्त करने लगेंगे जो रोगी की जन्मकुण्डली की सूक्ष्म-परीक्षा कर सकें और उपचार करने वाले चिकित्सक के साथ इसकी विषमताओं पर चर्चा कर सकें। जन्म-कुण्डलियों का अध्ययन गम्भीर शल्य-क्रिया के लिए शुभ दिनों का निर्णय करने और सफलता की प्रतिशत में सुधार करने में भी सहायक होगा।

२०

वेदों में ज्योतिष-शास्त्र

ज्योतिष की पुराननता इस तथ्य से आंकी जा सकती है कि इसका उल्लेख वेदों में तथा अन्य प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलता है। अतः, ज्योतिष कोई 'नयी-नूतन' अध्ययन की शाखा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग अविवेक में सोचने सम्भव हैं।

नैराश्य में तथा अविवेक में एक अन्य धारणा यह विश्वास है कि वेदों का प्रादुर्भाव सृष्टि के प्रारम्भ में ही हो गया। वेदों में पहुँची हुई मनो-विज्ञान की चरम सीमाओं से स्पष्ट है कि मानव-श्रम की पर्याप्त परिपक्वता पर ही वेदों का प्रादुर्भाव हुआ है। और फिर भी, वेद ही प्राचीनतम मानव-साहित्य के विद्यमान एवं सुरक्षित भण्डार हैं। यदि वे प्रकृति व दैवीज्ञान के पुष्प और विशुद्धतम रूप के प्रतीक हैं, तो यह स्वाभाविक ही है कि उनमें ज्योतिष-शास्त्र का उल्लेख हो। और ऐसा है भी। इस दृष्टि से, ज्योतिष एक अत्यन्त प्राचीन विज्ञान है जिसको उन ऋषियों और द्रष्टाओं ने खोजा और विकसित किया जिन्होंने दैवी-प्रेरणा से सर्वप्रथम वेदों का गान और लिप्यन्तरण किया था।

ऋग्वेद की ऋचा (१.१६४) में सूर्य, इसकी किरणों, गतिविधियों, प्रभावों का वर्णन समाहित है। ऋचा में जागतिक सृष्टि का वर्णन सर्व-चैतन्य, सर्वव्याप्त दैवी जीवन-सिद्धान्त के स्पन्दन के रूप में किया गया है।

शतपथ-ब्राह्मण (भाग-६; १ : २ : ४) का कथन है कि जागतिक विश्व सूर्य पर ही अपनी सृष्टि एवं अपनी सातत्य के लिये केन्द्रित है।

"सोकामयत भूत एव स्यां प्रजायेयेति। स आदित्येन दिवं मिथुनं समभवत्। तत आण्डं समवर्तत। नदम्यभृशत् रेतो विवृहीति। ततः चन्द्रमा असृज्यत। एषः वै रेतः। अथ यदश्रु संक्षरितमासीत्तानि नक्षत्राण्य ।भवन् ।।"

ऋग्वेद (१ : ११५ : ३) सौरमण्डल के अन्य (आश्रित) सहयोगियों-सदस्यों को सूर्य का स्वाभाविक वंश, उसकी प्रजा वर्णन करता है।

ऋग्वेद (१.१६.६; १०५.६; ९वाँ भाग ११४.३; दसवाँ भाग५५.३) उन छहों (चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) और सूर्य को स्वर्ग में निवास करने वाले 'सप्त-देवों' के रूप में उल्लेख करता है।

पृथ्वी पर अग्नि उच्च-अन्तरिक्षों के दैवी, आकाशीय सूर्य का पार्थिक, लौकिक रूप है। शतपथ-ब्राह्मण (भाग ६ ७ : ११ का कथन है कि सूर्य-सिद्धान्त अथवा जीवनाग्नि पिण्ड को सचेतन करते हैं (प्राणो वै नृषदग्निः)। मानव में जीवनाग्नि का नियन्त्रण केन्द्र शीर्ष है, जो इसीलिए सर्वोपरि स्थापित किया गया है। जागतिक ऊर्जा के साथ तात्विक रूप में तत्वत होते हुए, एक उचित प्रकार से समंजित तथा एकाग्र होंने वाला मानव-मस्तिष्क किसी भी समय विश्व को स्पन्दनशील बनाने वाली जागतिक प्रवाह-धाराओं से सम्पर्क स्थापित कर सकता है। यदि वह समंजन, स्वरैक्य करने में मफल हो जाता है और एक घनिष्ठ-सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, तो वह 'विगत' अथवा 'भावी' को देख सकता है, अन्यथा कम-से-कम यदा-कदा तदर्थ अन्तर्ज्ञानीय झलकियाँ प्राप्त कर सकता है।

मानव प्रारब्ध का नियमन करने वाले सात आकाशीय पिण्डों के अपने अपने सहजांश मनुष्य में हैं। ये पाँच इन्द्रियाँ और मन व बुद्धि हैं।

जैसा उपनिषदों में परिकल्पित है, सतत गतिशील इस सृष्टि-चक्र की १२ तीलियाँ हैं। ये राशिचक्र (ज्योतिप चक्र) की १२ राशियाँ हैं। जब यह विशाल, दीर्घकाय सृष्टि-चक्र घूमता है, तब यह प्रत्यावर्ती रूप में 'प्रकाश' तथा 'छाया' अथवा 'ज्योति' और 'अन्धकार' बाहर फेंकता जाता है जिनको हम ७२० (३६० + ३६०) दिन और रात कहकर पुकारते हैं।

शतपथ-ब्राह्मण (XII. ७-१) में भूमध्य-रेखा को बृहती के नाम से सन्दर्भित किया है :

"सूर्यो बृहती मध्यूढस्तपति। स वा एष संवत्सरो बृहतीमाभि सम्पन्नः।"

(बृहती अथवा विपुवद् वृत्त के नाम से भी पुकारी जाने वाली) भूमध्य-रेखा के उत्तर में उत्तर दिशा के अक्षांश के तीन प्रधान समानान्तर त्रिष्टप, पंक्ति और जगती हैं। उसी प्रकार, भूमध्य-रेखा के दक्षिण अक्षांश

के समानान्तर अनुष्टुप, उश्निक और गायत्री कहलाते थे। भूमध्य-रेखा और छः अन्य भाग सूर्य और सौर-मण्डल के अन्य छः ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आधुनिक भूगोल-शास्त्र में भी इन्हीं क्षेत्रीय विभाजनों का अनुसरण किया जाना प्रदर्शित करता है कि यह प्राचीन भारतीय पर्यवेक्षणों पर आधारित है।

पाँचों ग्रहों के—जो सबके सब सूर्य से निःसृत हैं और इसके प्रकाश को प्रतिबिम्बित करते हैं—दो-दो पक्ष हैं—सृजनात्मक और विनाशक पक्ष। इस ज्ञान भण्डार की ज्योतिषीय व्याख्या इस तथ्य में है कि प्रत्येक ग्रह दो राशियों का स्वामी, अधिष्ठाता है। ये दस तथा सूर्य और चन्द्रमा की एक-एक राशि राशि चक्र (ज्योतिष-चक्र) की १२ राशियाँ बना देती हैं।

वेदों और उनके भाष्य-ग्रन्थों में 'राशि' शब्द का प्रयोग द्वि-आर्थक रूप में हुआ है, और उन दोनों का ज्योतिषीय महत्व है। राशि का अर्थ एक पुंज, निकर है और साथ ही एक सतत गतिशील चिति भी है। राशि एक मानिकीकृत निकर है क्योंकि यह ज्योतिष-चक्र (राशि-चक्र) आवर्तन के २$\frac{1}{4}$ नक्षत्र-भागों (१३.२० कलाओं) का प्रतिनिधित्व करती है।

संहिता और ब्राह्मण-वांग्य (अथर्ववेद VI. ११०; ऋग्वेद X. १६१, तैत्तरीय ब्राह्मण १.१.२; १.५.२) इन ग्रहों-नक्षत्रों, के शुभ और अशुभ परिणामों का उल्लेख करते हैं।

यह धारणा अयथार्थ, गलत है कि ज्योतिष-चक्र का राशि-विभाजन भारत देश ने बाहरी किसी देश से सीखा।

कुछ पश्चिमी विद्वानों ने यह झूठी कथा प्रचारित कर दी है कि वैदिक-भारतीयों को तो प्राथमिक नक्षत्र-विद्या का भी ज्ञान नहीं था। उस विश्वास को भूमिसात करने—उसका भण्डाफोड़ करने के लिए तो ऋग्वेद (१.२५.८) में सामान्य १२ मासों के अतिरिक्त वेद-मास का उल्लेख ही पर्याप्त है। उन वैदिक-विद्वानों-भारतीयों ने तो सौर-वर्षों और चान्द्र-वर्षों के परस्पर समंजन में पूर्णता, निपुणता प्राप्त कर ली थी, जो कि एक अत्यन्त कठिन, संश्लिष्ट गणना है।

ऋग्वेद की (१.१६४) ऋचा में अन्य बातों के अतिरिक्त कुछ मूलभूत नाक्षत्रिक और ज्योतिषीय सूत्र हैं जो सिद्ध करते हैं कि नक्षत्र-विद्या (और ज्योतिष-विद्या) का विज्ञान वेदों के समान ही प्राचीन है, और उन्हीं का एक भाग है।

२१

ज्योतिष एवं इतिहास

ज्योतिषशास्त्र ने इतिहास में महान योगदान किया है। ज्योतिष-शास्त्र में महान ऐतिहासिक व्यक्तियों ने जो श्रद्धा रखी थी, उसका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं।

प्राचीन भारत में ज्योतिष/नक्षत्रविद्या के अध्ययन के लिए उपयोग में लाया जाने वाला दिल्ली-स्थित एक ऐतिहासिक तथा श्रद्धेय स्मृति-चिह्न शान्त किन्तु उच्च-स्मारक तथाकथित कुतुबमीनार उपनाम विक्रम-स्तम्भ है।

दिल्ली तक नर-संहार करने वाले मुस्लिम, मूर्ति-ध्वंसक कुतुबुद्दीन ने, जो गुलाम से दिल्ली के ऊपर शासन करने वाले प्रथम मुस्लिम सुल्तान के रूप में परिवर्तित हो गया, अपनी बर्बर मूढ़ता और धर्मान्ध-ज्वाला में विक्रम-स्तम्भ के चारों ओर बनी हुई प्राचीन भारत की भव्य नक्षत्र-एवं ज्योतिष विद्या की वेधशाला को विनष्ट कर दिया। उसके हथौड़ों के प्रहारों को चुनौती देती हुई एक मेहराब पर उसके प्रतिमाभंजन की अपराध स्वीकृति अभी भी उत्कीर्ण है। उसने भव्य तथा ऊँचे प्रस्तर-स्तम्भ के चारों ओर बने हुए २७ मन्दिरों को ध्वस्त करने की शेखी कुतुबुद्दीन ने बघारी है। इस मन्दिर-संकुल के कुछ अंश अभी भी अपनी सुकोमल हिन्दू अलंकृति-युत स्तम्भों की सहायता से वहीं पर खड़े हैं।

इस स्तम्भ की पृष्ठ-रज्जु ईंट और चूने की है। बाह्य प्रस्तर-अलक-तरा पर हिन्दू-उत्कीर्णांग, लेख तथा अलंकृतियाँ थीं। स्तम्भ के प्रवेश-द्वार

के ऊपर, दायीं ओर, खम्भे के ऊपर कार्निस के ठीक नीचे के भाग पर लटकते हुए एक पत्थर पर अत्यन्त सुकोमल कमल-कलिका अभी भी उत्कीर्ण दिखायी पड़ती है। लौह-स्तम्भ के चारों ओर मंदिर-कार्निस में हिन्दू-देवताओं और देवियों को देखा जा सकता है। मुस्लिमों ने उन प्रस्तर-श्रेणियों को वहाँ से हटवाकर, उन पर बाहरी ओर अरबी-शब्दावली खुदवा कर उनको भीतर की ओर से वहीं पर लगा दिया था। प्रस्तरों में यह जाल-साजी अव्यवस्थित खम्भे के ऊपर कार्निस के ठीक निचले भाग के नमूनों, बचे-खुचे हिन्दू-लक्षणों, विद्यमान प्रस्तर-कला के ऊपर संस्कृत-शब्दावली के अंशों तथा स्थानच्युत शिलाओं में अभी भी परिलक्षित की जा सकती है। ये वस्तुएँ स्पष्ट दर्शाती हैं कि जिन पत्थरों पर दूसरी ओर हिन्दू-प्रतिमाएँ बनी थीं, उनको किस प्रकार मुस्लिम नर-संहारकों ने अरबी-शब्दावली से युक्त कर दिया था। उन क्रूर-कथाओं को कहने वाले वे प्रस्तर अब नई दिल्ली स्थित पुरातत्व-संग्रहालय में भेज दिये गए हैं। लौह-स्तम्भ के चारों ओर वाली चारों दीवारों में से एक दीवार के ऊपरी भाग पर एक नयनाभिराम दृश्य उत्कीर्ण है जिसमें कंस के कारागार में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म अंकित है।

विक्रम-स्तम्भ की सात मंजिलें थीं जो सात ग्रहों की प्रतीक थीं। स्तम्भ के चारों ओर एक झील थी जिसमें प्रतिबिम्बित ग्रहणों तथा अन्य प्रक्रियाओं का पर्यवेक्षण किया जाता था।

यह स्तम्भ आकाशों के पर्यवेक्षण-हेतु न केवल एक उच्च सुरक्षित-स्थान के रूप में उपयोग में आता था, अपितु वर्ष के विभिन्न दिनों तथा विशिष्ट दिनों के किसी निश्चित कालखण्डों अर्थात् घण्टों पर सही छाया को प्रदर्शित करने के लिए कुछ थोड़े-से झुकाव पर निर्मित एक दीर्घ सूर्य-घड़ी की यष्टि के रूप में भी काम आया करता था। कहा जाता है कि यह स्तम्भ इस प्रकार बनाया गया है कि वर्ष के सबसे बड़े दिन—२२ जून को व वर्ष के सबसे छोटे दिन—२२ दिसम्बर को—इसकी कोई छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ती।

दिल्ली का यह २३८-फुट ऊँचा लाल पत्थर का स्तम्भ आजकल कुतुबमीनार के नाम से पुकारा जाता है। अरबी भाषा में भी यह शब्दावली

नक्षत्रीय-पर्यवेक्षण की द्योतक है क्योंकि 'कुतुब' का अर्थ 'उत्तरी ध्रुव' है और 'मीनार' स्तम्भ है। किन्तु, भारी भूल करने वाले इतिहासकारों ने इसका सम्बन्ध दिल्ली पर सन् १२०६ से १२१० तक शासन करने प्रथम मुस्लिम सुल्तान कुतुबुद्दीन से जोड़कर संसार भर को दिक्-भ्रमित किया है, यद्यपि स्वयं कुतुबुद्दीन ने ऐसा कोई दावा कभी प्रस्तुत नहीं किया।

जैसाकि इस अध्याय में स्पष्ट किया गया है, यह स्तम्भ मुस्लिम-पूर्व कालीन हिन्दू-नक्षत्रीय-पर्यवेक्षण स्तम्भ है। बारम्बार बर्बर मुस्लिम-आक्रमणों द्वारा ध्वस्त किए गए विशाल चतुर्दिक् भवन-संकुल के मध्य अब यह स्तम्भ अरबी-शब्दावली से भ्रष्ट होकर पूर्णरूप में एकाकी खड़ा है।

इसका निर्माण गल्पकथाओं के यशस्वी भारतीय सम्राट महाराजाधिराज विक्रमादित्य ने सम्पूर्ण अरब केन्द्रीय एशिया के ऊपर अपनी विजय की स्मृति में तथा साथ-साथ ५८-५७ ई० पू० विक्रम सम्वत् के श्रीगणेश करने हेतु स्मरण-चिह्न के रूप में करवाया था। यह संवत् तब से निरन्तर एक आधारभूत मौलिक संवत्सर रहा है। भेड़िए के क्रूर पंजों में अपनी जीवन-मुक्ति के लिए संघर्षरत मेमने की भाँति अज्ञान में बुरी तरह से जकड़े हुए अरबों को जीवन की पवित्र, प्रशान्त तथा समृद्ध हिन्दू-पद्धति में पदार्पण कराने के लिए तथा संस्कृत के माध्यम से, हिन्दू-कलाओं, विज्ञानों और विधाओं में सुकोमल संरक्षण सहित प्रशिक्षित करने के लिए हिन्दू सम्राट विक्रमादित्य के प्रति कृतज्ञ होने के लिए अरबों को पर्याप्त कारण हैं—यह सिद्ध करने हेतु हमने इस अध्याय में एक अरबी कवि का सन्दर्भ प्रस्तुत किया है।

विक्रम-स्तम्भ के निर्माण के पूर्ण विवरण किस प्रकार ज्योतिषीय तथा नक्षत्रीय अंकों पर आधारित थे—इसका और भी अधिक ज्ञान इस तथ्य से स्पष्ट है कि विक्रम-स्तम्भ में एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरे के बाद पहला—इस क्रम से २७ मोड़ों, चापों और त्रिकोणों का घेरा है। कहने का अर्थ यह है कि यह बाँसुरी की-सी ध्वनि करने वाला एक अलंकृत स्तम्भ है। प्रत्येक घेरा एक नक्षत्र का प्रतीक है। प्रथम खण्ड की समाप्ति के लगभग निकट ही ऊपरी दीर्घा के नीचे इन प्रस्तर घेरों

में छेद हैं। ऐसी संभावना प्रतीत होती है कि कोई नक्षत्रीय-यन्त्र उनमें लगा हुआ स्तम्भ के चारों ओर घूमता रहता था। तथाकथित भूल-भुलैयाँ के निकट तार कोलादि से बने राजमार्ग के दूसरी ओर जंगली, पथरीली बंजरभूमि पर, स्तम्भ से लगभग एक मील दूरी पर कुछ खुदाइयों में किसी भी व्यक्ति को भूमिगत एक या दो खण्ड अभी भी दिखायी पड़ सकते हैं जो भव्य सीढ़ियों तथा आवासीय अथवा कार्यकारी भागों से युक्त भव्य तलघर रहे होंगे। विक्रम स्तम्भ के चारों ओर यदि ऐसी खुदाइयाँ की जाएँ तो निश्चित है कि मूल्यवान पुरातत्वीय साक्ष्य अवश्य ही उपलब्ध हो जाएँ। किन्तु, कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसी मूल्यवान उप-लब्धियों के लिए ये सभी प्रयत्न सभी साम्प्रदायिक तथा धर्मान्ध मान्यताओं अथवा अन्य विषय बाधाओं के विरोध के होते हुए भी अत्यन्त कठोरता-पूर्वक सम्पन्न करने होंगे।

हम इस स्मारक को विक्रम स्तम्भ कहते हैं क्योंकि हमें एक अत्यन्त अकाट्य विचार-सूत्र प्राप्त है। स्तम्भ के निकट ही एक आवासीय बस्ती है जो महरौली नाम से पुकारी जा सकती है। यह शब्द मिहिर-अवली का अपभ्रंश रूप हैं। इस संयुक्त संस्कृत शब्द का अर्थ 'मिहिर पंक्तियाँ' हैं। उस शब्द के दो अर्थ हैं। मिहिर सूर्य के लिए संस्कृत पर्याय है। चूंकि सूर्य ही सौर-मण्डल का अधिष्ठाता, प्रमुख है तथा पृथ्वी पर जीवन का एक व एकमेव सर्जनहार है, इसीलिए किसी भी नक्षत्रीय एवं ज्योतिषीय वेधशाला में सूर्य ही आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बन जाता है। वह बस्ती, जिनमें प्राचीन वेधशाला के तकनीकज्ञ, गणितज्ञ तथा अन्य कार्यकर्ता निवास करते थे, मिहिरावली के नाम से पुकारी जाती थी।

मिहिर का एक और गुणार्थ है। मिहिर नामक सुप्रसिद्ध ज्योतिषी सम्राट विक्रमादित्य के दरबार के नव-रत्नों में से एक था। अनेक सुविख्यात ज्योतिष-ग्रन्थों का रचयिता मिहिर महाराजाधिराज विक्रम के युग में अपनी पूर्णतः सत्य भविष्यवाणियों के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था।

चूंकि विक्रम स्तम्भ के निर्माण में रत मिहिर राजदरबार का नक्षत्र-शास्त्री था और उसके सहायक निकट ही निवास करते थे, अतः उस बस्ती का नाम उसी के नाम पर 'मिहिरावली' रख दिया गया। अवली का अर्थ

पंक्तियाँ है। इस प्रसंग में, वे घरों, मकानों की पंक्तियाँ थीं। अतः हमारे युग तक विद्यमान 'मिहिरावली' शब्दावली इस तथ्य का स्पष्ट संकेतक है कि विक्रम स्तम्भ उस प्राचीन हिन्दू वेधशाला का केन्द्रीय शीर्षस्थ स्तम्भ था जो चारों ओर से उन विशालाकार, महान तथा भव्य मण्डपों द्वारा आवृत थीं जिनमें २७ नक्षत्रों का विवरण था—स्वयं स्तम्भ में सात खण्ड सात ग्रहों के प्रतीक थे और २७ छेद २७ नक्षत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे। यदि इधर-उधर लुढ़के पड़े तथा अव्यवस्थित संस्कृत उत्कीर्णांशों को श्रमपूर्वक एकत्र किया जाय, तो सम्भव है, कुछ अतिरिक्त विचारसूत्र भी उपलब्ध हो जाएँ।

यह विक्रम स्तम्भ भूगर्भस्थ भूकम्पीय अध्ययन के लिए गुफामय तलघरों से घिरा हुआ है। यह तथ्य उन कुछ भागों से स्पष्ट है जिनको धर्मान्ध, बर्बर मूढ़ जनों ने इल्तमश और अलाउद्दीन खिलजी जैसे लुटेरों को गाड़ने के काम में लाया गया है। उन अवशेषों को उन तलघरीय कक्षों से हटा दिया जाना चाहिए जिससे स्तम्भ के चारों ओर भूगर्भस्थ कक्षों का सही अध्ययन व मूल्यांकन हो सके।

अरबी शब्दावली 'कुतुबमीनार' स्वयं ही आँखें खोलने वाली है। अरबी भाषा में 'कुतुब' शब्द उत्तरीध्रुव का द्योतक है और 'मीनार' एक खम्भे अथवा स्तम्भ का स्मृति-चिह्न है। जब मुस्लिम गुलाम-लुटेरे कुतुबुद्दीन ने २७-नक्षत्रीय मण्डपों को ध्वस्त कर दिया, तब उसे वह अत्युच्च, आकाशचुम्बी हिन्दू-नक्षत्रीय स्तम्भ नष्ट करने में अत्यधिक ऊँचा व अत्यन्त भयंकर, भयावह प्रतीत हुआ। यदि उसने इसको गोला-बारूद से उड़ा देने का यत्न किया होता, तो गिरने वाले व इधर-उधर उड़कर दूर गिरने वाले पत्थरों से स्वयं इसके अपने ही अनेक लोग दुर्घटनाओं के शिकार हो गए होते। अतः उसने दूसरी सर्वोत्तम बात अपना ली अर्थात् स्तम्भ के कुछ पत्थरों को निकलवाया, हिन्दू-प्रतिमाओं को भीतर की ओर करवा दिया और दूसरी बाहर की ओर अरबी शब्दावली खुदवा दी।

अपना धर्मान्ध-मदान्ध आक्रोश कुछ कम होने पर कुतुबुद्दीन ने दुभाषियों के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त करने का यत्न किया कि उस स्तम्भ के निर्माण में हिन्दुओं (काफिरों) का क्या उद्देश्य था। अतः उसको अरबी

भाषा में समझाया गया था कि स्तम्भ का निर्माणोद्देश्य उत्तरी ध्रुव का पर्यवेक्षण हेतु था। इसलिए यह स्तम्भ मुस्लिम तिथि-वृत्तों में कुतुबमीनार के नाम से पुकारा जाने लगा जिसका अर्थ था : उत्तरी ध्रुव के पर्यवेक्षण हेतु स्तम्भ।

उल्लेखयोग्य बात यह है कि स्तम्भ की सीढ़ियों का प्रवेश द्वार बिल्कुल उत्तर की ओर उत्तरी ध्रुव की दिशा में है। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि किस प्रकार कुतुबुद्दीन को उस समय प्रचलित स्तम्भ की हिन्दू-महत्ता की शाब्दिक व्याख्या उपलब्ध की गयी थी।

सम्राट् विक्रम इतिहास में विद्या के महान संरक्षक तथा विक्रम संवत् के महान् प्रणेता के रूप में प्रख्यात है। यह संवत् हमारे अपने युग में भी हिन्दू-वर्ष की नक्षत्रीय व ज्योतिषीय गणनाओं में व्यवहार में आता है। सम्राट् विक्रमादित्य की प्रसिद्धि इसलिए भी है कि उन्होंने विश्वविख्यात नक्षत्र-ज्ञाता तथा ज्योतिष शास्त्री (वराह) मिहिर को आश्रय प्रदान किया था।

मिहिर वेधशाला का, जिसके मध्य में गगनचुम्बी विक्रम पर्यवेक्षण-स्तम्भ स्थित था, भारतीय नक्षत्रीय एवं ज्योतिषीय अध्ययनों में विशेष मान था। जीवित स्मृति में, कम-से-कम पाण्डवों के समय से चूंकि दिल्ली ही प्राचीन भारत की राजधानी रही थी, इसलिए यह प्राचीन भारत की मुख्य वेधशाला थी। दूसरी बात, प्राचीन भारत की याम्योत्तर रेखा दिल्ली, अवन्तिका (आधुनिक उज्जैन) और (श्रीलंका के केन्द्रीय भाग) लंका से गुजरा करती थी। प्राचीन नाक्षत्रिक गणनाएँ इसी याम्योत्तर-रेखा के सन्दर्भ में की जाती थीं और उनका अनुसरण अखिल-विश्व में—कम-से-कम पश्चिम में अरेबिया और मिस्र तक, उत्तर में स्कण्डनेविया, लटविया और साइबेरिया तक तथा पूर्व में जापान तक—हुआ करता था। प्राचीन भारतीयों द्वारा प्रचलन में लाया गया चान्द्र वर्ष अभी तक इनमें से अनेकों देशों में व्यवहार में लाया जाता है। अन्य लोगों ने इसका परित्याग अधिक सुगम किन्तु कम परिष्कृत सौर-पंचांग के पक्ष में कर दिया है।

किन्तु वे लोग भी जो सौर-पंचांग का अनुसरण करते हैं—यथा आधुनिक यूरोपीय राष्ट्र—उस समय भारतीय पंचांग का अनुसरण करते रहने के स्पष्ट लक्षण प्रस्तुत करते हैं जिस समय भारतीय शासन पश्चिम

एशिया तथा सम्पूर्ण यूरोप पर प्रस्थापित था। भारतीय नववर्ष मार्च में प्रारम्भ होता है, उसी प्रकार ईरान और पश्चिम एशिया के अन्य देशों में भी होता है। प्राचीन यूरोप भी भारतीय वर्ष का अनुसरण किया करता था जैसा कि सैप्टम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर नामों से स्पष्ट है क्योंकि ये सब संस्कृत शब्द हैं जो सातवें, आठवें, नवें और दसवें (दशम) मास के द्योतक हैं। सैप्टम्बर सप्तम (सातवां) मास होता है और शेष भी इसी क्रम में आते हैं केवल तभी जब मार्च को नववर्ष का प्रथम मास माना जाय, जैसाकि हिन्दुओं द्वारा अभी भी माना जाता है।

सौर-मण्डल के सात ग्रहों के नामों पर सप्ताह के रविवार (सन-डे), चन्द्रवार (मन्-डे—मून-डे) आदि का क्रम भी बिल्कुल वही है जैसाकि प्राचीन हिन्दुओं ने निर्धारित किया था।

महीना के लिए संस्कृत शब्द 'मास' (यथा श्रावण मास तथा अधिक मास) भी ईसाई यूरोप तथा अमरीका में ज्यों-का-त्यों (यथा क्राइस्ट मास तथा माइकेल मास में) विद्यमान है।

दैवांश के रूप में शिशु के चरण-प्रक्षालन करने की प्रथा हिन्दू-प्रथा है जिसका पूर्ण-श्रद्धापूर्वक पोप द्वारा अनुसरण किया जाता है। भारत में जब पंचवर्षीय बालक का यज्ञोपवीत-संस्कार होता है, तब उसके सम्बन्धीगण तथा मित्रगण उसको उपहारादि भेंट करते हैं और उसके चरण-प्रक्षालनादि करते समय प्रतीक रूप में कुछ जलकणों का आचमन करना इस बात का आशय प्रकट करता है मानो स्वयं दैव-चरणों से पुण्य-सलिल प्रवाहित हो रहा हो।

स्कैण्डेनिवियन-पौराणिकता इस बात के स्पष्ट लक्षण प्रस्तुत करती है कि उस क्षेत्र को प्राचीन भारतीयों ने अपनी निवास-स्थली बनाया था। स्वयं 'स्कैण्डेनवी' शब्द संस्कृत के 'स्कन्धनाभि' शब्द से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है "योद्धाओं की भूमि"।

प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में ज्ञान की वर्तमान (शोचनीय) अवस्था की स्थिति में तो यह दम्भपूर्ण ही प्रतीत होगा कि भारत का कभी सम्पूर्ण विश्व पर शासन था। किन्तु भारत के एक समय विश्वव्यापी साम्राज्य का पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है। हमारे अपने जीवनकाल में ही ब्रिटेन इस

बात की शेखी बघारा करता था कि उसके साम्राज्य में कभी सूरज डूबता ही नहीं था। उसी स्वर में कहा जा सकता है कि भारत का साम्राज्य किसी समय इतना विशाल, विस्तृत था कि न तो सूरज और न ही चन्द्रमा कभी इस पर अस्त हो पाते थे।

भारतीय पुराणों में इस बात के विशद सन्दर्भ प्राप्त होते हैं कि राजसूय-यज्ञ के सुसज्जित-अश्व के पीछे-पीछे चुनौती देती हुई भारतीय सेनाएँ विश्व के अतिदूरस्थ प्रदेशों में गयी थीं। हम यहाँ सिद्ध करना चाहते हैं कि ये विजय-यात्राएँ वास्तव में, यथार्थ रूप में, हुई भी थीं।

हम पाठक से निवेदन करेंगे कि ब्रिटिश साम्राज्य के अभी कुछ वर्षों पूर्व दूर-दूर तक फैले हुए शासनाधिकार के अनुभव से वह स्मरण रखे कि जब कोई देश विशाल भू-प्रदेश पर शासन करता है तो वह अपनी भाषा, पूजा-आराधना का अपना प्रकार, भूखण्ड के विशाल भागों पर अपने नाम तथा समय के अपने प्रशासनिक विभागों को अपने पीछे छोड़ जाता है। इन सभी परिमापों से हम सिद्ध कर सकते हैं कि विश्व को ज्ञात साम्राज्यों में भारतीय साम्राज्य कदाचित सर्वाधिक विस्तृत, विशाल रहा है।

आइए, हम सर्वप्रथम भौगोलिक नामावली लें। अपने जीवनकाल में ही हमने देखा है कि ब्रिटिश-साम्राज्य ने (इंग्लैण्ड), बुकानालैण्ड, सुमाली लैण्ड, नागालैण्ड, आइसलैण्ड, ग्रीनलैण्ड, बसूतोलैण्ड आदि नाम स्वयं ही दिए हैं। इसी प्रकार हम प्राचीन भूगोल में बलूचिस्थान, अफगानिस्थान, शिवस्थान, धरूचिस्थान, गबूलिस्थान, कुर्दिस्थान, कजकिस्थान, उजबेकिस्थान, तुर्कस्थान (टर्की), अर्वस्थान (अरेबिया) आदि जैसे संस्कृत नाम पाते हैं। इरानम और इराक भी संस्कृत शब्द हैं जो संस्कृत धातु 'इर्' से व्युत्पन्न हैं। संस्कृत में 'इरानम्' का अर्थ 'जलहीन खण्ड' है। इराक की भी इसी प्रकार की व्युत्पत्ति है। इरान का शाही परिवार 'बरमक' भारतीय क्षत्रियों 'परमक' का वंशज था जो बरमक नाम में उस समय परिवर्तित हो गया जब शताब्दियों पूर्व हिन्दू परमक को बलात् इस्लाम स्वीकार करने के कारण भारत से सम्बन्ध तोड़ देने पड़े। बल्ख प्राचीन वाह्लीक है। ओक्सस प्राचीन संस्कृत शब्द 'अश्वक' है। यूरोप में, हम पहले ही देख चुके हैं कि स्कैण्डेनिविया किस प्रकार संस्कृत शब्द है। साइबेरिया को अभी भी

स्थानीय लोगों द्वारा 'शिबिर' नाम से पुकारा जाता है, जो 'आवासीय झोंपड़ी' के लिए संस्कृत शब्द है। लनविया की राजधानी 'रिग्' (ऋग) उसी प्रकार एक संस्कृत धातु से व्युत्पन्न है जिस प्रकार ऋग्वेद। पूर्व एशिया में अधिकांश देशों और नगरों के नाम अभी भी संस्कृत-शब्दावली में हैं : यथा लाओस (लव), मलय, सिंगापुर (सिंहपुर), जावा (जव), सुमात्रा, बाली, स्याम, बर्मा (ब्रह्मदेश), वन-शियन (वन-चन्दन), सैगाँव, (मंजूश्री देवी से) मंचूरिया आदि। सीरिया और असीरिया संस्कृत के सुर और असुर शब्द हैं क्योंकि यूनानी भाषा में 'ई' का उच्चारण 'उ' के रूप में होता है।

जहाँ तक भाषा का सम्बन्ध है हमें ज्ञात है कि फारसी, लैटिन (लातवी), पश्तू, जर्मन, रूमी, स्यामी मलयी या तो संस्कृत भाषा से व्युत्पन्न हैं अथवा विपुलमात्रा में संस्कृत से प्रभावित हैं। प्राचीन अरेबिया तथा टर्की की लिपियाँ संस्कृत-आधारित थीं। पश्चिम एशिया और यूरोप में भारतीय शासन के अधिकांश स्मृति-चिह्न ईसाइयों और इस्लाम के आक्रामक घातक-प्रहारों तथा धर्म-परिवर्तन की क्रोधाग्नि में भस्म, विनष्ट कर दिए गये थे।

स्वयं अंग्रेजी भाषा भी संस्कृत से प्रचुर मात्रा में व्युत्पन्न है जैसाकि निम्नलिखित शब्दों से स्पष्ट द्रष्टव्य है :

वी = वयम् | विडो = विध्वा
यु = युवम् | विडोअर = विधुर
दन्त = डैण्टल | दन्तशास्त्र = डैण्टिस्ट्री

(संस्कृत में विज्ञान का सूचक 'शास्त्र' शब्द अंग्रेजी में 'स्ट्री' में बदल गया है।)

नोन = ज्ञान | नक्तम् = नाइट
अन-नोन = अनजान | माउस = मूषक
स्वेट = स्वेद | डोर = द्वार
मैन = मानव | सन = सूनूह
स्वी-साइड = स्व-छिद | मैट्री-साइड = मातृ-छिद
पैट्री-साइड = पितृ-छिद | डाटर = दुहितृः
रैजीम = राज्यम् | वेस्चर = वस्त्र

('राजकीयता' प्रकट करने वाले सभी अंग्रेजी शब्द संस्कृत के 'राज' शब्द से व्युत्पन्न हैं।) प्रभाकर, प्रतिभा जैसे शब्दों वाला 'प्र' उपसर्ग अंग्रेजी में 'प्रो' के रूप में विद्यमान है यथा प्रो-आफर, प्रो-क्रियेट, प्रो-क्रेस्टीनेट, प्रो-लोंग। पेरीमीटर, पेरीफेरी जैसे अंग्रेजी शब्दों में 'पेरी' उपसर्ग संस्कृत के 'परिक्रमा', 'परिभ्रम' आदि शब्दों में प्रयुक्त 'परि' उपसर्ग ही है। 'पैलेटेबल' जैसे शब्दों में प्रयुक्त 'एबल' प्रत्यय संस्कृत का 'बल' प्रत्यय है जिसका अर्थ 'के योग्य होना' है।

मीटर = मात्रा (माप); पेरीमीटर = परिमात्रा

सेण्टर = केन्द्र (यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि 'सी' का उच्चारण अंग्रेजी में प्रायः 'क' करके होता है यथा कैट, कौट व कफ)। अतः सेण्टर = केन्तर = केन्द्र। 'काऊ' संस्कृत 'गौ' है। 'अग्रेस्सर' अग्रसर है। 'हण्टर' हन्ता है। प्रयत्न करने के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दावली 'मेक ए डेंट इन…' में डैण्ट शब्द भी संस्कृत शब्द दन्त पर ही आधारित है। डेण्टिस्ट व डैण्टल शब्द भी संस्कृत की 'दन्त' धातु से व्युत्पन्न हैं। मृत्यु और उससे व्युत्पन्न अंग्रेजी मार्टल, मार्चुअरि, पोस्टमार्टम, मौर्ग आदि शब्द संस्कृत के 'मृत्यु' शब्द से ही व्युत्पन्न हैं। वजन अथवा दबाव के अर्थद्योतक सभी शब्द यथा बेरी स्फीअर व वेरोमीटर आदि वजन के अर्थसूचक संस्कृत के 'भरस्' शब्द से व्युत्पन्न हैं। पितृ, मातृ, भर्तार, दुहितृ जैसे मूल पारिवारिक शब्द हमें पेटर, मेटर, ब्रदर और डाटर जैसे शब्द देते हैं। संस्कृत शब्द 'क्व' लैटिन धातु 'क्वो' है। 'सुको मोतो' जैसे पूर्ण वाक्यांश पूरी तरह से संस्कृत की 'स्वमत' पदावली है जिसका अर्थ 'अपनी इच्छा से' है। नेवी शब्द संस्कृत के नाव्य (नौ, नौका) से व्युत्पन्न है। पैडस्टल पथस्थल है। टेरेस्ट्रीयल धरातल है। मैडेस्ट्रेनियन संस्कृत का संयुक्त-पद मध्य-धरा अर्थात् भूमि के मध्य में (सागर) है। संस्कृत का 'धरा' शब्द लैटिन में 'टैरा बन जाता है। 'स्थित,' 'स्थिर', 'स्थान' आदि में 'स्था' (संस्कृत) धातु से अंग्रेजी के स्टैण्ड, स्टेशन, स्टेशनरी, स्टुड आदि शब्द बनते हैं।

यहाँ कई बार यह तर्क दिया जाता है कि संस्कृत लैटिन और अन्य भाषाओं की समकालीन प्रतीत होती है। इस धारण को वेदों की प्राचीनता के आधार पर सफलतापूर्वक चुनौती दी जा सकती है। चूंकि वेद वाङ्मय

के प्राचीनतम अंश हैं, अतः उनकी भाषा संस्कृत प्राचीनतम भाषा है। अतः जब संस्कृत और विश्व की अन्य भाषाओं के मध्य सादृश्यता प्रतीत हो, तो यह बल देने की आवश्यकता नहीं है कि वे सब संस्कृत की पौत्री, प्रपौत्रियाँ हैं—न कि समकालीन, समवयस्काएँ।

समस्त विश्व में संस्कृत-आराधना-पद्धति के प्रचलन का जहाँ तक सम्बन्ध है, हम जानते हैं कि प्राचीन विश्व के अधिकांश भाग अग्नि, सूर्य और भारतीय प्रतिमाओं की उपासना किया करते थे। मक्का-स्थित काबा देवालय, जिसे भूल से मुस्लिमों का मुख्य पूजालय समझा जाता है, एक हिन्दू मन्दिर है जिसमें भारतीय देवी-देवताओं की ३६० प्रतिमाएँ सुशोभित थीं। भारतीय प्रतिमाओं की पूजा साइबेरिया में अभी भी होती है। मंगोलिया भारतीय देवताओं की प्रतिमाएँ अभी भी बेचता है। जापान की शिन्तो संस्कृति भी 'सिन्धु' शब्द से व्युत्पन्न है। शिन्तो देवालयों में हिन्दू-प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। उनके मन्त्र-भजनादि भी संस्कृत-आधारित हैं। जापानी आत्म-प्रतिरक्षा की 'जुजुत्सु' प्रणाली भी उनको भारत द्वारा ही सिखायी गयी थी जैसाकि संस्कृत के 'युयुत्सु' शब्द से है जिसका अर्थ 'युद्ध के लिए इच्छुक' है। 'जुदो' शब्द संस्कृत के 'युद्ध' (युद्ध का द्वन्द्व) शब्द का अपभ्रंश है।

जैसा हम पहले ही देख चुके हैं, कैथोलिक (ईसाई) धार्मिक-पद्धतियाँ हिन्दू-परम्पराओं के अनुरूप हैं जैसे उनके सप्ताह के दिन, मास, वर्षादि।

भारतीय देवी-देवताओं की उपासना प्राचीन यूरोप में हुआ करती थी। यह तथ्य युगोस्लाविया के एक विद्वान प्रोफेसर से प्राप्त निम्नलिखित पत्र द्वारा स्पष्ट है। प्रोफेसर इवान स्लामनिग ने २० सितम्बर, सन् १९६७ के अपने पत्र में हमें लिखा है : "यह तथ्य माना जाता है कि प्राचीन यूगोस्लाविया के देवी-देवता भारतीय मूल के हैं। प्रोफेसर राडोस्लाव 'कटिशिश' (द्वारा—फिलोजोफस्की फकुलटेट, द्ज्योर सालाजा बीवी, जगरेव, ईगोस्लाविया) ने, जो भारतीय विद्या के अध्यक्ष हैं, इस पर अध्ययन किया है। मध्य-युग में तथाकथित मानिकी का धर्म-द्रोह के माध्यम से दक्षिणी यूगोस्लाविया वालों तथा भारतीयों के मध्य धार्मिक सम्पर्कों की सम्भावना भी प्रतीत होती है। सैण्ट बरथोलोमेओ का एक ईसाई प्रचारक

पालीनस "भारतीय और यूरोपीय देवी-देवताओं के तुलनात्मक अध्ययन करने वाले प्रारम्भिक विद्वानों में से एक था। उसका 'सिस्टम ब्रह्मणीकम' ग्रंथ रोम में सन् १७६१ में प्रकाशित हुआ था'''उसने भारतीय पौराणिकता की यूनानी और लैटिन पौराणिकता से तुलना की थी।"

मिस्र के बादशाह रामेसिस का नाम राम से व्युत्पन्न है। उनकी सूर्य-उपासना का श्रीगणेश भारतीयों द्वारा किया गया था। 'ब्ल्यू नाइल' का उद्गम संस्कृत शब्दावली 'नील कृष्णा' में है, जिसका अर्थ 'नीला नील' है जो संज्ञा इसे प्राचीन भारतीय अन्वेषकों ने दी थी।

प्राचीन काल में भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार का अस्तित्व खोज निकालने के लिए विद्वानों को प्रेरित करने हेतु उपर्युक्त सूक्ष्म-विश्लेषण, सर्वेक्षण पर्याप्त है। यह अन्वेषण प्राचीन इतिहास के कुछ सर्वाधिक रोमांचकारी अध्यायों के लिखे जाने में सहायक सिद्ध होगा।

उस सुदूर स्थित अधिराज्य को ज्योतिषीय एवं नक्षत्रीय जानकारी देने के लिए ही सुविख्यात वेधशाला में विक्रम-स्तम्भ के नाम से दिल्ली में यह पर्यवेक्षण-स्तम्भ निर्मित हुआ था। दन्तकथाओं के रूप में ही अब स्वयं स्मरण किए जाने वाले सम्राट् विक्रम का यश-प्रसार हुआ ही प्रमुख रूप में इस कारण था क्योंकि वह अति विशाल साम्राज्य का अधिपति था। विक्रम-स्तम्भ (तथाकथित कुतुबमीनार) के निकट लौह-स्तम्भ पर उत्कीर्णांश है जिसमें सिन्धु नदी के पार—कदाचित सम्पूर्ण अरब देश (क्षेत्र) की ओर इंगित है—वाह्लीक देश पर भारतीय सम्राट् की विजयदुन्दुभि का वर्णन है।

सम्राट् विक्रम ने अरबों पर राज्य किया, इसका प्रमाण तो जिर्हम बिन्तोई नामक अरब कवि ने स्वयं दिया है। 'सैअरुल ओकुल' नाम से विख्यात अरबी काव्य के वाङ्मय के ३१५वें पृष्ठ पर वह कविता उद्धृत है। इस्तम्बूल (टर्की) में मखतबे-जमहूरियत उपनाम मखतबे-सुलेमानिया के नाम से पुकारे जाने वाले एक पुरातन पुस्तकालय के अरबी भाग में यह ग्रन्थ संग्रहीत कहा जाता है। उस कविता में, विक्रमादित्य के अरेबिया पर पितृ-सदृश स्नेहमय शासन के लिए उसका मुक्त-कण्ठ से यशगान किया गया है। इस कविता का हिन्दी-रूपान्तर निम्न प्रकार है :

"वे अत्यन्त भाग्यशाली लोग हैं जो सम्राट विक्रमादित्य के शासन-काल में जन्मे (और वहाँ निवास किया)। अपनी प्रजा के कल्याण में रत वह एक कर्तव्यनिष्ठ, दयालु एवं नेक-चरित्र राजा था। किन्तु उस समय, खुदा को भूले हुए हम अरब लोग ऐन्द्रिय विषय-वासनाओं में डूबे हुए थे। (हम लोगों में) षड्यन्त्र और अत्याचार करना खूब प्रचलित था। हमारे देश को अज्ञान के अन्धकार ने ग्रसित कर रखा था। भेड़िए के क्रूर पंजों में अपनी जीवन-मुक्ति के लिए संघर्ष-रत मेमने की भाँति हम अरब-लोग अज्ञान में बुरी तरह जकड़े हुए थे। सारा देश ऐसे घोर अन्धकार से आच्छादित था जैसाकि अमावस्या की रात्रि को होता है। किन्तु शिक्षा का वर्तमान उषाकाल एवं सुखद सूर्य-प्रकाश उस नेक-चरित्र सम्राट विक्रम की कृपालुता का परिणाम है जिसका दयापूर्ण अधीक्षण, यद्यपि हम विदेशी ही थे फिर भी, हमारे प्रति उपेक्षा न कर पाया—जिसने हमें अपनी दृष्टि से ओझल नहीं किया। उसने अपना पवित्र-धर्म हम लोगों में फैलाया, और उसने अपने देश से विद्वान लोग भेजे जिनकी प्रतिभा सूर्य के प्रकाश के समान हमारे देश में चमकी। ये विद्वान और दूर-द्रष्टा लोग, जिनकी दयालुता एवं कृपा से हम फिर एक बार खुदा के अस्तित्व को अनुभव करने लगे, उसके पवित्र अस्तित्व से परिचित किए गए और सत्य के मार्ग पर चलाए गए, हमारे देश में अपना धर्म-प्रचारित करने और हमें शिक्षा देने के लिए आए थे। उनका यहाँ पदार्पण महाराजा विक्रमादित्य के आदेश पर हुआ था।"

यह परम्परागत धारणा, कि अरब लोगों ने अपने सभी विज्ञानों और कलाओं की शिक्षा भारतीयों से ग्रहण की, उपर्युक्त साक्ष्य के सन्दर्भ में पूर्णतः, सत्याधारित सिद्ध हो जाती है। इस आँखें खोल देने वाली कविता के अभाव में विश्व इतिहास के विद्यार्थी इस विचित्र धारणा को ही छाती से चिपकाए फिरते थे कि किसी यदाकदा भारत आने वाले अरब-यात्री ने सभी भारतीय विद्याएँ हृदयंगम कर ली होंगी और अपने देश वापिस पहुँच कर सभी ज्ञान अपने देशवासियों को प्रदान कर दिया होगा। सूक्ष्म दृष्टि-पात पर ऐसा स्पष्टीकरण नितान्त सरल और बालोचित प्रतीत होता है। यदाकदा आने वाले व्यक्ति के पास न तो समय, न ही रुचि और न ही

अवसर होता है कि वह विदेश में कोई प्रशंसनीय अध्ययन कर सके। इसी प्रकार, उसे कोई अधिकार अथवा साधन ऐसे प्राप्त नहीं होते कि वह अपने देशवासियों को अपना ज्ञान सुलभ कर सके।

स्वयं अपने ही अनुभव से हमें ज्ञात है कि विजयोपरान्त ही भारत के ऊपर ब्रिटिश प्रशासन के द्वारा भारत में अंग्रेजी-ज्ञान की शिक्षा-दीक्षा प्रारम्भ की गयी थी। इसी प्रकार, यह तथ्य कि अरब लोग भारतीयों द्वारा शिक्षित किए गए थे, इस बात का स्पष्ट संकेतक है कि भारतीयों का अरब-भूमि में प्रशासन पर पूर्ण-नियन्त्रण था। यह निष्कर्ष जिर्रहम बिन्तोई की ऊपर दी गयी कविता से असंदिग्ध रूप से पुष्ट होता है। 'सैअरुल-ओकुल' ग्रन्थ के अनुसार यह कवि पैगम्बर मोहम्मद से १६५ वर्ष पूर्व जीवित था।

इसी काव्य-ग्रन्थ की दो अन्य अरबी कविताएँ नई दिल्ली की रीडिंग रोड पर स्थित सुप्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर (बिड़ला मन्दिर) के पिछवाड़े बनी वाटिका की यज्ञशाला के स्तम्भों पर उत्कीर्ण देखी जा सकती हैं। वे कविताएँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि अरब लोग महादेव (भगवान शिव) की आराधना करते थे और वेदों का गान किया करते थे।

पुरातन संस्कृत राजचिह्न 'सूर्य-शार्दूल' (सूरज और सिंह) अति-दूरस्थ समरकन्द की तैमूरलंगी मकबरे के भीतर तथा ईरानी सरकार के सभी प्रकाशनों पर अभी भी देखा जा सकता है। तैमूरलंग के मकबरे पर भ्रमणार्थ जाने वाले यात्रियों को रूसी-मार्गदर्शक उस स्थल पर ले जाते हैं जिसे वे 'सूर-सादूल' कहते हैं और साथ ही यह भी स्वीकार कर लेते हैं कि उनको उस शब्दावली का मूलोद्गम ज्ञात नहीं है। संस्कृत जानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उसका अर्थ बिलकुल स्पष्ट है। अपने मूल संस्कृत-अर्थ तथा उच्चारण को लगभग अक्षुण्ण बनाए हुए एक संस्कृत राज-चिह्न दूरस्थ ईरान और समरकन्द जैसे प्रदेशों में तब तक नहीं पहुँच सकता था जब तक कि भारतीयों ने वहाँ एक बार आधिपत्य न किया हो। प्रसंगानुसार, समरन्दर भी युद्ध-क्षेत्र का द्योतक संस्कृत-शब्द 'समर-खण्ड' है। तैमूरलंग के तथाकथित मकबरे में संस्कृत-चिह्न का अस्तित्व एक स्पष्ट संकेत है कि तैमूरलंग संस्कृत-महाराजाओं के किसी ध्वस्त राजमहल में दफनाया हुआ

पड़ा है।

फारसी राज-परिवार की संज्ञा 'पहलवी' तथा उनकी राज-पदवी 'शाह' दोनों ही संस्कृत हैं। रामायणकाल में जब महर्षि वशिष्ठ की कामधेनु को ऋषि विश्वामित्र बलपूर्वक ले जाने लगे थे, तब उस कामधेनु की रक्षार्थ तुरन्त उपस्थित हो उस अपहर्ता ऋषि पर टूट पड़नेवाला क्षत्रिय परिवार 'पहलवी-कुल' ही था। 'शाह' नाम तो हिन्दुओं में पाया ही जाता है यथा भामाशाह, मनुभाई शाह।

भारतीय सूर्य-देव 'मित्र' की उपासना प्राचीन यूरोप और मिस्र के सभी भागों में प्रचलित थी। इनकी प्रतिमाएं ग्रीसलैंड और इंग्लैंड जैसे सुदूर प्रदेशों में भी खुदाई में प्राप्त हुई हैं।

यह संक्षिप्त सर्वेक्षण इस बात के लिए पर्याप्त होना चाहिए कि पाठक स्वीकार कर ले कि "एक विश्व···एक मानवता (तथा) कृण्वन्तो विश्व-मार्यम् (विश्व को सुसंस्कृत बनाओ)" का उद्‌घोष करने वाले पूर्वकालिक भारतीयों में, तथ्य रूप में, सम्पूर्ण विश्व पर छा जाने की कितनी अद्‌भुत सामर्थ्य थी। ये उद्‌घोष कायरों-दुर्बलों के न होकर उन लोगों के थे जिनमें विश्व के सुदूरतम कोनों में पैठ पाने की प्रतिभाशक्ति, दार्शनिक दृष्टि, सैनिक सामर्थ्य तथा भौतिक साधनसम्पन्नता थी। यह वह युग था जब भारत में दूध और शहद की नदियां बहा करती थीं और इसकी चिमनियों से स्वर्ण का धुआं बनकर निकला करता था। हमारे अपने युग तक ज्यों-के-त्यों चले आ रहे ये वाक्यांश उस युग के सम्पर्क-सूत्र हैं जब भारत का विश्व पर आधिपत्य था। जब तक कोई राष्ट्र विश्व पर शासन नहीं करता तब तक वह इतना समृद्ध नहीं हो सकता।

यह तो विश्व-व्यापी भारतीय साम्राज्य के उस प्राचीन, न्यूनोपलब्ध स्वर्णयुग में ही था कि उस विशाल साम्राज्य की राजधानी दिल्ली में विक्रम-स्तम्भ (तथाकथित कुतुबमीनार—उत्तरी ध्रुव पर्यवेक्षण-स्तम्भ) की स्थापना की गयी थी। हमारी अपनी ही स्मृति तथा अनुभव काल में लन्दन भी तो एक विशाल ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी रहा है।

भारत में सभी अन्य मध्यकालीन भवनों की भाँति ही उस विक्रम-स्तम्भ का निर्माण श्रेय भी बिलकुल असत्य रूप में इस या उस मुस्लिम

सुल्तान को अथवा उन सभी को सामूहिक रूप में दे दिया गया है। इस प्रकार, जबकि इसके अरबी नाम 'कुतुब-मीनार' से लोग भ्रमवश इसका निर्माण (केवल सन् १२०६ से १२१० ई० तक राज्य करने वाले) कुतुबुद्दीन द्वारा किया गया विश्वास करते हैं, अनेक शताब्दियों पश्चात होने वाले खुशामदी मुस्लिम तिथि वृत्तलेखकों ने अपनी घोर धर्मान्ध असत्यता में स्तम्भ का निर्माण श्रेय कुतुबुद्दीन के अनुवर्ती इल्तमश को, अथवा स्तम्भ की विभिन्न मंजिलों का निर्माण श्रेय इल्तमश, अलाउद्दीन खिलजी तथा फिरोजशाह तुगलक को दे डाला है। इसका आश्चर्यकारी अंश यह है कि इन बादशाहों में से एक भी, अपने राज्य काल में, किसी भवन-निर्माण की आज्ञा देने के लिए ज्ञात नहीं है किन्तु फिर भी एक मतिभ्रष्ट इतिहासकार के पश्चात दूसरे इतिहासकार ने अपने आनन्दोल्लास में विक्रम-स्तम्भ का निर्माण-श्रेय एक या अधिक मुस्लिम लुटेरों को दे दिया है। अतः एक ब्रिटिश इतिहासकार सर एच० एम० इलियट ने मुस्लिम तिथिवृत्तों के अपने आठ खण्डीय अध्ययन ग्रन्थ के आमुख में ठीक ही लिखा है कि वे "जानबूझकर किए गए अत्यन्त रोचक घोटाले" हैं। भारत पर मुस्लिम आक्रामकों द्वारा कुछ भी निर्माण न किए जाने और फिर भी प्रत्येक वस्तु पर अपना दावा करने के विषय पर इस लेखक की "भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें" नामक पुस्तक के अनेक अध्यायों में विशद विचार किया गया है।

२२

समीक्षाएँ और प्रतिक्रियाएँ

इस लेखक की दो पुस्तकों ने विश्वभर में प्रचलित वर्तमान कुछ ऐतिहासिक तथ्यों को किस सीमा तक झकझोर दिया है, उसका कुछ अनुमान निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समीक्षाओं और प्रतिक्रियाओं से स्पष्ट है। विचाराधीन पुस्तकों के नाम निम्न प्रकार हैं—

(१) अंग्रेजी पुस्तक का शीर्षक : 'ताजमहल वाज़ ए राजपूत पैलेस' (हिन्दी पुस्तक का शीर्षक : 'ताजमहल राजपूती महल था'।) अनुवादक– श्री जगमोहन राव भट्ट।

(२) अंग्रेजी पुस्तक का शीर्षक : "सम ब्लण्डर्स आफ़ इण्डियन हिस्टोरिकल रिसर्च"। (हिन्दी पुस्तक का शीर्षक : "भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें") अनुवादक—श्री जगमोहन राव भट्ट।

समीक्षाएँ एवं प्रतिक्रियाएँ

भारत-ज्योति—दिनांक २७ अगस्त १९६७ (दलाल स्ट्रीट, बम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'फ्री प्रेस जरनल' का साप्ताहिक संस्करण)। "भारतीय इतिहास और संस्कृत के विभिन्न पक्षों पर एक जनप्रिय, सुप्रसिद्ध लेखक के रूप में श्री पु० ना० ओक का उदय हो रहा है। उनके थोड़े किन्तु रोमांचक प्रकाशनों के अतिरिक्त श्री ओक के लेख अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साप्ताहिक, मासिक तथा दैनिक-पत्रों में भी छप रहे हैं। बहुत लोग ऐसे हैं जो मानते हैं कि पापी विदेशियों तथा उनके अज्ञानी

शिष्यों द्वारा इतनी बुरी तरह व निर्दयतापूर्वक गलत ढंग से प्रस्तुत की गई हिन्दू उत्तराधिकार की गौरव-गरिमा को पुनः प्रस्थापित करने के लिए ही वास्तविक व्यास जी का पुनर्जन्म श्री ओक के रूप में हुआ है।···श्री ओक का यह कथन बिल्कुल सही है कि 'आर्य' शब्द को जाति-वाचक रूप देना भयंकर गलती की गयी है।"

मदर इण्डिया—दिनांक···दिसम्बर १६६६ : पृष्ठ १५ (५५, सर फिरोजशाह रोड, बम्बई-१ से प्रकाशित, संसद सदस्य श्री बाबूराव पटेल द्वारा सम्पादित अंग्रेजी मासिक) "न पढ़ना···दो पुस्तकों का न पढ़ पाना मुगलों और ब्रिटिश दो आक्रामक जातियों द्वारा पिछली १२ शताब्दियों में असहाय भारतीय जनता पर किए गए घोर प्रपंचों की अत्यन्त उत्तेजक तथा दुःखद कथा से वंचित रह जाना है। भारत को स्वतन्त्रता मिल जाने के बाद ही, इन दो पुस्तकों में समाविष्ट रोमांचकारी रहस्यों का उद्घाटन किया जा सकता था। प्रतिभावान व्यक्तियों को ये पुस्तकें अवश्य ही पढ़नी चाहिए। ये पुस्तकें विचारोत्तेजना करती हैं और नये विचारों के साथ ही पुराना इतिहास भिन्न रूप धारण करने लगता है।"

स्वर्गीय डाक्टर के० वैद्यनाथन, एम० ए०, पी-एच० डी०, मद्रास : "ताजमहल नहीं—बलिक ताजमहल पर आपकी पुस्तक विश्व का आठवाँ आश्चर्य है।"

सण्डे स्टैण्डर्ड—(इंडियन एक्सप्रेस) १२ फरवरी सन् १६६७ : "श्री ओक की 'सम ब्लन्डर्स आफ इंडियन हिस्टोरिकल रिसर्च" पुस्तक घबराहट पैदा कर देने वाली पुस्तक है। उनके प्रस्तुतीकरण में इतनी अधिक सघनता तथा दृढ़निष्ठा थी कि आपने स्वयं मेरा सन्तुलन बिगाड़ दिया।"

श्री विश्वनाथ दास, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश ने लखनऊ से अपने पत्र दिनांक मार्च २३, सन् १६६६ को लिखा था :

"सशक्त प्रमाणों सहित ताज को मुस्लिम पूर्वकाल में किसी राजपूत

राजा द्वारा अपने राजमहल के रूप में निर्मित भवन सिद्ध करने वाली अंग्रेजी पुस्तक 'ताजमहल वाज़ ए राजपूत पैलेस' के प्रकाशन का मैं स्वागत करता हूँ। लेखक महोदय ने अपने निष्कर्ष ऐतिहासिकता के कुछ विशिष्ट लिखित प्रमाणों पर आधारित किए हैं।"

दि अमेरिकन सोसायटी फॉर स्कैंडिनेवेयिन एण्ड ईस्टर्न स्टडीज़ माइनापोलिस, माईनेसोटा, यू०एस०ए० के अध्यक्ष डाक्टर एम० फ्लैगमायर ने अपने ६ दिसम्बर सन् १९६५ के पत्र में लिखा था :

"इस बेहूदा धारणा को कि शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया, हम लोग भी बहुत समय से घृणा के भाव से देखते रहे हैं। आपकी विद्वत्तापूर्ण खोजों ने हमारी अपनी मान्यताओं को सम्बल प्रदान किया है। भारतीय इतिहास के एक अत्यन्त विक्षुब्धकारी अध्ययन को इस प्रकार नवीन और स्फूर्तिदायी रूप में स्पष्टतापूर्वक प्रस्तुत करने के लिए आप सराहना के पात्र हैं।

मेरे सम्मुख यह समस्या सर्वप्रथम द्वितीय विश्वयुद्ध के समय उपस्थित हुई थी। मैं उन दिनों भारत में था। छुट्टियों में मुझे एक बार आगरा जाने का अवसर मिला; मैंने ताजमहल स्वयं अपनी आँखों से देखा है। ताजमहल के प्रमुख द्वार से गुजरने पर तथा उस आकर्षक कलाकृति के अति भव्यरूप को देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया था। आज की भाँति इन वस्तुओं की जानकारी यद्यपि मुझे उन दिनों नहीं थी तथापि इस तथ्य से भी मुझे महान आश्चर्य हुआ था कि कुछ ऊपरी मुगलिया बातों के होते हुए भी यह भवन मुस्लिम संरचना नहीं थी। उदाहरण के रूप में, ताज के चारों मीनार मुझे हिन्दू-स्थापत्य-कला के उन चित्रों का स्मरण दिलाते थे जो मैंने उन दिनों 'राजपूताना' नाम से पुकारे जाने वाले प्रदेश में देखे थे। साथ ही, अष्टकोणीय आकार निश्चित रूप में ही हिन्दू (अथवा कम-से-कम गैर-मुस्लिम) मूल का था।

हमारा पुस्तकालय आपकी लघु-आकार वाली आश्चर्यकारी पुस्तक को संग्रहीत कर धन्य हुआ है; मुझे विक्षुब्ध करने वाली अनेक बातें तुरन्त स्पष्ट हो गई हैं।"

ऐस्ट्रोलौजिकल मैगजीन—(सम्पादक श्री बी०वी० रमण, श्री राजे-

श्वरी, बंगलोर-२०), जनवरी सन् १९६६ : "यह (ताजमहल वाज़ ए राजपूत पैलेस) एक ऐसा प्रकाशन है जो किसी भी व्यक्ति को वर्षों की निद्रा से जागृत करने का यश अर्जन कर सकता है। इस पुस्तक को सामान्य व्यक्तियों तथा इतिहास के गहन अध्येताओं को अत्यधिक ध्यान से पढ़ना अभीष्ट है।"

डेक्कन हेराल्ड—(अंग्रेजी दैनिक, बंगलोर) : जून ४, सन् १९६७ : "यह (सम ब्लण्डर्स आफ़ इंडियन हिस्टौरिकल रिसर्च) एक पूर्णतः रोचक पुस्तक है जो भारतीय इतिहास में अभी तक किए गए सभी अन्वेषणों के सम्बन्ध में एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है और विषय तक नये प्रकार से पहुँच करती है। अधिक महत्त्वपूर्ण तथा भलीभाँति ज्ञात (मध्यकालीन) स्मारकों के सम्बन्ध में अपने सिद्धान्त के श्री ओक के स्पष्टीकरणों से किसी भी व्यक्ति को अप्रतिकार्य रूप में यह विश्वास करना पड़ता है कि इसकी पुष्टि में एक ठोस मस्तिष्क है, युक्ति है जिसकी अव-हेलना करना, जिसका काट करना कठिन है। श्री ओक के विचारों और निष्कर्षों को किसी कलाप्रेमी की बात कहकर अमान्य नहीं किया जा सकता क्योंकि वे एक प्रशिक्षित तथा अनुभवी अन्वेषक हैं जिन्होंने अपनी उद्भूत मान्यता में निहित गूढ़ गहनताओं तक पहुँचने में अपना बहुत समय लगाया व परिश्रम और प्रयत्न किया है। श्री ओक की पुस्तक एक चुनौती देनेवाली पुस्तक है और इसके लिए आधिकारिक भारतीय इतिहास में रुचि रखने वाले तथा उस इतिहास में अन्वेषण के प्रत्येक विद्यार्थी को सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता पड़ेगी। कुछ भी हो, उनके द्वारा अत्यन्त विशदता से छायांकित तथा स्पष्ट किए गए सिद्धान्त में आगे अन्वेषण की आवश्यकता पर यह निश्चित रूप में ही प्रभाव डालती है, और इतिहासकारों तथा अन्वेषकों की पहुँच में एक परिवर्तन की आव-श्यकता पर बल देती है।"

ऑर्गनाइजर—(अंग्रेजी साप्ताहिक, मरीना बिल्डिंग, कनाट सरकस, नई दिल्ली, जनवरी १, सन् १९६७ : "ऐसी (सम ब्लण्डर्स आफ़ इंडियन

हिस्टौरिकल रिसर्च) पुस्तक के लिए महान साहस और महान विद्वत्ता की आवश्यकता है।"

सर्चलाइट—(अंग्रेजी दैनिक, पटना), सितम्बर २५, सन् १९६६ : 'इस दावेरूपी धमाके के साथ श्री ओक ने भारतीय इतिहास पुनर्लेखन का कार्य प्रारम्भ किया है कि ताजमहल को मुगल बादशाह शाहजहाँ ने नहीं बनवाया था।"

डाक्टर एम० फ्लैंगमायर—(यू० एस० ए०) : "विलक्षण रूप में यथार्थतः पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ (सम ब्लन्डर्स आफ़ इंडियन हिस्टौरिकल रिसर्च) के लिए आप बधाई के पात्र हैं।"

टाइम्स आफ़ इण्डिया—(अंग्रेजी दैनिक, बम्बई, नई दिल्ली, दिनांक ३ दिसम्बर, सन् १९६७) : "श्री ओक ने अपनी 'सम ब्लण्डर्स आफ़ हिस्टौरिकल रिसर्च' नामक पुस्तक में ऐसी अठारह भयंकर भूलें समाविष्ट की हैं, और अपनी धारणा की पुष्टि में विभिन्न तर्क, युक्तियाँ प्रस्तुत की हैं। यह एक अन्यत्र विचारोत्तेजक समीक्षात्मक ग्रन्थ है, और चाहे कोई व्यक्ति उनके विचारों से सहमत न हो, फिर भी कोई इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि उनके विचार अत्यन्त स्फूर्तिजनक रूप में मौलिक हैं।"

पुरूषोत्तम नागेश ओक
(1917-2008)

शिक्षाः बम्बई विश्वविद्यालय से एम०ए०, एल०एल०बी०

जीवन कार्यः एक वर्ष तक अध्यापन कर सेना में भर्ती।

द्वितीय विश्व युद्ध में सिंगापुर में नियुक्त। अंगरेजी सेना द्वारा समपर्ण के उपरान्त आजाद हिन्द फौज के स्थापन में भाग लिया, सैगौन में आजाद हिन्द रेडियो में निदेशक के रूप में कार्य किया।

विश्व युद्ध की समाप्ति पर कई देशों के जंगलों में घूमते हुए कलकत्ता पहुँचे। 1947 से 1974 तक पत्रिकारिता के क्षेत्र में (हिन्दुस्तान टाइम्स तथा स्टेट्समैन में) कार्य किया तथा भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्रालय में अधिकारी रहे। कुछ समय तक अमरीकी दूतावास की सूचना सेवा विभाग में भी कार्य किया।

देश–विदेश में भ्रमण करते हुए ऐतिहासिक स्थलों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कई खोजें कीं। उन खोजों का परिणाम उनकी रचनाओं के रूप में हमें मिलता है। उनकी कुछ रचनाएँ है ताजमहल मन्दिर भवन है, भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें, विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय, वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास, कौन कहता है अकबर महान था?

उनकी मान्यता है कि पाश्चात्य इतिहासकारों ने इतिहास को भ्रष्ट करने का जो कुप्रयास किया है, यह वैदिक धर्म को नष्ट करने के लिए जानबूझकर किया किया है और दुर्भाग्यवश हमारे स्वार्थी इतिहासकार इसमें उनका सहयोग कर रहे हैं।